

3321

32
E

0152,3KHA,1
G7

GL52,3KHA,1 2701

G7

Khatri, Parmanand, Tr
Targan Ka badla.

SHRI JAGADGURU VISHWARADHYA JNANAMANDIR

0152.3 kHzA.1

(LIBRARY)

2701

JANGAMAWADIMATHI, VARANASI

97

● ● ● ● ●

Please return this volume on or before the date last stamped
Overdue volume will be charged 1/- per day.

[illegible]

टार्जन का बृद्धि

अत्यन्त रोचक उपन्यास



अनुवादक—

परमानन्द खत्री एम० ए०

प्रकाशक—

परमानन्द खत्री एम० ए०, बनारस ।

मुद्रक—जे० पी० अरोड़ा, लक्ष्मी-प्रेस, बनारस ।

प्रथम संस्करण]

जनवरी १९३७ ई०

[मूल्य १॥)

टार्जन का बदला

रूठ मार



भीषण तथा अन्धकारमय जंगल के बीच से हो कर इस समय प्रीज शीन्डर अपने साथियों सहित बड़ी ही धीमी चाल से आगे बढ़ा जा रहा था। उसका लेफ्टिनेन्ट उसके बगल में था तथा सहकारी लेफ्टिनेन्ट पीछे की ओर चल रहा था। साब ही कुछ हवशी जाति के फौजी सिपाही तथा कुछ कुली भी असबाब लादे चले जा रहे थे।

शीन्डर के आगे साथी आगे तथा आगे उसके पीछे की ओर जा रहे थे। सब से आगे रास्ता बताने वाले दो हवशी चल रहे थे।

जिनके गले आपस में लोहे की एक जंजीर से बँधे हुए थे। साफ़ मालूम होता था कि ये लोग जंगल में रास्ता भूल कर इधर उधर भटक रहे हैं यही कारण था कि फ्रीज शीन्डर के क्रोध का पारा इस समय बहुत ऊपर चढ़ा हुआ था। रह रह कर उसकी यही इच्छा होती थी कि रास्ता दिखाने वाले देनों हवशियों का गोलिएँ से खातमा कर दे परन्तु यही सोच कर वह अपना क्रोध पी जाता था कि उन दो हवशियों की सहायता बिना वह किसी प्रकार भी ठीक रास्ते का पता पाने की आशा नहीं कर सकता था। वे देनों हवशी इस बात को बखूबी जानते हुए भी कि वे रास्ता भूल गये हैं शीन्डर को रह रह कर इसी बात का विश्वास दिलाने का प्रयत्न करते जाते थे कि वे रास्ता भूले नहीं हैं और शीघ्र ही ठीक रास्ते पर लग जायँगे।

इस समय वे जिस पगडंडी पर चल रहे थे वह आदमियों के आमदरफ्त से बनी हुई न थी वरन वह उन जंगली भयानक पशुओं के चलने का रास्ता था जो दिन रात खुले आम जंगल में इधर से उधर घूमा करते हैं और कदाचित् इसी राह से हो कर वे उन भारी मैदानों की ओर जाते थे जहाँ उन्हें अपने शिकार बहुतायत से मिलते थे।

अन्त में ये लोग एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ सामने की ओर एक लम्बा चौड़ा मैदान दिखाई दे रहा था। इस मैदान के देख कर उन हवशियों की जान में जान आ गई और शीन्डर ने भी संतोष की एक गहरी सांस खींची। अपने लेफ्टिनेन्ट की ओर

देख कर वह एक बार मुस्कराया और तब बोला, “हम लोगों की किस्मत तो अच्छी मालूम होती है।”

इतना कह कर शीन्डर ने अपनी दूर्वीन से सामने के मैदान को ध्यान से देखा। उसका लेफ्टिनेन्ट भी दूर्वीन द्वारा सामने का दृश्य देख रहा था। दो ही मिनट बाद वह शीन्डर की ओर देख कर बोला, “देखिये कप्तान ! वह जो सामने बँगला दिखाई दे रहा है मेरे ख्याल में वह अवश्य ग्रेस्टोक का ही है क्योंकि इस पूर्वीय अफ्रीका प्रदेश में और किसी का भी बँगला आज तक निर्मित नहीं हुआ। अवश्य इस समय ईश्वर हम लोगों का सहायक है।”

शीन्डर ने मुस्करा कर कहा, “अभी उसको कदाचित्त इस बात का पता भी न होगा कि उसके देश और जर्मनी में युद्ध छिड़ गया है। सब से पहले उसी को जर्मनी की महान् शक्ति का मजा चखाया जायगा !”

लेफ्टिनेन्ट,—वास्तव में यदि वह इस समय अपने बँगले ही पर हो तो बड़ा ही मजा आवेगा। हर हाफ्टसन फ्रीज शीन्डर के लिये जंगल के राजा टार्जन को युद्ध का कैदी बनाना बड़े ही गौरव की बात होगी !

शीन्डर के चेहरे पर एक हलकी मुस्कराहट दिखाई दी। अपनी छाती फुला कर वह बोला, “केवल मेरे ही लिये नहीं, हम दोनों ही के लिये यह कम गौरव की बात नहीं है परन्तु इसके पहले कि जेनरल क्राट मोम्बासा पहुँचे उससे मुलाकात करने के लिये हमें भारी सफर तय करना होगा।”

प्रसन्नता से फूला हुआ यह छोटा सा दल क्रमशः जान क्लेटन लार्ड प्रेस्टोक के उस खूबसूरत बंगले तथा उसके आस पास बनी हुई कच्ची इमारतों की ओर बढ़ने लगा ।

लेडी जेन ने, जिसे स्वप्न में भी इस बात का गुमान न था कि जर्मनी तथा ग्रेट ब्रिटेन में युद्ध छिड़ गया है, इन अफसरों की अच्छी आवभगत की और अपने वजीरी सदाँर को आज्ञा दी कि उनके लिये अच्छे से अच्छा खाना तैयार किया जाय ।”



बहुत दूर पूरव की ओर जंगल के राजा टार्जन नईरोवी से तेजी के साथ अपने बंगले की ओर चले आ रहे थे । नईरोवी में ही उन्हें विश्वव्यापी युद्ध की सूचना मिल गई थी । यह सोच कर कि बहुत संभव है, जर्मन लोग शीघ्र ही ब्रिटिश पूर्वीय अफ्रीका पर घावा कर दें वे अपनी स्त्री को किसी सुरक्षित स्थान पर रखने के लिये तेजी के साथ अपने बंगले की ओर बढ़े जा रहे थे । उनके साथ इस समय लगभग बीस हवशी जवान थे परन्तु टार्जन के समान तेजी के साथ आगे बढ़ना इन लोगों की शक्ति के बाहर की बात थी क्योंकि आवश्यकता पड़ने पर टार्जन सभ्यता के नियम एक दम भूल जाते थे और जमीन पर चलने की अपेक्षा पेड़ों ही पेड़ों पर छलांगें मार कर आगे बढ़ने में उन्हें विशेष सुविधा मालूम होती थी ।

छोटे मानू बन्दर ने उन्हें पेड़ों पर छलांगें मारते हुए तेजी के साथ आगे बढ़ते देखा । बहुत दिनों बाद उसने इस भारी टरमंगानी

को इस प्रकार पेड़ों पर जाते देखा था। बन्दर के बाल एक दम भूरे हो गये थे और उन पर निगाह पड़ते ही उसे वे दिन याद हो आये जत्र जंगल का राजा टार्जन उसी प्रकार जंगलों में छलांगें मारता घूमा करता था।

और रात को मारे हुए शिकार के पास बैठे हुए न्यूमा सिंह ने अपने पुराने शत्रु की गंध पा कर अपनी चमकती हुई पीली आंखें 'मचकाई' और लम्बी दुम इधर से उधर हिला कर अपना असंतोष प्रकट करना शुरू किया।

टार्जन ने इन दोनों ही की ओर देखा। नीचे झाड़ियों में दुम दबा कर एक ओर से दूसरी ओर जाते हुए चीते पर भी उनकी निगाह पड़ी परन्तु इस समय उनका ध्यान इस ओर न था। वे जल्दी से जल्दी अपने बंगले पर पहुँच जाया चाहते थे और अपनी शक्ति भर तेजी के साथ आगे बढ़े जा रहे थे।

किन्तु जो कुछ भी हो टार्जन आखिर थे तो मनुष्य ही। इतनी दूर का सफर तय करते करते उनके ऐसा बलिष्ठ शरीर भी अब धीरे धीरे जवाब दे रहा था। उनके शरीर में भयानक पीड़ा हो रही थी परन्तु इस ओर ध्यान देने का उन्हें समय न था। उनकी प्रियतमा की जान इस समय संकट में थी और वे जहाँ तक जल्द हो सके उसके पास पहुँचा चाहते थे।

इस प्रकार सफर तय करते उन्हें कितने ही दिन लगा गये। अपने समय का भारी हिस्सा वे इस समय सफर में ही बिता रहे थे। रात्रि में कुछ घन्टों के लिये सोना तथा आवश्यकतानुसार

थोड़ा बहुत समय भोजन के लिये शिकार करने में बिताना केवल ये ही दो बातें उनके सफर में कुछ देर के लिये बाधा डालती थीं परन्तु बाकी का समय उनका केवल सफर में ही बीतता था।

अन्त में यह लम्बा सफर तय हुआ और वे उस भारी जंगल को पार कर के एक ऐसे स्थान पर जा पहुँचे जहाँ से उन्हें सामने का भारी मैदान तथा उसके बीच में बना हुआ अपना सुन्दर बँगला साफ साफ दिखाई दे रहा था। इतनी दूर होने पर भी यह बात उनकी समझ में आ गई कि वहाँ अवश्य किसी न किसी प्रकार की गड़बड़ी हुई है। बंगले के दाहिनी ओर से, जिधर खलिहान था, धूप की एक लम्बी शिखा आसमान की ओर उठती उन्हें दिखाई दी। खलिहान का कहीं पता भी न था न बंगले की चिमनी में से ही इस समय उन्हें धूआँ उठता दिखाई दे रहा था।

टार्जन पुनः आगे बढ़े किन्तु इस समय उनकी तेजी पहले से कहीं अधिक बढ़ी चढ़ी थी। कारण भय तथा आशंका से उनका समूचा शरीर काँप रहा था। जंगली जानवरों की भाँति उनकी भी एक छठी ज्ञानेन्द्रिय थी जिसकी सहायता से वहाँ पहुँचने के पहले ही उस स्थान का चित्र उनकी आँखों के सामने खिंच गया था।

जिस समय वे बँगले के समीप पहुँचे उन्हें चारों ओर भयानक सजाटा दिखाई दिया। कोई भी आदमी चलता फिरता नजर न आया। हरे हरे अनाज से भरे खेत, खलिहान, नौकरों के रहने के लिये बने मोंपड़े सभी, उन्हें एक दम वीरान दिखाई दिये। जिधर

भी उनकी निगाह जाती थी जमीन पर पड़ी मनुष्यों तथा पशुओं की लाशों पर उन्हें गिद्ध मँढ़राते दिखाई दे रहे थे ।

जिस समय उन्होंने अपने खास बँगले में पैर रक्खा क्रूरता का एक ऐसा नग्नचित्र उन्हें अपनी आँखों के सामने दिखाई दिया कि उसे देख उनका मजबूत कलेजा भी एक बार हिल गया । सामने ही दीवार पर उनके वफादार सुवीरो का बहादुर लड़का वसीम्बू मुर्दे की हालत में एक मोटी कील द्वारा दीवार में जड़ा हुआ दिखाई दिया । बहुत दिनों से यह लेडी जेन का प्रधान अंग-रक्षक था ।

कमरे के सभी सामान इधर उधर बिखरे दिखाई दे रहे थे । तमाम फर्श खून से भरा था और जहाँ तहाँ नौकर चाकरों की लाशें पड़ी हुई थीं । लेडी जेन के खास कमरे के सामने भी तीन वफादार नौकर मरे हुए जमीन पर पड़े थे ।

लेडी जेन के कमरे का दर्वाजा बन्द था । आशंकित हृदय से टार्जन दर्वाजे के पास जा पहुँचे और धड़कते हुए कलेजे के साथ उन्होंने उसे खोल दिया । सामने ही जिस दृश्य पर उनकी निगाह पड़ी उसे देख उनका माथा घूम गया । लेडी जेन के पलंग पर नीचे की ओर मुँह किये एक लाश पड़ी हुई थी ।

किन्तु जिस समय वे पलंग के पास पहुँचे उनकी आँखों में आँसू की एक बूँद भी न थी । उन्होंने लाश को सीधा किया किन्तु लाश की हालत देख क्रोध तथा घृणा से उनका हृदय भर उठा ।

सामने ही जमीन पर पड़ी दूटी हुई जर्मन पिस्तौल तथा जर्मन

फौजी टोप ने एक क्षण में उन्हें बता दिया कि ऐसा भयंकर दुष्कर्म करने वाले कौन लोग हैं ।

पलंग पर पड़ी लाश अग्नि में भस्म हो कर एक दम काही हो गई थी । यहाँ तक कि शरीर का कोई भी अंश अथवा चेहरा पहचान नहीं पड़ता था । इस आशा से टार्जन ने एक बार ध्यान से उस लाश को देखा कि संभव है वह लाश लेडी जेन की न हो परन्तु जैसे ही उनकी निगाह लाश की ँगूली में पड़ी लेडी जेन की अंगूठी पर पड़ी उनकी रही सही आशा भी नष्ट हो गई ।

वही ही इज्जत के साथ टार्जन ने उस लाश को दफनाया और उसी के पास उन्होंने उन वफादार नौकरों की लाश भी दफन कर दी जिन्होंने अपने मालिक की जीवनरक्षा के लिये अपने प्राणों तक की आहुति दे दी थी ।

इमारत के एक ओर हाल में टार्जन ने उन दुष्टों की कर्जें भी देखीं जिन्होंने उनका सोने का सा घर मिट्टी में मिला दिया था । लगभग एक दर्जन जर्मन सिपाहियों की लाशें वहाँ दफनाई हुई पड़ी थीं ।

कुछ देर तक तो वे निश्चेष्ट भाव से सामने के बाग में खड़े कुछ सोचते रहे । इस भारी हानि ने उन्हें एक दम पागल सा बना दिया था । तरह तरह के विचार इस समय तेजी के साथ उनके मस्तिष्क में चक्कर काट रहे थे ।

सभ्य संसार से उन्हें स्वभावतः ही चिढ़ थी कारण जन्म से ही वे स्वतंत्रता के पुजारी थे और सभ्य संसार में उन्हें स्वतंत्र काम

करने, स्वतंत्र विचार करने, धृष्टा करने यहां तक कि स्वतंत्र रूप से घूमने फिरने तक में बंधन दिखाई देते थे। सभ्य संसार उन्हें केवल स्वार्थ तथा अनावश्यक क्रूरता की प्रतिमूर्ति भर ही दिखाई देता था और यही कारण था कि उसकी अपेक्षा उन्हें अपना जंगली जीवन ही अधिक प्रिय मालूम होता था और इन्हीं सब बातों पर विचार कर के वे पुनः अपने प्रिय अफ्रीकन जंगल में वापस चले आये थे। यहां उन्हें पहरने के लिये विशेष कपड़ों की आवश्यकता भी नहीं प्रतीत होती थी। केवल शेर की खाल का एक जांघिया मात्र ही उनका वस्त्र था और अपने प्राचीन हथियार ही उनके शस्त्र !

इसी जांघिये के साथ बंधा उनके पिता का छुरा लटका रहता था। तीर से भरा तरकश उनके कंधे पर तथा बायें हाथ पर उनका वही घास से बना प्रिय रस्सा भूला करता था जिसे बचपन से ही एक क्षण के लिये भी छोड़ना उन्हें असह्य मालूम होता था। एक भारी भाला भी वे हमेशा अपने साथ रक्खा करते थे जो कभी तो उनके हाथ में तथा कभी चमड़े के तस्मे के सहारे उनके कंधे तथा पीठ पर भूला करता था। हीरों से जड़ी ताबीज जिसमें उनके माता पिता का चित्र था उन्हें अपने प्रेम का चिह्न स्वरूप अपनी स्त्री को अर्पित कर दिया था जिसे लेडी जेन एक क्षण के लिये भी कभी अपने पास से जुदा नहीं करती थी। वह ताबीज इस समय लेडी जेन की लाश पर उन्हें नहीं दिखाई दी थी अस्तु बदला लेने की इच्छा के साथ ही साथ उस खोई हुई ताबीज का

पता लगाना भी उन्होंने अपना प्रधान कर्तव्य निर्धारित कर लिया था ।

एक क्षण भी वृथा बर्बाद करना अनुचित समझ टार्जन अपने शत्रुओं से बदला लेने की धुन में वहां से रवाना हो गये और तब तक बराबर आगे ही बढ़ते चले गये जब तक कि रात्रि के अन्धकार ने उस घोर जंगल को चारों ओर से अपने आवरण में छिपा न लिया । चन्द्रदेव यद्यपि उदय हो चुके थे फिर भी बादलों ने उन्हें ढँक कर इस बात की सूचना दे दी थी कि शीघ्र ही एक भारी तूफान आने वाला है ।

टार्जन इस समय बेतरह थके हुए थे अस्तु उन्होंने रात एक भारी पेड़ के ऊपर ही बिताने का निश्चय कर लिया जिस पर आज से पहले भी अपने जंगली जीवन की उन्होंने कितनी ही रातें बिता दी थीं । पेड़ों पर छलांगें मारते हुए वे तेजी के साथ उसी पेड़ की ओर बढ़े जिस पर आराम करने के लिये किसी समय उन्होंने एक मचान बांधी हुई थी । उन्हें पूरी आशा थी कि अभी तक भी वह मचान उसी तरह कायम होगी ।

नीचे की ओर अपने अपने शिकारों की तलाश में घूमते हुए सिंह, चीते, गैडों आदि पर भी उनकी दृष्टि पड़ी परन्तु यह उनके जंगली जीवन का एक मामूली दृश्य था अस्तु उस ओर उनका अधिक ध्यान न गया और वे शीघ्र ही उस भारी पेड़ के समीप जा पहुँचे ।

जिस समय उन्होंने उस पेड़ पर पैर रखता बादल के एक भारी

टुकड़े ने चन्द्रमा को ऐसा घेर लिया था कि चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार दिखाई दे रहा था। हवा के झोंके उस विशाल वृक्ष की टहनियों को इस प्रकार झुला रहे थे मानों वे उस पेड़ को जड़ से ही उखाड़ कर गिरा दिया चाहते हों। टार्जन धीरे धीरे वृक्ष के उस भाग की ओर बढ़ने लगे जहाँ उन्होंने अपने आराम करने के लिये मचान बांध रखी थी। इस समय अन्धकार और भी बढ़ गया था क्योंकि प्रायः समूचा आसमान बादलों से घिर चुका था।

सहसा टार्जन चलते चलते एक दम से रुक गये। उनकी नाक में एक चिरपरिचित गंध आने लगी थी। बड़ी ही फुर्ती से उन्होंने उछल कर अपने ऊपर की ढाल पकड़ ली। फिर उछले और पुनः ऊपरी ढाल पकड़ ली। यहां तक कि वे जहां तक जल्द हो सका पेड़ के एक दम ऊपरी भाग तक जा पहुँचे। आपको अथवा हमें ऐसे स्थान पर कुछ भी न दिखाई देता परन्तु टार्जन को उस मचान पर—जो एक क्षण पहले उनके ऊपर किन्तु इस समय उनके ठीक नीचे था—एक काली शक्ति लेटी हुई दिखाई दी। वह एक बड़ा भारी कड़ावर चीता था जिसकी गन्ध पहले ही उनके नाक में पहुँच चुकी थी।

चीते की भयानक गुर्राहट के उत्तर में टार्जन के गले से भी उसी प्रकार की एक तीखी तथा भंयकर गुर्राहट निकली जो चीते को इस बात के लिये सावधान करने के लिये थी कि दूसरों के स्थान को जबर्दस्ती अपना बनाना अच्छी बात नहीं है। गुर्राते हुए चीते ने अपना चेहरा ऊपर की ओर उठा कर एक बार टार्जन की

सूरत देखी। धीरे धीरे खसकते हुए टार्जन भी चीते के ठीक ऊपर जा पहुँचे। उनके हाथ में अपने मृत पिता का छुरा था जिसकी सहायता से उन्होंने एक समय प्रायः सभी जंगली जानवरों पर अपना आधिपत्य जमा लिया था। उसी छुरे को इस समय भी अपने हाथ में लिये हुए वे एक हाथ से पेड़ की एक मजबूत डाल पकड़े नीचे की ओर झुके।

चीता भी उठकर खड़ा हो गया। टार्जन ने यह कहते हुए उसके मुँह पर छुरे का वार किया, “जानते हो मैं जंगल का राजा टार्जन हूँ। यह मचान टार्जन की है। यहां से चले जाओ नहीं तो मैं तुम्हें जान से मार डालूँगा।”

टार्जन इस समय बन्दरों की भाषा में उससे बातें कर रहे थे। वह उनकी बात समझा अथवा नहीं यह तो नहीं कहा जा सकता किन्तु अपने चेहरे पर छुरे की चोट खा कर वह ऊपर की ओर उछलता और अपने पंजों से उसने भी टार्जन के चेहरे पर वार किया। किन्तु टार्जन चीते से कहीं अधिक फुर्तीले थे। जैसे ही चीता पुनः उस मचान पर गिरा अपने लम्बे भाले का एक वार उन्होंने उसके चेहरे पर किया।

क्रोध में भरा हुआ चीता रह रह कर टार्जन की ओर उछलता था परन्तु जब भी वह उछलता टार्जन अपने भाले की नोक उसके चेहरे की ओर कर देते और वह पुनः उसी मचान पर गिर पड़ता था। अन्त में चीते को बेतरह क्रोध चढ़ आया और वह उछल कर उसी डाल पर जा पहुँचा जिस पर कि टार्जन बैठा हुआ था। अब दोनों

में बराबर का युद्ध जारी हुआ और चीते ने भी अपना भोजन तथा बदला लेने का साधन एक साथ ही अपने सामने की ओर देखा।

दोनों के बोक से वह ढाल एक बार चरमराई। टार्जन धीरे धीरे गुराति हुए पीछे की पतली ढाल की ओर बढ़ने लगे। भयंकर आंधी में वह पेड़ इस समय बेतरह झूम रहा था और उस भयंकर अन्धकार में कभी कभी चमक कर बिजली अपना प्रकाश चारों ओर फैला देती थी।

चीता भी धीरे धीरे उनकी ओर बढ़ रहा था। यहां तक कि वे उस ढाल के एक ऐसी पतली टहनी पर जा पहुँचे जिसके नजदीक पहुँचने पर चीता बड़ी मुश्किल से अपने को सम्हाल सका। टार्जन पुनः अपने भाले से उसके मुँह पर चोट करने लगे। घायल चीता भयंकर रूप से चीत्कार कर उठा परन्तु टार्जन ने इसकी कुछ भी पर्वाह न की और बड़ी ही फुर्ती से उछल कर उसकी पीठ पर जा बैठे। पीठ पर पहुँचते ही उन्होंने अपने हाथ का छुरा फुर्ती से उसकी बगल में घुसेड़ दिया। चीता अपना बचाव करने के लिये जोर से हवा में उछला और दोनों ही वहां से लुढ़क कर नीचे जमीन पर आ गिरे।

परन्तु टार्जन इस समय भी उसकी पीठ पर सवार थे। अपना छुरा बाहर निकाल कर उन्होंने दूसरी बार उसके शरीर में घुसेड़ दिया। इस बार छुरा उसके हृदय में जा घुसा और वह मुर्दा हो कर जमीन पर लुढ़क गया।

टार्जन उछल कर एक ओर खड़े हो गये और अपना एक पैर

उन्होंने उसके शरीर पर रख दिया। सहसा उनके मुँह से पप बन्दर की भयंकर विजयनाद ने निकल कर समूचे जंगल को प्रतिध्वनित कर दिया।

अब टार्जन के सामने किसी प्रकार की भी बाधा न थी। वे पुनः उछल कर पेड़ पर जा चढ़े और मचान पर लोट कर गम्भीर निद्रा में निमग्न हो गये।

सिंह की माद



चौबीस घन्टे तक बराबर मूसलधार वर्षा होती रही, नतीजा यह हुआ कि शत्रु किस राह से गये हैं इसका अन्दाज लगाना टार्जन के लिये असम्भव हो गया। पानी से भीगे तथा सर्दी से ठिठुरे हुए टार्जन बड़े ही चिन्तित भाव से आगे की ओर बढ़े।

दूसरे दिन सुबह जब सूर्य भगवान उदय हुए तब कहीं जा कर टार्जन की गई हुई शक्ति वापस लौटी और वे तेजी के साथ दक्षिण की ओर बढ़ने लगे। इसी ओर उन्हें शत्रुओं के जाने की विशेष सम्भावना थी। वे इस समय जर्मन पूर्वीय अफ्रीका में थे और उनके सामने ही किलिमंजारो नामक विशाल पर्वत था जिसके बगल से होते हुए वे पूरब की ओर टांगा तक गई हुई रेलवे के पास पहुँचना चाहते थे। उन्हें निश्चय था कि इसी रेल द्वारा जर्मन फौज इधर उधर भेजी जायगी।

दो दिन बाद किलिमंजारो के दक्षिण ओर उन्हें तोप छूटने की आवाज सुनाई दी। इस समय वर्षा पुनः आरम्भ हो गई थी अस्तु पानी की बड़ी बड़ी बूंदें टार्जन के शरीर पर गिरने लगीं। कुसम्व की इस वर्षा पर टार्जन को बड़ा ही क्रोध आया और वे पानी से बचने के लिये स्थान खोजने लगे। भीतर से उनकी यही इच्छा हो रही थी कि जहां तक शीघ्र हो सके उस स्थान तक पहुँचना चाहिये जहां से तोप छूटने की आवाज आ रही थी। वे जानते थे कि वही जर्मन तथा अंग्रेजों में युद्ध हो रहा है। एक क्षण के लिये उन्होंने अपने अंग्रेज होने के गौरव का अनुभव किया किन्तु शीघ्र ही यह ख्याल उनके चित्त से निकल गया और आप ही आप वे बोल रहे, “नहीं नहीं जंगल का राजा टार्जन अंग्रेज नहीं वरन एप बन्दों की ही जाति का है !”

इस समय सब से भारी चिन्ता उन्हें वर्षा से अपनी रक्षा करने की थी और ऐसे ही किसी स्थान की खोज में वे एक ओर बढ़े। यहाँ ही दूर पर पत्थर की ऊँची ऊँची चट्टानों के नीचे उन्हें एक पहाड़ी गुफा दिखाई दी। हाथ में छुरा लिये वे लापरवाही के साथ उस गुफा की ओर बढ़े क्योंकि वे जानते थे कि वह अवश्य किसी किसी जंगली जानवर का निवासस्थान होगा। गुफा के सामने ही ओर पत्थर के कितने ही छोटे बड़े टुकड़े पड़े थे। टार्जन का विचार था कि यदि गुफा इस समय खाली हो तो इन्हीं पत्थरों के टुकड़ों से गुफा का मुँह बन्द करके आराम से रात उसी के भीतर गुजारें

गुफा के पास पहुँचने पर टार्जन ने मुक कर उसके आसपास

की जमीन सूँधी । सहसा उनके मुँह से एक हलकी गुर्गाहट निकली और वे बोले, "ठीक है यह गुफा न्यूमा सिंह की है !"

परन्तु यह जान लेने पर भी कि वह गुफा सिंह की है टार्जन हतोत्साह न हुए । उन्होंने सोचा बहुत संभव है सिंह इस समय गुफा के भीतर न हो । उन्होंने इस बात की जाँच करने का निश्चय किया । गुफा का मुँह इतना नीचा था कि बिना अपने हाथ पैर जमीन से सटाये उसके भीतर घुसना असम्भव था परन्तु गुफा के भीतर घुसने के पहले उन्होंने एक बार भीतर की ओर देखा, नाक लगा कर भीतर की गंध ली और तब कान लगा कर आहट लेने लगे ।

भीतर की ओर उन्हें वह गुफा खूब लम्बी चौड़ी दिखाई दी जिसके दूसरी ओर से आती हुई रोशनी उन्हें साफ दिखाई दे रही थी । इस समय उसके भीतर एक दम सन्नाटा था । बड़ी ही सावधानी के साथ टार्जन जमीन पर लेट गये और धीरे धीरे भीतर की ओर सरकने लगे । वे खूब समझते थे कि यदि न्यूमा सिंह गुफा के भीतर हुआ तो उनकी क्या गति होगी पर सिंह उन्हें भीतर कहीं भी दिखाई न दिया और टार्जन गुफा के दूसरे मुहाने से बाहर निकल गये ।

दोनों ओर उन्हें पत्थर की ऊँची ऊँची दीवारें नजर आईं जिसके बीच से एक बड़ी ही संकरी राह ऊपर की ओर गई हुई थी । सिवाय इसके और कोई दूसरी राह गुफा में जाने की न थी ।

बगल ही ओर केवल एक ही वृक्ष दिखाई दे रहा था जिसके अलावा अन्य कोई भी वृक्ष दूर तक दिखाई नहीं देता था ।

कितने ही जानवरों की हड्डियां—जिनके बीच में मनुष्यों की खोपड़ियां भी पड़ी हुई थीं—गुफा के इस मुहाने के आस पास पड़ी हुई थीं जिन्हें देखते ही टार्जन आप ही आप बोल उठे, “मनुष्य-मर्त्त्यो ! याद रख आज रात के लिये टार्जन तेरा स्थान अपने दखल में करेगा !”

कुछ देर तक पेड़ के पास खड़े टार्जन इस बात पर विचार करते रहे कि यदि सामने की सकरी राह पत्थर के ढोकों से भर दी जाय तो वे निश्चिन्त हो कर उस गुफा में सो सकते हैं । अभी टार्जन यह सोच ही रहे थे कि उनके सूक्ष्म कानों में एक ऐसा हलकी आवाज आई जिसने उन्हें एक क्षण चौंका कर दिया । क्षण भर बाद ही उनकी दृष्टि एक ऊँचावर सिंह पर पड़ी जो अपनी मस्तानी चाल से गुफा के मुहाने की ओर बढ़ा चला आ रहा था ।

ऐसे कुसमय में सिंह का आ पहुँचना टार्जन को बहुत ही बुरा मालूम हुआ । एप बन्दरों की भाषा में उन्होंने चिल्ला कर कहा, “गीदड़ के बच्चे ! मैं जंगल का राजा टार्जन हूँ और आज रात भर इस माँद में रहा चाहता हूँ तू वापस लौट जा ?”

पर सिंह वापस नहीं लौटा । एक भर्यकर दहाड़ उसके मुँह से निकली जिसे सुन टार्जन ने पत्थर का एक बड़ा सा टुकड़ा उठा कर उसके मुँह पर मारा । सिंह कब क्या करेगा इसे निश्चिन्त रूप से कोई भी नहीं कह सकता । कई बार ऐसा देखा गया है कि

अपने ऊपर हमला होते देख वह धीरे से पीछे को ओर लौट जाता है टार्जन कई बार ऐसी चालें चल चुके थे और इसी ख्याल से वह पत्थर का टुकड़ा उन्होंने उसकी ओर फेंका भी था परन्तु इसका नतीजा इस समय उलटा ही निकला । क्रोध से उवाला खाता हुआ सिंह भयंकर रूप से दहाड़ उठा और अपनी दुम सीधी कर के तेजी के साथ टार्जन की ओर मूँपटा ।

टार्जन ने छछल कर पेड़ की डाल पकड़ ली और तेजी के साथ ऊपर चढ़ गये । वर्षा इस समय जोरों के साथ हो रही थी अस्तु कुछ देर तक तो सिंह पेड़ के नीचे खड़ा ध्यान से उनकी ओर देखता रहा इसके बाद बहुत ही धीमी चाल से गुफा के मुहाने की ओर बढ़ा ।

टार्जन ने दोनों ओर के ऊँचे करारों की ओर निगाह घुमाई । मामूली आदमियों के लिये उन करारों पर चढ़ना एक दम असंभव था परन्तु टार्जन को उसमें कई स्थान ऐसे दिखाई दिये जिनका सहारा ले कर वे आसानी के साथ ऊपर चढ़ जा सकते थे । वर्षा में रात भर मीज कर जान देना टार्जन ने उचित न समझा और जिस तरह भी हो उस दीवार पर चढ़ कर कोई दूसरा स्थान रात काटने के लिये खोजना ही उन्हें आवश्यक प्रतीत हुआ ।

सिंह के गुफा में घुसते ही टार्जन फौरन जमीन पर कूद पड़े और तेजी के साथ बगल की दीवार की ओर दौड़े । किन्तु सिंह एक बार गुफा में घुसने के बाद फौरन ही बाहर लौट आया और तेजी के साथ टार्जन की ओर मूँपटा । टार्जन उससे कुछ फासले पर थे और जानते थे कि यदि वे शीघ्रता के साथ दीवार पर चढ़ कर

उसकी पहुँच के बाहर हो जा सके तो फिर उन्हें किसी बात का भी भय न रह जायगा ।

तेजी के साथ टार्जन ऊपर की ओर चढ़ने लगे और जब तक कि सिंह उनके समीप पहुँचे वे तीस फीट ऊँचे चढ़ गये थे । एक बार उन्होंने घूम कर पीछे की ओर देखा और तब पुनः सावधानी के साथ ऊपर की ओर चढ़ना आरंभ किया । वे जानते थे कि यदि उनका हाथ जरा भी फिसला तो फिर उनकी जान किसी प्रकार भी नहीं बच सकती ।

क्रमशः ऊपर की ओर चढ़ते हुए वे दीवार के ऊपर पहुँच गये । सिंह नीचे की ओर खड़ा दहाड़ रहा था पर इस ओर जरा भी ध्यान न दे वे वहाँ से आगे की ओर बढ़े ।

परन्तु अभी वे अधिकदूर न गये होंगे कि उनके चित्त में एक नवीन विचार पैदा हुआ जिससे उनके चेहरे पर एक हलकी मुस्क-राहट दौड़ गई । वे पुनः दीवार के ऊपर वापस लौट आये । सिंह इस समय अपना शिकार निकल भागता देख वर्षा से अपने को बचाने की गरज से गुफा के भीतर चला गया था ।

टार्जन ने एक बार अपने चारों ओर देखा । आस पास में उन्हें पत्थर के कितने ही छोटे बड़े टुकड़े पड़े दिखाई दिये । धीरे धीरे पत्थर के उन टुकड़ों को उठा कर उन्होंने नीचे की ओर फेंकना शुरू किया और थोड़ी देर की मेहनत में ही उस सकरे रास्ते को पत्थर से ऐसा भर दिया कि सिंह के बाहर निकलने की राह एक दम बन्द हो गई ।

पत्थरों के घड़ाघड़ गिरने की आवाज सुन कर सिंह पुनः दहाड़ता हुआ बाहर निकला । जैसे ही उसकी निगाह अपने सामने के ओर के बन्द रास्ते पर पड़ी वह और भी जोर जोर से दहाड़ने लगा । परन्तु टार्जन ने इस ओर जरा भी ध्यान न दिया और वहाँ से आगे की ओर चल दिये ।

सारी रात उन्होंने एक भारी पत्थर के नीचे गुजारी और जब सुबह हुई तो वहाँ से सीधे उसी ओर रवाना हुए जिधर से आती हुई तोपों की आवाज वे पहले सुन चुके थे । दिन भर वे उसी प्रकार आगे की ओर बढ़ते गये । रात उन्होंने एक पेड़ पर काटी और तब दूसरे दिन सुबह पुनः अपना सफ़र आरम्भ किया ।

तीसरे पहर के बाद वे एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ से कि जर्मन फौजें धीरे धीरे आगे की ओर बढ़ती साफ दिखाई दे रही थीं । कितने ही हवशी भी उन्हें जर्मन यूनिफार्म पहने दिखाई दिये परन्तु उन के अफसर सभी गोरे थे । कुछ देर तक तो वे अपने स्थान पर छिपे इन लोगों का तमाशा देखते रहे और तब छिपे ही छिपे तेजी के साथ आगे की ओर बढ़ने लगे । जर्मन सिपाहियों को सामने पा कर भी उनकी हत्या उन्होंने इस लिये नहीं की कि ऐसा करना इस समय उनका अभीष्ट न था । इस समय तो वे केवल अपने शत्रुओं को खोज खोज कर उनसे बदला लेने की ही धुन में मस्त थे ।

ज्यों ज्यों वे आगे बढ़ते थे जर्मन सेनाएं भी उन्हें उत्तरोत्तर अधिक होती दिखाई देती थीं । अन्त में शाम के समय वे पेरे,

पहाड़ की तराई में जा पहुँचे जहाँ कितने ही खेमे गड़े हुए उन्हें दिखाई दे रहे थे।

एक बार ध्यान से उन्होंने चारों ओर देखा। वहाँ उन्हें बहुत कम पहरेदार पहरा देते हुए दिखाई दिये। थोड़े बहुत पहरेदार जो उन्हें दिखाई भी दिये वे भी निश्चिन्ती के साथ आपस में गप्पें लड़ाते नजर आये अस्तु अन्धकार होते ही वे बड़ी ही सावधानी के साथ इन खीमों के पास जा पहुँचे और घूम घूम कर चारों ओर की आइट लेने लगे।

एक खीमे के बाहर उन्हें बहुत से हवशी बैठे दिखाई दिये जो आपस में कुछ बातें कर रहे थे। वे उनके समीप जा पहुँचे और ध्यान दे कर उन लोगों की बातें सुनने लगे। एक कह रहा था, “वजीरी लोग लड़े तो बड़ी ही सहादुरी से परन्तु हम लोगों के सामने उनकी एक न चली और सब के सब मारे गये। जब सब खतम हो गये तो कप्तान ने आ कर उस औरत का भी खातमा कर दिया। हमारे कप्तान भी कैसे बहादुर हैं। वे उछल उछल कर हम लोगों को ऐसा उत्साहित करते थे कि हम लोगों ने उनसे एक को भी जिन्दा न छोड़ा। सहकारी लेफ्टिनेन्ट वान गास भी कम बहादुर नहीं हैं। उन्होंने भी आगे बढ़ तथा चिल्ला कर एक घायल वजीरी को कांटियों द्वारा सामने की दीवार में जड़ देने की आज्ञा दी और जब वह दीवार में जड़ दिया गया तो बहुत देर तक उसके छटपटाने का आनन्द लेते रहे। हम सब भी कितनी देर तक यह तमाशा देख देख कर हँसते रहे।”

शिकारी जानवर की तरह खीमे की आड़ में खड़े टार्जन चुपचाप उन लोगों की बातें सुनते रहे। उनकी बातें सुन इस समय उनके हृदय में कैसे कैसे भाव उठते होंगे इसे कौन कह सकता है। सहसा वह सिपाही जो अभी अभी बातें कर रहा था अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ और एक ओर रवाना हुआ। टार्जन भी उसके पीछे हो लिये और एक घनी झाड़ी के पास पहुँचते पहुँचते तक उसके बिल्कुल समीप जा पहुँचे। अब एकाएक वे उसके ऊपर दूट पड़े और उसे जमीन पर पटक दिया। इसी समय लोहे की सी मजबूत छँगलियाँ उसके गर्दन पर जा पहुँचीं जिसके कारण उसके मुँह की चिन्नाहट मुँह में ही रह गई और टार्जन उसे बसीट कर झाड़ियों के बीच ले गये।

इस जगह आ कर उसके गले का दबाव उन्होंने कम कर दिया और उसी की भाषा में बोले, “देखो, खबरदार जो जरा भी आवाज मुँह से निकली।”

हवशी ने एक लम्बी सांस खींची और तब घूम कर देखने लगा कि आखिर उसकी ऐसी गति बनाने वाला है कौन? अन्वकार में वह केवल एक नंगे भूरे रंग के शरीर को अपने ऊपर मुका हुआ भर देख सका परन्तु उस शरीर की भयंकर ताकत वह अभी तक भूला नहीं था अस्तु उससे मुकाबला करने का ख्याल एक बार भी उसके दिल में पैदा नहीं हुआ।”

टार्जन ने उससे पुनः पूछा, “उस अफसर का क्या नाम है जिसने

“उस बंगले पर उस औरत की हत्या की थी जहाँ तुम वजीरि
से लड़े थे ?”

हबशी ने उत्तर दिया, “हाफ्टमन शीन्डर !”

टार्जन,—वह इस समय कहाँ है ?

हबशी,—होना तो उसे यहीं चाहिये किन्तु सम्भव है वह प्रधा
अफसर के बंगले पर चला गया हो । बहुत से अफसर हुक्म के
लिये शाम के वक्त प्रधान अफसर के बंगले पर चले जाया करते हैं ।

टार्जन,—अच्छा उठो और मुझे वहाँ ले चलो । किन्तु या
रक्खो यदि तुमने जरा भी मुझे धोखा देने की नीयत की तो
तुम्हें फौरन ही मार डालूँगा ।

कितने ही खीमों के बीच घुमाता फिरता वह हबशी टार्जन
को एक लम्बी चौड़ी इमारत के पास ले गया और बोला, “वा
देखिये सामने प्रधान अफसर का बँगला है !”

टार्जन समझ गये कि अब वे उस हबशी के साथ और
अधिक आगे नहीं बढ़ सकते अस्तु उसकी ओर घूम कर वे बोले,
“तुमने वसिम्बू वजीरी के सुली पर चढ़ाये जाने में मदद दी थी ?”

हबशी का तमाम शरीर काँप उठा, डरते डरते वह बोला,
“हमें ऐसा करने का हुक्म मिला था हुजूर !”

टार्जन,—किसने हुक्म दिया था ?

हबशी,—सहकारी लेफ्टिनेन्ट वान गास ने हुजूर ! वह भी
यही मौजूद है ।

टार्जन,—खैर मैं उसे भी खोज लूँगा । तुमने वसिम्बू के सुली

पर चढ़ाये जाने में मदद दी थी और उसकी तकलीफ देख कर हँसते थे !

हवशी समझ गया कि अब उसके जान की खैर नहीं किन्तु इस बात पर विचार करने का उसे अधिक समय न मिला । लोहे की उँगलियों पुनः उसके गले पर आ जमीं । वह जमीन पर से हवा में उठा लिया गया । उँगलियों का दबाव गले पर बढ़ने लगा । उसका शरीर दो चार बार हवा में हिला और तब जोर से एक ओर जमीन पर फेंक दिया गया ।

यह काम समाप्त कर के टार्जन जेनरल क्राट के बँगले की ओर बढ़े । केवल एक ही संतरी दर्वाजे पर पहरा दे रहा था । बड़ी ही सावधानी से टार्जन धीरे धीरे उसकी ओर बढ़ने लगे और जब उसके समीप पहुँचे तो धीरे से जमीन पर पर लोट गये । जैसे ही उसका मुँह दूसरी ओर घूमा वे पुनः उसकी ओर खसकने लगे ।

जैसे ही वे उसके समीप पहुँचे उनकी लोहे पेसी मजबूत उँगलियों ने उस संतरी का भी गला पकड़ कर जोर से दबा दिया और उसकी लाश इमारत की ओर ले चले ।

इमारत का ऊपरी खंड एकदम अन्धकारमय था परन्तु निचला खंड रोशनी से जगमगा रहा था । टार्जन को सामने ही की ओर एक बड़ा कमरा तथा उसके पीछे एक छोटा कमरा भी दिखाई दिया । बड़े कमरे में कुछ अफसर तो बैठे थे तथा कुछ इधर उधर टहल कर आपस में बातें कर रहे थे ।

छोटे कमरे में एक अफसर कुर्सी पर बैठा हुआ था और सामने के टेबुल पर तेल का एक लम्प जल रहा था। कुछ अफसर उसके सामने भी बैठे हुए थे और दो अफसर अदब के साथ सामने की ओर खड़े थे। सहसा दर्वाजे पर धक्का देने की आवाज सुनाई दी। एक संतरी दर्वाजा खोल कर सामने आया और अदब से मुक कर बोला, “फ़ालिन कर्चर हाजिर है हुजूर।”

“भीतर आने दो” उस अफसर ने जरा तीखी आवाज कहा।

शीघ्र ही फ़ालिन ने कमरे में पैर रक्खा, बैठे हुए अफसर उठ कर खड़े हो गये और सभी ने अदब के साथ उसकी अभिनय की। उसने मुसकुरा कर सब की ओर देखा। फ़ालिन जहाँ वर्ष की एक अद्वितीय सुन्दरी थी !”

वह धीरे धीरे प्रधान अफसर के टेबुल के पास पहुँची और अपने भीतरी जेब से कागज का एक पुलिन्दा निकाल कर उस प्रधान अफसर की ओर बढ़ाया।

प्रधान अफसर ने उसे बैठने की आज्ञा दी और तब कागज का वह पुलिन्दा उसके हाथ से ले कर ध्यान से उसे पढ़ने लगे। टार्जन समझ गये कि यह औरत अवश्य कोई गुप्तचर है। अफसर ने कागज पढ़ने बाद फ़ालिन की ओर देखा और बोले, “ठीक है” इसके बाद एक सिपाही की ओर देख कर बोले “मेजर शीन्डर को जल्दी हाजिर करो !”

फौजी सिपाही फौरन सलाम कर के कमरे के बाहर हो गया।

जिन लोगों की बातचीत से ही टार्जन समझ गये कि जर्मन फौज आयदाद में अंग्रेजी फौज से कहीं अधिक है और इसी कारण अंग्रेजी फौज को भयंकर क्षति उठानी पड़ रही है।

जिस स्थान पर इस समय टार्जन खड़े थे वहां उन्हें कोई भी देख नहीं सकता था किन्तु वे सभी को देख सकते थे। चुपचाप अपने स्थान पर खड़े वे शीन्डर के आने की राह देखने लगे। थोड़ी ही देर बाद एक कद्दावर जवान जिसकी मूर्छें घंती तथा ऊपर की ओर चढ़ी हुई थीं उनके सामने आ कर अदब से सलाम करने बाद एक ओर खड़ा हो गया।

प्रधान अफसर बोला "मैं मेजर शीन्डर से आपका परिचय कराता हुआ....."

इससे अधिक प्रधान अफसर के मुँह से कुछ सुनने की टार्जन को ताव न थी। खिड़की की सिल्ली पर एक हाथ रख कर वे एक ही छलांग में कमरे के भीतर जा पहुँचे। टेबुल पर रक्खा लम्प उनके हाथ के एक ही मटके में प्रधान अफसर के बाहर निकले हुए पेट पर जा लगा जो बेतरह घबड़ा कर कुर्सी समेत पीछे की ओर लुढ़क गये। दो फौजी सिपाही टार्जन को पकड़ने की नीयत से उसको ओर मुँके। टार्जन ने उनमें से एक को उठा लिया और जेर से दूसरे के ऊपर फेंक दिया। फ़ालिन भाग कर दीवार के पास जा खड़ी हुई थी परन्तु टार्जन का ध्यान इस समय केवल शीन्डर की ओर ही था। उछल कर उन्होंने शीन्डर को पकड़ लिया

और उसे अपने कंधे पर लाद इस फुर्ती से खिड़की के बाहर गये कि सब लोग मुँह ही ताकते रह गये ।

दो ही मिनट बाद टार्जन शीन्डर को लिये हुए बगल के पेड़ों की मुरमुट में लापता हो गये ।

टार्जन इस समय शीन्डर का गला जोर से दबाये हुए कुछ दूर निकल आने पर उन्होंने उसका गला छोड़ दिया बोले, “खबरदार जो जरा भी आवाज मुँह से निकली ।”

शीन्डर को आगे कर टार्जन वरावर आगे की ओर बढ़ते यहाँ तक कि जब अधिक रात बीत जाने पर उन्होंने रेलवे लाइन के पार किया तो किसी के पीछा करने की आशंका उन्हें ही कम रह गई ।

अब टार्जन को यह ख्याल पैदा हुआ कि इस दुष्ट से किस तरह पर बदला लेना चाहिये । वे किसी को तकलीफ दे कर मारने बिल्कुल ही पक्षपाती न थे किन्तु जेन क्लेटन की हत्या करने का तो सवाल ही दूसरा था ।

समूची रात टार्जन अपने कैदी को भाले की नोक से हांक हुए आगे की ओर बढ़ते चले गये । मुँह से कुछ बोलने की मानों वे कसम ही खा चुके थे । उनके इस प्रकार चुप रहने शीन्डर के हृदय में न मालूम कितने ही तरह की आशंकाएँ पैदा कर दीं । उसने कई बार उनसे कितने ही सवाल करने चाहे पर हर बार ही भाले की चोट खा कर उसे चुप रह जाना पड़ा ।

सुबह होते ही टार्जन के हृदय में एक नवीन विचार पैदा हुआ

शीन्डर को किस प्रकार की सजा मिलनी चाहिये इसका उन्होंने निश्चय कर लिया था। एक हलकी मुस्कुराहट उनके चेहरे पर दिखाई दी।

रास्ते में शिकार कर के स्वयं खाते तथा शीन्डर को खिलाते हुए तीसरे दिन दोपहर को टार्जन अपने गन्तव्य स्थान पर जा पहुँचे। यह उसी दीवार का ऊपरी भाग था जहाँ उन्होंने उस भयंकर सिंह को कैद कर रखा था। यहाँ आ कर शीन्डर ने उसे नीचे की ओर उतरने की आज्ञा दी। वह नीचे उतरने से हिचकिचाया किन्तु उसे नीचे की ओर ढकेलते हुए टार्जन बोले, “मुनो शीन्डर! मैं वही लार्ड ग्रेस्टोक हूँ जिसके स्त्री की तुमने वजीरियों के देश में हत्या की थी। कदाचित्त अब तुम समझ गये होगे कि मैं तुम्हें क्यों पकड़ लाया हूँ। उतरो!”

जर्मन घुटनों के बल जमीन पर बैठ गया और बोला, “दया करो, मैंने तुम्हारे स्त्री की हत्या नहीं की है मैं इस बारे में कुछ भी नहीं जानता।”

टार्जन को निश्चय था कि वह झूठ बोल रहा है। भाले की नोक उसकी ओर बढ़ाते हुए वे बोले, “फजूल वकवाद करने की जरूरत नहीं, उतरो!”

अपनी अनुनय विनय का कुछ भी फल न होते देख लाचार शीन्डर को नीचे की ओर उतरना पड़ा। टार्जन उसे सहायता दे कर नीचे की ओर उतारने लगे और जब नीचे की सतह के कुछ ही फासले पर रह गये तो बोले, “देखो सावधान वह सामने की

और जो गुफा देखते हो उसके भीतर सिंह बैठा हुआ है। बहुत भूखा है। यदि उसके बाहर निकलने के पहले तुम पेड़ तक पहुँच कर उसके ऊपर चढ़ सको तो संभव है कुछ दिनों तक और जिन्दा रह पाओ किन्तु जब तुम भूख प्यास से इतने कमजोर हो जाओगे कि पेड़ पर अपने को सम्हाल न सको तो तब तुम्हें खा कर अपनी भूख बुझा सकेगा। अच्छा अब दौड़ो।

भय से कांपता हुआ वह तेजी के साथ पेड़ की ओर दौड़ा। अभी वह पेड़ के समीप पहुँचा ही था कि भूख से व्याकुल भयानक सिंह दहाड़ता हुआ गुफा से बाहर निकला। और अपना भोजन सामने देख फुर्ती से जर्मन को ओर फेंका।

टार्जन मुस्कराते हुए यह दिलचस्प तमाशा देख रहे थे। धीरे ऊपर चढ़ते हुए अब वे दीवार के ऊपरी भाग तक पहुँच गए थे। वह जर्मन इस समय उन्हें पेड़ पर चढ़ा दिखाई दिया। नीचे की ओर सिंह खड़ा भयानक रूप से दहाड़ रहा था।

टार्जन ने एक बार आसमान की ओर देखा और तब जंगल में मुँह से एक बन्दर की विजयनाद ने निकल कर समूचे जंगल में प्रतिध्वनित कर दिया।

जर्मन सेना में



टार्जन का बदला अभी पूरा नहीं हुआ था। अभी कितने ही जर्मन जीवित थे जिनकी हत्या करते करते कदाचित् उनका समूचा जीवन धीत जाता किन्तु इससे भी उसकी मरी हुई प्राणप्यारी जैन को वापस आने वाली थी नहीं।

जो कुछ भी हो आनंद से शिकार खेलते हुए वे पुनः किलि-जारे पर्वत के दक्षिणी भाग में जा पहुँचे और जर्मनस्त्रीमों की ओर बढ़े। वे जानते थे कि जर्मनों के हाथ अंग्रेज लोग भारी क्षति उठा चुके हैं अस्तु जहां तक हो सके जर्मनों को क्षति पहुँचाना उन्होंने अपना प्रधान ध्येय बना लिया।

झाड़ियों के बीच से जिस समय वे बाहर निकले उन्होंने अपने को पहाड़ की एक ऐसी ऊँचाई पर पाया जहां से पन्द्रह गोट नीचे एक जर्मन उन्हें पत्थर की आड़ में बैठा दिखाई दिया।

वह आदमी अवश्य कोई अच्छा निशानेबाज रहा होगा क्योंकि यद्यपि उसके सामने ही की ओर अन्य जर्मन लोग अंग्रेजी पर गोलियों की वर्षा कर रहे थे। वह उनके सिर के ऊपर अपनी गोलियां चलाता हुआ चुन चुन कर अंग्रेजों की हत्या कर रहा था।

टार्जन ने ध्यान से उस ओर देखा जिधर अंग्रेजी सेना पड़ाव पड़ा हुआ था। इस जर्मन की गोलियां खा कर सिपाही धड़ाधड़ जमीन पर गिर रहे थे। एक ही छलांग में कूद कर टार्जन उस जर्मन की पीठ पर जा पहुँचे और मजबूत सँगलियों से उन्होंने उसका गला मजबूती के साथ दबाया। बिना अपने ऊपर इस प्रकार अकस्मात हमला करने की सूरत देखे ही वह जर्मन मुर्दा हो कर जमीन पर गिरा हुआ हो गया।

उसे छोड़ कर टार्जन उठ खड़े हुए। नीचे की ओर जर्मन खाइयाँ साफ दिखाई दे रही थीं। उनके बीच। अफसर तथा फौजी सिपाही भी उन्हें स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। जिनके आगे की ओर लगी मशीनगन सामने की ओर अंग्रेजी पड़ाव पर गोलियों की वर्षा कर रही थी। मशीनगन के छिपे स्थान पर लगी थी जहां अंग्रेजी फौज उसे किसी प्रकार नहीं देख सकती थी।

टार्जन ने उस जर्मन के हाथ से कूट कर जमीन पर डूँई बन्दूक को उठा लिया। बन्दूक बहुत ही अच्छी थी।

उसमें एक छोटा सा टेलिस्कोप भी लगा हुआ था। उन्होंने उस बन्दूक की पहले तो अच्छी तरह जांच की इसके बाद अपने कंधे से सटा कर तथा टेलिस्कोप का फासला ठीक कर उन्होंने अपना निशाना ठीक किया। टार्जन एक अच्छे निशानेबाज थे। अपने प्रभ्य देशीय मित्रों के साथ बन्दूकों से बड़े बड़े जानवरों का शिकार करने का उन्हें कई बार मौका पड़ चुका था। उनके वेहरे पर एक हलफी मुक्कुराइट दिखाई दी। आज से अच्छा शिकार का मौका मिला उन्हें और कब मिल सकता था। उन्होंने निशाना साध कर बन्दूक का घोड़ा दबाया। एक आवाज हुई और मशीनगन चलानेवाला जर्मन लुढ़क कर जमीन पर गिरा रहा। तीन मिनट के अन्दर सभी मशीनगन चलानेवालों का टार्जन ने खातमा कर दिया इसके बाद एक अफसर तथा उसके साथ आते हुए तीन फौजी जवानों को भी उन्होंने मौत के घाट उतारा।

अब उन्होंने टेलिस्कोप द्वारा पुनः देखना शुरू किया उनकी हाहिनी ओर बहुत अधिक फासले पर एक और मशीनगन चलाई जा रही थी। इसके चलाने वालों में से भी उन्होंने एक को जिन्दा न छोड़ा परन्तु इस समय तक जर्मन फौज को इस बात का पता चल गया था कि अवश्य किसी न किसी प्रकार की मदद की हुई है और कोई निशानेबाज ऐसे स्थान पर जा पहुँचा है जहाँ से वह एक एक कर के उनके आदमियों का खातमा कर रहा है। उसकी खोज में कितने ही पेरिस्कोप काम में लाये जाने

लगे। फौरन ही उन लोगों ने टार्जन का पता लगा लिया। एक मशीनगन का मुँह उनकी ओर घुमा दिया गया परन्तु पहले कि मशीनगन काम में लाई जाय उसके सभी चलानेवाले जमीन सूँघते नजर आने लगे किन्तु उनका स्थान ग्रहण करने वाले और भी कितने ही लोग थे जिन्होंने अपने अफसोसपूर्ण आज़ा से इच्छा न रहते हुए भी उस काम का भार अपने कंधों में लिया। उसी समय दो और मशीनगनों का मुँह भी उनकी ओर घुमा दिया गया।

अब वहाँ और अधिक ठहरने का मौका न देख टार्जन अपने हाथ की बन्दूक जमीन पर फेंक दी और आस पास की पहाड़ी में लापता हो गये। बहुत देर तक वे मशीनगनों की पीड़ाहट सुनते रहे और समझ गये कि जिस स्थान पर कुछ पहले वे खड़े थे वह स्थान गोलियों से अब तक पट गया होना। एक हलकी मुस्कराहट यह सोच कर उनके चेहरे पर दिखाई कि जर्मन लोग किस प्रकार अपनी गोलियाँ बेकार बर्बाद कर रहे हैं। मन ही मन वे बोले, वसिम्बू वजीरी को सुली पर चढ़ाई की काफी सजा इन लोगों को मिल गई किन्तु जेन ! जेन ! हत्या का बदला किसी प्रकार भी चुकाया नहीं जा सकता।

अन्धकार होने के बाद वे चक्कर काटते हुए ब्रिटिश पड़ाव के पास पहुँचे और बाहरी संतरियों के पार कर के बाँध के पास जा पहुँचे। उन्हें आते किसी ने न देखा। किसी को उन वहाँ होने की खबर न थी !

दूसरी रोडेशियन फौज अन्य फौजों के पीछे की ओर पड़ती थी। अस्तु शत्रुओं की निगाह अपने ऊपर पड़ने का उन्हें जरा भी खतरा न था। इसी कारण वहाँ रोशनियों वालने की आज्ञा भी मिल गई थी। कर्नल केपेल मैदान में एक टेबुल के पास बैठे हुए थे और उनके सामने के टेबुल पर एक फौजी नकशा बिछा हुआ था जिसके पास एक लालटेन बल रही थी। उसे खते हुए वे आस पास बैठे कितने ही अफसरों से बातें भी करते जाते थे।

उनके ऊपर की ओर एक विशाल वृक्ष की छाया थी। वह इसी बात पर हो रही थी कि शत्रुओं की फौजी संख्या उनकी फौजी संख्या से कहीं अधिक है जिसके कारण आगे बढ़ना तो या अपने स्थान पर डटे रहना तक उनके लिये एक भारी समस्या दिखाई दे रही थी। अब तक उन्हें शत्रुओं के मशीनगनों की भारी हानि उठानी पड़ चुकी थी और केपेल का अधिक ध्यान वहीं मशीनगनों की ही ओर था।

एक अफसर कह रहा था, “आज दोपहर के वक्त उन लोगों का हमला कुछ देर तक के लिये एक दम बन्द हो गया था। उनके फौज में भी कुछ खलबली सी दिखाई दे रही थी परन्तु बहुत ध्यान देने पर भी मैं इसके वास्तविक कारण का पता न लगा सका। कुछ देर के लिये तो मुझे ऐसा सन्देह हो गया था कि उनके ऊपर किसी ने पीछे की ओर से हमला किया है। आपको पता होगा मैंने आपको उसी समय इस बात की सूचना दी थी।”

इसी समय ऊपर के वृक्ष में पत्तों की खड़खड़ाहट सुनाई
और दूसरे ही क्षण एक फुर्तीला जवान उस पर से कूद कर
लोगों के सामने आ खड़ा हुआ। कुछ देर तक लोग जंगली
में टार्जन को देख कर आश्चर्य करते रहे इसके बाद सभी
निगाह कर्नल की ओर घूमी।

कर्नल ने जरा कड़ी आवाज में टार्जन से पूछा “तुम कौन हो
“जंगल का राजा टार्जन !” टार्जन ने गर्व से छाती
कर उत्तर दिया। इसी समय एक मेजर बोल उठा, “अ
ग्रेस्टोक !” और तब उसने उठ कर अपना हाथ टार्जन की
बढ़ाया, साथ ही बोला “हम कीजियेगा मैंने पहले आप
नहीं पहचाना। मेरी आपकी आखिरी मुलाकात लन्दन में
थी जब आप शाम के कपड़े पहने हुए थे। उस समय और
की आपकी सूरत में तो जमीन आसमान का अन्तर दि
दिखाई देता है।”

टार्जन ने मुस्कुरा कर कर्नल की ओर देखा और
“मैंने आप लोगों की बातें सुनीं। मैं अभी जर्मन पड़ाव
ओर से चला आ रहा हूँ और आप लोगों की सहायता में
सकता हूँ।”

कर्नल ने मेजर की ओर देखा जिसने उठ कर टार्जन
उससे परिचय कराया। संक्षेप में टार्जन ने उन्हें बताया
किस कारण वे जर्मनों के पीछे पड़े हैं इसके बाद कर्नल ने
पूछा, “और अब आप हमलोगों का साथ दिया चाहते हैं !”

अपना सिर हिलाते हुए टार्जन बोले, “यह मेरी इच्छा पर निर्भर है” मैं अपने ढंग से युद्ध करूँगा। आप लोगों के कायदे कानून का पाबन्द नहीं रह सकता। फिर भी मैं आपकी सहायता कर सकता हूँ। मैं जिस समय भी चाहूँ जर्मन मोर्चेबन्दी में घुस जा सकता हूँ।”

फेपेल ने मुस्करा कर सिर हिलाया और बोले, “यह काम सहज नहीं है इसे पूरा करने के लिये मेरे दो अफसर जा कर अपनी जानें गँवा चुके हैं।”

टार्जन हँस कर बोले, “क्या उनके पड़ाव में घुसना, ब्रिटिश पड़ाव में घुसने से भी अधिक मुश्किल है?”

कर्नल उनकी बात का कुछ उत्तर दिया ही चाहते थे कि कोई नया ख्याल उनके मस्तिष्क में पैदा हुआ। टार्जन की ओर देख कर वे बोले, “आप यहाँ तक कैसे पहुँचे? आपको हमारे संतरियों के बीच से कौन यहां तक लाया?”

टार्जन ने गंभीर भाव से उत्तर दिया, “जर्मन पड़ाव का चक्कर काटने बाद मैं आपके पड़ाव में उपस्थित हुआ हूँ पता लगाइये मुझे यहां आते किसने देखा है?”

फेपेल, “परन्तु आपके साथ कौन आया?”

टार्जन—कोई नहीं, मैं अकेला ही आया हूँ।

इतना कह कह तथा अपनी छाती फुला कर टार्जन बोले, सुनिये कर्नल साहब! आप सभ्य देश के निवासी हैं अस्तु जिस समय आप जंगल में आते हैं उस समय एक प्रकार से मुर्दों के

समान हैं। यहां पर तो आप लोगों से कहीं अधिक होशियारी है। एक छोटे से छोटा बन्दर है। आप लोग यहां पर इसीलिए जिन्दा हैं कि आपकी संख्या अधिक है और आप हथियारों से सुसज्जित हैं! बुद्धि की भी आप लोगों में कमी नहीं है। आप आप लोगों के समान बुद्धि रखने वाले एक सौ एप बन्दर भी मिल जाते तो मैं समूचे जर्मनों को यहां से खदेड़ कर समुद्र के पार कर देता। आप लोगों की किस्मत है कि जंगल के खूंखार जानवर एक साथ मिल कर कोई काम नहीं कर सकते। यदि ऐसा होता तो अफ्रीका के जंगलों में एक आदमी तक की सुरत नजर न आती। खैर इन बातों को जाने दीजिये मैं आपके सहायता का वचन दे चुका हूँ। कहिये क्या आप जानना चाहते हैं कि शत्रुओं की मशीनगनों किस स्थान पर लगी हुई हैं।”

कर्नल से सिर हिला कर अपनी इच्छा प्रगट की और टांज ने नक्शे पर उन तीन मशीनगनों का स्थान बता दिया जो आप लोगों को बेहद परेशान किये हुई थीं, इसके बाद बोले, “मशीनगनों के पीछे का यह स्थान सुरक्षित है। अच्छा ठहरी यदि आप चाहें तो उनकी खाइयों को अपने आदमियों से भर दे सकते हैं और साथ ही मशीनगनों पर भी कब्जा कर सकते हैं।”

कर्नल केपेल पुनः मुसकुराते हुए सिर हिला कर बोले, “मुनने में तो यह बात बड़ी ही सहज मालूम होती है!”

टार्जन ने उत्तर दिया, “मेरे लिये यह काम एक दम सहज

ही है जनाब ! बिना बन्दूक की एक गोली चलाये ही मैं खाई का एक भाग खाली करा दे सकता हूँ । मैं जंगल में पैदा हुआ हूँ और जंगल में ही पला हूँ । दूसरी रात को पुनः मेरी राह देखियेगा अच्छा अब मैं जाता हूँ ।”

कर्नल बोले, “ठहरिये ! मैं आपके साथ एक अफसर कर देता हूँ जो आपको हमारे पड़ाव के बाहर पहुँचा देगा ।”

मुस्कुरा कर टार्जन वहाँ से चलते हुए । जिस समय वे पड़ाव के बाहर जा रहे थे उन्होंने एक छोटे कद के व्यक्ति को अफसर का भारी ओवरकोट पहने एक स्थान पर खड़े देखा । कोट का कालर ऊपर की ओर मुड़ा हुआ था और टोप माथे की ओर अधिक झुका हुआ था । परन्तु जैसे ही टार्जन आगे बढ़े अग्नि की रोशनी ने उस व्यक्ति के मुँह पर पड़ कर उसकी सूरत टार्जन को स्पष्ट रूप से दिखा दी । वह शक्ल उन्हें कुछ परिचित सी मालूम पड़ी किन्तु उसे कहां देखा है इसका ख्याल उन्हें न आया ।

तमाम रात टार्जन क्लिंमंजारो की तराई में आगे की ओर बढ़ते रहे । सुबह होने से तीन घंटा पहले वे एक पेड़ पर कुछ घंटों के लिये निद्रा लेने के इरादे से जा चढ़े ।



सिंह का भोजन

जिस समय टार्जन की नींद खुली, सूर्य भगवान बहुत अचढ़ आये थे। वे फौरन पेड़ से नीचे उतर आये। सामने जंगली जानवरों के चलने की एक राह पर उनकी दृष्टि पड़ी और वे उसी पर आगे बढ़ने लगे।

सहसा उनकी नाक में होर्टा जंगली सूअर की गन्ध आई। अब वे विशेष रूप से सावधान हो गये और एक पेड़ पर चढ़े। थोड़ी ही देर बाद उनकी निगाह सूअरों के एक मुन्हा पड़ी। फौरन ही उन्होंने अपनी कमान हाथ में ले ली और उसकी रीर चढ़ाए कर उसे भरपूर ताकत से एक भारी सूअर पर फेंक दिया। टार्जन के मुँह में और भी कई तीर थे। एक तीर के छूटते ही उन्होंने फौरन दूसरा तीर कमान पर चढ़ाया। सूअरों में लड़ाव बली मच गई और वे इधर उधर चक्कर काटने लगे। यहाँ तक

पांच मिनट के अन्दर ही छः सूअर जमीन पर पड़े दिखाई देने लगे । बाकी सब सूअर तेजी के साथ जंगल की ओर भागे ।

टार्जन जमीन पर कूद आये और उन जख्मी सूअरों के पास जा पहुँचे । उनमें जो अब तक जिन्दा थे उन्हें उन्होंने ठिकाने लगा दिया और तब सभी की खाल खींचने लगे । वे तन मन से अपने काम में लगे हुए थे मानों दूसरी ओर उनका ध्यान ही न हो परन्तु उनके कान और नाक किसी दूसरी ही ओर अपना काम कर रहे थे । कान तो बहुत दूर तक जंगल की आवाजों पर ध्यान रखे थे और नाक उस ओर से गुजरने वाली गंधों पर ! इस समय उनके नाक ने सेबर सिंहनी के पीछे की ओर से आने की खबर टार्जन को दी ।

परन्तु टार्जन ने अपना मुँह तक न घुमाया । उन्हें मालूम था कि वह अभी पास नहीं पहुँची है । वे समझ गये कि मरे हुए सूअरों की गंध पा कर ही वह उस ओर आ रही हैं । बड़ी ही निश्चिन्ती से छत्रों सूअरों के चमड़े तथा एक सूअर को उन्होंने उठा कर अपने कन्वे पर रख लिया और जैसे ही दो पेड़ों के बीच में उन्हें सिंहनी की शक्ल दिखाई दी उछल कर उन्होंने पास के पेड़ की डाल पकड़ ली और आसानी के साथ ऊपर चढ़ गये । पेड़ की एक मोटी शाखा पर उन्होंने सूअरों के वे चमड़े रख दिये और स्वयं धीरे धीरे मांस के टुकड़े काट काट कर खाने लगे । सिंहनी ने पेड़ों के बीच से निकल कर एक बार टार्जन की ओर देखा और तब सूअरों के पास पहुँच उसने उन्हें खाना शुरू किया ।

टार्जन मन ही मन हँसे । एक बार एक पुराने शिकारी ने उसे कहा था कि सिंह दूसरे का मारा हुआ शिकार नहीं खाते परन्तु टार्जन को इस बात का अधिक अनुभव था और उसका ख़बल प्रमाण भी इस समय उनके सामने मौजूद था ।

भोजन करने बाद उन्होंने पुनः अपना कार्य आरम्भ किया । उन चमड़ों में से उन्होंने आध इंच चौड़ी पट्टियाँ काटनी शुरू की । जब ऐसी कितनी ही पट्टियाँ तैयार हो गईं तो इनके द्वारा उन्होंने चमड़ों को एक साथ सीना शुरू किया और जब ये भी सिल गये तो उनके किनारे पर लगभग चार चार पाँच पाँच इंच के फासों पर उन्होंने छेद बनाने शुरू किये जिसमें एक लम्बी चमड़े की डोरी डाल कर उन्होंने उसे एक भारी बटुर की शक्ल का तैयार कर लिया ।

इसी प्रकार उन्होंने चार छोटे छोटे बटुर और तैयार किये और तबसूअर का बचा हुआ मांस पेड़ के एक खोखले में रख कर पेड़ों ही पेड़ों पर कूदते हुए उत्तर-पश्चिम की ओर रवाना हुए । चलते चलते अन्त में वे उसी घाटी के पास पहुँचे जहाँ उन्होंने न्यूमा सिंह को बन्द कर रखा था । वहाँ पहुँच कर उन्होंने नीचे की ओर देखा । पेड़ अथवा आस पास शीन्डर का कहीं भी पता न था । सिंह भी कहीं दिखाई नहीं देता था । शीन्डर की गति का ध्यान कर वे मन ही मन मुस्कराये ।

धीरे धीरे वे बड़ी सावधानी से नीचे की ओर उतरने लगे क्योंकि वे जानते थे कि सिंह गुफा के भीतर ही कहीं होगा ।

रह कर उनकी निगाह खोह के मुहाने की ओर सशक्त दृष्टि से जा पड़ती थी। जब वे घाटी की सतह पर जा पहुँचे तो उनका खतरा अधिक बढ़ गया। यदि वे सही सलामत अपने और उस पेड़ के बीच का आधा रास्ता भी तय कर सके तब तो फिर चिन्ता की कोई बात नहीं परन्तु यदि सिंह इस फासले को तय करने के पहले ही निकल आया तब अवश्य उनके लिये एक विकट समस्या उपस्थित हो जायगी।

जरा भी आवाज न होने पावे इस बात का ख्याल रखते हुए वे चुपचाप उस पेड़ की ओर बढ़ने लगे। उन्होंने आधा फासला तय कर लिया परन्तु सिंह तब तक भी दिखाई न दिया। पेड़ की निचली डाल पर पहुँचने पर उन्हें इस बात में भी सन्देह मालूम होने लगा कि सिंह गुफा के भीतर है भी अथवा नहीं। संभव है वह भाग गया हो अथवा मर ही गया हो।

एक बार टार्जन की इच्छा हुई कि पेड़ से उतर कर इस बात की जांच करें परन्तु फौरन ही उनका यह ख्याल बदल गया, साथ ही उनके मुँह से एक भारी गुराँहट निकली। खोह के भीतर उन्हें किसी के चलने की आहट सुनाई दी और क्षण भर बाद ही न्यूमा सिंह गुफा से बाहर निकल कर खड़ा हो गया। जब उसकी निगाह टार्जन पर पड़ी तो एकाएक उसका क्रोध प्रज्वलित हो उठा। उसकी आँखों तथा नाक ने बता दिया कि उसकी विपत्ति का कारण इस समय उसके सामने ही है। दूसरे ही क्षण भूख से पीड़ित वह सिंह मयानक रूप से गरज कर उस पेड़ की ओर मूँढ़ा।

पेड़ के पास पहुँच कर वह बार बार उस पर चढ़ने का प्रयत्न करने लगा। दो बार उसने उछल कर पेड़ की निचली पकड़ने का प्रयत्न भी किया पर दोनों ही बार वह नीचे जमीन पर आ रहा।

अब टार्जन ने अधिक समय बर्बाद करना उचित न समझा अपनी बगल से उन्होंने अपना घास का रस्सा उतार लिया और पेड़ की दो मजबूत शाखाओं पर अपने दोनों पैर अड़ा कर चढ़ने लगे। रस्से का फन्दा इस समय उनके दाहिने हाथ में था बाँकी का रस्सा उन्होंने अपने बायें हाथ में पकड़ा हुआ था।

अब वे सिंह को क्रोधित करने का प्रयत्न करने लगे। नतीजा यह हुआ कि वह पुनः एक बार भयानक रूप से गरज कर उस की ओर उछला। फौरन ही टार्जन ने रस्से का वह फन्दा उस की मुँह की ओर फेंका जो उसके गले में जा पड़ा। गले में पड़ते ही उसे उन्होंने फटका दे कर कस दिया और अपनी पीठ पेड़ की शाखा के साथ सटा कर उसे ऊपर की ओर खींचने लगे। जब सिंह हवा में झूलने लगा तो रस्से का दूसरा सिरा उन्होंने मजबूती के साथ पेड़ की एक डाल में बांध दिया और स्वयं कूद कर जमीन पर आ रहे।

सिंह इस समय बेतरह उछल कूद मचा रहा था और अगले पंजों से रह रह कर रस्से के तोड़ने का प्रयत्न कर रहा था। टार्जन को सन्देह हुआ कि कहीं वह रस्से को तोड़ न डाले अस्तु उन्होंने अपना काम शीघ्र ही समाप्त कर देने का निश्चय किया।

सब से पहले उन्होंने चमड़े का बड़ा थैला सिंह के सिर में डाल कर उसके गले में मजबूती के साथ कस दिया ।

अब पुनः पेड़ पर चढ़ कर उन्होंने रस्से का दूसरा सिरा खोल लिया और धीरे धीरे सिंह को जमीन पर उतारा ।

गला घुट जाने के कारण सिंह इस समय प्रायः बेजान सा हो रहा था । टार्जन जमीन पर कूद आये और उसके चारों पंजों में उन्होंने उन चारों छोटी थैलियों को कस दिया । इतना काम समाप्त करने बाद अब उन्हें सिंह की ओर से पूरी निश्चिन्ती हो हो गई । उन्होंने छुरा ले कर उसकी आँखों के पास दो छेद भाँ बना दिये जिसमें से वह देख भी सके और सांस भी ले सके ।

अब सिंह धीरे धीरे होश में आने के लक्षण प्रगट कर रहा था । टार्जन ने रस्से का एक ऐसा फन्दा बनाया जो कस न सके और उसे उसके गले में बांध कर पेड़ के साथ बांध दिया ।

सिंह ने होश में आने पर बेतरह उछल कूद मचाई । टार्जन चुपचाप खड़े उसका तमाशा देख रहे थे । महा बलवान सिंह कहीं उन थैलों को फाड़ चीथ तो नहीं डालता इस बात का निश्चय कर लेना उनके लिये अत्यन्त आवश्यक था ।

जब उसकी उछल कूद क्रमशः बहुत अधिक बढ़ गई तो उन्होंने अपने भाले का एक बार उसके सिर पर किया । सिंह अपने दोनों पिछले पैरों के बल खड़ा हो गया और उनकी ओर झुका । टार्जन ने भाले का एक दूसरा बार उसके कान पर किया जिससे वह एक प्रकार से लुढ़क सा गया । जब जब वह उछलता टार्जन

उसी प्रकार उसकी मरम्मत करते। चौथी बार कोशिश का सिंह समझ गया कि इस बार उसकी मेंट अपने उस्ताद से हुई है अस्तु अपनी दुम नीची कर के वह चुपचाप जमीन पड़ रहा।

अब टार्जन उसे उसी प्रकार पेड़ से बंधा छोड़ कर उस पर पहुँचे जिसे पत्थरों से बन्द कर के उन्होंने सिंह के बाहर का रास्ता रोक दिया था। धीरे धीरे वे रास्ता साफ करने यहां तक कि सिंह के गुरजने लायक रास्ता उन्होंने तैयार लिया।

अब वे पुनः पेड़ के पास पहुँचे और रस्ता उन्होंने पेड़ खोल लिया। सिंह ने पुनः एक बार गहरी उछल कूद मचा परन्तु अपने भाले की चोट से बराबर उसकी मरम्मत करते टार्जन उसे बराबर आगे की ओर ही खदेड़ ले चले। क्रमशः यह समझ गया कि उसका उछलना कूदना बेकार है अस्तु एक दम शान्त हो गया।

शाम तक ये लोग बराबर आगे बढ़ते गये इसके बाद टार्जन ने उसके गले का रस्ता एक पेड़ के साथ बांध दिया और शिकार की खोज में निकले। शीघ्र ही एक हरिन उनके हाथ गया जिससे उन्होंने अपनी भूख शान्त की और तब आराम एक पेड़ पर चढ़ कर सो रहे। सिंह को भोजन कराना उचित न समझा क्योंकि ऐसा करने से उसका सम्हालना लिये एक दम असम्भव हो जाता।

दूसरे दिन सुबह सफर आरम्भ हुआ और किलिमंजारो की राई में ये लोग पूरब की ओर बढ़ने लगे। जंगली जानवर तो न लोगों पर निगाह पड़ते ही भाग निकलते थे क्योंकि एक तो सिंह की गन्ध मात्र ही उन लोगों के दिल में दहशत पैदा कर देने लिये काफ़ी थी दूसरे सिंह की गंध रखने वाले जानवर को ऐसी कल देख कर तो वे लोग और भी अधिक दहशत खा गये।

सेवर सिंहनी अपने जोड़े की तथा उसके साथ ही साथ नुप्य तथा सूअर के चमड़े की गंध पा इस बात का पता लगाने लिये इन लोगों की ओर बढ़ने लगी। उसके मुँह से निकली लकी गुरगुराहट सिंह तथा टार्जन दोनों ही के कानों में पड़ी।

टार्जन ने फौरन ही अपना भाला सम्हाला। सिंह भी खड़ा हो गया और उसी ओर देखने लगा जिधर से सिंहनी इन लोगों की ओर बढ़ी आ रही थी। सिंह के गले से भी एक लकी गुरगुराहट निकली और वह ध्यान से सिंहनी की ओर देखने लगा।

अब सिंहनी एक दम मैदान में निकल आई परन्तु उसके छोटे पीछे आते हुए जिन सिंहों पर टार्जन की निगाह पड़ी उन्हें ख एक बार वे भी सहम उठे। चार कहावर सिंह सिंहनी के छोटे पीछे चले आ रहे थे।

यदि इस समय टार्जन अपने सिंह को जबर्दस्ती आगे बढ़ाने प्रयत्न करते तो सभी के एकाएक उन दोनों पर दूट पड़ने का

मय था अस्तु वे चुपचाप खड़े रह कर पहले इस बात को जान और
का प्रयत्न करने लगे कि आखिर उन लोगों की मंशा क्या है।

सिंहनी तथा उसके पीछे पीछे आने वाले सभी सिंह एक
जवान थे। सिंहनी इन लोगों से एक सौ फीट के फासले पर सिंह
कर खड़ी हो गई परन्तु चारों सिंह उससे कुछ दूर और उसे
बढ़ कर और भी समीप चले आये। उनके कान एक दम स्वां
खड़े थे और आँखों से उत्सुकता साफ प्रगट होती थी। टार्
का सिंह भी इन लोगों की ओर बढ़े ही सतर्क भाव से टा
रहा था।

सहसा सिंहनी के मुँह से पुनः एक गुरगुराहट निकली
सुनते ही टार्जन का सिंह बढ़े जोर से गरज कर उन सिंहों
ओर झपटा। रस्सा पकड़े हुए टार्जन भी उसके साथ ही
बहुत दूर तक खिंच आये। इस विचित्र प्रकार के सिंह को
एक तेजी के साथ अपनी ओर झपटते देख वे चारों सिंह
वह सिंहनी तेजी के साथ जंगल की ओर भागे।

सिंह ने उन सभी का पीछा करना चाहा परन्तु टार्जन ने
खींच कर उसे रोका। इस पर वह क्रोधित हो कर उन्हीं की
झपटा परन्तु टार्जन ने भाले की चोटों दे कर उसे वांच ही में
दिया। कई दिनों से भूखे रहने के कारण उसका मिजाज
दम बिगड़ा हुआ था परन्तु टार्जन के भाले की मार ने उसे
सीधा कर दिया था कि उसकी बुद्धि शीघ्र ही ठिकाने आ

और थोड़ी ही देर बाद पालतू कुत्तों की मांति वह टार्जन के बगल चलता दिखाई देने लगा ।

अन्धकार पूरी तौर से चारों ओर फैल गया था जब टार्जन सिंह के साथ ब्रिटिश मोर्चाबन्दी के दाहिनी ओर पहुँचे । पड़ाव से कुछ दूर के फासले पर ही उन्होंने सिंह को एक पेड़ के साथ बांध दिया और स्वयं पड़ाव की ओर बढ़े ।

कितने ही संतरियों की निगाहों से अपने को बचाते हुए टार्जन उस स्थान पर जा पहुँचे जहां कर्नल केपल अन्य अफसरों के साथ बैठे कुछ बातें कर रहे थे । इन लोगों ने टार्जन को मानों हवा से पैदा होते हुए देखा और कर्नल केपल मुस्कुरा कर बोले, “किसी न किसी को इसके लिये गोली मार दी जानी चाहिये । यदि कोई आदमी इस प्रकार संतरियों का आँखों में धूल मोंक कर जब भी चाहे यहां तक आ सकता है तो मेरे खयाल से संतरियों का होना न होना दोनों ही बराबर है ।

टार्जन भी मुस्कुरा कर बोले, “इसके लिये उन्हें दोष देना बेकार है क्योंकि मैं मनुष्य नहीं हूँ दरमन्गानी हूँ । कोई भी दरमन्गानी जिस समय भी चाहे आपके पड़ाव में चला आ सकता है परन्तु यदि आप दरमन्गानियों को पहरे पर बैठा दें तो बिना उनकी जानकारी के कोई भी पड़ाव में पैर नहीं रख सकता ।”

कर्नल ने पूछा, “ये दरमन्गानी कौन हैं ?”

टार्जन बोले, “सन्तपाली एप बन्दरों का नाम है ! परन्तु आप उनसे काम नहीं ले सकते हैं किसी भी काम की ओर

अधिक देर तक अपना ध्यान नहीं जमा सकते। यदि मैं ऐसा करने के लिये कहूँ तो कुछ देर तक तो उन्हें इस में बहुत ही आनन्द आवेगा परन्तु बहुत जल्द उनका ध्यान इस ओर से एक दम उचट जायगा नतीजा यह होगा कि जिस समय आपको उनकी विशेष रूप से आवश्यकता प्रतीत होगी जंगल में घुस कर फलों और छोटे छोटे कीड़ों को चुन चुन अपने मुँहमें डालते नजर आवेंगे। उनका दिमाग ठीक वैसे छोटे निरीह बच्चों जैसा है यही कारण है कि वे कितने ही दिनों से बराबर एक ही अवस्था में दिखाई दे रहे हैं।

कर्नल,—आप उन्हें मन्गानी कह कर सम्बोधन करते हैं अपने को टरमन्गानी कहते हैं। इन दोनों में क्या फर्क है ?

टार्जन ने उत्तर दिया, “टर माने सफेद मन्गानी माने बन्दर ! जिस समय मैं उनके बीच में पल रहा था मेरा चमकता उनसे कहीं अधिक सफेद दिखाई देता था इसीलिये उन लोगों ने मेरा नाम टार्जन अथवा टरमन्गानी रक्खा। आप लोगों भी वे टरमन्गानी कह कर ही सम्बोधन करते हैं।”

केपेल मुस्कुराये और बोले, “अच्छा यह तो बताइये आप किस कल जिस बात का प्रस्ताव किया था उसका क्या किया। मैं आपका अभी तक विश्वास है कि हमारे सामने क ओर जर्मन खाई आप शत्रुओं से खाली करा सकते हैं।”

टार्जन,—बशर्ते कि उसमें अभी तक गोमन्गानी लोग डटे हैं।

केपेल—गोमन्गानी कौन ?

टार्जन—गोमन्गानी काले ह्वशियों का नाम है ।

केपेल,—आप इस सम्बन्ध में क्या किया चाहते हैं और हम लोगों को इसके लिये कौन कौन सा काम करना होगा ।

टार्जन आगे बढ़े और टेबुल पर रखे नक्शे के एक भाग पर उँगली रखते हुए बोले, “देखिये इस स्थान पर उनकी एक मशीनगन लगी हुई है । इस स्थान से एक सुरंग सीधी उनके खाई तक चली गई है जो इस स्थान पर है, आप मुझे एक बम दे दें और जब इसके छूटने की आवाज सुनें अपने कुछ आदमियों को धीरे धीरे इसी ओर बढ़ने को कहें । इसी समय आपके आदमियों को शत्रुओं की खाई में बड़ी हलचल सुनाई देगी, परन्तु आपके आदमियों को जल्दबाजी करने की कोई जरूरत नहीं । बड़ी ही शान्ति से चुपचाप उन्हें आगे बढ़ना चाहिये । उन्हें सावधान कर दीजियेगा कि मैं भी उस स्थान पर उपस्थित रहूँगा अस्तु कहीं मुझी को वे अपनी गोलियों का शिकार न बना डालें ।

केपेल,—अच्छी बात है परन्तु क्या आप अकेले ही उनकी खाई खाज़ी करेंगे ।

मुस्कुरा कर टार्जन बोले, “अकेले तो नहीं मेरा एक और साथी भी है । खैर आपको इससे मतलब नहीं । मैं खाई खाली करा दूँगा इसके बाद आपके आदमी सुरंग में से हो कर उस खाई तक जा सकते तथा वहाँ अपना कब्जा कर ले सकते हैं ।

इतना कह बिना उत्तर की राह देखे टार्जन वहाँ से चल दिये । इस बार भी लौटती समय उनकी निगाह उस अंग्रेज

अफसर पर पड़ी जिसे एक बार पहले भी उन्होंने पहचाने थे प्रयत्न किया था। इस बार भी उन्होंने उसे बड़े ही ध्यान से देखा और तब आप ही आप बोले, “नहीं ऐसा नहीं हो सका पर उनका दिल नहीं मानता था क्योंकि उसकी शक्ति गुप्तचर लेडी फ्रानिल कर्चर से एक दम ठीक मिलती थी।

संतरियों को पार करने बाद टार्जन सीधे उस पेड़ के पहुँचे जिसमें उन्होंने न्यूमा सिंह को बांधा था। उसके पहुँच कर वे एप बन्दरों की भाषा में बोले, “घबराओ मत तुम्हें जल्दी ही पेट भर कर भोजन करने का मौका मिलेगा।

इतना कह कर टार्जन ने रस्सा पेड़ से खोल लिया। सिंह को साथ ले जर्मन पढ़ाव की ओर बढ़े। गोलाबारी के साथ हो रही थी किन्तु पीछे की ओर होने से टार्जन उसका बिलकुल ही भय न था हाँ सिंह अवश्य डर कर बदन के साथ जा चिमटा।

टार्जन सावधानी से आगे की ओर बढ़ने लगे। उनके हाथमें तो बम था तथा दूसरे में वह रस्सा जिससे शेर हुआ था। इसी समय उनकी निगाह एक संतरी पर पड़ी। टार्जन ने बड़ी ही सावधानी से बम वाला हाथ ऊपर उठा और उसे जोर से सामने की ओर फेंक कर फौरन ही जमीन लोट गये। बड़े जोर की आवाज़ हुई और सिंह ने डर कर भागा चाहा किन्तु टार्जन ने जोर लगा कर उसे भागने से रोका।

अब एक मिनट भी बर्बाद करने का न था। टार्जन अब

ये कि वम फटने का कारण जानने के लिये जर्मन लोग सुरंग में से हो कर अवश्य उसी ओर आवेंगे ।

संतरी के पास लगी मशीनगन उन्होंने ले जा कर सुरंग के ठीक मुहाने पर लगा दी और तब सिंह को भी उसके मुंह के पास ले गये । उसके पंजों में चढ़ी थैलियों की सीयन उन्होंने छुरे से काट दी और इसके पहले कि सिंह समझ सके कि अब उसके पंजे एक दम स्वतंत्र हैं उन्होंने उसके गले की रस्सी तथा सिर के थैले की सीयन भी काट डाली और इस काम को खतम करते ही सिंह को गुफा के भीतर की ओर ठेल दिया ।

सिंह ने पीछे की ओर मुड़ना चाहा परन्तु टार्जन के हाथ वाले छुरे की नोक अपने बदन में गड़ते देख वह लाचार आगे की ओर बढ़ा ।

धीरे धीरे सिंह आगे बढ़ने लगा और तब एकाएक जोर से दहाड़ मार कर सामने की ओर झुपटा । टार्जन समझ गये कि सामने की ओर से आती हुई मनुष्य गंध ने ही उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है । टार्जन भी उसी ओर बढ़ने लगे और मुस्करा कर मन ही मन बोल उठे, “इन लोगों ने मेरे वजीरियों की हत्या की है । मुवीरो के लड़के वसीम्बू को सूली पर चढ़ाया है !”

थोड़ी ही दूर और आगे बढ़ने पर टार्जन ने लगभग एक दर्जन आदमियों को भय से चिल्लाते पीछे की ओर भागते देखा

जिनके बीच में बहुत दिनों का भूखा वह सिंह गुराता, फाड़ता तथा चीरता फाड़ता दिखाई दिया।

खाई में जर्मनों ने सुरंग की ओर से आती हुई हवशिये हृदय-विदारक चिल्लाहट सुनी परन्तु जब इन चिल्लाहटों के में उन्हें किसी सिंह की भयानक गरज भी सुनाई दी तब तो मिजाज ही दुरुस्त हो गया।

ब्रिटिश सेना का एक छोटा सा टुकड़ा भी अब तक सुरंग के पास आ पहुँचा था। जब ये लोग सुरंग में से हो जर्मन खाई के सामने पहुँचे तो उन्होंने जर्मनों को भय के मारे से उधर भागते देखा। इसी समय इनकी निगाह एक सिंह पर जो अपने मुँह में एक जर्मन को दबाये अन्धकार में विलीन रहा था। इसी समय उनके कानों में मशीनगन की आवाज बड़ी और जब वे उस ओर घूमे जिधर से मशीनगन की आवाज आ रही थी तो उन्होंने टार्जन को खाइयों में छिपे जर्मनों पर मशीनगन चलाते देखा।

इसी समय अंग्रेजी सेना के उस टुकड़े ने एक और नई कीर्ति देखी। उनकी निगाह एक लम्बे चौड़े जर्मन अफसर पर पड़ी जो हाथ में किरिच लगी बन्दूक लिये पीछे की ओर से टार्जन की ओर बढ़ रहा था। वे चिल्ला कर टार्जन को सावधान करके हुए उनकी ओर दौड़े परन्तु मशीनगन की तेज आवाजों ने उनकी आवाजें विलीन हो गईं। जर्मन अफसर उनके ठीक पीछे आकर खड़ा हो गया और उसका किरिच वाला हाथ ऊपर

उठा। टीक इसी समय बिजली की तरह तेजी के साथ टार्जन पीछे की ओर मुड़े।

अपने हाथ के एक ही मूटके में उन्होंने उस किरिच लगी मन्दूक को इस प्रकार दूर फेंक दिया मानों वह एक हलकी सी फ्रडी हो और तब एक तेज गुराहट उनके मुँह से निकली। उस जर्मन अफसर को उन्होंने एक ही मूटके में आसमान की ओर उठा लिया और तब जोर के साथ तीन चार चक्कर दिया। इसके बाद जिस नजारे पर अंग्रेजी फौज की नजर पड़ी उसे कदाचित अपनी जिन्दगी भर वे न भूल सके होंगे। टार्जन ने उस जर्मन को नीचे कर उसकी पीठ पर अपना एक घुटना सटाया और एक हाथ उसकी गर्दन में लपेट कर उसे पीछे की ओर झुकाना शुरू किया। एक दर्दनाक भरी घरघराहट की आवाज उसके मुँह से निकली और तब एक खटाके की आवाज देती हुई उसकी गर्दन फूट कर पीछे की ओर लटक गई। इसके बाद उस लाश को टार्जन ने उछाल कर एक ओर फेंक दिया। यह जर्मन सहकारी कैप्टिनेन्ट वान गास था।

अंग्रेज फौजी सिपाही टार्जन की ओर तेजी के साथ बढ़े। टार्जसभता की आवाजें उन लोगों के मुँह से निकलने ही वाली थी क्योंकि वह एकाएक उन्हीं के मुँह में रह गई क्योंकि इसी समय टार्जन ने एक पैर लाश की छाती पर रक्खा और तब वही एप कन्दरों की विजयनाद जंगलों में दूर दूर तक गूँज उठी। इसके बाद टार्जन चुपचाप मूट कर एक ओर चल दिये।

सोने की तावीज

ब्रिटिश सैन्य जर्मन सैन्य के हाथों बहुत कुछ नुकसान झम
अब धीरे धीरे सम्हल रही थी। जर्मन लोग धीरे धीरे पों
हुए टांगा की रेलवे लाइन तक पहुँच चुके थे और उनकी छि
का बायां भाग उस रात टार्जन ने भूखे सिंह को साथ तिस
एक दम खाली करा दिया था फलतः ब्रिटिश सैन्य ने पा
अपना अधिकार जमा लिया था।

इस बात को हफ्तों बीत गये परन्तु इस बीच में “
अफसरों ने टार्जन की सूरत तक न देखी। उनमें से कि
का तो विश्वास था कि वे युद्ध में मार डाले गये।

परन्तु टार्जन ने यह समय आनन्द प्रमोद में ही बिता
था। इस एक हफ्ते में उन्होंने घूम फिर कर जर्मन सैन्य
का पता लगाया, उनके युद्ध का ढंग देखा और कितने ही

पाय सोच डाले जिनके द्वारा एक अकेला टरमंगानो इतनी गरी सैन्य को सबक सिखा सकता है।

इस समय उनके चित्त में एक दूसरा ही विचार पैदा हो रहा था। वे किसी एक खास जर्मन गुप्तचर को गिरफ्तार कर अंग्रेज अफसरों के सामने उपस्थित किया चाहते थे। जिस समय पहले पहल उन्होंने जर्मन सैन्य में पैर रक्खा था उस समय उन्होंने एक गुप्तचर औरत को कागज का एक पुलिन्दा जर्मन अफसर के हाथ में देते देखा था। बाद में उसे उन्होंने एक अंग्रेज अफसर के भेष में अंग्रेजी फौज में घुसते पाया था अस्तु उन्हें निश्चय हो गया था कि वह औरत अवश्य अंग्रेजों का भेद ले कर जर्मनों को बताती है।

उसी को पकड़ने की इच्छा से इस बार वे जर्मन सैन्य में छिपे हुए चक्कर काट रहे थे। एक खीमे के पास कुछ हवशी सिसपाही बैठे आपस में बातें करते उन्हें दिखाई दिये। वे उनके पास जा पहुँचे और ध्यान से उनकी बातें सुनने लगे। उनकी बातें उन्हें कुछ दिलचस्प मालूम हुईं। एक हवशी कह रहा था, "उस दिन तो उस सफेद जंगली ने एक सिंह के साथ हमारी फौज का खूब तहस नहस किया। मेरे ख्याल में यह वही आदमी था जो जेनरल साहब के सामने से शीन्डर को उठा ले गया था।

इसमें तो वह कोई जंगली दैत्य मालूम होता है।"

दूसरा बोला, "परन्तु आश्चर्य की बात तो यह है कि इतने आदमियों के बीच में से वह शीन्डर को ही चुन कर क्यों ले

गया। वह यदि चाहता तो जेनरल तक को उठा ले जाता।”

तीसरा कहने लगा, “कप्तान वान शीन्डर का तो कहना है कि वह जंगली असल में उन्हें ही पकड़ने के लिये आया परन्तु घोखे में उनके भाई को पकड़ ले गया। इस बात पर निश्चय उसे तब हुआ जब सहकारी लेफ्टिनेन्ट वान उसी दिन मरे हुए पाये गये जब वह दैत्य सिंह के साथ सेना में आया था।”

टार्जन के कान खड़े हो गये। आज उन्हें पता चला अपनी स्त्री के वास्तविक हत्यारे के बदले किमो दूसरे जा कर सिंह की मेंट चढ़ा आये हैं जिन्होंने वास्तव में स्त्री की हत्या की है वह अभी तक सही सलामत मौजूद है आनन्द कर रहा है इस बात के ख्याल ने उन्हें अधीर कर पागल बना दिया।

दस ही मिनट बाद टार्जन घूमते फिरते खीमों के पास में जा पहुँचे जिधर हाफ्टमन वान शीन्डर की अध्यक्षता काम करने वाले काले हबशी जमीन पर लेटे आराम से सोये। मामूली सिपाहियों के सोने का स्थान खुली हुई जमीन परन्तु अफसरों के लिये खीमें लगे हुए थे। इन्हीं खीमों ओर टार्जन सावधानी से बढ़ने लगे। काम खतरे का था जब से उन्होंने जर्मन सेना में उत्पात मचाना आरम्भ किया, प्रायः सभी लोग मामूली से अधिक सतर्क रहने लग गये

संतरियों की निगाहों से अपने को बचाते हुए वे स्त्रीयों की छली ओर जा पहुँचे और जमीन पर लेट कर तथा अपने न जमीन के साथ सटा कर ध्यान से सुनने लगे। कोने-ले स्त्रीयों के अन्दर से उन्हें किसी के एक नियमित ढंग से स लेने की आवाज सुनाई दी जिससे वे समझ गये कि तर कोई आदमी अकेला ही सो रहा है। अपने हाथ के छुरे से होने स्त्रीयों के पिछली ओर की रस्सियां एक स्थान पर काट और भीतर जा घुसे। जरा भी आवाज न हुई और वे सोने वाले बगल में जा खड़े हुए। मुक कर उन्होंने उसकी सूरत देखी। वान शीन्डर को पहचानते न थे परन्तु उन्होंने इस बात का लगाने का निश्चय कर लिया।

सोने वाले का कंधा पकड़ कर उन्होंने जोर से हिलाया। उनके मुँह से एक लम्बी साँस निकली और वह घबड़ा कर उठ आ। टार्जन धीमी आवाज में बोले, “देखो खबरदार जो एक आवाज मुँह से निकली नहीं तो मैं जिन्दा न छोड़ूँगा।”

एकाएक एक हाथ पैर से तैयार दैत्य को अपने सामने देख के मारे उस अफसर की घिग्गी बँध गई। टार्जन उससे बोले, “देखो मैं जो जो सवाल करता हूँ बहुत ही धीरे धीरे प्रका जवाब देते चलो। सब से पहले यह बताओ कि तुम्हारा नाम क्या है ?

भय से काँपता हुआ वह अफसर दबी जुबान से बोला, “यूबर्ग !”

टार्जन ने पूछा, "हाफ्टमन फीज़ शोन्डर कहाँ है ?" जं
ल्यूबर्ग—वह इस समय यहाँ नहीं है विम्सटल मे
गया है ।

टार्जन—इस समय मैं तुम्हारी जान नहीं लूंगा पहले बात की जांच करूँगा कि तुम सच कह रहे हो या झूठ । तुम्हारी बात झूठ निकली तो याद रखना वही भयानक तुम्हें मरना पड़ेगा । जानते हो मेजर शोन्डर की जान इस तरह ली गई ।

ल्यूबर्ग ने भय से काँपते हुए उत्तर दिया, "नहीं !" छे

टार्जन बोले, "परन्तु मैं जानता हूँ, जर्मनों के लिए उ बढ़ कर और कोई मौत नहीं हो सकती अच्छा अपने अपना मुँह बन्द कर लो ! जल्दी करो !"

ल्यूबर्ग ने फौरन ही उनकी आज्ञा का पालन किया । तसे शीघ्रता के साथ उसी पिछली राह से खीमे के बाहर निक और सीधे जर्मन पूर्वीय अफ्रीका की गर्मी की राजधानी की ओर रवाना हुए ।

फ्रांलिन बर्था कर्चर जंगल में रास्ता भूल जाने के बेतरह आपे से बाहर हो रही थी । जर्मन पहाड़ से जिस वह विम्सटल की ओर रवाना हुई उसने एक दम सीधो हो पकड़ी थी पर रास्ते में उसे पता चला कि ब्रिटिश सैन्य दस्ता उसी सड़क से हो कर आगे बढ़ रहा है अस्तु उसे हो कर जंगल का रास्ता पकड़ना पड़ा । उसे विश्वास

जंगल में कभी रास्ता नहीं भूल सकती परन्तु उसकी आशा
 समय एक दम निराशा के रूप में परिणत हो गई जब उसका
 डा-समूचे दिन भूखा और प्यासा सफर करने बाद भी शाम
 वक्त घोर जंगल के बीच में ही आगे बढ़ता दिखाई दिया। वह
 स ओर जा रही है इसका कुछ भी ज्ञान न होने के कारण वह
 तरह घबड़ा उठी थी पर वह लाचार थी, सिवाय आगे बढ़े जाने
 इस समय और उपाय ही क्या था ?

चलते चलते जंगल के बीच एक छोटे से मैदान पर उसकी
 छे पड़ी और अन्धकार बढ़ता देख इसी स्थान पर रात काटने
 उसने निश्चय कर लिया। घासों यहाँ बहुत बड़ी बड़ी तथा
 बहुतायत से थीं अस्तु घोंड़े को चरने के लिये एक पेड़ से बाँध
 द सूखी लकड़ियों को इकट्ठा करने लगी और थोड़ी ही देर में
 सने रात भर जलने लायक लकड़ियाँ इकट्ठी कर लीं।

इसके बाद उसने जंगली जानवरों के भय से आग बाल दी
 कि और जीनपोश में से पानी की बोतल तथा खाने का सामान निकाल
 र अपनी क्षुधा निवृत्त करने लगी।

भोजन से निश्चिन्त हो वह जीनपोश बिछा कर उस पर जा
 ठी और चारों ओर से आती हुई जंगली जानवरों की भयङ्कर
 प्रांवाजें धड़कते कलेजे से सुनने लगी।

बीच में रह रह कर उसे बन्दूकों तथा तोपों की आवाजें भी
 सुनाई दे जाती थीं जिनका फासला एक मील से अधिक मालूम
 नहीं होता था। इससे वह इतना तो अवश्य समझ गई थी कि अब

उसे अधिक दूर भटकना न पड़ेगा किन्तु रात्रि कुशल से जायगी इसका उसे विश्वास न था ।

अभी वह इन सब बातों पर विचार कर ही रही थी कि कानों में किसी सिंह के भयानक रूप से गरजने की आवाज पड़ी । जो एक मील से अधिक दूरी से आती मालूम नहीं थी । उसके शरीर के समूचे रोंगटे खड़े हो गये ।

बार बार वही गरज उसके कानों में पड़ने लगी और हाँसी ही उसे वह अपने सपीप आती सुनाई दी । वह संममन से सम्भवतः आग की लपट देख उसका कारण जानने की कोशिश की । वह सिंह को उस ओर खींचे लिये आ रही है क्योंकि वह रुख दूसरी ओर होने के कारण यह बिल्कुल ही असम्भव है । मनुष्य की गंध उसके नाक तक पहुँच सकी हो ।

वह बहुत देर तक बैठी आँखें फाड़ फाड़ कर अपने चारों ओर देखती रही किन्तु उसे कुछ भी दिखाई न दिया । सिर्फ गरज भी अब बन्द हो गई थी । आलस्य और निद्रा उसका अधिकार जमाने का उद्योग कर रही थी किन्तु वह रह रह कर चौंक उठती तथा ध्यान से अन्धकार की ओर देखने लगती ।

सहसा उसके घोड़े ने सिर उठाया और बड़े जोर से हिना उठा । कर्चर चौंक कर उठ खड़ी हुई । घोड़ा भड़क कर उसकी ओर दौड़ा परन्तु रस्से ने खिंच कर उसे आगे बढ़ने से रोक दिया । इसके बाद घोड़े ने पुनः मुँह घुमाया और अन्धकार में सामने की ओर ध्यान से देखने लगा ।

एक घन्टा इसी प्रकार और बीत गया किन्तु कोई नवीन घटना ही घटी। कर्चर आग में बराबर लकड़ी डाल डाल कर उसे जल करती जा रही थी परन्तु दिन भर की थकावट के कारण मय निद्रा उसे बहुत अधिक सताने लगी। रह रह कर उसकी आँखें मूपने लगीं किन्तु मय के मारे वह सोने की हिम्मत नहीं कर सकती थी। वह उठ खड़ी हुई और धीरे धीरे टहलने लगी। हिसा वह पुनः बैठ गई और पत्थर का ढासना लगा कर विचार करने लगी कि दूसरे दिन उसे कौन कौन से काम करने हैं।

परन्तु न मालूम निद्रादेवी ने उस पर किस समय अपना अधिकार जमा लिया क्योंकि जिस समय उसने अपनी आँखें खोलीं सूर्यदेव आसमान पर बहुत ऊँचे चढ़ आये थे। वह चौंक उठ खड़ा हुई। उसे सोये अवश्य कई घंटे बीत गये होंगे फिर वह तथा उसका घोड़ा अभी तक जिन्दा हैं इसका उसे आश्चर्य होने लगा। उसने अपने घोड़े पर जीन कसी और उस स्थान से सवाना होने की तैयारियाँ करने लगी। वह विम्सटल सकुशल पहुँच गयी इस बात में अब उसे किसी प्रकार का भी सन्देह बाकी नहीं रह गया था।

परन्तु यदि उसने सामने की झाड़ियों के बीच छिपी तथा अपनी आँखें घूरती हुई दो छिपी आँखें देखी होती तो कदाचित्त उसे अपने इस विश्वास को वह फौरन ही बदल देता।

निश्चिन्ती के साथ घोड़े पर सवार हो कर वह उसी झाड़ी की ओर बढ़ने लगी। झाड़ी में की दोनो आँखें और भी अधिक चमक

छठी, दुम हवा में सीधी खड़ी हो गई और गद्देदार पैर उछल
 इरादे से जमीन में पहले से भी अधिक सट गये। जैसे ही
 घोड़ा झाड़ी के एक दम बराबर में पहुँचा न्यूमा सिंह भी ठी
 समय उस झाड़ी में से उछला।

जब तक कि घोड़ा दूसरी ओर घूमे उसने अपने पंजे
 भरपूर चोट उसके दाहिने कंधे पर दी। ताकतवर पंजों ने
 खा कर घोड़ा फौरन ही जमीन पर गिर पड़ा और यह काम
 जल्दी में हुआ कि कर्चर को उस पर से कूदने तक का मौ
 न मिल सका वह भी उसके साथ साथ जमीन पर गिर पड़ा
 उसका बायाँ पैर घोड़े के नीचे दब गया।

भयभीत दृष्टि से वह जानवरों के राजा की ओर देखने लगे
 जो इस समय अपने भयानक दाँतों से चिखलाते हुए घोड़े के घाँव
 पकड़े हुए था। क्षण भर में ही सिंह के मुँह का एक मटका वह
 घोड़े के प्राण पखेरू उड़ गये।

अब सिंह ने घूम कर कर्चर की ओर देखा। कर्चर की से
 जान निकल गई और उसके शरीर के रोएँ खड़े हो गये।
 देर तक दोनों एक दूसरे की ओर घूरते रहे इसका बर्ता
 स्मरण नहीं किन्तु उसे होश उस समय हुआ जब सिंह
 बड़े जोर से गरज उठा।

कर्चर अपने जीवन में पहले कभी भी इस प्रकार भयभीत
 हुई थी। उसकी कमरपेटी में पिस्तौल थी परन्तु घोड़े
 दबे रहने के कारण वह उसे निकाल नहीं सकती थी।

भी समझती थी कि उस भयानक जानवर के ऊपर पिस्तौल कुछ भी काम नहीं कर सकती सिवाय इसके कि वह उसके क्रोध को और भी अधिक उभाड़ दे। फिर भी यदि उसे वह किसी प्रकार निकाल पाती तो अधिक संतुष्ट होती। इस समय उसने अन्तिम बार ईश्वर की प्रार्थना की और अपने अन्त समय की प्रतीक्षा करने लगी।

परन्तु सिंह किस समय क्या करेगा इसे निश्चित रूप से कोई भी नहीं कह सकता। एक बार वह भयानक रूप से गरजा और जब अपने शिकार को नोच नोच कर खाने में लबलीन हो गया।

वर्था को पुनः अपनी पिस्तौल का ध्यान आया पर उसे निकालने के लिये उसे अपने घोड़े के नीचे दबे शरीर को कुछ उठाना पड़ा। सहसा सिंह का ध्यान पुनः उसकी ओर आकर्षित हुआ। जब वह तेजी के साथ उसकी ओर घूमा और थोड़ा आगे बढ़ कर उसने अपना एक पंजा वर्था कर्चर की छाती पर रख दिया। क्रोध कीसे इस समय उसका चेहरा भयंकर हो रहा था। एक क्षण तक दोनों में से कोई भी न हिला परन्तु इसी समय वर्था ने अपने पोछे की ओर किसी आदमी को जानवर की बोली बोलते सुना।

वर्था के चेहरे पर से अपनी निगाहें हटा कर सिंह ने उसके पोछे की ओर देखा। उसकी गुर्गाँहट एकाएक गरज के रूप में बदल गई और वह तेजी के साथ पोछे हटा। उसके पंजे की रगड़ ने उस लड़की की कमीज फट गई परन्तु उसकी छाती पर

पंजों का निशान बिल्कुल ही न पड़ा यह देख उसे स्वयं
हुआ ।

× × × × देखते
जिस समय सिंह घोड़े पर झपटा था, उस समय से
अब तक का सभी तमाशा जंगल के राजा टार्जन ने अपनी
से देखा था । सिंह का एकाएक उस लड़की पर झपट
उनकी निगाहों से बचा न था किन्तु पहले उन्होंने यह सा
इस ओर ध्यान न दिया कि एक जर्मन गुप्तचर की सा
करने से उन्हें लाभ ही क्या हो सकता है । एक ही नि
वे बर्था चर को पहचान गये थे जिसे एक बार वे
क्राट के हाथों में कागज का एक पुलिन्दा देते तथा
अंग्रेजी पड़ाव में एक अफसर के भेष में देख चुके थे
उससे नफरत हो गई थी परन्तु इस समय एकाएक उनके
में एक नया ख्याल पैदा हुआ । उन्होंने सोचा यदि यह
किसी प्रकार पकड़ कर ब्रिटिश जेनरल स्मट्स के सामने
की जाय तो संभव है वे उसके पेट से मतलब की को
बात निकाल सकें जो ब्रिटिश सैन्य के लिये अतीव लाभ
सिद्ध हो । इसके बाद तो वह गोली से मार ही दी जायगी ।

टार्जन ने केवल उस युवती ही को नहीं पहचाना, वह
को भी एक ही निगाह में पहचान गये । यह वही सिंह था
उन्होंने इतने दिनों तक उस गुफा में बन्द कर रखा था
जिसे वे अपने साथ ले कर जर्मन पड़ाव तक गये थे ।

अच्छी तरह मालूम था कि जंगल के जीव भी गंध तथा सूखत देखते ही आदमी को पहचान जाते हैं अस्तु उन्हें निश्चय हो गया कि उन्होंने जो कुछ भी सबक थोड़े दिन पहले उस सिंह को दिया था उसे वह अभी तक भूला न होगा।

वे एप बन्दरों की भाषा में सिंह को लड़की से दूर रहने की आज्ञा देने लगे और बोले, “देखो उस लड़की के पास से हट जाओ नहीं तो मैं तुम्हें पुनः रस्से से बांध भूखा ही घसीट कर यहां से ले जाऊँगा। मेरी तरफ देखो और पहचानो मैं वही तुम्हारा पुराना परिचित जंगल का राजा टार्जन हूँ !”

सिंह ने टार्जन की बातें समझीं या नहीं यह तो नहीं कहा जा सकता किन्तु उसकी गरज उत्तरोत्तर बढ़ने लगी। टार्जन ने अपने हाथ के भाले की नोक उसके मुँह पर गड़ाई। उसने अपने पंजे से उसे एक झटका दिया अवश्य, किन्तु वह स्वयं भी थोड़ा पीछे हट गया।

सिंह को पीछे हटता देख टार्जन ने उस युवती से पूछा, “क्या तुम्हें ज्यादा चोट लगी है ?”

युवती बोली, “नहीं पर घोड़े के नीचे मेरा पैर अवश्य दबा आ है जिसे निकालना मेरे लिये बड़ा मुश्किल है।”

टार्जन बोले, “देखो एक बार फिर कोशिश करो, मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि सिंह को इस प्रकार कब तक रोक पाऊँगा।”

युवती ने यद्यपि भरपूर जोर लगाया किन्तु वह अपना

पैर किसी प्रकार भी घोड़े के नीचे से निकाल न सकी। यदि वह बचती नहीं है, मुझे पड़ना पड़ेगा।
 बोली, “असंभव है ! मैं अपना पैर किसी प्रकार भी बाहर निकाल सकती ।”

टार्जन आगे बढ़े और घोड़े का शरीर एक हाथ से उठाकर बोले, “लो अब कोशिश करो !” उनके दूसरे पैर में भाला था जिसका मुँह अभी तक वे सिंह की ओर किने थे । युवती ने अपना पैर बाहर निकाल लिया और पहल खड़ी हुई । देखा लटक

टार्जन ने पूछा, “क्या तुम चल सकती हो ?”

युवती बोली, “हां कोशिश करने से अवश्य चल सकूँगी माथे

टार्जन बोले, “अच्छी बात है तो तुम मेरे पीछे कीमी हटना शुरू करो परन्तु देखो जल्दीबाजी मत करना । तावीर
 सम्मिद है सिंह तुम पर हमला नहीं करेगा । मेट

युवती तथा उसके साथ ही साथ टार्जन भी धीरे धीरे की ओर हटने लगे । सिंह कुछ देर तक तो अपने स्थान पर चुपचाप खड़ा गुर्राता रहा और तब धीरे धीरे आगे बढ़ने लगा । टार्जन सोच रहे थे कि देखें वह घोड़े के पहुँचने पर भी रुकता है अथवा उन्हीं लोगों की ओर बढ़े परन्तु सिंह घोड़े के पास आ कर ही रुक गया और उसके पर बैठ पुनः उसका मांस नोच नोच कर खाने लगा ।

अब उस युवती की जान में जान आई और वह
 “इस कृपा के लिये किस मुँह से आपको धन्यवाद दूँ श्री

दि आप समय से न आ पहुँचते तो मेरी जान कदापि न
चती किन्तु यह तो बताइये, उस सिंह ने आप पर हमला क्यों
ही किया ?”

मुसकुरा कर टार्जन बोले, “इसी लिये कि वह मुझे
हचानता है ?”

युवती इस समय टार्जन के ठीक सामने खड़ी थी और यह
पहला ही मौका था कि टार्जन ने उसे सिर से पैर तक ध्यान से
देखा। वह अतीव सुन्दरी थी किन्तु उसकी छाती के साथ
लटकती टार्जन ने एक ऐसी चीज देखी जिसे देखते ही उनके
माथे पर बल पड़ गये और आश्चर्य के साथ ही साथ उन्हें क्रोध
भी चढ़ आया क्योंकि उनके निगाहों के सामने इस समय वही
ताबीज थी जो उन्होंने अपने प्रेम का चिह्न स्वरूप अपनी स्त्री को
भेंट दिया था।

टार्जन ने मजबूती के साथ उसकी कलाई पकड़ ली और
ताबीज एक ही झटके में उसके गले से खींचने बाद तेज आवाज
में बोले, “सच बताओ इसे तुमने कहाँ पाया ?”

युवती को भी टार्जन की ऐसी हरकत देख क्रोध चढ़ आया
और उसने भी जरा तेज हो कर कहा “मेरा हाथ छोड़ दीजिये
श्रीमान् ! आपको इस ताबीज से क्या मतलब है !”

टार्जन—यह मेरी है और मैं यह जानना चाहता हूँ कि यह
तुम्हारे पास कहाँ से आई। यदि तुम ठीक बात नहीं बताओगी
तो मैं तुम्हें पुनः सिंह के सामने फेंक दूँगा।

१५। युवती—क्या आप ऐसा कर सकते हैं ?

१६। टार्जन—क्यों नहीं ! शत्रुओं के गुप्तचर के साथ अपने
व्यवहार ही क्या किया जा सकता है !

१७। युवती—तो क्या आप मेरी हत्या करने के लिये ही प्रसन्न
साथ लिये जा रहे थे ?

१८। टार्जन—मैं तुम्हें अंग्रेजी पड़ाव पर ले जाया चाहूँ केवल
जहाँ अवश्य ही तुम्हारा खातमा कर दिया जाता परन्तु फौजी
पक ही है। यहां पर सिंह भी वह काम पूरा कर सकता है ठीले

१९। युवती—मुझे यह ताबीज हाफ्टमन वान शीन्डर ने दीरचा

२०। टार्जन—अच्छी बात है तो तुम अब अंग्रेजी पड़ाव
चलो !

२१। युवती टार्जन के साथ आगे बढ़ी। ये लोग इस समय क
की ओर जा रहे थे जो युवती के मन की बात थी। उस ठ
में इसे समय तरह तरह की भावनाएँ उठ रही थीं। टार्जन
उसका हाथ बगल में लटकती पिस्तौल पर जा पड़ा। टार्
उसे निकाला नहीं था।

२२। कुछ दूर आगे बढ़ने पर उसने धीरे से पूछा, “आपको
बात का कौन सा सबूत मिला है कि मैं गुप्तचर हूँ।”

२३। “मैंने पहले तुम्हें जर्मन पड़ाव में देखा इसके बाद क
पड़ाव में देखा !” टार्जन ने बड़े ही गम्भीर शब्दों में उत्तर दि

२४। युवती ने शीघ्र ही अपना कर्तव्य स्थिर कर लिया।
इस समय विम्सटल जाया चाहती थी और जिस तरह से

उसने इस इरादे को पूरा करने का उसने निश्चय कर लिया था।
 टार्जन ऐसे सुन्दर युवक को इस प्रकार नीरस तथा निष्ठुर पा
 ई उनके अहसानों को एक प्रकार भूल सी गई। टार्जन
 उस समय उससे केवल दो कदम आगे थे। उसने धीमे से
 पिस्तौल निकाल कर अपने हाथ में ले ली। उसमें से निकली
 गई केवल एक ही गोली इस समय उसे स्वतंत्र कर देने के लिये
 काफी थी किन्तु जिस समय उसकी निगाह टार्जन के सुन्दर तथा
 ठीले बदन पर पड़ी, ऐसे विचारों के लिये उसे मन ही मन
 श्रुतान्ताप होने लगा। वह समझ गई कि ऐसा करना उसे
 कदापि उचित नहीं है फिर भी विस्मृतल जाना उसके लिये
 तीव्र आवश्यक था ! क्षण भर के भीतर ही उसने अपने विचार
 एक दम से पलट दिये और पिस्तौल उलटी पकड़ कर उसकी
 ठूठ का एक भरपूर बार उसने टार्जन के सिर पर किया। टार्जन
 मरन ही बेहोश हो कर जमीन पर गिर पड़े।



बदला और दया

एक मिनट तक चीता चुपचाप खड़ा दूर आसमान पर हुए गिद्ध की ओर देखता रहा। गिद्ध इस समय तेजी से नीचे उतर रहा था। जमीन से कुछ ही फासले पर पहुँचकर एक स्थान पर मँडराने लगा। एक बार वह थोड़ा और नीचे उतरा और तब पुनः हवा में चक्कर काटने लगा।

चीता उस बात को मलीभाँति समझ गया जिसे हम और आप जल्दी न समझ पाते। अवश्य उसके आगे ही इस समय कोई लाश थी! चीता तेजी के साथ बढ़ा।

थोड़ी ही दूर आगे बढ़ने पर उसकी नाक में मनुष्य आई अब वह और भी तेजी के साथ उसी ओर बढ़ा। समय बेहद भूख लगी हुई थी।

चीता मनुष्यभन्नी नहीं था उसने अभी ही जवानी में पैर खड़ा था और मनुष्य गंध से उसे ऐसी नफरत थी कि वह उससे दूर रह सके अपने को दूर रक्खा चाहता था पर कई न भूखे रहने के कारण इस समय उसके विचार बहुत कुछ बदल गये थे ।

गिद्ध का उड़ना इस बात को साबित कर रहा था कि वह मनुष्य यदि अब तक मरा नहीं है तो शीघ्र ही मरने वाला है । ते धीरे दबे पांव वह आगे बढ़ा । जैसे ही एक घनी झाड़ी के दर उसने अपना सिर निकाला एक-नंगे मनुष्य पर उसकी गाढ़ पड़ी जो जमीन पर औंधे मुँह पड़ा हुआ था ।

x

x

x

x

सिंह वर्था कर्चर के घोड़े के आगे खड़े हुए शरीर पर से उठ खड़ा हुआ और उसे अपने दांतों में दबोच कर एक घनी झाड़ी में खींच लाया । इसके बाद वह पूर्व दिशा में उस ओर बढ़ा जहां वह अपने जोड़े को छोड़ आया था । इस समय वह अर्धचंद्र चित्त से शान के साथ आगे की ओर बढ़ा जा रहा था । सहसा किसी चीज को सामने देख वह एकाएक खड़ा हो गया । जमीन पर किसी मनुष्य का शरीर पड़ा हुआ था और वह चीता बड़ी ही सावधानी से दबा दबा कर अपने कदम खता उसकी ओर बढ़ रहा था ।

सिंह ने ध्यान से जमीन पर पड़े उस आदमी की ओर खता । क्रमशः वह उसे पहचान गया । वह मनुष्य उसका परिचित

था और उसी का था। एक हलकी गुराहट उसके मुँह से
मानों वह चीते को सावधान कर रहा हो।

चीता इस समय टार्जन के एक दम समीप पहुँच
अपना एक पंजा टार्जन के शरीर पर रख कर उसने
सिर ऊपर की ओर उठाया और उस ओर देखा जिधर से
हुई गुराहट की आवाज अभी अभी उसके कानों में पड़ी।

इस समय उसके जंगली दिमाग में कौन सा विचार
रहा था इसे कौन कह सकता है। चीता जिस तरह भी हो
शिकार की रक्षा किया चाहता था। 'उसके मुँह से एक
गुराहट निकली मानों वह सिंह को आगे न बढ़ने के
सावधान कर रहा हो।

परन्तु सिंह के मस्तिष्क में इस समय कोई दूसरा विचार
घूम रहा था। वह आदमी उसका अपना था या वह स्व
का था! क्या उस आदमी ने अपनी ताकत से उसके
विजय प्राप्त नहीं की थी। क्या उसने एक समय में
तौर से अपने वश में नहीं किया था? उसे उस
की भी याद आई जिसकी चोट दे दे कर उस सफेद
ने उसे अपने कब्जे में किया था। परन्तु जंगली दिमाग
भय सदैव घृणा की अपेक्षा इज्जत ही पैदा किया करता है।
देखा कि जिस आदमी की वह दिल ही दिल इज्जत का
उसे चीता इस समय फाड़ कर अपना पेट भरा चाहता है।
बार उसने लापरवाही के साथ चीते के ऊपर निगाह ड

भला अपनी शक्ति के सामने वह समझता ही क्या था परन्तु समय उसने चीते को अपने कान खड़े किये तथा दुम ऊपर गये अपने मुकाबले के लिये खड़े गुराँते देखा ।

भला जंगल के जानवरों का एकाधिपति सिंह उस घृष्ट जानवर इल भावभंगी को किस प्रकार बरदाश्त कर सकता था ? उसका इरादा कदाचित् स्वयं लड़ने का न था किन्तु अपने से नीचे के जीव को इस प्रकार अपने मुकाबले के लिये तैयार देख उसका खून खौल उठा । एक बार उसने क्रोध के साथ चीते पर अपनी निगाह डाली और तब अपनी दुम एक दम सीधी खड़ी के तेजी के साथ उस पर मपटा ।

सिंह तथा चीते का फासला इतना कम था और सिंह इस जी के साथ उसके ऊपर मपटा था कि चीते को भागने तक मौका न मिला अस्तु वह लाचार हा कर सिंह का मुकाबला करने के लिये तैयार हो गया ।

परन्तु उस महान् शक्तिशाली जीव के सामने भला वह जाता कब तक ठहर सकता था । थोड़ी ही देर में सिंहने उसकी ज्जी धज्जा उड़ा कर फेंक दी और तब एक बार भयानक रूप से रज उठा ।

अब उसकी निगाह टार्जन की ओर घूमी । उसने उन्हें एक बार सूँघा और तब एक पंजा उनके ऊपर रख कर उन्हें चलाट दिया । एक बार उसने पुनः टार्जन के मुह को सूँघा और तब

अपनी जीभ से उनके चेहरे को चाटने लगा। इसी समय टार्जने ने अपनी आँखें खोलीं।

फौरन ही उनकी निगाह अपने ऊपर मुके हुए सिंह के चेहरे पर पड़ी। आज से पहले कितनी ही बार टार्जन मौत के निशान पहुँच चुके थे परन्तु इस बार उन्होंने अपने के मौत के निशान सन्निकट पाया वैसा मौका उन्हें पहले कभी नहीं पड़ा था। चोट के कारण अभी तक उनके सिर में भयानक पीड़ा हो रही थी इसी कारण क्षण भर तक वे अपने अपने पुराने चिरपरिचित सिंह को पहचान न सके परन्तु उनकी चेतनाशीलता वापस लौटने लगी और वे उसे पहचान गये किन्तु यह देख उन्होंने आश्चर्य हुआ कि सिंह उन्हें खाने की नीयत से उनके ऊपर मुका हुआ न था।

परन्तु सिंह किस समय क्या कर बैठेगा इसे निश्चित रूप से कोई भी नहीं कह सकता। उन्होंने जमीन पर से उठना चाहा किन्तु बिना सिंह को अपने ऊपर से हटाये उनका उठना असम्भव था। संभव है उन्होंने मरा ही समझ लिया और अब जिन्दा देख कर एकाएक उन पर वार कर बैठे।

ज्यों ज्यों समय बीतने लगा टार्जन घबड़ाने लगे। सदा के लिये तो वे वहाँ पड़े रह नहीं सकते थे अस्तु कुछ न कुछ करना उनके लिये आवश्यक था। फिर यह बात भी उन्हें मूली नहीं थी कि उनकी ऐसी दशा बना कर वह गुप्तचर युद्धी अवश्य ही समय किसी ओर भागी जा रही होगी।

ज्यों ज्यों समय बीतने लगा टार्जन धबड़ाने लगे। सदा के लिये तो वे वहाँ पड़े रह नहीं सकते थे अस्तु कुछ न कुछ करना उनके लिए आवश्यक था फिर यह बात भी उन्हें भूली नहीं थी कि उनकी ऐसी दशा बना कर वह गुप्तचर युवती अवश्य इस समय किसी ओर भागी जा रही होगी।

सिंह इस समय उनकी आँखों से आँखें मिलाये हुये था। वह समझ गया कि वे मरे नहीं हैं। उसने अपना मुँह एक ओर घुमाया और तब एक हलकी गुरगुराहट उसके मुँह से निकली।

गुरगुराहट की आवज सुन कर टार्जन को हिम्मत हुई। वे समझ गये कि इसी समय सिंह मित्रता कावर्ताव कर रहा है। “हटो ! कह कर उन्होंने अपने हाथ से सिंह का कन्धा एक ओर हटाया और जमीन से उठ खड़े हुये परन्तु उनका दूसरा हाथ अपने शिकारी छुरे पर था और वे सोच रहे थे कि देखें अब वह आगे क्या करता है।

इसी समय उनकी निगाह उस नुचे चिये चीते के शरीर पर पड़ी। अब सब मामला उनकी समझ में आ गया। वह चीता उन्हें खाया चाहता था और सिंह ने बड़े मौके से पहुँच कर उनकी रक्षा की थी !

उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ परन्तु इससे बढ़ कर दूसरा सबूत उन्हें अब मिल ही क्या सकता था। सिंह के शरीर पर भी कितने ही स्थानों पर लगे जख्म इस बात की सूचना दे रहे थे कि उसने अपने उपर काफी मुसीबत उठा कर ही उनके प्रणों की रक्षा की है।

हिम्मत बांध कर टार्जन घुटनों के बल सिंह के बगल में बैठ गये और उनके घावों की जाँच करने लगे। न्यूमा सिंह भी धीरे धीरे अपने कान उनके कंधे के साथ रगड़ने लगा। टार्जन उसके विशाल सिर को एक बार थपथपाया और तब पास गिरा हुआ अपना भाला उठा कर धीरे धीरे एक ओर बढ़े।

सब से पहले उनका ध्यान इस ओर गया कि आखिर कलङ्की वहाँ से किस ओर गई है। उनके चित्त में क्रोध तो न था किन्तु उसकी चालाकी याद कर कर के इस समय वे मन ही मन मुस्कुरा रहे थे। वे समझ गये कि उनके साथ ऐसा वर्तन करने वाले में हिम्मत की कमी नहीं हो सकती। उन्हें इस प्रकार जमीन पर गिरा कर केवल पिस्तौल हाथ में लिए उस भयानक जङ्गल में आगे बढ़ना मामूली हिम्मत वाले जीव का काम नहीं हो सकता।

टार्जन हिम्मत की कदर करते थे। अपने शत्रु एक जर्म गुप्तचर में भी ऐसी हिम्मत पा उन्हें उसके प्रति श्रद्धा उत्पन्न हुई। परन्तु उसे इस प्रकार निह्व देखा वह उन्हें खतरनाक अवश्य माना। हुई और उसे जिस प्रकार भी जल्द हो अंग्रेजी पढ़ाव में ले जायें उन्होंने अपना कर्तव्य समझ लिया।

इतना तो वे समझ ही गये थे कि युवती अवश्य विन्सटल की ही ओर जा रही थी अस्तु उन्हें विश्वास हो गया कि उसके विन्सटल पहुँचने के पहले ही वे उसके पास पहुँच जायेंगे और सोच कर वे पेड़ों ही पेड़ों छलांगे मारते हुए तेजी के साथ विन्सटल की ओर बढ़े जहाँ उन्होंने उस युवती के साथ ही साथ शीन्स

के भी मिलने की आशा थी। वह ताबीज भी युवती पुनः उनके पास से ले गई थी अस्तु वह भी उन्हें विम्सटल में ही मिलेगी ऐसा उनका विश्वास था।

परन्तु विम्सटल का फासला तीस मील से कम न था अस्तु वह युवती पैदल सफर करती हुई वहाँ दो दिन के पहले पहुँचेगी ऐसा उनका विश्वास न था। इसी समय उनके कानों में इंजिन के सीटी की आवाज पड़ी। वे समझ गये कि अवश्य पास ही कहीं रेलवे लाइन है। यदि रेल विम्सटल की ओर जाती मिली तो वह युवती अवश्य संकेत कर के रेल को रोकेगी और उस पर सवार हो कर विम्सटल पहुँच जायगी।

सहसा उनके कानों में ब्रेकों की घरघराहट तथा गाड़ी के रुकने की आवाज पड़ी। गाड़ी रुकी और फिर चल दी। टार्जन समझ गये कि युवती अवश्य उस पर सवार हो गई।

थोड़ा ही और आगे बढ़ने पर रेल के डब्बों पर उनकी निगाह पड़ी। ट्रेन सीधे पूरब की ओर जा रही थी। अब उनका रहा सहा सन्देह भी दूर हो गया और वे और भी तेजी के साथ विम्सटल की ओर रवाना हुए।

सन्ध्या हो चुकी जब वे विम्सटल के समीप पहुँचे। एक विशाल इमारत के भीतर की रोशनियाँ उन्हें दूर ही से दिखाई पड़ीं।

और समीप पहुँचने पर उन्हें कितने ही संतरी इधर उधर घूम कर पहरा देते दिखाई दिये किन्तु उनमें से कितनों ही की निगाहें बचा कर वे धीरे धीरे आगे बढ़ने लगे।

सहसा उनके कानों में किसी कुत्ते के गुराने की आवाज आई और उन्होंने देखा कि एक भीमकाय कुत्ता तेजी के साथ उनकी ओर बढ़ा आ रहा है। कुत्ता भूँका तो नहीं किन्तु बड़ी ही तेजी के साथ उनकी गर्दन पर झपटा। पास आने पर उन्होंने देखा कि वह बहुत लम्बा चौड़ा और मामूली से अधिक मजबूत है।

परन्तु कुत्ते के बड़े तथा लम्बे दांत टार्जन के मुलायम कानों से छू तक न पाये। दो मजबूत हाथों और लोहे के समान सख्त उँगलियों ने उसकी गर्दन मजबूती के साथ पकड़ ली और घूमने के भीतर ही उसे बेजान कर के दूर फेंक दिया।

ठीक इसी समय उन्हें सामने के एक बँगले के दरवाजे खुलने की आवाज आई जिसमें से एक कढ़ावर जवान ने जोर-जंगी लिबास पहने था निकल कर जोर से आवाज दी, "शिम्रा शिम्रा !"

परन्तु जब उसे उत्तर नहीं मिला तो वह उसी ओर बढ़ा लगा जिधर टार्जन एक पेड़ की आड़ में खड़े थे।

जैसे ही वह पेड़ के पास पहुँचा टार्जन चीते की भाँति पर झपट पड़े। मजबूत उँगलियों ने उसका गला मजबूती के साथ पकड़ लिया और थोड़ी ही देर में बिना किसी तरह की शक के मुँह से निकाले उसका बेजान शरीर जमीन पर गिर पड़ा।

पाँच ही मिनट बाद एक लम्बा चौड़ा कढ़ावर जवान जो अक्सर की जंगी लिबास पहने उस पेड़ के नीचे से निकल कर सड़क की ओर बढ़ा।

टार्जन का सब से पहला विचार वहां किसी होटल को खोजने का हुआ जहाँ उस युवती तथा उसके साथ शीन्डर के होने को उन्हें पूरी आशा थी। जर्मन अफसर के लिबास में होने के कारण उन्हें अपनी ओर से बहुत कुछ निश्चिन्ती भी हो चुकी थी।

बहुत जल्द ही उन्हें होटल का पता चल गया। होटल की इमारत दो खण्ड की थी और उसके चारों ओर बराम्दा बना हुआ था। पहले तो उन्होंने भीतर जा कर दरियाफ्त करने का इरादा किया किन्तु शीघ्र ही उनकी अन्तरात्मा ने उन्हें ऐसा करने से रोका। वे प्रायः सभी कमरों को देखते हुए इमारत का चक्कर काटने लगे पर जब उन्होंने किसी भी कमरे में उन दोनों की सूरत न देखी तो उचक कर बरामदे की छत पर जा पहुँचे। अब वे दूसरे खण्ड की खिड़कियों की जांच करने लगे।

इमारत के पिछले कोने की ओर जो कमरा था उसकी खिड़कियों के पर्दे गिरे हुए थे परन्तु टार्जन ने कमरे के भीतर बातचीत की आवाजें सुनीं साथ ही क्षण भर के लिये किसी औरत की छाया पर्दे पर पड़ी और अन्तर्ध्यान हो गई। टार्जन खिड़का के समीप चले आये और ध्यान दे कर सुनने लगे। उन्होंने एक औरत और एक मर्द की आवाज साफ साफ सुनी परन्तु वे क्या बातें कर रहे हैं इसे वे समझ न सके क्योंकि वे बहुत धीरे धीरे बातें कर रहे थे।

बगल के कमरे में अन्धकार था। टार्जन ने हाथ से घन्का दे कर देखा, सिटकिनी भीतर की ओर से खुली हुई थी। भीतर

एक दम सन्नाटा था। वे फौरन भीतर चले गये। कमरे में केवल
न था। दर्वाजा खोल कर वे धीरे से बाहर निकले और बाहर
दर्वाजे की ओर बढ़े। उन्होंने दर्वाजे के साथ कान लगाया।
औरत कह रही थी, "मैं ताबीज साथ लाई हूँ और जैसा कि
में और जेनरल क्राट में तय हुआ था यही मेरी पहिचान है
अब आप फौरन मुझे कागजात दे कर यहाँ से जाने की इजाजत
दीजिये !"

आदमी ने धीमे से कुछ उत्तर दिया जिसे टार्जन सुन न सके।
उत्तर में औरत भी व्यंग तथा भय-मिश्रित शब्दों में बोली, "हृदय
मन शान्द ! खबरदार ज़बान सम्हाल कर बातें करो और
हाथ मेरे बदन पर से हटा लो !"

फौरन ही दर्वाजा खोल कर टार्जन कमरे के भीतर जा पहुँचा।
सामने ही उन्हें एक कढ़ावर जर्मन अफसर बर्था कर्चर के सामने
में एक हाथ डाले तथा दूसरे से उसका माथा पीछे हटाता हुआ
उसको चुम्बन करने का प्रयत्न करता दिखाई दिया। युवती
को उससे छुड़ाने की बड़ी ही कोशिश कर रही थी परन्तु
के होंठ धीरे धीरे उस युवती के होंठों के समीप चले आ रहे थे।

अपने पीछे की ओर दर्वाजा खुलने की आहट पाकर
बौंक कर पीछे की ओर घूमा। जर्मन जंगी वर्दी पहने एक
सर को सामने देख उसने युवती को छोड़ दिया और उसे
कर कहा, "इस बेहूदगी का क्या मतलब है लेफ्टिनेन्ट !
बिना इजाजत मेरे कमरे में क्यों घुस आये ?"

टार्जन ने कुछ भी उत्तर न दिया। जानवरों की सी एक हलकी गुराहट उनके मुँह से निकली और शीन्डर ने धीरे धीरे इस त्रिचित्र जीव के अपनी ओर बढ़ते देखा। भय से युवती का चेहरा पीला पड़ गया और शीन्डर ने घबरा कर बगल में लटकती पिस्तौल बाहर निकाल ली।

टार्जन ने एक ही मटके में पिस्तौल उसके हाथ से छीन ली और उछाल कर उसे खिड़की के बाहर फेंक दिया। इसके बाद अपनी बर्दी उतार कर फेंकते हुए टार्जन ने जर्मन भाषा में सवाल किया, “तुम्हारा नाम हाफ्टमन शीन्डर है ?”

शीन्डर,—इससे तुम्हें मतलब ?

टार्जन,—मैं जङ्गल का राजा टार्जन हूँ अब कदाचित्त तुम समझ गये होगे कि मैंने यहां एकाएक चले आने की घृष्टता किस लिये की !

शीन्डर,—तुम मुझसे क्या चाहते हो ?

“अपनी स्त्री की हत्या का बदला तथा तुम्हारे उन पापों का प्रायश्चित्त जो तुमने वजीरी प्रदेश में मेरे बँगले पर किये थे !” कह कर टार्जन एक ही छलांग में दर्वाजे के पास जा पहुँचे और उसमें लगी चाभी से ताला बन्द करने बाद चाभी खिड़की के बाहर फेंकते हुए बोले, “अच्छा शीन्डर अब अपने कर्मों का फल भोगने के लिये तैयार हो जाओ !”

पहले तो शीन्डर ने बहुत कुछ अनुनय विनय की परन्तु जब इससे भी उसने कोई काम निकलते न देखा तो लड़ने के

लिये तैयार हो गया। उसका शरीर भी कम दृष्ट पुष्ट न था वरन् उसका शरीर टार्जन से कहीं अधिक भारी था। दोनों आपस में गूंगये और लुढ़कते पुड़कते जमीन पर आ रहे। भय तथा आश्चर्य से बर्था कर्चर ने देखा कि शीन्डर का हाथ टार्जन के गले की ओर और टार्जन के दाँत शीन्डर की गर्दन पर पहुँचने की कोशिश में हैं परन्तु इसी समय एक मटका देकर शीन्डर ने अपने को छुड़ा लिया और उठ कर खड़े होने बाद तेजी के साथ खिन्न की ओर यह चिल्लाता हुआ दौड़ा, “केमरेड, केमरेड !”

परन्तु इसी समय टार्जन ने उसके पास पहुँच कर अपने लेंग जैसी मजबूत ढँगलियों से उसका गला दबा दिया और घरेलू कर दीवार के पास ले आने बाद उससे सटा कर खड़ा कर दिया। इसके बाद वे अपना शिकारी छुरा निकाल कर हाथ में लेने लगे बोले, “दुष्ट सावधान हो जा और मेरी स्त्री की हत्या का फल भोग !”

इतना कह कर टार्जन ने वह छुरा हाफ्टमन शीन्डर की छाती में भोंक दिया। क्षण भर में ही उसके प्राण पखेरू उड़ गये और उसका बेजान शरीर जमीन पर गिर पड़ा।

इसके बाद टार्जन बर्था कर्चर की ओर घूमे और बोले, “कर्चर ! तुमने मेरे साथ जैसी बोखेबाजी की है उसकी सजा मौत ही है किन्तु नीच जर्मनों की भाँति औरतों पर हाथ छोड़ने मुझे पसन्द नहीं है। मैं तुम्हें अपने साथ अंग्रेजी पड़ाव में जाया चाहता था किन्तु देखता हूँ यहाँ से तुम्हें ले जाना कि

प्रकार भी संभव नहीं है अच्छा लाओ वे कागजात मेरे हवाले करो और मेरी ताबीज भी वापस करो !”

बर्था कर्चर ने चुपचाप कागजों का एक पुलिन्दा उनकी ओर बढ़ा दिया जिसे उन्होंने कमर में खोस लिया इसके बाद वह बोली, “ताबीज शीन्डर के पास है !”

टार्जन फौरन ही शीन्डर के पास जा पहुँचे और उसके जेब से ताबीज निकालने बाद एक ही छलांग में कूद कर खिड़की के बाहर हो गये । उनके जाने बाद बर्था ने एक लम्बी सांस ली और अपने भीतरी जेब से कागज का एक पुलिन्दा निकाल उसे भलीभाँति देखने तथा पुनः उसे अपने स्थान पर रखने बाद उसने सहायता के लिये होटल के अधिकारियों को आवाज दी !”

रक्त पिपासा



अब टार्नन उदासीन हो गये । वान शीन्डर से वे बहुत ले चुके थे और वान गास भी उनके द्वारा मौत के घाट उलट चुका था हां जर्मन गुप्तचर बर्था कर्चर को अपने कब्जे में पाकर भी उसे बेदाग छोड़ देने की अपनी कमजोरी पर उन्हें बड़ा ही पश्चात्ताप हुआ । औरतों को शत्रु जान कर भी उन पर हाथ डोढ़ने की कमजोरी उन्हें सभ्य देश में जाने के कारण ही पैदा हो गई थी और उन्हें सन्तोष था कि दगा और फरेब से भी सभ्य देशों को छोड़ कर अब वे पुनः अपने प्रिय अफ्रीकन जंगल में वापस लौट आये थे ।

इसमें सन्देह नहीं कि बर्था कर्चर द्वारा लाये हुए कागजात उन्हें ब्रिटिश अफसरों को दे दिये थे और वे उसकी बदौलत जर्मन सेना का एक बड़ा भारी हमला सम्हालने में सफल

हुए थे किन्तु इतने से भी उन्हें संतोष न हुआ। रह रह कर वर्षा कर्चर को जिन्दा छोड़ देने का ख्याल उनके हृदय में शूल सा चुभ उठता था।

अब वे एक दम उदासीन हो गये। उनकी स्त्रो भी अब इस समय जीवित न थी जिसके द्वारा इस संसार में उनका थोड़ा बहुत बन्धन था अस्तु अब वे पुनः पहले की भांति स्वतन्त्र रूप से जङ्गलों में विचरने लगे। जङ्गल के जीव ही अब उनके साथी हो गये और जङ्गलों में इधर उधर पेड़ों पर घूमना ही उनका नित्य का कार्य्य हो गया। अब उन्हें अपने जन्म के साथी एप बन्दरों का भी ख्याल आया और वे उनके साथ के लिए व्याकुल हो उठे। पेड़ पर बैठे छोटे मानू बन्दर से उन्होंने दरियाफ्त किया कि उसने एप बन्दरों को कभी उस ओर से गुजरते देखा है या नहीं।

अपने छोटे छोटे हाथों को उत्तर से पश्चिम तथा बाद में दक्खिन की ओर घुमाता हुआ मानू बन्दर बोला, “वे इधर से उधर, उधर, उधर जा रहे हैं क्योंकि दक्खिन तथा पश्चिम की ओर शिकार बहुतायत से मिलते हैं। बीच के रास्ते में एक बड़ा भारी स्थान ऐसा पड़ता है जहाँ खाना तथा पानी कुछ भी नहीं मिलता इसी लिए उन्हें इतनी दूर का भारी चक्कर काट कर उस ओर जाना पड़ा है !”

एप बन्दरों के लिये इतना भारी चक्कर काटना एक मामूली बात थी क्योंकि उनके लिए समय का कुछ भी मूल्य नहीं होता

परन्तु टार्जन को बेकार इतना चक्कर काटना बेकार सा मालूम हुआ। उन्होंने निश्चय किया कि उस सूखे स्थान को पार कर जहाँ तक जल्द हो सके एप बन्दरों के पास पहुँच जाना ही अच्छा होगा। अस्तु नीची पहाड़ियों का एक सिलसिला पार कर वे एक लम्बे चौड़े पथरीले मैदान में जा पहुँचे। वहाँ से कुछ दूर फासले पर उन्हें पहाड़ों का एक सिलसिला दिखाई दिया। तब समझ गये कि इन पहाड़ों के बाद ही एप बन्दरों का शिकारगाह है जिसके बारे में उस बन्दर ने बताया था। इन्हीं एप बन्दरों के बीच कुछ दिन रह कर उन्होंने समुद्र के किनारे जाने अपने बंगले पर जाने का निश्चय कर लिया था। साथ में उन्हें एप बन्दरों को भी अपने बंगले पर ले जा कर बसाने का विचार किया था और उनके आराम का भी सब प्रबन्ध सोच लिया था।

रास्ते के ऊबड़ खाबड़ रास्ते को पार करते हुए टार्जन बीरे धीरे आगे की ओर बढ़ने लगे। पेड़ पौधों का इस ओर कोई कहीं नाम निशान तक दिखाई नहीं देता था जिसके कारण वे आगे बढ़ने में बड़ी ही असुविधा मालूम हो रही थी।

दिन भर टार्जन आगे ही बढ़े चले गये और जब सन्ध्या होगई तो एक स्थान पर खड़े हो कर ध्यान से अपने चारों ओर देखने लगे। पहाड़ों का वह सिलसिला पहले से उन्हें अब अधिक समीप दिखाई दे रहा था परन्तु जो लम्बा रास्ता उन्होंने कठिनाई से तय किया था उसमें उन्होंने न तो खाने लायक कोई जीव जन्तु ही पाया न ऐसी ही कोई और चीज उन्हें मिली जिसे

खा कर अपने झुषा की निवृत्ति करते। पानी भी उन्हें रास्ते में कहीं नहीं मिला था अस्तु वे भूख तथा प्यास से एक दम व्याकुल हो पड़े।

परन्तु उतना होने पर भी उन्होंने हिम्मत न हारी और समूची रात भी उन्होंने उसी प्रकार आगे बढ़ने में बिताई। सुबह होने पर उन्हें अपने शरीर में इतनी थकावट महसूस होने लगी कि उन्होंने कुछ समय तक के लिए किसी स्थान पर ठहर कर आराम कर लेना ही उचित समझा।

परन्तु भोजन तथा पानी का साधन अभी तक भी उन्हें दिखाई नहीं पड़ रहा था जिसके कारण अब तरह तरह की दुश्चिन्ताएं उनके हृदय में उत्पन्न होने लगीं। केवल एक गिद्ध ठीक उनके ऊपर की ओर आसमान में उड़ता हुआ साथ साथ जा रहा था।

उन्हें मृत्यु का भय न था। अपनी स्त्री की मृत्यु का आघात उनके हृदय पर अभी ताजा था फिर भी जहाँ तक हो सके जीवनरक्षा करना वे अन्य जङ्गली जीवों के भांति अपना कर्तव्य समझते थे।

सहसा चक्कर काटती हुई किसी चीज की छाया उन्हें अपने पास की जमीन पर दिखाई दी। उन्होंने ऊपर की ओर देखा। गिद्ध इस समय उनके ऊपर बहुत समीप में मँड़रा रहा था। उड़ता के साथ उसे सम्बोधन करते हुए वे बोले, “दुष्ट मैं जंगल का राजा टार्जन हूँ। जंगल का राजा तेरा भोजन नहीं बन सकता। उस जगह जा जहाँ सड़े गले मुँदे पड़े हों। टार्जन तेरे

खाने के लिए अपने शरीर की एक हड्डी भी इस मौत की घाटी में नहीं छोड़ सकता ।”

इतना कहते हुए टार्जन पुनः आगे की ओर बढ़े । इसमें सन्देह नहीं कि साहस की उनमें कमी न थी और वे इस मूख प्यास की हालत में भी हिम्मत के साथ आगे की ओर बढ़े चले गये फिर भी क्रमशः उन्हें इस बात का अनुभव होने लगा कि उनकी भारी ताकत भी अब धीरे धीरे क्षीण होती जा रही है ।

अन्त में किसी प्रकार अपने पैरों को घसीटते हुए वे एक ऐसे स्थान पर जा पहुँचे जहाँ से ऊपर की ओर चढ़ाई आरम्भ हो गई थी । यहाँ आ कर उनकी हिम्मत ने एक दम जवाब दे दिया और वे जमीन पर बैठ गये । चारों ओर मौत का सन्नाह छाया हुआ था, किसी चिड़िया तक के उड़ने की आवाज नहीं, किसी कीड़े मकोड़े तक की गुनगुनाहट नहीं । इस बात में अब उन्हें जरा भी सन्देह नहीं रह गया था कि वह स्थान निश्चय मौत की घाटी ही है ।

एक घंटा सुस्ता लेने बाद वे पुनः हिम्मत बांध कर उठे और ऊपर की ओर चढ़ने की तैयारी करने लगे परन्तु ठीक इसी समय उनकी निगाह एक ऐसी वस्तु पर पड़ी जिसे देख वे जहाँ के तहाँ ठिठक रहे । इनसे थोड़ी ही दूर जमीन पर किसी मनुष्य की खोपड़ी तथा अन्य हड्डियाँ बिखरी हुई थीं और पास में ही कपड़े वगैरह भी पड़े हुए थे । उत्सुकता के साथ टार्जन उसके पास जा पहुँचे और वहाँ पड़ी चीजों की जाँच करने लगे ।

कपड़े लत्तों की ओर देखने से उन्हें वे बहुत पुराने समय के मालूम हुए परन्तु हड्डियाँ अभी तक खराब नहीं हुई थीं। मांस या चमड़े का उनके ऊपर नामोनिशान तक न होने पर भी वे ज्यों की त्यों पड़ी हुई थीं। कदाचित् इसका कारण यही होगा कि उस ओर पाला अथवा वर्षा अधिक न होने के कारण उन्हें खराब करने योग्य कोई भी वस्तु वहाँ न थी।

इस ठठरी के समीप पीतल का एक कवच तथा पीतल का ही एक टोप पड़ा हुआ था। एक लम्बी चौड़ी तलवार पर भी उनकी दृष्टि पड़ी जिसकी पुराने जमाने की म्यान पर कितने ही प्रकार की नक्काशियाँ बनी हुई थी। हड्डियाँ भी किसी लंबे चौड़े तगड़े जवान की मालूम हो रही थीं जिन्हें देखने ही से मालूम होता था कि वह किसी समय में अच्छा दृष्ट पुष्ट कदावर आदमी रहा होगा। जिसमें हिम्मत की भी कमी न होगी क्योंकि अफ्रीका के इस भयंकर प्रदेश में इतनी दूर तक आगे बढ़ आना किसी मामूली हिम्मत वाले आदमी का काम न था।

इस मनुष्य के प्रति टार्जन को बड़ी ही श्रद्धा हुई। वे उन हड्डियों के समीप बैठ गये। धातुका बना एक फोट लम्बा तथा गोल कोई नलका भी उन्हें उस स्थान पर पड़ा दिखाई दिया। उन्होंने उसे उठा लिया और ध्यान से देखने लगे।

उस नलके के ऊपर की ओर एक पेंचदार ढकना भी बना हुआ था जिसे खोलने का उन्होंने बहुत कुछ प्रयत्न किया किन्तु जंग लग जाने के कारण वह ऐसा जकड़ सा गया था कि लगभग

आध घंटे की मेहनत बाद तब कहीं जा कर वे उसे खोल सके। उस नलके के भीतर कागजों का एक पुलिन्दा रक्खा हुआ था जिसे उन्होंने बाहर निकाला। कागज पुराना होने के कारण कुछ दम पीले हो रहे थे और उन पर जो भाषा लिखी हुई थी उसे वे जरा भी परिचित न थे हां अन्तिम कागज पर एक नक्शा अवश्य बना हुआ था। वे कागज पुनः उसी तरह लपेट कर उन्होंने उस नलके में बन्द कर दिये और उनका ढकना बन्द कर बाद उसे अपने तरकश में खोस लिया।

इतना काम समाप्त करने बाद वे उठ खड़े हुए और साफ की खड़ी चढ़ाई पर हिम्मत कर के चढ़ने लगे। कितने ही स्थानों पर बैठते तथा सुस्ताते वे धीरे धीरे ऊपर चढ़े चले जा रहे थे। कितने समय तक वे ऊपर की ओर चढ़े चले गये इसका उन्हें कुछ भी अन्दाज न मिला परन्तु जब वे एक दम ऊपर जा पहुँचे तो हाँफते हुए जमीन पर गिर पड़े।

थोड़ी देर बाद वे पुनः लड़खड़ाते हुए उठे। उनसे थोड़े दूर फासले पर इस समय पश्चिमीय पहाड़ियाँ दिखाई दे रही थीं जिनके दूसरी ओर ही वह जानवरों से भरा मैदान होगा जिसे वारे में मानू बन्दर ने उनसे कहा था परन्तु उन तक पहुँचने और उन पर चढ़ कर उस पार जाना उन्हें अब एक प्रकार से असंभव सा ही मालूम हो रहा था।

किन्तु सिवाय आगे बढ़ने के इस समय और उपाय ही क्या था ? थोड़ा सुस्ताने बाद वे पुनः आगे बढ़े। कई मील वे

प्रकार आगे बढ़ते चले गये पर उनका माथा इस समय ज़ोरों से चक्कर खा रहा था और आगे का दृश्य उन्हें एक दम धुंधला सा दिखाई दे रहा था। इसी समय एक पत्थर की ठोकर खा कर वे ज़मीन पर गिर पड़े और थोड़ी ही देर बाद जब उन्होंने उठना चाहा तब जा कर उन्हें मालूम हुआ कि उनके शरीर में इस समय उठने की ताकत बिल्कुल ही नहीं रह गई है। बड़ी मुश्किल से करवट ले कर उन्होंने आसमान की ओर देखा। गिद्ध इस समय चक्कर काटता हुआ उनके बहुत ही समीप आ गया था। वे सोचने लगे कि क्या वास्तव में उन्हें अब उस गिद्ध का भोजन बनना ही पड़ेगा। क्या गिद्ध को इस बात का निश्चय हो चुका है कि अब उनकी मृत्यु में अधिक विलम्ब नहीं है।”

परन्तु इस आपत्ति के समय भी न मालूम क्या सोच कर टार्जन मुस्कुरा उठे। अपनी आँखें बन्द कर के उन्होंने अपनी कलाइयाँ मोड़ कर एक दूसरे के ऊपर रख लीं और चुपचाप पढ़ रहे।

इस प्रकार पढ़े रहने में उन्हें बहुत कुछ आराम भी मिला। क्योंकि बादलों ने इस समय सूर्य भगवान को अपने आवरण में एकदम से ढक लिया था परन्तु इतना वे अवश्य समझ रहे थे कि यदि इस समय निद्रादेवी ने उन्हें अपनी गोद में ले लिया तो फिर वे आँखें भविष्य में कभी भी न खुल सकेंगी। अपने मस्तिष्क की समूची शक्ति खर्च कर के वे जागते रहने का

प्रयत्न करने लगे-परन्तु उनके अंग का कोई भी भाग जरा भी हिलडोल नहीं रहा था ।

गिद्ध इस समय चक्कर काटता हुआ उनके बहुत सगे पहुँच गया था । वह अब यही निश्चय करने का प्रयत्न कर रहा था कि उनमें जीवन अभी शेष रह गया है अथवा नहीं । दो बार वह उनके शरीर पर बैठने को भी हुआ परन्तु न मांस क्या सोच कर वह पुनः उड़ गया किन्तु तीसरी बार आखिर उनके ऊपर बैठ ही गया ।

सहसा उस शरीर में जिसके ऊपर कि वह बैठा था मांस बिजली की एक लहर सी दौड़ गई । लोहे के से मजबूत हाथों ने गिद्ध को शिकंजे में कस लिया । उसने स्वतंत्र होने के लिये कितने ही पंख फटफटाये, कितना ही जोर लगाया परन्तु टार्जन भी इस समय अपने शरीर की बचाव खुची सभी ताकत खर्च कर रहे थे क्योंकि इस गिद्ध पर ही इस समय एक प्रश्न से उनके जीवनमरण का प्रश्न अटका हुआ था ।

अन्त में टार्जन के दाँत गिद्ध की गर्दन पर जा जमे और उसका गर्म रुधिर उनके गले के नीचे उतरने लगा । अब उनका सुखा गला कुछ तर हुआ । नोच नोच कर उन्होंने उसका शेष बहुत मांस भी खाया जिसने स्वादिष्ट न होने पर भी इस समय उनकी आत्मा को बहुत कुछ संतोष दिया । अन्त में निद्रादेवी ने धीरे धीरे उन्हें अपनी गोद में ले लिया ।

कब तक इस अवस्था में वे पड़े रहे इसका उन्हें जरा

ज्ञान न रहा किन्तु जिस समय उनकी आँखें खुलीं वर्षा की बड़ी बड़ी बूंदें उनके शरीर पर पड़ कर उसे तरोताजा बना रही थीं। उन्होंने अपना मुँह खोल दिया जिससे वर्षा का थोड़ा बहुत जल पीने में भी वे समर्थ हुए। अब उनके शरीर की गई हुई ताकत भी धीरे धीरे वापस लौटती मालूम पड़ने लगी।

अन्त में वे उठ बैठे। वर्षा भी अब बन्द हो गई थी। उस गिद्ध का थोड़ा बहुत मांस उन्होंने पुनः खाया और तब उन्हीं पहाड़ियों की ओर वड़े जिन पर दूर ही से उनकी दृष्टि पड़ चुकी थी। अब उनकी आँखों का वह धुंधलापन भी जाता रहा था और शरीर में स्फूर्ति आ गई थी।

अन्धकार ने उन्हें चारों ओर से लपेट लिया था जिस समय वे उन पहाड़ियों के नीचे पहुँचे। यहां पहुँच आराम करने के लिये वे पुनः जमीन पर पड़ रहे और गिद्ध का बचा हुआ मांस खा कर रात भर खूब आराम से सोये।

दूसरे दिन सुबह उठ कर वे उन पहाड़ियों पर चढ़ने लगे और अन्त में उस भारी मैदान में जा पहुँचे जिसमें एक ओर जंगली जानवरों से भरा हुआ जंगल था और दूसरी ओर सामने की पहाड़ों से निकली हुई एक नदी चक्कर काटती हुई एक ओर चली गई थी। जंगल का यह सिलसिला कोसों तक चला गया था और जहाँ तक निगाह जाती थी चारों ओर हरियाली ही हरियाली नजर आ रही थी। यह एक ऐसा प्रदेश था जिस पर आज से पहले टार्जन की दृष्टि कभी भी नहीं पड़ी थी।

टार्जन और पप बन्दर



तीन दिनों तक टार्जन सुस्ताते, फलों का स्वाद लेते तथा हरे छोटे जानवरों का शिकार कर के उन्हें खाते हुए बराबर आगे ओर ही बढ़ते चले गये। समय का तो उनकी निगाह में कोई रुकावट या ही नहीं। यदि इसी प्रकार जंगलों में घूमते उन्हें वर्षों भीत जाते तो भी उन्हें इस बात का कोई ख्याल न था। संसार यदि उनका थोड़ा बहुत बन्धन था भी तो केवल उनकी जो इस समय इस संसार में मौजूद ही न थी फिर मत्ता चिन्ता किस बात की हो सकती थी।

चौथे दिन जा कर कहीं उन्हें अपने साथी पप बन्दरों का आया अस्तु वे उनकी खोज में दक्खिन की ओर बढ़े। ही दूर आगे बढ़ने बाद सहसा उनकी नाक में गोमंगानी के काले हवशियों की गंध आई और इस गंध के साथ ही एक

गंध का भी उन्हें अनुभव हुआ। यह गंध एक मादा टरमन्गाना अर्थात् किसी सफेद औरत की थी।

उन्हें बड़ा ही कौतूहल हुआ और इस बात की जांच करने के लिये वे तेजी के साथ उमी ओर बड़े जिधर से आती हुई गंध का आभास उन्हें मिला था। यदि उन्हें न्यमा शेर अथवा और किसी भयंकर जंगली जानवर का पीछा करना होता तो वे विशेष सावधानी के साथ हवा का रुख बचाते तथा दूर का चक्कर काटते हुए उसके पास पहुँचते ताकि उसकी नाक में उनके शरीर की गंध न पहुँच पाती किन्तु आदमियों का ओर से तो वे एक दम निश्चिन्त थे कारण उनकी नाक इ प्रकार की सूक्ष्म गंधों का अनुभव किसी प्रकार भी नहीं कर सकती थी।

पेड़ों की घनी झुरमुट में से उन्होंने जर्मन जंगी पोशाकें पहने कुछ हथशियों को एक ओर जाते देखा। उनके साथ में जंगली पोशाक पहने भी बहुतेरे हथशी जा रहे थे। कुछ काली औरतें भी इन लोगों के साथ हँसती तथा हँसी मजाक करती जा रही थीं। परन्तु जंगी पोशाक पहने जितने भी आदमी थे सभी बन्दूकों तथा कारतूसों से लैस थे।

गोरा अफसर इन लोगों के साथ कोई भी न था अस्तु टाजन को यह समझने में जरा भी देर न लगी कि ये लोग अपन अफसरों की हत्या कर के जंगल की ओर भाग आये हैं और जहाँ तक जल्द हो सके दूर भागने में ही इन्होंने अपनी भलाई सोची है।

वे काली औरतों के बीच में एक गोरी औरत भी जा रही

थी जो देखने ही से इन लोगों की कैदी मालूम होती थी। एक ही निगाह में टार्जन उसे पहिचान गये। उसके कपड़े लत्ते एकदम फट गये थे जिससे मालूम होता था कि बहुत लड़ाई मगाड़े के बाद ही वह इनके कब्जे में आई है। एक बार टार्जन की इच्छा हुई कि उसे इन दुष्टों के कब्जे से छुड़ा दें परन्तु जब उन्होंने उसे पहचाना तो उनका यह इरादा एक दम बदल गया। शत्रुओं के गुप्तचर की प्राणरक्षा करने से भला उन्हें लाभ ही क्या हो सकता था ?

इसी बर्था कर्चर को एक बार अपने कब्जे में पा कर भी वे अपने हृदय की दुर्बलता के कारण मार न सके थे। अब उसकी जान और भी निर्दयता से ली जायगी इसे वे मत्तीभांति जानते थे किन्तु जर्मनों की जहां तक निर्दयता के साथ हत्या की जा सकती है वही उनके आन्तरिक भाव थे।

सहसा एक ऐसे आदमी पर उनकी दृष्टि पड़ी जो अपने दल से लगभग चौथाई मील पीछे छूट गया था। इस समय वह उन लोगों के पास पहुँचने के लिये बड़ी तेजी के साथ आगे की ओर बढ़ा जा रहा था। पेड़ पर बैठे हुए टार्जन ने जैसे ही उसे अपने नीचे से गुजरते देखा फौरन उसके गले में अपना घास का बन्ध रस्सा डाल कर उन्होंने ऊपर की ओर खींचा।

हवा में झूलता हुआ वह हबशी एक बार जोर से चिल्ला उठा। चिल्लाने की आवाज उसके साथियों के कानों तक भी पहुँच गई क्योंकि वे सब के सब रुक गये तथा हवा में ऊपर की ओर

उठते हुए अपने एक साथी को देख कर तो मारे भय के उनके देवता ही कूच कर गये

कुछ देर तक तो वे लोग सकते की सी हालत में जहाँ के तहाँ खड़े रहे परन्तु इसी समय उनके अफसर उसांगा ने उन्हें ललकार कर आवाज दी, “देखते क्या हो बेवकूफो ! दौड़ कर उसकी जान क्यों नहीं बचाते ?”

इतना कह कर उसांगा तेजी के साथ उस पेड़ की ओर दौड़ा लाचार उसके साथी भी अपनी अपनी बन्दूकें सम्हाल कर उसके पीछे दाँड़े और शीघ्र ही उस पेड़ को उन्होंने चारों से घेर लिया ।

परन्तु बहुत देखने भालने पर भी उन्हें उस पेड़ पर अपने साथी अथवा अन्य किसी और व्यक्ति की सूरत दिखाई न दी । उसी पेड़ पर ऊँचे की ओर उठते हुए उन्होंने अपने साथी को अपनी आँखों से देखा था परन्तु एकाएक वह लापता कहाँ हो गया ! एक आदमी ने पेड़ पर चढ़ कर इस बात का पता लगाने की भी हिम्मत की परन्तु थोड़ी ही देर में जमीन पर कूद कर उसने खबर दी कि पेड़ पर उसके साथी का कहीं भी पता नहीं है ।

भय और आश्चर्य से भरे हुए ये लोग लाचार हो कर आगे की ओर बढ़े । परन्तु अभी वे लोग लगभग एक मील से अधिक दूर न गये होंगे कि सब से आगे वाला आदमी जोर से चीख उठा । दौड़ कर सभी लोग उसके पास जा पहुँचे परन्तु वहाँ पहुँचने पर जिस दृश्य पर उनकी दृष्टि पड़ी उसने उनके रहे सहे होश भी हवा कर दिये । एक टूटी हुई छाल के ऊपर उनका साथी पेड़

के सहारे बैठा उनकी ओर देख रहा था परन्तु वह जिन्दा न था!

यह तमाशा देख किसी की भी हिम्मत आगे बढ़ने की न हुई और उनमें से कितनों ही ने तो पीछे की ओर वापस लौट जाने तक का इरादा कर लिया। उन्हें विश्वास हो गया कि जंगल का कोई देव उन लोगों से किसी कारणवश नाराज हो गया है किन्तु जब उनके अफसर उसांगा ने उन्हें डांटा और भय दिखाया कि पीछे लौटने पर वे लोग फौरन ही जर्मन फौज द्वारा गिरफ्तार कर लिये जायेंगे और उनमें से एक की भी जान न बचेगी, तो वे लोग लाचार हो कर पुनः आगे की ओर बढ़े।

हवशियों का स्वभाव है कि वे अधिक समय तक अपना ध्यान एक ही ओर नहीं लगा सकते अस्तु धीरे धीरे यह घटना उन्हें विस्मरण सी होने लगी और और जब उनका भय मकर कम होने लगा तो वे पुनः पूर्व की ही भांति हँसते खेलते आगे बढ़ने लगे। उस गोरी औरत को भी यह तमाशा देख कम आश्चर्य नहीं हुआ परन्तु वह तो जहां तक शीघ्र हो सके अपनी मृत्यु के लिये ही ईश्वर से प्रार्थना कर रही थी अस्तु इस ओर उसने विशेष ध्यान न दिया।

तीसरे पहर जंगल के बीच एक साफ मैदान में नदी के किनारे बसे एक छोटे से गांव में ये लोग पहुँचे। गाँव के कितने ही लोग इन पर निगाह पड़ते ही बाहर निकल आये और उसी क्षण अपने दो लड़कों को साथ ले कर गाँव के सदाँर से बातें करने के लिये आगे बढ़ा। जंगल के उस देव से ये लोग इतने हो

हुए थे कि गाँव वालों से किसी प्रकार का भी समझौता करने के लिये पूरी तौर से तैयार थे परन्तु सब से पहले उन्होंने यह बात हरियाफ्त कर लेना ही युक्तिसंगत समझा कि उस देव का इन गाँव वालों पर भी तो किसी प्रकार का क्रोध नहीं है। यदि उस की इन गाँव वालों पर कुछ भी कृपा मात्स हुई तो उसांगा गाँव वालों की हर प्रकार से इच्छा करने के लिये तैयार था।

थोड़ी ही देर की बातचीत से उसांगा को पता चल गया कि गाँव वाले उनके पास की कुछ चीजों के बदले में उन्हें आटा, बकरे, चिड़ियाएँ तथा रहने के लिये झोपड़ियाँ तक देने के लिये तैयार हैं परन्तु जब उसांगा ने देखा कि इसके लिये उसे अपनी कितनी ही बन्दूकों तथा कारतूसों से हाथ धोना पड़ेगा तो उसे चिन्ता हुई कि कहीं भोजन के लिये उसे गाँव वालों से युद्ध न करना पड़े।

परन्तु थोड़ी ही देर बाद यह तय पाया कि उसांगा अपने कुछ लड़ाकों को जंगली जानवरों के शिकार के लिये भेजे और इन मार कर लाये हुए शिकारों के बदले गाँव वाले उन्हें खाने का सामान तथा रहने का स्थान दें। सब बातें तय हो जाने के बाद उसांगा अपने साथियों के साथ उन झोपड़ियों की ओर बढ़ा जो गाँव के सदाँर ने उन लोगों के ठहरने के लिये निश्चित कर दी थी।

कुछ देर बाद वहाँ कर्चर ने अपने को गाँव की सड़क के अन्तिम छोर पर बनी एक झोपड़ी में अकेली पड़ी पाया।

उसांगा ने उसे समझा दिया था कि उस स्थान से भागने में जो जंगली जीवों के हाथ अपनी जान खोनी पड़ेगी अस्तु उसकी भलाई इसी में है कि वह उसके साथ अच्छे से अच्छा बर्ताव करे। इतना कह कर उसांगा कुछ देर बाद आने के बाद कर के उसके पास से चला गया था।

कचर ने दोनों हाथों से अपना मुँह ढंक लिया और सिसक सिसक कर रोने लगी। उसकी रक्षा के लिये इस समय एक भी औरत उसके पास नहीं छोड़ी गई थी अस्तु उस चालाक उसांगा का असली इरादा क्या है इसे वह भलीभांति समझ गई थी। यदि उसे आशा थी तो केवल इसी बात की कि उसांगा की लम्बी चौड़ी तगड़ी बीबी अपने पति पर मामूली से अधिक दृष्टि रखती थी और उसांगा भी सदा उसके भय से कांप करता था।

कितने ही तरह के विचार इस समय उसके चित्त में उठ रहे थे। उसके पास में इस समय कोई भी न था प्रायः सभी लोग गाँव के दूसरी ओर एकत्रित गाँव वालों के साथ खाने पीने तथा मौज करने में लगे हुए थे। अफ्रीका प्रदेश के भयावह जंगल के बीच बसे इस गाँव में इन हथियारों के हाथ अकेली पड़ी बर्था कचर के ऊपर क्या गुजर रही होगी इसे वही समझ सकती है।

घंटों इसी प्रकार गुजर गये पर उसके पास कोई भी न आया। वह अकेले पड़े पड़े घबड़ा उठी और झोपड़ी से निकल

कर उस ओर चली जिधर से कितने ही लोगों के शोरोगुल की आवाज आ रही थी ।

गांव वाले इस समय एक स्थान पर भारी आग जला कर उसके चारों ओर उछल कूद मचा मचा रहे थे । देशी शराब की मटकियों पर मटकियाँ खाली हो रही थीं जिनके द्वारा कि वे अपने नये मेहमानों की भरपूर खातिर कर रहे थे । शराब ने भी इन लोगों पर धीरे धीरे अपना पूरा असर जमाना आरम्भ कर लिया था ।

मोपड़ियों की आड़ में अपने को छिपाती हुई बर्था कर्चर धीरे धीरे इन लोगों के समीप जा पहुँची । इस समय वह उसांगा की बीबी नराट्ट की खोज में थी जिसके सहायता की उसे बहुत कुछ आशा थी । नराट्ट का वर्ताव उसके प्रति अच्छा न था किन्तु सिवाय उसके उसे और आधार ही क्या था । कम से कम उसे इतना विश्वास तो अवश्य था कि उसके मन से उसांगा उसके शरीर पर किसी प्रकार का अत्याचार न कर सकेगा ।

एक एकान्त स्थान पर खड़ी बर्था कर्चर अभी इन लोगों की ओर देख ही रही थी कि सहसा उस मंडली में की एक लम्बी चौड़ी काली तथा भदी औरत की दृष्टि उस पर जा पड़ी और वह चिल्लाती हुई उसकी ओर दौड़ी । ऐसा मालूम होता था मानों वह उसे फाड़ ही खायगी । यदि एक दूसरे हवशों की निगाह भी इसी समय उस पर न जा पड़ी होती और वह उसकी

रक्षा के लिये दौड़ कर उसके पास न आ पहुँचा होता तो औरत न मालूम उसकी क्या गत बनाती ।

उसांगा को भी इस हलचल का पता लग गया । वह दौड़ कर बर्या कर्चर के पास जा पहुँचा और उसके कमर में हाथ डाल कर एक ओर ले जाता हुआ बोला, “ओह ! मैं तो तुम्हें मार ही गया था । अवश्य तुम्हें भूल लगी होगी । चलो चलो पहले तुम्हारे लिये खाने का इन्तजाम करूँ ।”

बर्या कर्चर ने चिल्ला कर कहा, “नहीं नहीं मैं नराटू को खोज रही हूँ नराटू को ! वह कहाँ है ।”

इस नाम का उसांगा पर बड़ा भारी असर पड़ा और उसने तेजी बहुत कुछ कम हो गई । एक बार उसने इस भय से चारों ओर देखा कि कहीं नराटू उसे देख तो नहीं रही है इसके बाद उस हवशी को जो उस काली औरत को पकड़े हुए था, उसने कर्चर को उसकी मोपड़ी में ले जाने तथा वहाँ बैठ कर उस पर पहरा देने की आज्ञा दी ।

बर्या कर्चर को उसकी मोपड़ी में पहुँचा कर वह हवशी मोपड़ी के दर्वाजे पर जा बैठा और आराम से मटकी में से शराब उँडेल उँडेल कर पीने लगा । दुश्चिन्ताओं के कारण बर्या कर्चर की आँखों में इस समय नींद का नामोनिशान तक न था । आधे घंटे के बाद उस हवशी ने उस मोपड़ा के अन्दर रक्खा और अपना भाला दीवार के सहारे खड़ा करने बाद बर्या कर्चर की ओर बढ़ा ।

वर्था चिल्ला उठी, “खबरदार यदि मेरे बदन में जरा भी हाथ लगाया तो मैं उसाँगा से कह दूँगी। वह तुम्हारी क्या गत बनायेगा इसे समझ रखो।”

परन्तु शराब के नशे में चूर वह हवशी उसकी इस बात के उत्तर में केवल हँस भर दिया और उसका हाथ पकड़ कर उसने उसे अपनी ओर खींचा। इसी समय एक दूसरा आदमी मोपड़ी के दर्वाजे पर आ पहुँचा और वहीं से ललकार कर बोला, “क्या मामला है ?”

जब उसाँगा को मालूम हुआ कि यह उस हवशी की शरारत है तो उसने लात मार कर उसे मोपड़ी के बाहर कर दिया परन्तु वर्था को इससे जरा सी संतोष न हुआ क्योंकि वह जानती थी कि उसाँगा का वर्ताव उसके प्रति और भी खराब होगा।

और हुआ भी ऐसा ही ! उसाँगा इस समय नशे में एक दम चूर था। अपने दोनों हाथ फैला कर वह तेजी के साथ कर्चर की ओर बढ़ा। कर्चर ने उसके चेहरे पर कितने ही मुक्के मार कर अपने को बचाना चाहा पर जब इससे भी कोई काम चलता न देखा तो नराट्ट का भय दिखा कर उसने उसे अपने से अलग करने की कोशिश की। नराट्ट का नाम सुन कर उसाँगा का जोश कुछ ठंडा पड़ा और वह उससे अनुनय विनय के साथ बातें करने लगा परन्तु ठीक इसी समय वह हवशी जिसे थोड़ी ही देर पहले उसाँगा ने लात मार कर बाहर निकाल दिया था, नराट्ट के साथ उस मोपड़ी में घुस आया।

चिल्लाती, छल्लाती, कूदती नरादू को अपनी ओर बढ़ते के
 उसांगा भय के मारे मोपड़ी से निकल कर भागा। नरादू ने
 दौड़ते हुए उसका पीछा किया। अब उस हवशी की वन
 और वह यह कहता हुआ कर्चर की ओर बढ़ा, "ठीक है
 मुझे रोकने वाला कोई भी नहीं है।"

.X

.X

X

X

ताजा शिकार किया हुआ गोश्त खाते खाते एकाएक टार्जन
 का चित्त व्याकुल हो उठा। न मालूम क्यों बर्था कर्चर
 तस्वीर रह रह कर उनकी आँखों के सामने नाच उठती थी।
 अपनी इस कमजोरी पर उन्हें बड़ा ही क्रोध आया। शत्रु
 का एक गुप्तचर—सो भी जर्मनों का—जितनी निर्दयता से मारा
 जाय अच्छा अस्तु यदि बर्था कर्चर जंगलियों द्वारा मून कर
 भी डाली गई तो उनका क्या ! उन्होंने अपने दिल को बहुत
 समझाया परन्तु उनके चित्त की घबराहट कम न हुई।

रात हुई और टार्जन एक ऊँचे पेड़ पर जा कर सो रहे, पर
 फिर वही ख्याल ! बर्था कर्चर कष्ट में होगी, हवशी औरतें
 तरह तरह का दुःख दे रही होंगी इस ख्याल ने उन्हें सोने
 न दिया।

अन्त में उन्होंने यही स्थिर किया कि वह किस अवस्था
 है इस बात का पता लगाया जाय। वे फौरन उठ खड़े हुए
 उस स्थान पर पहुँचे जहाँ से उन्होंने उन जंगलियों का
 छोड़ा था।

यहाँ से इस बात का पता लगाने में उन्हें जरा भी असुविधा न हुई कि वे लोग किस राह से गये हैं और अन्त में वे एक ऐसे स्थान पर जा पहुँचे जहाँ जंगलियों के देगचों से निकली गंध उनकी नाक में आई। अब वे सावधानी के साथ पेड़ों पर आगे बढ़ने लगे और जब जंगलियों के गाँव के ठीक ऊपर पहुँचे तो उस गोरी औरत की सूक्ष्म गंध का अनुभव करते करते ठीक उस मोपड़ी के पास पहुँच गये जिसमें बर्था कर्चर कैदी की हालत में रखी गई थी।

यहाँ पहुँच कर वे चुपचाप जमीन पर उतर आये और मोपड़ी के दर्वाजे की ओर बढ़े। चारों ओर सन्नाटा था अस्तु वे बड़ी ही सावधानी के साथ मोपड़ी में घुस गये।

मोपड़ी के अन्दर एक दम सन्नाटा था ! केवल जमीन पर एक हथेली की लाश पड़ी उन्हें दिखाई दी जिसकी छाती में माला खुसा हुआ था। मुक कर उन्होंने भाले की मूठ के साथ अपनी नाक को लगाया और तब एक हलकी मुसकुराहट उनके होठों पर दौड़ गई।

वहाँ से बाहर निकल कर वे एक बार गाँव भर खोज आये परन्तु बर्था कर्चर का कहीं भी पता न लगा अस्तु उन्हें विश्वास हो गया कि अवश्य वह उस गाँव से किसी ओर भाग निकली। अब वे उसकी ओर से निश्चिन्त हो गये और पेड़ों पर झूलगें मारते एक ओर बढ़े।

अभी वे अधिक दूर न गये होंगे कि दूर से आती हुई एक

विचित्र प्रकार की आवाज ने उनके कान खड़े कर दिये। ध्यान से सुनने लगे और तब उनके मुँह से एकाएक ठीक वैसी ही तेज तथा भयंकर आवाज निकली जैसी कि एप वन्दर अपने साथियों को बुलाने के लिये इस्तेमाल किया करते हैं इसके साथ वे तेजी के साथ उसी ओर बढ़े जिधर से आती हुई आवाज उनके कानों में पड़ी थी।

x x - x x

जंगल के बीच से तेजी के साथ भागती हुई बर्था कर्चर चित्त में इस समय एक ही खयाल था और वह यह कि मनहूस गांव को वह जहाँ तक दूर छोड़ सके उतना हा अच्छा किस्मत ने भी इस समय उसका साथ दिया क्योंकि जंगल भयानक जानवरों से भरे इस जंगल में आगे बढ़ते हुए भी किं दारिन्दे जानवर से उसकी भेंट न हुई।

वह इसी प्रकार लगभग दो तीन घंटे तक भागती गई होगी कि उसके कानों में इस प्रकार की आवाज आई मानों कोई शेर थथवा चीता गुराँता हुआ इधर से उधर चल फिर रहा हो। उस समय कर कि जंगलियों का गाँव अब बहुत पीछे छूट गया होगा उसने पेड़ पर चढ़ कर रात काटने का ही निश्चय किया और एक खूब ऊँचे और मजबूत पेड़ पर धीरे धीरे चढ़ने लगी।

अभी वह पेड़ के ऊपरी भाग में पहुँच कर आराम से बैठी ही थी कि उसे मालूम हो गया कि वह पेड़ एक बड़े भारी मैदान के किनारे पर है।

वह ध्यान से उसी मैदान की ओर देखने लगी परन्तु वहां पर उसने जो नजारा देखा उससे उसके शरीर के सारे रोंगटे खड़े हो गये। बड़े ही हृष्ट पुष्ट बीस पच्चीस एप बन्दर मैदान में इधर से उधर घूम फिर रहे थे।

बड़े ही ध्यान ने बर्था कर्चर इन लोगों की ओर देख रही थी कि सहसा उसी जाति के और भी कितने ही बन्दर उस स्थान पर आकर एकत्रित होने लगे यहाँ तक कि उनकी गिनती पचास से भी अधिक हो गई।

अब एप बन्दरों का यह झुण्ड मट्टी के एक ऊँचे ढूँहे के चारों ओर मंडल बांध कर खड़ा हो गया। ढूँहे के पास तीन एप बन्दरियाँ बैठी हुई थीं जिनके हाथों में लकड़ी का मोटा मोटा मुद्गर था। इन्हीं मुद्गरों की चोट से मट्टी के उस ढूँहे पर जोर जोर से देने लगीं जिसकी आवाजें सुन के एप बन्दर बड़ी ही तेजी के साथ नाचने कूदने लगे।

मट्टी के इस नक्कारे की आवाज धीरे धीरे ताल और सुर के साथ होने लगी जिसका साथ देते हुए बाकी के एप बन्दर अपनी लम्बी लंबी टांगों उठा कर नाचने लगे। उस ढूँहे के चारों ओर उस समय एप बन्दरों का दो मंडल बना हुआ था। बाहरी मंडल में तो केवल बन्दरियाँ और उनके बच्चे थे और भीतरी मंडल में एक से एक कहावर एप बन्दर !

पत्तों की आड़ में अपने को छिपाये बर्था कर्चर एप बन्दरों का वह दिल् दहलाने वाला नजारा देख ही रही थी कि सहसा उसके

कानों में जंगलियों के उसी गांव की ओर से जहां से कुछ दे पहले ही वह भाग निकली थी, एक तेज आवाज आती सुनाई दी। उस आवाज ने इन बन्दरों पर बिजली का सा असर पैदा किया। उन्होंने एकाएक अपना नाच बन्द कर दिया और ध्यान लग कर सुनने लगे। इसके बाद उनमें से एक एप बन्दर ने जो औरों के अधिक कहावर तथा दृष्ट पुष्ट था, अपना मुँह आसमान की ओर उठाया और बड़ी ही तेज आवाज में उस दूर से आने वाली आवाज का उत्तर दिया। इस भयंकर आवाज को सुन कर कर्चर का कलेजा दहल उठा।

अब पुनः वही नाच और नक्कारे पर मुद्गरों की चोटें आरम्भ हुईं। न मालूम क्यों इन भयावने बन्दरों के इतने समीप होने पर भी बर्था कर्चर इस समय अपने को अधिक निरापद समझ रही थी और उसने यही निश्चय कर लिया था कि सारी रात इस पेड़ पर काट कर सुबह होते ही वह आगे की ओर बढ़ने का उपक्रम करेगी।

आधा घंटा इसी प्रकार बीत गया। सहसा वही एप बन्दर जिसने दूर से आई हुई उस आवाज का उत्तर दिया था अपने मंडल से बाहर निकला और नक्कारा बजाने वाली उन तीनों बन्दरियों और एप बन्दरों के भीतरी झुंड के बीच खड़ा हो कर जोर जोर से उछलने कूदने लगा। इसके बाद वह एकाएक खड़ा हो गया। उसका मुँह आसमान की ओर उठा और तब उसके मुँह से वही एप बन्दरों की विजय के समय निकली हुई

टार्जन बोले, "मैं इसे समझता हूँ परन्तु वह तो इसे नहीं समझता ! वह न्यूमा घेर अथवा चीते की भांति हम लोगों की भी बोली नहीं समझ सकती । वह तो यही समझती है कि तुम उसे नुकसान पहुँचाने के लिए ही उसकी ओर बढ़ रहे हो ।"

टार्जन युवती के एकदम समीप जा पहुँचे थे । युवती के कान में वे धीरे से बोले, "घबड़ाओ मत यह तुम्हें किसी तरह का भी नुकसान नहीं पहुँचावेगा । मैं इसे अच्छा सबक सिखा चुका हूँ और यह समझ गया है कि मैं जंगल का राजा टार्जन हूँ । मेरी जो चीज है उसे यह जरा भी हानि नहीं पहुँचा सकता ।"

युवती ने बड़े ही ध्यान से टार्जन के चेहरे की ओर देखा । वह समझ गई कि टार्जन जो कुछ भी कह रहे हैं वह उनके हृदय के भाव नहीं हैं बल्कि वे उसे अपनी चीज केवल इसी लिये बता रहे हैं कि इस भयानक एप बन्दर से उसकी रक्षा कर सकें ।

युवती ने कहा, "परन्तु मुझे उससे भय लगता है ।"

टार्जन बोले, "किन्तु तुम्हें अपना भय किसी प्रकार भी प्रकट न करना चाहिये । अकसर ये एप बन्दर तुम्हें घेर लिया करेंगे परन्तु इससे तुम्हें जरा भी भय न करना चाहिये । इन बन्दरों से घिरे रहने पर तुम्हें और किसी प्रकार की भी आपत्ति का भय न रहेगा । मैं तुम्हें इस बात का भी उपाय बता दूँगा कि यदि इनमें से कोई एप बन्दर कभी तुम्हारे ऊपर हमला कर बैठे तो तुम्हें किस प्रकार उससे अपनी रक्षा करनी होगी । यदि तुम्हारे स्थान पर मैं होऊँ तो मैं इनके साथ रहना ही अधिक पसन्द

करूँ। जंगल में ऐसे जानवर मुश्किल से मिलेंगे जो इन एप बन्दरों के एक ही स्थान पर एकत्रित रहने पर उनके ऊपर हमला कर सकें। यदि तुम उन पर जरा भी इस बात को प्रकट करोगी कि तुम्हें उनसे भय-मालूम होता है तो तुम्हारी जान हमेशा खतरे में रहेगी खास कर मादाएँ तुम्हारे ऊपर अधिक हमला करेंगी। मैं उन्हें अच्छी तरह समझा दूँगा कि तुम्हारे पास उनसे अपनी रक्षा करने तथा उन्हें मार डालने तक का काफी साधन है। यदि आवश्यकता हुई तो मैं तुम्हें यह समझ भी दूँगा और तब वे तुमसे डरेंगी और तुम्हारी इज्जत करेंगी।

युवती बोली, “मैं इस बात की कोशिश करूँगी परन्तु मैं जानती हूँ कि ऐसा करना मेरे लिए सहज काम नहीं है।

इस समय तक और भी कितने ही एपबन्दर मैदान में निकल आये थे और उनके छोटे छोटे बच्चे इधर उधर उछल कूद मचाते दिखाई दे रहे थे! यद्यपि दमदम वाली रात को इन लोगों ने उस युवती को भली भाँति देख लिया था और उसे पूर्ण रूप से पहचान भी गये थे फिर भी उसकी ओर से अभी तक उन लोगों की उत्सुकता कम न हुई थी। कुछ मादाएँ उसके पास पहुँच कर तब उसके कपड़े हाथ से पकड़ कर आपस में बातें कर रही थीं। वहीं मुश्किल से बर्था कर्चर आन्तरिक भावों को छिपा अपने से प्रसन्न रखने का प्रयत्न करने लगी। टार्जन इस समय अलग खड़े मुस्कुरा रहे थे। बर्था कर्चर की चाहे कितनी भी दुर्दशा क्यों न हो उन्हें जरा भी चिन्ता न थी फिर भी उन्हें इस बात

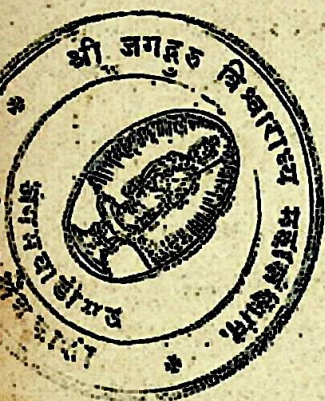
बड़ी ही प्रसन्नता हो रही थी कि वह युवती किस प्रकार हिम्मत के साथ अपने को सम्हाले हुई प्रसन्नता के भाव दिखा रही है। सम्य देशों में बहुत समय बिता चुकने पर इस बात को समझने में उन्हें जरा भी देर न लगी कि उस युवती के हृदय पर इस समय क्या बीत रही होगी। सहसा वे एप बन्दरों की ओर घूमे और बोले, "टार्जन अपने तथा अपनी साथिन के लिये शिकार करने जाता है। मेरी साथिन उस मोपड़ी में रहेगी। सावधान! उसे तुम लोगों में से कोई भी नुकसान पहुँचाने की चेष्टा न करे।

सभी एप बन्दरों ने सिर हिलाते हुए कहा, "नहीं नहीं हम लोग उसे किसी तरह का भी नुकसान न पहुँचावेंगे।"

टार्जन बोले, "मेरे कहने का मतलब यह है कि यदि किसी ने उसे नुकसान पहुँचाया तो टार्जन उसे जीता न छोड़ेगा।"

इतना कह कर टार्जन बर्था कर्चर की ओर घूमे और बोले, "अच्छा तुम अब यहाँ से सीधे उस मोपड़ी में चली जाओ। वहाँ मेरा बर्था रक्खा है उसे सदैव अपने साथ रक्खो। किसी प्रकार की भी विपत्ति पड़ने पर उससे तुम्हें भारी सहायता मिलेगी।"

इतना कह कर टार्जन वहाँ से सीधे जंगल की ओर चल पड़े। बर्था कर्चर खड़ी उस सुन्दर दृष्ट पुष्ट शरीर को तब तक स्थिर दृष्टि से देखती रही जब तक कि वह आँखों से ओझल न हो गया। इसके बाद वह उस मोपड़ी में लौट आई और जमीन पर बैठने बाद दोनों हाथों से अपना मुँह ढाँक फूट फूट कर रोने लगी।



जङ्गलियों के हाथ में

—०—

टार्जन इस समय बारा हरिन अथवा दोहरी सूअर की खोज में नदी के किनारे किनारे आगे की ओर बढ़े जा रहे थे परन्तु बहुत दूर निकल जाने पर भी उनकी नाक में किसी जानवर की गंध न आई। सहसा उन्हें एक स्थान पर बमावू जाति के जंगलियों की गंध आई और साथ ही इसके उस जेवनार की गंध भी उन्हें मालूम होने लगी जिसमें मनुष्य-मांस खाया जाता है। इस गंध के वे पूरी तौर से अभ्यस्त थे क्योंकि अफ्रीकन जंगलियों में रह कर कई बार उन्हें ऐसी जेवनारें देखने का मौका मिल चुका था।

टार्जन को अपने जंगली जीवन में इन काले जंगलियों को खाने के समान आनन्द और किसी बात में भी नहीं आता था। उनके भोजन की प्रधान सामग्री अर्थात् मनुष्य कैदी को इस दंगे

गायब कर देना कि उनके हृदय में आतंक छा जाय उनका चिर अभ्यस्त तथा परमप्रिय खेलबाद था और इस समय भी वे उसी कैदी की खोज में पेड़ों ही पेड़ों पर चढ़ते कूदते जंगलियों के उस गांव के ठीक उपर की ओर जा पहुँचे।

पेड़ पर चढ़ने के टार्जन पूरी तौर से अभ्यस्त थे परन्तु कभी कभी वे भी पूरा धोखा खा जाते थे। जिस ढाल पर वे चढ़े हुए इस समय आगे की ओर बढ़ रहे थे उसे कीड़ों ने खा कर एक दम से कमजोर बना दिया था परन्तु पत्तियाँ उस पर ऐसी बहुतायत से निकली हुई थीं कि टार्जन को इस बात का सन्देह तक न हुआ। जैसे ही वे उस कीड़े खाये हुए स्थान पर पहुँचे, वह ढाल टूट कर नीचे की ओर गिरी और उसके साथ ही साथ टार्जन भी नीचे गिरे। पेड़ पर लतायें बहुतायत से चढ़ी हुई थीं जिनमें उनका पैर फँस जाने के कारण वे अपने को सम्हाल भी न सके और सिर के बल सीधे गांव की सड़क पर जा गिरे।

पेड़ से जमीन पर किसी आदमी को गिरते देख जंगली लोग दौड़ते हुए सीधे उसी स्थान पर जा पहुँचे जहां जमीन पर बेहोश टार्जन पड़े हुए थे। पहले तो उन लोगों को सन्देह हुआ कि वह आदमी जीवित नहीं है परन्तु जब अच्छी तरह जाँचने पर उनका यह भ्रम दूर हो गया तो उन्होंने फौरन ही टार्जन की मुर्कें कस दीं और उन्हें सीधे उसी मौपड़ी में पहुँचा दिया जिसमें लेफ्टिनेन्ट स्मिथ ओल्डविक हाथ पैर बांध कर रखे गये थे।

पेड़ के टूटने तथा किसी चीज के धम्माके के साथ गिरने की

आवाज लेफ्टिनेन्ट स्मिथ ओल्डविक ने भी सुनी थी परन्तु वह उन्होंने टार्जन को हाथ पैर बांध कर अपने पास लाये जाते देख तो उन्हें बड़ा ही दुःख हुआ। उन्होंने किसी भी मनुष्य का अपने जीवन में ऐसा सुडौल तथा सुन्दर शरीर नहीं देखा था और यद्यपि हथियारों तथा पहनावे से वह भी किसी जंगली जाति का ही मनुष्य मालूम होता था फिर भी उसका उन्नत ललाट उसके बुद्धिमान होने का परिचय दे रहा था।

जंगली लोग अब और अधिक भोजन मिलने की सुशीलें छल्लते कूदते इस समय उस मोंपड़ी के बाहर निकल गये थे। वह अंग्रेज युवक इस समय एकान्त देख गौर से टार्जन का चेहरा देखने लगा। सहसा उसे टार्जन की पलकें कुछ हिलती हुई मालूम पड़ीं और इसी समय टार्जन ने अपनी आँखें खोल दीं। अपने सामने एक अंग्रेज कैदी को देखते ही सब मामला उनकी समझ में आ गया और वे मुसकुराते हुए बोले, “आज रात में इन जंगलियों का पेट अच्छी तरह भर जायगा।”

अंग्रेज युवक गम्भीर भाव से बोला, “जिस प्रकार छल्ले हुए तथा शोरागुल ये लोग मचा रहे हैं उसे देखते हुए तो यह मालूम होता है कि इन्हें इस समय हृदय दर्जों की भूख लगी हुई है।”

टार्जन ने उत्तर दिया, “इसमें गलती मेरी ही है। पेड़ की डाल के कमजोर होने का पता मुझे न लग सका फिर भी गिरते वक्त यदि मेरे पैर लताओं में उलझ न गये होते और मैं मुँह के बल जमीन पर न गिरता तो ये लोग मुझे कभी जिन्दा गिरफ्तार न कर पाते।”

अंग्रेज युवक उसी प्रकार गम्भीर शब्दों में बोला, “क्या इनसे बचने का अब कोई भी उपाय नहीं है !”

टार्जन ने कहा, “मैं स्वयं ऐसी आपत्तियों से कई बार जीवित निकल चुका हूँ दूसरों को भी मैंने कितनी ही बार बचते देखा है। एक बार तो मैंने एक ऐसे आदमी को बचते देखा है जिसके नीचे आग बल चुकी थी और एक दर्जन से अधिक वज्रों का जख्म उसके शरीर पर लग चुका था।

अंग्रेज युवक कांप उठा। टार्जन मुस्करा कर बोले, “इसमें डरने की कोई बात नहीं। सुनने से इस प्रकार की मृत्यु जैसी यंत्रणादायक मालूम होती है वास्तव में वैसी बात नहीं है। आदमी बहुत जल्द बेहोश हो जाता है और तब वह किसी प्रकार का भी कष्ट अनुभव करने योग्य नहीं रह जाता। फिर मरना तो एक न एक दिन सभी को है आज न सही कल, एक महीने बाद अथवा कुछ वर्षों बाद ! फिर इसमें डरने की बात ही कौन सी है !”

युवक बोला, “आपका यह दर्शन-शास्त्र मेरे ऐसे आदमियों के काम में आने योग्य वस्तु नहीं है और न मुझे इससे किसी प्रकार का संतोष ही हो सकता है !”

टार्जन खिलखिला कर हँस पड़े और बोले, “अच्छा तुम लुढ़कते हुए मेरे पास आओ तो मैं तुम्हारे बंधन अपने दांतों से खोलने की कोशिश करूँ।”

बड़ी मुश्किल से वह युवक लुढ़कता पुड़कता टार्जन के समीप जा पहुँचा और उन्होंने अपने दांतों से उसके बंधन बहुत कुछ

ढीले कर दिये। थोड़ी ही देर में वह अपना बंधन खोल कर कदाचित् टार्जन के बंधन भी खोल देता परन्तु इसी समय एक पहरेदार अन्दर घुस आया। आते ही वह सब मामला समझ गया और सहायता के लिये चिन्ता कर इन लोगों की ओर बढ़ा।

कितने ही लोग दौड़ते हुए मोपड़ी में घुस आये और अपने-अपने बंधन पहले से भी अधिक मजबूती के साथ कस दिये गये। इसके बाद दोनों को मोपड़ी के दो ओर दीवार से बांध देनेवाले दो लोग पुनः बाहर चले गये।

अंग्रेज युवक टार्जन की ओर देख कर बोला, “अब तो वक्ते की कोई आशा नहीं दिखाई देती भाई !”

टार्जन बोले, “जब तक समय है तब तक आशा है !”

निराश भाव से स्मिथ ओल्डविकने उत्तर दिया, “परन्तु इस समय इन दोनों ही का अभाव है। ये लोग भूखे मालूम होते हैं !”

x

x

x

x

एप बन्दरों में इस समय सब से अधिक बलवान तथा बुद्धिमान जूटग था जिसने अभी अभी जवानी में पैर रक्खा था। इस जाति के सर्दार गोलुट की समझ में यह बात अच्छी लग आई थी कि जूटग किसी न किसी दिन सर्दारी पाने के लिये उससे अवश्य युद्ध करेगा और यही कारण था कि वह जूटग से सदा अग्रसन्न रहता था। जूटग भी इसकी भाव भंगी देख कर तब हो सकता था एप बन्दरों से दूर ही दूर रहता और अपने ही घूम घूम कर अपने लिये शिकार की तलाश किया करता था।

वह कितना निडर था यह बात इसी से प्रगट होती थी कि वह एप बन्दरों के समूह में रह कर अपनी रक्षा का प्रबन्ध नहीं करता था। दूर दूर की सैर करने तथा नई नई बातें देखने सुनने से उसकी बुद्धि भी अन्य एप बन्दरों की अपेक्षा कहीं अधिक तेज हो गई थी। अकसर वह अपने चिर शत्रु गोमन्गानियों अर्थात् काले ह्वशियों के गावों में पहुँच कर किसी ऊँचे पेड़ पर जा बैठता था और ध्यान से उनके कामों को देख शिक्षा ग्रहण किया करता था।

आज भी दूर दूर की सैर करता हुआ वह बामाबुओं के गांव में एक ऊँचे पेड़ पर बैठा हुआ था। सहसा उसके कानों में टार्जन के पेड़ पर से गिरने की आवाज आई। कितने ही जंगली उनकी ओर दौड़े जा रहे थे जो शीघ्र ही उन्हें उठा कर एक मोपड़ी की ओर ले चले। जूटग टार्जन को एक ही निगाह में पहचान गया और उन्हें जिस तरह भी हो इन शत्रुओं से छुड़ाने की इच्छा उसके हृदय में प्रबल रूप से जागृत हो उठी।

एक बार तो मोपड़ी में घुस कर उन्हें स्वतंत्र कर देने की इच्छा उसके मन में हुई परन्तु जब उसे शत्रुओं की अधिक संख्या का ख्याल आया और उसने कितने ही आदमियों को मोपड़ी के दरवाजे पर पहरा देते देखा तो वह समझ गया कि उन्हें छुड़ाना अकेले उसके हाथ की बात नहीं है अस्तु जिस प्रकार चुपचाप वह उस स्थान पर आया था उसी प्रकार पेड़ों पर उछलता कूदता तेजी के साथ उत्तर की ओर बढ़ा।

X

X

X

X

एप बन्दरों का दल टार्जन तथा बर्था कर्चर की बनाई मोप
 के पास के मैदान में इधर उधर घूम रहा था। इसी समय कर्चर
 जिसकी आखों के आँसू अब तक सूख चुके थे मोपड़ी के
 दरवाजे पर आ खड़ी हुई और उत्सुकता के साथ दक्षिण दिशा की ओर देखने लगी जिधर जा कर टार्जन ला
 हो चुके थे। कभी कभी उसकी संन्दिग्ध निगाहें आंस पास खेलते खाते हुए उन एप बन्दरों की ओर भी घूम जाया करतीं
 इस समय किसी भी जङ्गली जानवर का घेरे को पार कर उसकी मोपड़ी में घुस आना और उसे मार डालना कितना आस
 था। टार्जन का भाला साथ में रहने पर भी इस समय वह निस्सहाय थी। अब तक न मालूम कितनी ही बार उसकी आँखों के सामने उस सुन्दर सबल और सुपुष्ट शरीर का नकशा दि
 चुका था जिसके साथ रहने पर वह अफ्रीका के इस मरु जङ्गल में भी अपने को एक दम निरापद समझती थी। पर अब ! अब उन मजबूत एप बन्दरों के बीच में रह कर भला किस प्रकार अपना जीवन निर्वाह कर सकती थी जो इच्छा पर अपने मजबूत हाथों के एक ही थप्पड़ में उसका भाला तोड़ सकते तथा उसे चीथ कर टुकड़े टुकड़े कर के फेंक दे सकते थे।

वह इस समय अपने इन्हीं विचारों में लवलीन थी उसकी दृष्टि सामने के मैदान के अन्तिम ओर के घने वृक्षों के बीच से निकल कर उसी ओर आते हुए एक जवान तथा मजबूत एप बन्दर पर पड़ी। एक ही निगाह में वह समझ गई कि

अन्य साथियों के विपरीत यह बन्दर इस समय कहीं अधिक आवेश में भरा हुआ है। एप बन्दरों ने भी उसे इसी हालत में अपनी ओर बढ़ते देखा और गुर्राते हुए धीरे धीरे उसकी ओर बढ़ने लगे। इन्हीं बन्दरों के आगे आगे उनका राजा गोलट भी अपने दांत कटकटाता हुआ बढ़ा आ रहा था। जूटग से उसकी पुरानी शत्रुता थी और वह उसका हर प्रकार से मुकाबला करने के लिये तैयार था। परन्तु पास आने पर जूटग ने शत्रुता के कोई भी चिह्न प्रकट न किये और गोलट को टार्जन की गिरफ्तारी का सब हाल सुना दिया।

परन्तु गोलट उसकी ओर से अपना मुँह फिर कर यह कहता हुआ वहाँ से चल दिया, “उँह उस सफेद बन्दर को अपनी रक्षा का उपाय स्वयं करना चाहिये मुझे इसमें दखल देने की जरूरत नहीं।”

परन्तु जूटग पुनः उसके सामने जा पहुँचा और बोला, “वह बड़ा बहादुर है और उसने हम लोगों में हिलमिल कर रहने की इच्छा प्रकट की है। हम लोगों को हर तरह से गोमंगानियों से उसकी रक्षा करनी चाहिये।”

किन्तु इस बार भी मुँह फेर कर गोलट बोला, “मुझे इससे कोई मतलब नहीं।”

अपनी छाती फुला कर जूटग बोला, “कोई चिन्ता नहीं यदि गोलट गोमंगानियों से डरता है तो मैं अकेला ही जा कर उसकी सहायता करूँगा।”

अपनी छाती पीटता हुआ गोलट बोला, "कौन कहता है मैं गोमंगनियों से डरता हूँ पर मैं एक ऐसे बन्दर की मदद नहीं जाऊँगा जो मेरी जाति का नहीं है। अगर तुम्हारी इस उसकी मदद करने की है तो तुम जाओ और अपने साथ सफेद बन्दरिया को भी सहायता के लिये ले जाओ !"

जूटग बोला, "हाँ हाँ जूटग जायगा और उसकी सफेद बन्दरिया के साथ उन बन्दरों को भी लेता जायगा जो इसे नहीं हैं !"

इतना कह कर जूटग ने एक बार वहाँ उपस्थित सभी बन्दरों की ओर देखा और तब पूछा, "आप लोगों में से कौन मेरे साथ अपने भाई को गोमंगानियों के हाथ से छुड़ाने के लिये जायेंगे ?"

आठ बड़े बड़े बलशाली एप बन्दर फौरन ही उसके जाने के लिए तैयार हो गये बाकी के सब बन्दर गोलट के पीछे वहाँ से जाने लगे।

जूटग व्यंगपूर्वक बोला, "ठीक है मुझे इस काम के लिए बन्दरियों को साथ ले जाने की जरूरत भी नहीं है।"

परन्तु जाने वाले एप बन्दरों ने उसकी बात का जरा भी ध्यान न किया और अपने राजा के साथ साथ वहाँ से खिसक कर

इधर जब बर्था कर्चर ने जूटग को आठ साथियों के साथ अपनी ओर बढ़ते देखा तो वह मय से कांप उठी। एक ही क्षण में घेरा फांद कर जूटग उसके सामने जा खड़ा हुआ।

अपने बर्छे का मुँह उसकी छाती की ओर कर बहादुरी के साथ तन कर खड़ी हो गई परन्तु जूटग के बार बार मुँह बिचकाने तथा हाथ का इशारा करने से वह कम से कम इतना अवश्य समझ गई कि जूटग उसके पास किसी प्रकार का नुकसान पहुँचाने के इरादे से नहीं आया है।

परन्तु उसका वास्तविक इरादा क्या है इसे वह किसी प्रकार भी समझने में समर्थ न हो सकी। अन्त में मल्ला कर जूटग ने एक हाथ मार कर उसके हाथ का भाला जमीन पर गिरा दिया और उसका हाथ पकड़ कर घेरे की ओर ले चला परन्तु इतना होने पर भी उसके भाव कर्चर ने किसी तरह भी खराब न देखे। जूटग बार बार दक्षिण की ओर उँगली उठा कर उसे आगे की ओर ले जाया चाहता था। एक बार उसने जमीन पर गिरे भाले की ओर भी इशारा किया।

बुद्धिमान बर्था कर्चर अन्त में उसके भाव को समझ गई। उसे मालूम हो गया कि टार्जन अवश्य किसी भारी विपत्ति में फँस गये हैं और वह एप बन्दर उसे अपने साथ उनकी सहायता के लिये ले जाया चाहता है।

अब बर्था कर्चर ने एक क्षण भी विलम्ब न कर के भाला जमीन पर से उठा लिया और घेरे की ओर बढ़ी। घेरे के पास पहुँचने बाद वह धीरे धीरे उस कांटेदार घेरे को हटा कर अपने जाने लायक राह बनाने लगी। जूटग ने भी उसके इस काम में सद्द की ओर थोड़ी ही देर बाद यह दल दक्षिण की ओर तेजी

के साथ बढ़ता हुआ नजर आने लगा। एप बन्दरों का साथ देने के लिये बर्था को कभी कभी दौड़ कर उनका साथ देना पड़ा था। जूटग समझ गया कि कर्चर उनका साथ किसी प्रकार नहीं दे सकती अस्तु वह उसके पास जा पहुँचा और उसे अपने पीठ पर डाल तेजी के साथ आगे की ओर बढ़ा। बर्थाने उसकी गर्दन मजबूती के साथ पकड़ ली।

छल कर जूटग पास के एक पेड़ पर जा चढ़ा और बर्था बड़ी ही मुश्किल से अपने को जमीन पर गिरने से बचाया। इस समय वह बड़ी ही मजबूती के साथ उस एप बन्दर के शरीर चपकी हुई थी।

एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूद कर अपने साथियों के साथ आगे बढ़ता हुआ जूटग तब तक कहीं न रुका जब तक कि वह एक ऐसे स्थान पर न जा पहुँचा जो जंगलियों के उस गाँव से एक दम समीप पड़ता था। यहाँ जंगलियों के जोर जोर चिल्लाने और हँसने की आवाज इन लोगों के कानों में स्पष्ट से पड़ रही थी। कर्चर फौरन ही उस गाँव को पहचान गई वह कुछ ही दिन पहले कैदी की हालत में रह चुकी थी और ध्यान कर के उसका हृदय कांप उठा कि कहीं उसे फिर वैसे मुसीबत से सामना करना न पड़े उसे आश्चर्य हो रहा था जूटग उसे वहाँ किस लिए ले आया।

अब एप बन्दर पेड़ों के बीच में हो कर बड़ी ही सावधानी से आगे बढ़ने लगे यहाँ तक कि वे गाँव की सड़क के ऊपर चले

तक जा पहुँचे। यहाँ पहुँच कर जूटग ने बर्था कर्चर को अपने पीठ पर से उतार दिया और पास की एक शाखा पर धीरे से बैठ जाने का इशारा किया। जब वह बैठ गई तो नीचे थोड़ी दूर पर बने एक मोपड़े का ओर उँगलों का इशारा कर के वह अपनी भाषा में कुछ बोलने लगा। धीरे धीरे बर्था कर्चर उसके मतलब को समझ गई। उसे मालूम हो गया कि टार्जन उसी में कैद हैं !

उसके ठीक नीचे किसी मोपड़ी की छत पड़ती थी जिस पर दूढ़ कर वह गाँव में जा सकती थी परन्तु गाँव में जा कर वह करती ही क्या ? यदि इस समय उसके पास कोई ऐसा हथियार होता जिसके द्वारा उसे इन जंगलियों पर विजय पाने का विश्वास होता तो उसे बड़ी ही प्रसन्नता होती।

अन्धकार इस समय तेजी के साथ चारों ओर फैल रहा था और बरतनों के नीचे आग बाल दी गई थी। गाँव के बीच में गड़े उस खूँटे पर भी कर्चर की निगाह गई जिसके आस पास लकड़ियों का ढेर लंगा हुआ था। इन तैयारियों का मतलब वह बखूबी समझती थी। जिस तरह भी हो वह इस समय उस आदमी की जान बचाया चाहती थी जो अब तक तीन बार मौत के मुँह से उसकी रक्षा कर चुका था। वह इस बात को भली-भाँति जानती थी कि वह उससे नफरत करता है फिर भी वह उसके अहसानों को भूलती न थी। असल में उसके हृद्गत भावों को समझना उसकी शक्ति के बाहर की बात थी।

जूटग इसी बात की राह देख रहा था कि अन्धकार अचञ्ची

तरह फैल जाय तो वह अपना काम शुरू करे। सहसा उसकी निगाह लगभग बीस जंगलियों पर पड़ी जो अपने सर्दार को चारों ओर से घेरे हुए जोर जोर से कुछ बातें कर रहे थे। पाँच मिनट बाद ही वे लोग वहाँ से हट गये और उनमें से दो आदमियों ने एक और बड़ा सा खूंटाला ला कर पहले खूंटे के बगल में गाड़ दिया। कर्चर ने भी इस बात को देखा और उसका मतलब बहुत समझ गई।

अब अन्धकार चारों ओर भली मांति फैल चुका था और गाँव में जहाँ तहाँ बलती हुई आग की रोशनियाँ दिखाई दे रही थीं इसी समय कर्चर ने दस-पन्द्रह आदमियों को उस मोपड़ में घुसते देखा जिसकी ओर जूटग ने इशारा किया था। कुछ देर बाद अपने साथ दो कैदियों को घसीटते हुए वे सब के साथ बाहर निकले जिनमें एक तो टार्जन थे और दूसरा हवाई बड़ा उड़ाके की पोशाक पहने कोई अंग्रेज था। अब उसे उन दोनों खूंटों का मतलब ठीक ठीक समझ में आ गया।

जूटग की ओर एक बार देख तथा यह कह कर कि "पीछे पीछे चले आओ" बर्था कर्चर मोपड़ी के छत पर कूद कर और वहाँ से जमीन पर कूद कर बड़ी ही सावधानी से अपने पैरों की आड़ में छिपाती हुई उस ओर चली जिधर वे रुक गये हुए थे। एक बार उसने घूम कर पीछे की ओर भी देखा और जब उसे मालूम हो गया कि उसके पीछे जूटग तथा बर्था के और एक बन्दर भी चले आ रहे हैं तो वह निश्चिन्त हो गई।

अब ये लोग उस स्थान के बहुत करीब पहुँच गये थे जहाँ जंगली लोग अपने कैदियों को खूंटों के साथ बाँध रहे थे और उसे विश्वास था कि जंगलियों की निगाह इन पर तब तक नहीं पड़ सकती जब तक कि ये सब उन पर टूट न पड़े। उसके पास टार्जन का भाला अभी तक मौजूद था जिसे हाथ में लिये वह ठीक मौके की राह देखने लगी।

दोनों कैदी इस समय खूंटों के साथ बाँधे जा चुके थे और दोनों ही एक दूसरे से सदा के लिये विदाई ले चुके थे। उनके चारों ओर जंगली औरतें, बूढ़े, बच्चे सभी घेरा बाँध कर बैठे हुए थे और मौत का नाच आरम्भ होने ही वाला था। लड़ाके लोगों ने हाथ में भाला लिये उनका चक्कर काटना आरम्भ कर दिया था और यह चक्कर धीरे धीरे छोटा होता जा रहा था। नुमाबो को अपने भाले का वार कर के पहला खून निकालना भर बाकी रह गया था जो यंत्रणा आरम्भ करने का संकेत था और तब कैदियों के पैर के नीचे आग वाला दी जाती।

सर्दार इस समय कैदियों के बहुत समीप पहुँच गया था। उसके बरछे की नोक टार्जन के छाती की ओर तेजी के साथ बढ़ी और उसमें से खून की एक हलकी धार बाहर निकलने लगी। ठीक इसी समय किसी औरत के गले से निकली हुई मीस हवा में गूँज उठी और उसके साथ ही साथ गुराहट, चिल्लाहट तथा किलकिलाहट की आवाजें रात्रि के सन्नाटे को भेदती हुई चारों ओर सुनाई देने लगीं। कैदी लोग इन चिल्लाते

वालों की सुरतें नहीं देख सकते थे परन्तु टार्जन को तो देखने की भी जरूरत न थी क्योंकि वह फौरन अपने साथी एप बन्दरों की आवाजें पहिचान गये ।

सर्दार तथा उसके साथियों का घेरा टूट गया और सब लोग भाग भाग कर एक किनारे खड़े हो गये । सभी भय से घबराये और देख रहे थे जिधर से वे भयंकर आवाजें आ रही थीं । सब जानते थे कि उनकी निगाहें उस सफेद लड़की पर पड़ीं जो कुछ दिन पहले ही उनके यहां से भाग गई थी । वह इस समय धीरे धीरे आगे की ओर बढ़ी आ रही थी और उसके पीछे पीछे कितने ही एप बन्दर अपने भयानक दांत बाहर की ओर निकाले और आवाजें बाजे चले आ रहे थे ।

शुबती इस समय एप बन्दरों को लिये सीधे सर्दार नुमाबो की ओर बढ़ी आ रही थी । एप बन्दर भी अपने चारों ओर एकदम लड़कों, औरतों, बूढ़ों, जवानों सभी को चीरते फाड़ते तेजी के साथ आगे की ओर बढ़ रहे थे और सभी घबड़ा इधर से उधर भागते दिखाई दे रहे थे । अब जा कर टार्जन की निगाह लोगों पर पड़ी और उन्हें मालूम हुआ कि कौन इन एप बन्दरों के साथ में ले कर जंगलियों पर हमला कर रहा है । उन्होंने चिल्लाकर जूटग से कहा, “तुम अपने साथियों के साथ इन लड़कों पर हमला करो जब तक कि यह मेरे हाथ पैर खोलती है ।” इसके बाद बर्था कर्चर की ओर घूम कर वे बोले, “जल्दी करो मेरे पास आ कर मेरे बन्धन खोल दो ।”

बर्था दौड़ कर उनके बगल में जा पहुँची । बन्धन काटने के लिये उसके पास छुरा बगैरह कुछ भी न था फिर भी शान्ति के साथ उसने टार्जन के हाथ के बन्धन खोल दिये । दूसरे ही क्षण टार्जन आजाद थे ।

“अच्छा अब इस अंग्रेज के भी बन्धन खोल दो।” कह कर वे उसी ओर लपके जिधर जूटग जंगलियों के ऊपर दूट कर वनसे युद्ध कर रहा था । नुमाबो तथा उसके मातहत जंगलियों की समझ में यह बात अच्छी तरह आ गई थी कि एप बन्दर गिनती में बहुत ही कम हैं और यह देख वह उनके मुकाबले के लिये छूट कर खड़ा भी हो गया था । तीन एप बन्दर अब तक जखमी हो कर जमीन पर गिर चुके थे । एक ही निगाह में टार्जन समझ गये कि यदि शीघ्र ही कोई उपाय न सोचा गया तो थोड़ी ही देर में एक भी एप बन्दर जिन्दा दिखाई न देगा । सहसा एक युक्ति उन्हें सुझाई पड़ गई और उनके चेहरे पर पुनः एक हलकी मुस्कराहट दिखाई दी । आग पर चढ़ा हुआ पानी का एक बरतन उन्होंने उतार लिया और उसमें का पानी सामने की ओर खड़े जंगलियों के मुँह पर छिड़कना शुरू किया । भय से चीखते हुए जंगली लोग अपनी जान बचा कर वहाँ से भाग निकले । एक बरतन का पानी खतम हुआ ही था कि उन्होंने दूसरा बरतन आग पर से उतार लिया और उसका पानी भी उसी प्रकार उन लोगों पर छिड़कना शुरू किया ।

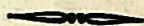
जब तक बर्था उस अंग्रेज के बन्धन खोले टार्जन ने अपने

सामने का मैदान एक दम खाली कर दिया। छः एप बन्दर अर्ध तक सही सलामत बचे हुए थे। जिन्हें साथ ले कर ये लोग सीधे गाँव के दर्वाजे की ओर बढ़े और उसके बाहर निकल अन्धकार में विलीन हो गये।

सर्दार के बहुत प्रयत्न करने पर भी बेतरह डरे हुए जंगली एकत्रित न हो सके अस्तु इन्हें रोकने का किसी ने भी प्रयत्न न किया।

क्रमशः टार्जन जङ्गल की ओर बढ़े। उनके ठीक बगल में जूटग भी जा रहा था। अपने जीवन में टार्जन को दूसरे का एहसान मानने का मौका कभी भी नहीं मिला था। आज तक उन्होंने स्वयं अपने शरीर की शक्ति से ही अपने शत्रुओं पर विजय पाई थी परन्तु आज उनकी जान एक औरत ने बचाई और वह औरत भी कौन जिससे वे दिल से नफरत करते थे। वे मन ही मन कुड़बुड़ा उठे।

हवाई जहाज की खोज



जंगल के राजा टार्जन बारा हरिन का शिकार कर अपने पीठ पर लादे पेड़ों पर कूदते हुए वर्या कर्चर की मोपड़ी की ओर बढ़े आ रहे थे कि सहसा उनकी निगाह नदी की ओर से उस मोपड़ी की ओर बढ़ते दो आश्रमियों पर पड़ी जिन्हें देखते ही एक गहरी साँस उनके मुँह से निकल पड़ी ।

एकाएक उनका ध्यान समुद्र के किनारे बने अपने उस वंगले की ओर चला गया जिसमें अपनी जीवन-सहचरी के साथ उन्होंने बहुत समय तक आनन्द का जीवन बिताया था । यद्यपि वह इस समय संसार में मौजूद न थी फिर भी रह रह कर उनकी तबीयत एक बार उस ओर जाने की हो जाती थी किन्तु इस समय दो व्यक्तियों का भार समय ने उनके ऊपर डाल दिया था जिन्हें अकेले छोड़ कर वे उस सुदूर-स्थित अपने

बंगले पर इस समय किसी प्रकार भी नहीं जा सकते थे। इन्हें एक तो बर्था कर्चर थी और दूसरा वही अंगरेज युवक जिसे वे जंगलियों के उस गांव से अपने साथ लेते आये थे।

टार्जन के समझ में ही नहीं आ रहा था कि इन लोगों से वे अपना पीछा किस प्रकार छुड़ावें। अपने साथ उन्हें ले जाना उन्हें एक प्रकार से असम्भव मालूम पड़ता था क्योंकि उनमें से किसी में भी इतनी शक्ति न थी कि उस वीरान तथा वीहड़ एले को पार कर सकें जिसे अपने जीवन की बाजी लगा कर उन्होंने तै किया था।

इसमें सन्देह नहीं कि कितनी ही बार उस युवती को उसकी किस्मत के भरोसे छोड़ अपने उस बंगले की ओर जाने का विचार वे कर चुके थे परन्तु अब उसका एक भारी सहसात उनके कन्धे पर था और वे उसे इस प्रकार निस्सहाय छोड़ कर किसी तरह भी नहीं जा सकते थे। वे खूब समझते थे कि उनकी सहायता बिना वे दोनों किसी तरह भी इस भयङ्कर जंगल में अपनी रक्षा करने में समर्थ न हो सकेंगे।

आज सुबह वे इन दोनों के भोजन के लिये जंगल से फल, अखरोट, केला आदि ले आये थे और इस समय शिकार करके ताजा मांस लिये चले आ रहे थे। उन लोगों को केवल अपने पीने के लिये पानी भर नदी से ले आना पड़ता था। अभी तक उन दोनों को इस बात का गुमान तक न था कि टार्जन पेड़ों से उन दोनों को ध्यान से देख रहे हैं न उन्हें यही मालूम था कि

श्लेष्मदी के पास की झाड़ियों से दो तेज आँखें उन्हें घूर रही हैं परन्तु टार्जन इतना अवश्य समझ गये थे कि कोई जीव झाड़ियों के भीतर जमीन के साथ चपका हुआ उन दोनों की ओर झपटने के लिये बिल्कुल तैयार ही बैठा है।

अभी उन दोनों ने आधा ही रास्ता तय किया था कि टार्जन ने उन्हें ठहरने के लिये आवाज दी। वे लोग आश्चर्य से उस ओर देखने लगे जिधर से टार्जन की आवाज आती उन्हें सुनाई दी थी। सहसा उन्होंने टार्जन को जमीन पर कूदते तथा अपनी ओर बढ़ते देखा। दूर ही से पुकार कर वे बोले, "धीरे धीरे मेरी ओर बढ़े आओ, दौड़ना मत नहीं तो चीता तुम लोगों पर झपट पड़ेगा।"

आश्चर्य के साथ टार्जन का मुँह देखते हुए वे लोग उनकी ओर बढ़ने लगे। इसी समय उस अंग्रेज ने उनसे पूछा, "आपका मतलब मेरी समझ में नहीं आया, चीता कहाँ है?"

परन्तु उसकी बातों का कुछ भी उत्तर न दे कर टार्जन ने हिरन को अपने कंधे से उतार जमीन पर फेंक दिया और तेजी के साथ उन दोनों की ओर दौड़े। उनकी आँखें इस समय उन लोगों के पीछे की ओर किसी वस्तु पर जमी हुई थीं। ठीक इसी समय उन दोनों ने भी पीछे घूम कर देखा। एक बड़ा ही जवर्दस्त चीता उन्हें अपनी ओर झपट कर आता दिखाई दिया।

श्लेष्म और सन्देश में भरे हुए चीते ने टार्जन को अपनी ओर तेजी के साथ आते देख लिया था। उसके जंगली अनुभव ने शीघ्र ही उसे बता दिया कि दरमनाजी उसके शिकार को उससे

छीना चाहता है। चीता भूखा था और उस शिकार को जिसे वह अपना समझ चुका था आसानी से छोड़ने के लिये तैयार न था।

चीते को भयानक रूप से अपने ऊपर झपटते देख बर्था कर्कर के मुँह से चीख निकलती निकलती रुक गई और अपने पाखड़े अंग्रेज से वह एक दम सट सी गई। उस अंग्रेज युवक ने उसे फौरन ही अपने पीछे की ओर कर लिया और स्वयं चीते का हमला बरदाश्त करने के लिये उसके सामने खड़ा हो गया। टार्जन ने भी इस बात को देखा और उस अंग्रेज की हिम्मत तथा सहृदयता देख उन्हें बड़ी ही प्रसन्नता हुई।

चीता इस समय तेजी के साथ अपने शिकारों की ओर झपटा आ रहा था। उसमें तथा उन दोनों में विशेष फासला न था। जब तक कि कोई एक से बारह तक की गिनती गिने वह उन लोगों के समीप पहुँच जा सकता था। परन्तु टार्जन भी उससे कम फुर्तीले न थे। अंग्रेज लेफ्टिनेन्ट ने आश्चर्य्य की दृष्टि से देखा कि टार्जन बड़ी ही तेजी के साथ उसके बगल से होते हुए चीते की ओर झपटे।

चीता अपने को टार्जन के हमले से बचाता हुआ पहले अपने शिकार को कब्जे में किया चाहता था परन्तु लेफ्टिनेन्ट स्मिथ ओल्डविक ने देखा कि टार्जन तेजी के साथ उस पर दूट पड़े। उनका बायाँ हाथ उस खूंखार जानवर के बायें कन्धे पर तथा दाहिना हाथ अगले दाहिने पैर पर जा पड़ा और दोनों ही लुकाँते पुड़कते जमीन पर आ रहे। चीते की गुर्राहट सुन कर वे

लेफ्टिनेन्ट को जरा भी आश्चर्य न हुआ किन्तु जब उसने टार्जन के गले से भी वैसी ही गुर्राहट की आवाज निकलती देखी तब तो उसके ताज्जुब का हद न रहा।

भय की पहली बाढ़ निकल जाने पर अब बर्था कर्चर ने भी अपने को सम्हाला और बोली, “क्या हम लोग इस समय कुछ भी करने योग्य नहीं हैं ? इसके पहले कि वह जानवर उन्हें जान से मार डाले क्या हम लोग उनकी कुछ भी सहायता नहीं कर सकते।”

लेफ्टिनेन्ट ओल्डविक ने इस इरादे से अपने चारों ओर देखा कि कहीं कोई ऐसी चीज दिखाई देती है या नहीं जिसे ले कर वे चीते पर हमला कर सकें परन्तु ठीक इसी समय बर्था कर्चर यह कहती हुई मोपड़ी की ओर दौड़ी कि, “अच्छा ठहरो मैं अभी मोपड़ी में से बरछा लिये आती हूँ।”

आश्चर्य में भरा लेफ्टिनेन्ट चुपचाप खड़ा उस भयङ्कर जीव तथा मनुष्य में होने वाला यह असामान्य युद्ध देख रहा था। टार्जन उस चीते को अपने काबू में लाने के लिए अपनी समूची ताकत खर्च कर रहे थे और चीता अपने लम्बे तथा भयावने दाँत उनके शरीर में घुसाने का दाँव देख रहा था। सहसा टार्जन के दाँत चीते के गले के पिछले भाग पर जा जमे और उनसे अपने को छुड़ाने का संयोग करता हुआ चीता कई लुङ्कनियें खा गया।

तब तक बर्था कर्चर भी भाला लेकर आ पहुँची। लेफ्टिनेन्ट उसके हाथ से भाला लेने के लिये आगे बढ़ा हो था कि वह तेजी के साथ उनके बगल से निकल कर उस स्थान पर जा पहुँची

जहाँ टार्जन और चीता आपस में गुथे हुए जमीन पर पड़े थे। कई बार बर्था ने माले की नोक चीते के बदन में घुसानी चाही पर बार बार इस मय से कि कहीं टार्जन के शरीर पर चर्चर जख्म न लग जाय वह रुक गई।

अन्त में वे दोनों ही वीर कुछ देर के लिये एक दम निश्चेष्ट हो कर पड़ रहे। चीता थोड़ी देर के लिये युद्ध से विराम ले रहा था। यही समय बर्था के लिये उपयुक्त था और उसने चञ्चल क बर्छा उसकी छाती में घुसेड़ दिया।

टार्जन चीते की मृत देह पर से उठ कर खड़े हो गये। आठ दूसरी बार बर्था कर्चर ने उनकी जीवनरक्षा की थी। एक जर्म गुप्तचर का इतना पहसान देख उन्हें अपने ऊपर बड़ी ही घृणा हुई किन्तु साथ ही शत्रु होने पर भी उस युवती का इतना साहस देख उन्हें उसके प्रति बड़ी ही श्रद्धा उत्पन्न हुई। उन्होंने मरे हुए हरिन को जमीन पर से उठा लिया और मोपड़ी में ले आये। गोश्त के छोटे छोटे टुकड़े कर के उन्होंने उन लोगों को पकाने के लिये दे दिये परन्तु स्वयं कच्चा ही मांस खा कर तृप्त हो गये।

बर्था कर्चर मांस पकाने में बड़ी ही सिद्धहस्त थी। लेफ्टिनेन्ट ओल्डविक टार्जन के पास बैठे हुए उसका तमाशा देख रहे थे। सहसा वे बोल उठे, “इस युवती में साहस की कमी नहीं है।”

मुँह बिचका कर टार्जन ने उत्तर दिया, “पर यह गुप्तचर है।”

चौक कर लेफ्टिनेन्ट बोला, “हैं आप यह क्या कहते हैं।”

इस बात को कभी भी मानने के लिये तैयार नहीं हूँ !”

टार्जन बोले, “तुम अपने विचारों के लिये स्वतंत्र हो परन्तु मैंने इसे जर्मन खीमे में लोगों से हँस हँस कर बातें करते तथा जंगी अफसर के हाथ में कागजों का एक पुलिन्दा देते अपनी आंखों से देखा है। इसके बाद अँग्रेजी सेना में भी इसे रूप बदल कर काम करते पाया है। यह अवश्य जर्मन गुप्तचर है परन्तु यह औरत है इसलिये मैं इसे किसी तरह का भी नुकसान नहीं पहुँचा सकता।”

लेफ्टिनेन्ट बोला, “मेरा दिल इस बात को कबूल नहीं किया चाहता कि ऐसी हिम्मतवर तथा बहादुर औरत कभी भी जर्मन गुप्तचर हो सकती है। मैं इससे कभी भी नफरत नहीं कर सकता।”

टार्जन ने एक बार कड़ी दृष्टि से लेफ्टिनेन्ट की ओर देखा और तब यह कहते हुए अपने स्थान से उठ खड़े हुए कि “खैर अच्छी बात है अब मैं शिकार को जाता हूँ। तुम लोगों के पास कम से कम दो दिनों के लिये काफी भोजन है तब तक मैं भी वापस लौट आऊँगा।”

जब लेफ्टिनेन्ट तथा बर्था भोजन कर के निश्चिन्त होने बाद एक स्थान पर बैठे तो युवती बोली, “मुझे दुःख है कि वे यहां से चले गये। जब तक कि वे पास रहते हैं मुझे किसी प्रकार का भी भय नहीं मालूम होता किन्तु जैसे ही वे उस स्थान से दूर चले जाते हैं तरह तरह की शंकाएँ मेरे हृदय में उत्पन्न होने लगती हैं। भयानक तथा खूँखार होने पर भी उनके चित्त में दया है।

मैं जानती हूँ कि वे मुझसे नफरत करते हैं फिर भी मेरी किसी तरह की भी हानि होने नहीं दिया चाहते। असल में मैं आज तक उन्हें नहीं समझ पाई हूँ !”

लेफ्टिनेन्ट बोला, “मैं भी उन्हें पूरी तौर से नहीं समझ सका हूँ परन्तु अब तक जो कुछ भी मैंने समझा है उससे इतना अक्षय कह सकता हूँ कि उनकी यही इच्छा है कि हम लोग जहाँ तक भी जल्द हो सके उनके पास से दूर हो जायँ। एक तो हम लोग उन्हें भारी पड़ रहे हैं, उनकी स्वतंत्रता में बाधा डाल रहे हैं, दूसरे इस भयावने जंगल में रह कर अधिक दिन तक जीवित रहना भी हम लोगों के लिये किसी प्रकार सम्भव नहीं है। मेरे विचार में तो जहाँ तक जल्द हो सके हमें यहां से पूर्वीय समुद्री किनारे की ओर रवाना हो जाना चाहिये। मुझे आशा है कि मेरा हवाई जहाज अवश्य अभी तक अपने स्थान पर ही पड़ा होगा। जंगली लोग मय के मारे उसके पास तक जाने की हिम्मत न करते होंगे। यदि हम लोग सही सलामत उस तक पहुँच गये तो फिर अपने अभीष्ट स्थान तक पहुँचते हमें कुछ भी देर न लगेगी।”

युवती ने उत्तर दिया, “परन्तु उनके इतने अहसान हम लोगों पर हैं कि बिना उनके वापस आये हम लोगों को इस प्रकार उन्हें छोड़ कर यहाँ से चल देना कदापि उचित नहीं है।”

लेफ्टिनेन्ट कुछ देर तक चुपचाप युवती के चेहरे की ओर देखता रहा। टार्जन ने उस युवती को जर्मन गुप्तचर बताया था

परन्तु न मालूम क्यों उसका हृदय इस बात को किसी प्रकार भी कबूल नहीं कर रहा था। अन्त में वह बोला, “परन्तु मैं फिर भी कहता हूँ कि हम लोगों का यहाँ रहना उन्हें जरा भी पसन्द नहीं है और यहाँ लौटने पर यदि वे हम लोगों को यहां न पावेंगे तो उन्हें प्रसन्नता ही होगी। यदि तुम्हारे ऊपर उनके अहसान हैं तो तुम्हारे अहसान भी उन पर कम नहीं हैं फिर सब से ऊपर तो बात यह है कि उनकी बातों से मुझे यही पता चला है कि तुम्हारा यहाँ एक क्षण के लिये भी रहना अब उचित नहीं है। आश्चर्य से लेफ्टिनेन्ट का मुँह देखती हुई युवती बोली, “तुम्हारे इस कहने का मतलब क्या है लेफ्टिनेन्ट !”

लेफ्टिनेन्ट ने उत्तर दिया, “इस बात को मैं साफ साफ बताना उचित नहीं समझता !”

युवती बोली, “परन्तु मुझे इस बात के जानने का हक है !”

लेफ्टिनेन्ट ने कहा, “अच्छी बात है तो सुनो। उनका कहना है कि वे तुमसे दिली नफरत करते हैं किन्तु चूंकि तुम औरत हो इसलिये तुम्हारी सहायता करना वे अपना कर्त्तव्य समझते हैं !”

लेफ्टिनेन्ट की बात सुन कर उस युवती का चेहरा पीला हो कर एकदम सुर्ख हो गया। वह बोली, “यदि ऐसी बात है तो अब मैं यहाँ एक क्षण के लिये भी रुकना पसन्द नहीं करती ! इसमें से थोड़ा गोश्त साथ मैं ले चलना चाहिये न मालूम रास्ते में कितने दिन भोजन न मिले !”

थोड़ी ही देर बाद ये लोग मोपड़ी से बाहर निकल कर दक्षिण

की ओर रवाना हुए। ओल्डविक ने बरछा अपने हाथ में ले लिया था परन्तु युवती के हाथ में एक लकड़ी के सिवाय और कोई वस्तु न था जिसे उसने मोपड़ी में से चलते समय उठा लिया था। चलने से पहले उसने ओल्डविक को इस बात के लिये मन्त्र किया कि वह एक पत्र टार्जन के नाम लिख कर मोपड़ी की दीवार में खोंस दे जिसमें टार्जन को उनकी रक्षा के लिये धन्यवाद तथा आखिरी बिदाई थी !

इस समय वे दोनों अफ्रीका के घोर जंगल में अकेले थे अत्यन्त अतिक्षण उन्हें सतर्क रहने की आवश्यकता थी। जंगली खूंखार जानवरों के अलावा जंगलियों का भय भी उन्हें कम न था और दूसरे ये उसी राह से आगे बढ़ रहे थे जो नुमाबो के गांव की ओर जाती थी। रास्ते में युवती बोली, “मुझे जंगलियों का स्तब्ध डर नहीं है जितना उसांगा का ! वह कुछ दिनों तक अपने साथियों के साथ जर्मन रेजिमेन्ट में काम कर चुका है और कितने ही आधुनिक हथियार भी उसके कब्जे में हैं। मुझे वह कदाचित् इसी लिये अपने साथ ले कर भागा था कि या तो वह मुझे कब्जे में रख कर मेरे घर वालों से भारी रकम वसूल करे अथवा किसी काले सुल्तान के हाथ मुझे बेच कर अच्छी खासी दौलत पैदा करे।”

लेफ्टिनेन्ट,—ईश्वर के। धन्यवाद देना चाहिये कि केवल नुमाबो की ही निगाह मेरे हवाई जहाज पर पड़ी। कहीं उसांगा की पड़ी होती तो वह उसे देख कर उतना भय न खाता। अब

जर्मन सेना में वह ऐसे ऐसे कितनी ही हवाई जहाज देखने का अभ्यस्त हो गया होगा।

चलते चलते ये लोग एक ऐसे स्थान पर जा पहुँचे जिसे उन्होंने अन्दाज से समझ लिया कि नुमाबो के गाँव से लगभग एक मील के फासले पर होगा। इसके बाद वे वहाँ से पूरब की ओर के घने जंगल की ओर बढ़े।

उनसे थोड़े ही फासले पर दक्षिण ओर के मैदान में कुछ काले हथशी किसी चीज के चारों ओर घेरा बांध कर खड़े थे। ये उसाँगा और उसके साथी थे जो लेफ्टिनेन्ट ओल्डविक के हवाई जहाज को बढ़े ही गौर से देख रहे थे।

जिस समय लेफ्टिनेन्ट गिरफ्तार कर के नुमाबो के गाँव में लाया गया उसी समय से उसाँगा उनके हवाई जहाज की खोज में लगा था। इसका कारण कुछ तो उसकी उत्सुकता थी और कुछ हवाई जहाज को नष्ट कर देने की इच्छा! परन्तु जब वह उसके पास पहुँच गया तो एक नई इच्छा उसके मन में पैदा हुई। उसने सोचा कि यदि किसी प्रकार उसे हवाई जहाज को उड़ाने का ढंग मालूम हो जाय तो बड़ा ही काम निकले और उसकी जाति के लोग उसे दूसरा देवता ही समझने लगे।

उसी दिन से वह रोज एक बार उस स्थान का चक्कर लगाया करता था जहाँ वह हवाई जहाज पड़ा हुआ था। कभी वह उस पर बढ़ता, कभी उसमें लगे कल पुर्जे इस इच्छा से घुमाता कि कदाचित् उसका हाथ संयोग से उस पुर्जे पर पड़ जाय जिसके घुमाने

से वह हवाई जहाज ऊपर हवा में उठता है परन्तु अभी तक उसकी कोई भी अक्ल काम नहीं की थी। फिर भी उसे आशा थी कि संभव है वह अंग्रेज किसी दिन फिर उसके कब्जे में आ जाए जो उस मशीन को उड़ाने की कला अच्छी तरह जानता है और तब उससे इस कला को सीख लेना उसके लिये एक बहुत ही मामूली बात रह जायगी।

और उसकी यह इच्छा पूरी भी हो गई। एक दिन वह हवाई जहाज के पास अपने साथियों के साथ खड़ा ध्यान से उसके फल पुर्जों को देख रहा था कि उसे जङ्गल के उत्तरी भाग में कुछ आदमियों के वातचीत की आवाज सुनाई दी और जब वह अपने साथियों के साथ पेड़ों की आड़ में छिप गया तो उसकी निगाह उसी अंग्रेज तथा उस सफेद युवती पर पड़ी जो उन लोगों की आँखों में घूला झोंक कर भाग खड़ी हुई थीं।

इन पर निगाह पड़ते ही उसांगा मारे खुशी के फूल खिले क्योंकि उसे आशा न थी कि भाग्य इतने शीघ्र उसकी सहायता करेगा।

लेफ्टिनेन्ट ओल्डविक तथा बर्था कर्चर अब उस हवाई जहाज के एक दम समीप पहुँच गये थे। जैसे ही इन लोगों की निगाह उस हवाई जहाज पर पड़ी एक प्रसन्नता की आवाज लेफ्टिनेन्ट के मुँह से निकली। इसी समय आस पास की झाड़ियों में बिप्रे हवशी लोग पकापक उन पर दूट पड़े।

काला उड़ाका

—२—

बर्था कर्चर भय और निराशा से एक दम विह्वल हो उठी । स्वतन्त्रता के इतने समीप पहुँच कर भी एकाएक अपनी आशाओं पर इस प्रकार पानी फिर जाना उसने दुर्भाग्य का एक संकेत मात्र समझा । लेफ्टिनेन्ट ओल्डविक भी निराश हो गया पर साथ ही उसे क्रोध भी चढ़ आया ।

जर्मन जंगी लिबास पहने हबशियों को अपने सामने देख ओल्डविक ने उनसे सवाल किया, “तुम्हारा अफसर कहाँ है ?”

परन्तु इसी समय बर्था कर्चर ओल्डविक की ओर देख कर बोली, “तुम फजूल कोशिश कर रहे हो, वे लोग अंग्रेजी बिलकुल नहीं समझ सकते अच्छा ठहरो मैं उन्हें समझाये देती हूँ ।”

इतना कह कर उसने जङ्गली भाषा में—जिसके द्वारा जर्मन लोग हबशियों से बातचीत किया करते हैं—उसौंगा से कहा, “यह

अंग्रेज अफसर यह जानना चाहता है कि तुम्हारा अफसर कौन है।

अजीब तरह का मुँह बना कर उसाँगा ने उत्तर दिया, "बात तुमसे तो छिपी है नहीं। उसे हम लोगों ने मार डाला और उसी प्रकार इसे भी मार डालेंगे यदि यह मेरे कहे सुनाने न चलेगा।"

युवती ने उससे पूछा, "तुम उससे क्या चाहते हो ?

"उससे कहो कि मुझे इस बड़ी चिड़िया पर चढ़ कर उड़ना सिखा दे" उसाँगा ने हवाई जहाज की ओर इशारा करते हुए कहा।

बर्था कर्चर ने उसाँगा की बात ओल्डविक को समझा दी। अंग्रेज अफसर कुछ देर तक खड़ा कुछ सोचता रहा इसके बाद बोला, "उससे पूछो कि यदि मैं उसे इस बड़ी चिड़िया पर उड़ना सिखा दूँ तो क्या वह हम लोगों को स्वतन्त्र कर देगा।"

उसाँगा परले सिरे का चालाक और भारी धूर्त था। कर्चर पड़ने पर हर एक बात का वादा कर देना और जब चाहे वादे को तोड़ देना उसके लिये एक मामूली बात थी। जैसे युवती ने उससे यह सवाल किया वह फौरन इस बात पर उत्तर दे हो गया और बोला, "यदि वह अंग्रेज मुझे उड़ना सिखा दे तो मैं तुम लोगों को तुम्हारे जाति वालों के पास पहुँचा दूँगा कि इस चिड़िया को मैं अपने पास रख लूँगा।

जब बर्था कर्चर ने यह बात लेफ्टिनेन्ट ओल्डविक को सुनाई तो उसने कुछ सोच कर उत्तर दिया, "मैं देखता हूँ कि इसकी बात मान लेने के इस समय और दूसरा कोई उपान

है। मेरे खयाल में अब यह हवाई जहाज अंग्रेज सरकार के हाथ से निकल गया। यदि इसकी बात मैं अस्वीकार कर दूँ तो वह अवश्य मुझे मार डालेगा और यह हवाई जहाज यहाँ पड़ा पड़ा बर्बाद हो जायगा किन्तु यदि मैं इसकी बात को मान लूँगा तो यह कम से कम तुम्हें सकुशल अंग्रेज सेना में तो पहुँचा देगा। इसके बाद कुछ रुक कर ओल्डविक पुनः बोला, “और मेरी निगाह में तुम्हारा सकुशल अपने स्वजातियों में पहुँच जाना ब्रिटिश सरकार के तमाम हवाई जहाजों से भी कहीं अधिक मूल्य रखता है !”

लेफ्टिनेन्ट ओल्डविक की यह आखिरी बात सुन कर बर्था कर्चर चिहुँक उठी और तेज निगाह से उसकी ओर देखने लगी। जब से इन दोनों का साथ हुआ था तब से ओल्डविक के मुँह से निकले हुए ये पहले ही शब्द थे जो उसके प्रति लेफ्टिनेन्ट के आन्तरिक भावों को प्रगट करते थे। बर्था के चेहरे पर आ जाने वाली हलकी सुखी देखते ही ओल्डविक को अकस्मात् अपने मुँह से इन शब्दों के निकल जाने का बड़ा ही दुःख हुआ, और वह पुनः बोला, “क्षमा करना मिस बर्था ! मेरे मुँह से अकस्मात् निकल जाने वाले इन शब्दों को एक दम भूल जाना ! मैं वादा करता हूँ कि यदि इन शब्दों से तुम्हें दुःख हुआ है तो पुनः दुबारा इस प्रकार के शब्दों को मुँह से निकाल कर भविष्य में तुम्हें कभी भी दुःखी न करूँगा !”

बर्था कर्चर ने मुसकुरा कर उसे धन्यवाद दिया परन्तु जो

बात एक बार मुँह से निकल गई वह फिर वापस कैसे लौट सकी थी। वह समझ गई कि वह अंग्रेज युवक उसे प्यार करता है।

ओल्डविक ने उसाँगा को बहुत कुछ समझाया कि उस कूचिड़िया के उड़ाने की शिक्षा लेने में उसकी जान का खतरा पर उसने एक भी न मानी बल्कि एक दम आपे से बाहर हो कर लाचार बर्था की ओर देख कर वह बोला, “अच्छा बर्था! तुम एक बार कोशिश कर के देखो कि वह तुम्हें भी हवाई जहाज के अपने साथ ले चलने के लिये राजी होता है या नहीं!”

बर्था कर्चर ने उससे यह प्रस्ताव किया परन्तु उसने उस बात से साफ इन्कार कर दिया क्योंकि उसे इस बात का सुझाव हो गया था कि ये लोग किसी चालाकी में हैं। वह बोला “नहीं ऐसा नहीं हो सकता। तुम्हें मेरे आदमियों के पास रहना होगा। यदि उसने मुझे सही सलामत जमीन पर उतार दिया तो विश्वास रखो मेरे आदमी तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट न देंगे।”

जब ओल्डविक ने यह बात सुनी तो बोला, “इस वेक से कहो कि जिस समय मैं उसे जमीन पर उतारने लगूँगा उस समय यदि तुम इस मैदान में सही सलामत खड़ी न दिखाई दे तो मैं उसे ब्रिटिश युद्धस्थल में ले जा कर फाँसी दिलवा दूँगा।”

उसाँगा ने इस बात का वादा किया बल्कि अपने आदमियों को इस बात की ताकीद कर दी कि यदि बर्था को उन्होंने भी कष्ट पहुँचाया तो वह उनमें से किसी को भी जिव

छोड़ेगा। साथ ही उसने उन्हें इस बात की भी ताकीद कर दी कि जब हवाई जहाज जमीन पर उतरने लगे तो वर्था कर्चर को वे लोग उसी मैदान में ले आवें।

अब ओल्डविक अपने हवाई जहाज पर जा बैठा और उसाँगा को भी उसने तस्मे से बाँध कर बैठने की जगह पर बैठा दिया। इसके बाद उसने उसे चलाने वाला पुर्जा उमेठ दिया।

हवाई जहाज एक बार जोर से डगमगाया। उसाँगा का कलेजा काँप उठा और उसने जोर से चिल्ला कर नीचे उतरने की इच्छा प्रगट की किन्तु प्रोपेलर की आवाज में भला उसकी आवाज सुनता ही कौन था ! यदि उसाँगा तस्मे के साथ बँधा हुआ न होता तो कदाचित्त जमीन पर क्रूद पड़ता। हवाई जहाज उस समय धीरे धीरे ऊपर की ओर उठ रहा था। उसाँगा ने जमीन को तेजी के साथ नीचे की ओर जाते देखा। जङ्गल के पेड़ और नदी उसने अपने से दूर हटती देखी और नुमाबो का गाँव क्रमशः दूर होते देखा। उसे भय हो रहा था कि यदि इस समय वह उस बड़ी चिड़िया से नीचे गिर पड़े तो कदाचित्त उसकी हड्डी पसली तक का पता न लगेगा।

आधे घण्टे के भीतर ही ओल्डविक हवाई जहाज को जमीन से काफी ऊँचाई पर ले गया और तब एकाएक उसने हवाई जहाज को एक दम टेढ़ा कर के तेजी के साथ नीचे की ओर गिराया। उसाँगा भय के मारे इतने जोर से चीख उठा कि प्रोपेलर की आवाज के ऊपर उसकी आवाज ओल्डविक के कानों

में पड़ी और एक हलकी मुस्कुराहट उसके चेहरे पर बौझ गई।
जिस समय हवाई जहाज जमीन पर उतरा और ओल्डविक
ने उसे उससे बाहर निकाला उसके चेहरे पर हवाई जहाज उड़ने
थी परन्तु जमीन पर पहुँचते ही उसकी तबीयत बहुत कमजोर
दुरुस्ती पर आ गई और वह अपने आदमियों के सामने अक्ष
अकड़ कर शान की बातें करने लगा ।

हवाई जहाज के उड़ाने की कला सीखने की उत्सुकता उस
को इस समय बहुत ही बढ़ी हुई थी । उस हवाई जहाज के
अब वह अपनी ही सम्पत्ति समझने लग गया था कि
इस भय से कि कहीं उसे कोई उड़ा न ले जाय, उसने उसके
के गाँव में जाने तक का विचार छोड़ दिया और हवाई जहाज
के आस पास ही झोपड़ियाँ बना कर अपने आदमियों के साथ
रहने लगा ।

दो दिन तक तो उसाँगा बराबर ओल्डविक को भय दि
कर उससे हवाई जहाज उड़ाने की कला सीखता रहा किन्तु
इसके बाद भी ओल्डविक ने उसे कुछ और दिनों तक इस क
को सीखने की राय दी तो फौरन ही उसके दिल में सन्देह पै
हो गया कि कहीं ये लोग अपनी चालाकी में न लगे हों ।
उसके दिल में धीरे धीरे बेईमानी का अंकुर भी पैदा होने
और उस दिन रात में जब वह सोया तो अपने हृदय में
मालूम कितने बाँधनू बाँध चुका था ।

सुबह होते ही उसने अपने आदमियों को कार्यरूप में परि

करना भी आरम्भ कर दिया । इन दोनों ने देखा कि उसके बहुत से आदमी उसे चारों ओर से घेरे खड़े हैं और वह उन्हें न मालूम क्या क्या समझा रहा है । बीच बीच में वह कभी बर्था तथा कभी ओल्डविक की ओर भी उँगली का इशारा कर के कुछ कहता जाता था ।

धीरे धीरे ओल्डविक का भी सन्देह उसके ऊपर बढ़ने लगा और उसकी यह आशङ्का दृढ़ होने लगी कि हो न हो कोई भयानक घटना शीघ्र हो घटने वाली है । उसका बरछा छीन लिया गया था अस्तु वह इस समय प्रायः नेःसहाय सा हां रहा था परन्तु वह कर ही क्या सकता था सिवाय इसके कि चुपचाप उसांगा की कार्रवाइयों को ध्यान से देखता जाय ।

इसी समय सम्भवतः उसांगा अपने मन की सभी बातें अपने आदमियों को समझा चुका क्योंकि उनमें से कुछ आदमी तां बर्था की ओर तथा कुछ ओल्डविक की ओर तेजी के साथ बढ़े । पास पहुँचते ही वे लोग एक दम से उन दोनों पर दूट पड़े और देखते ही देखते उन्होंने उन दोनों के हाथ पैर बाँध कर उन्हें बेकाबू कर दिया ।

बड़ी मुश्किल से घूम कर ओल्डविक ने देखा कि उसांगा बर्था से धीरे धीरे कुछ बातें कर रहा है । उसने उत्सुकता के साथ बर्था से पूछा, “यह दुष्ट क्या कह रहा है बर्था ?”

बर्था ने उत्तर दिया, “यह मुझे अकेले हवाई जहाज में बैठा तथा उसे स्वयं चला कर यहाँ से कुछ दूर एक ऐसे स्थान

पर ले जाया चाहता है जिसके सम्बन्ध में उसका कहना है कि वह वहाँ का राजा होगा और उस समय मुझे अपनी रक्षा बनावेगा परन्तु चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं क्योंकि मैं अच्छी तरह समझती हूँ कि एक बार हवाई जहाज के कुछ दूर ऊपर उठने बाद वह इस जोर के साथ जमीन पर गिरेगा कि इस दोनों में से किसी की भी हड्डी तक का पता न चलेगा और शीघ्र ही मैं सम्पूर्ण यातनाओं से मुक्त हो जाऊँगी । हाँ, तुम्हारी चिन्ता मुझे अवश्य है क्योंकि मैं अच्छी तरह समझती हूँ कि तुम्हारा जान मेरी अपेक्षा कहीं अधिक कष्ट से जायगी !”

बर्था कर्चर की बात सुन कर ओल्डविक का कलेजा काँप उठा। वह बोला, “उस दुष्ट से कहो कि अपने इस इरादे को बदल दे। मेरे पास अथाह दौलत है और मैं उसे इतनी दौलत ला कर दूँगा कि जितनी दौलत का उसने स्वप्न तक में अन्दाज न लगाया होगा । मैं उसे वचन देता हूँ कि मैं अपनी सारी दौलत उसे दे कर दूँगा जिसकी बदौलत वह संसार में जो जो भी चीजें चाहे अपने लिये एकत्रित कर सकता है !”

एक हलकी मुस्कराहट के साथ बर्था कर्चर ने उत्तर दिया, “बेकार है ओल्डविक ! उससे ये बातें कहना एकदम बेकार है। वह तुम्हारी बातों पर किसी तरह भी विश्वास न करेगा । इन दुष्टों की निगाहों में इज्जत और आत्मसम्मान कुछ भी मूल्य नहीं रखता । विश्वास रखो कि तुम हम लोगों के साथ किसी प्रकार भी नहीं जा सकते ।

इन लोगों को आपस में बातें करते देख उसांगा को सन्देह हो रहा था कि कहीं ये लोग उसे हानि पहुँचाने के लिये ही कोई उपाय न सोच रहे हों उसने बर्था से इस सम्बन्ध में पूछा भी कि उन दोनों में क्या बातें हो रही हैं । बर्था ने उसे समझा दिया कि वह केवल अपना दुःख भर प्रगट कर रहा है और मुझसे विदाई लेता हुआ ईश्वर से हम लोगों की शुभ कामना के लिये प्रार्थना कर रहा है ।”

यह बात समझा देने बाद बर्था उसांगा से बोली, “देखो मैं तुम्हारे साथ खुशी खुशी चलने को तैयार हूँ बशर्ते कि तुम इस बात का वादा करो कि हम लोगों के जाने बाद तुम्हारे आदमी इस अंग्रेज को स्वतन्त्र कर देंगे ।”

उसांगा ने व्यंगपूर्वक केवल इतना ही भर उत्तर दिया, “तुम्हें तो मेरे साथ चलना ही होगा चाहे तुम खुशी से चलो अथवा नाराजी से !”

इस सम्बन्ध में और कुछ बातें करना बर्था ने बेकार समझा अस्तु वह चुप हो रही । उसांगा के हुक्म से हवशियों ने बर्था को पकड़ कर हवाई जहाज में बैठा दिया । इसके बाद जब उसांगा भी उसमें जा बैठा तो उन लोगों ने बर्था के बन्धन खोल दिये ।

बर्था ने एक बार ओल्डविक की ओर घूम कर देखा उसका समूचा शरीर एक दम पीला हो गया था फिर भी उसके होठों पर एक हलकी मुस्कुराहट थी वह चिन्ता कर बोली, “विदा ओल्डविक ! हमेशा के लिये विदा !”

“विदा बर्था विदा !” कहकर ओल्डविक ने भी अपना सिर आसमान की ओर उठा दिया और तब फिर कहने लगा। “क्यों अब अन्त समय अधिक दूर नहीं है अस्तु क्या अब मुझे तुम्हारी बातों को कहने की इजाजत देती हो जिन्हें बहुत दिनों से मैं अपने हृदय में इतनी मुश्किल से छिपाये हुआ हूँ।”

बर्था के होंठ कुछ हिले परन्तु उसने ओल्डविक की कोखीकार की या नहीं यह मालूम न हो सका क्योंकि इसी समय प्रोपेलर घूमने की तेज आवाज हवा में गूँज उठी और हवा जहाज एक बार जोर से हिल कर तेजी के साथ आगे बढ़ा।

उस युवती को मृत्यु के मुख में जाते देख, जिसे ओल्डविक जान से बढ़ कर प्यार करता था, उसके मुँह से एक भयानक चीख निकली। वह समझ गया कि अब बर्था की स्तुति अधिक देर नहीं लग सकती।

परन्तु यह क्या ? ओल्डविक के हृदय की गति एक क्षण रुक सी गई।



उसांगा का इनाम

—८—

दो दिनों तक टार्जन आनन्द के साथ उत्तर की ओर शिकार खेलने में लवलीन रहे । किन्तु अब वे सीधे उस मोपड़ी की ओर लौट रहे थे जहाँ वे वर्था कर्चर तथा लेफ्टिनेन्ट ओल्डविक को छोड़ गये थे । रात उन्होंने मोपड़ी के सामने वाले मैदान के थोड़ी ही दूर के एक पेड़ पर काटी थी और अब वे इस इरादे से नदी की ओर बढ़ रहे थे कि इन दोनों के लिये चलते चलाते कुछ मछलियाँ भी पकड़ते चले ।

बिना बन्सी के केवल अपनी फुर्ती की बदौलत हाथ से मछलियों पकड़ने का उन्हें अच्छा खासा अभ्यास था । वे नदी के किनारे जा बैठे और मछली के पानी के ऊपर आने की राह देखने लगे । उनका अंग इस समय बाल बराबर भी नहीं हिल रहा था cc-कब तक उन्हें उसी प्रकार बैठे रहना पड़ेगा यह कोई

नहीं कह सकता था किन्तु थोड़ी ही देर बाद उन्हें पानी की सतह पर मछली की चमक दिखाई दी और वे सावधान हो गये।

परन्तु सहसा पास की झाड़ियों में खड़खड़ाहट सुन मछली पुनः पानी में घुस गई। क्रोध में भरे टार्जन फौरन ही अपने पीछे आने वाले शत्रु का सामना करने के लिये धूम। सहसा उनकी निगाह जूटग पर पड़ी जो धीरे धीरे उन्हीं की ओर बढ़ा आ रहा था।

उसके पास पहुँचने पर उन्होंने सब से पहले उससे बर्खास्त ओल्डविक का कुशल समाचार पूछा परन्तु उसकी जवानी ने मालूम हुआ कि वे लोग दो दिन हुए चुपचाप किसी जगह रुक चुके हैं।

अब उन्होंने एक क्षण भी बर्बाद करना उचित न समझा और फौरन उस झोपड़ी में जा पहुँचे। झोपड़ी एकदम सूतखर थी। अपनी अपूर्व ग्राणशक्ति की बलपूर्वक उन्होंने यह समझने में भी देर न लगी कि उस झोपड़ी में रहने वाले आज से दो दिन पहले ही वहाँ से खाना हो चुके हैं। वे झोपड़ी के बाहर लौटने ही वाले थे कि सहसा उनकी निगाह सामने की दीवार पर लगे एक कागज पर पड़ी। हाथ बढ़ा कर उन्होंने उसे उतार लिया और पढ़ने लगे। यह लिखा हुआ था:—

“आपके मुँह से बर्खा कर्चर के सम्बन्ध की बातें सुनने का और यह समझ कर कि आप उससे दिली नफरत करते हैं मैं यही स्थिर किया कि उसका बोझ अब अधिक आपके ऊपर

हालना उचित नहीं है । मैं जानता हूँ कि अब हम लोगों के यहाँ रहने से आपके पश्चिमीय समुद्री किनारे पर जाने के इरादे में बाधा पड़ती है इस कारण मैंने यही निश्चय किया है कि अकेले ही ब्रिटिश सैन्य दल तक पहुँचने का हम लोग प्रयत्न करें । आप ने अब तक हम लोगों पर जो कृपा दिखाई है और हम लोगों की जिस प्रकार रक्षा की है उसके लिये हम लोग आपको हृदय से धन्यवाद देते हैं । भविष्य में यदि मैं किसी प्रकार इस उपकार का बदला चुका सका तो इसे अपना परम सौभाग्य समझूँगा ।”

इस पत्र के नीचे लेफ्टिनेन्ट हैरल्ड पर्सी स्मिथ ओल्डविक का दस्तखत था । टार्जन ने वह पत्र मोड़ कर एक ओर फेंक दिया । अपने ऊपर की जवाबदेही आपसे आप इस प्रकार हटते देख उन्हें बहुत कुछ निश्चिन्ती हो गई और मोपड़ी से बाहर निकल कर वे धीरे धीरे पश्चिमीय समुद्री किनारे वाले अपने बँगले की ओर जाने के लिये उत्तर की ओर मुड़े ।

परन्तु न मालूम क्यों वे आगे बढ़ते बढ़ते एकाएक रुक गये । उनके हृदय में रह रह कर एक नया खयाल पैदा हो रहा था । वे सोचने लगे, “वह औरत है और उसकी वे कई बार मौत के मुँह से रक्षा कर चुके हैं । एक अंग्रेज होने के नाते विपत्ति में पड़ी औरत की रक्षा करना उनका धर्म है । निश्चित है कि बिना उनकी सहायता के वह युवती कभी भी अपने अभीष्ट स्थान तक नहीं पहुँच सकती फिर उसे इस प्रकार अकेले आगे बढ़ने देना क्या जान बूझ कर उसे मौत के मुँह में ढकेलना नहीं

कहावेगा । नहीं उसे इस प्रकार निःसहाय छोड़ आगे कम उन्हें कदापि उचित नहीं है !” टार्जन फौरन ही पीछे लौटे और दक्खिन की ओर बढ़ने लगे ।

मानू वन्दर ने उन दोनों टरमन्गानियों को दो दिन पहले उसी ओर जाते देखा था । किलकिलाते हुए उसने टार्जन को यह बात बता दी । टार्जन मानू वन्दर के बताये रास्ते पर तेजी के साथ दक्खिन की ओर रवाना हुए । अपनी घ्राणशक्ति की सहायता से उन्हें बराबर यह मालूम होता जा रहा था कि वे दोनों किस राह से आगे बढ़े हैं । वे भी उसी ओर बढ़ने लगे ।

न मालूम क्यों उनकी अन्तरात्मा उन्हें तेजी के साथ आगे बढ़ने के लिये प्रेरित कर रही थी और कह रही थी कि उन दोनों को इस समय उनके सहायता की बहुत अधिक आवश्यकता है ।

वह रास्ता जिस पर से हो कर वे दोनों आगे की ओर चले थे नमाबुओं के गाँव से पूरब की ओर चला गया था । वहीं से वह नदी के किनारे गये हुए हाथियों के चौड़े रास्ते में जा मिल गया था और इसके बाद कई मील तक दक्खिन की ओर चला गया था । वे बराबर आगे ही बढ़े जा रहे थे कि सहसा उनके कानों में एक विचित्र प्रकार की भनभनाहट की आवाज पड़ी । वे फौरन समझ गये कि वह आवाज हवाई जहाज के प्रोपेलर की है और तब और भी तेजी के साथ आगे की ओर बढ़े ।

जिस समय वे उस मैदान के किनारे पहुँचे जिसमें लिओल्डविक का हवाई जहाज था तो रुक कर ध्यान से आगे की

ओर देखने लगे । एक ही निगाह में समूची घटनाएँ उनकी आँखों के आगे फिर गईं—यद्यपि जो कुछ उन्हें दिखाई दिया उस पर उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था । अंग्रेज अफसर हाथ पैर बाँध कर जमीन पर डाला हुआ था और उसके चारों ओर जर्मन सेना से भागे हुए कितने ही हवशी सैनिक खड़े थे । टार्जन इन लोगों को पहले देख चुके थे और भलीभाँति पहचानते थे । उन लोगों की ओर से जमीन पर अपनी ओर बढ़ता हुआ हवाई जहाज उन्हें दिखाई दिया जिसके पीछे की सीट पर वर्था कर्चर बैठी हुई थी । काला हवशी उसाँगा हवाई जहाज चलाना किस प्रकार जान गया इसे न तो वे किसी प्रकार समझ ही सके न समझने की कोशिश करने का समय ही उन्हें मिला । उसाँगा के स्वभाव से परिचित होने तथा अंग्रेज अफसर की हालत देखने ही से वे समझ गये कि उसाँगा वर्था कर्चर को भगा ले जाया चाहता है । अंग्रेज अफसर को अपने कब्जे में पा कर भी वह उस युवती को क्यों भगा ले जाया चाहता है यह बात उनकी समझ में बिल्कुल ही नहीं आ रही थी । उन्हें क्या मालूम था कि उसाँगा उस युवती को पुनः कभी वापस न आने देने के इरादे से किसी अन्य स्थान पर लिये जा रहा है । यह बात उसाँगा ने अपने साथियों तक से नहीं बताई थी । उन्हें उसने यही बताया था कि वह उस सफेद युवती को उत्तरी प्रदेश के किसी सुल्तान के हाथ बेचने के लिये ले जा रहा है और उसे बेच कर जो भारी रकम लावेगा उसमें से वह उन लोगों को भी हिस्सा देगा ।

ये सब बातें टार्जन बिल्कुल नहीं जानते थे । उन्होंने केवल इतना ही भर देखा कि एक काला हवशी किसी गोरी औरत के साथ हवाई जहाज में भागा चाहता है । मशीन अब जमीन के ऊपर उठा ही चाहती थी । कुछ ही देर में वह पहुँच के बहा हो जायगी । पहले तो टार्जन का यही विचार हुआ कि अपने कमान पर तीर चढ़ा कर उस हवशी को उसका निशाना बना दें परन्तु फौरन ही उन्होंने अपना वह खयाल बदल दिया क्योंकि वे जानते थे कि उस हवशी के मरते ही हवाई जहाज सामने के पेड़ों से जा टकरावेगा और बर्था कर्चर की जान किस प्रकार भी न बचेगी ।

इस समय केवल एक ही उपाय उन्हें दिखाई दे रहा था परन्तु इसमें जरा सा भी चूकने पर उन्हें अपनी जान से हानि घोना अवश्यम्भावी था फिर भी उन्होंने इसी उपाय को अपनाने का निश्चय कर लिया ।

उसौंगा की निगाह उन पर नहीं पड़ी क्योंकि वह हवशी जहाज के उड़ाने के काम में लवलीन था परन्तु मैदान में हवशियों की निगाह उन पर पड़ गई और वे अपनी पिस्तौल का मुँह उनकी ओर कर के चिल्लाते हुए उनकी ओर दौड़े ।

उन्होंने एक सफेद विशालकाय दैत्य को पेड़ की एक डाल से मैदान में कूद कर हवाई जहाज की ओर दौड़ते देखा इस समय उसने अपने कन्धे से घास का एक रस्सा उतार कर अपने हाथ में ले लिया था । उन्होंने यह भी देखा कि उस दैत्य

दैत्य ने वह रस्सा जिसके आखरी भाग में एक फन्दा बना हुआ था अपने सिर के ऊपर जोर से हवा में घुमाया। इसी समय हवाई जहाज में बैठी हुई युवती ने भी मुककर उन्हें देख लिया।

हवाई जहाज इस समय उस सफेद दैत्य से लगभग बीस फीट की ऊँचाई पर था। उसके हाथ का वह रस्सा जोर से हवा में ऊपर की ओर उठा और हवाई जहाज पर बैठी युवती ने फुर्ती के साथ उसे पकड़ लिया। उसके दूसरे छोर को मजबूती के साथ पकड़े हुए टार्जन फौरन ही जमीन से ऊँचे की ओर उठ गये और अधर में झूलने लगे। अंग्रेज अफसर अपने स्थान पर पड़ा पड़ा यह सब तमाशा देख रहा था और उसने टार्जन को पहचान भी लिया था। हवाई जहाज इस समय तेजी के साथ पेड़ों की ओर बढ़ा जा रहा था। वह इस बात का खयाल कर के विह्वल हो उठा कि शीघ्र ही वे पेड़ उनके शरीर के साथ टकरा कर उनकी हड्डी पसली तक चूर कर देंगे। परन्तु ऐसा न हुआ। हवाई जहाज तेजी के साथ ऊपर उठ रहा था यस्तु वे पेड़ों के ऊपर से साफ निकल गये किन्तु उनका बोम पा कर हवाई जहाज एक ओर मुक गया और मुका ही मुका ऊपर उठने लगा। उसाँगा उसे सम्हालने की कोशिश करने लगा।

टार्जन हवा में झूलते रहने पर भी धीरे धीरे रस्से के सहारे ऊपर चढ़ने लगे। बर्था कर्चर ने उस भारी बोम को सम्हालने में इस समय अपने शरीर की समूची ताकत खर्च कर दी थी। उसाँगा जिसे इन बातों की जरा भी खबर न थी हवाई

जहाज को बराबर ऊपर की ओर उठाये लिये जा रहा था। टार्जन ने नीचे देखा। पेड़ तथा नदी तेजी के साथ पीछे भागे रह रहे थे। मृत्यु अपना मुंह बाये उनके नीचे की ओर खड़ी थी।

बर्था कर्चर को ऐसा मालूम हुआ मानों उसकी उँगलियों में जरा भी शक्ति नहीं रह गई है और वे एक दम मुर्दा हो गई हैं। उसकी कलाई तक धीरे धीरे सुन्न हो रही थी। कब तक वह भारी बोझ को सम्हाल सकेगी इस सम्बन्ध में वह कुछ नहीं कह सकती थी अस्तु इस बात की आशा उसने त्याग दी कि वह अब अधिक देर तक उस रस्से को सम्हाल सकेगी।

इसी समय उसे रस्से का बोझ कम होता दिखाई दिया। दूसरे ही क्षण टार्जन ने अपना शरीर ऊपर की ओर उठाया और अपना एक पैर हवाई जहाज पर बैठने के स्थान पर रख लिया। एक बार उन्होंने उसाँगा की ओर देखा और तब धीरे से बर्था के कान में बोले, “क्या तुमने कभी हवाई जहाज चलाया है?”

युवती को सम्मत्सूचक सिर हिलाते देख वे पुनः बोलीं “क्या तुममें इतनी हिम्मत है कि जब तक मैं इस हवाई जहाज से निपटूँ तुम उसकी बगल में पहुँच जहाज को सम्हाल रखो।”

उसाँगा की ओर एक बार देख कर युवती काँप उठी और बोली, “अवश्य ! किन्तु मेरे पैर बँधे हुए हैं।”

टार्जन ने अपने कमर में लटकते छुरे को निकाला और उससे बर्था के पैरों में बँधे तस्मे काट दिये। उसके एक हाथ से बर्था की कलाई पकड़ कर उन्होंने उसे सम-

और तब दोनों ही ने उस फासले को तय करने का इरादा किया जो बर्था तथा उस हवशी की सीट के बीच में पड़ता था। हवाई जहाज के जरा सा हिलते ही दोनों नीचे गिर पड़ते। टार्जन समझ गये कि संयोग ही उनका काम पूरा कर सकता है।

उसाँगा को उनका इरादा उस समय मालूम हुआ जब बर्था को उसने अपने बगल में आते देखा और इसी समय लोहे की सी मजबूत उँगलियों ने उसका गला मजबूती के साथ पकड़ लिया। एक दूसरा हाथ उसकी ओर बढ़ा जिसने उसके पैरों में बँधे तस्मे को काट दिया और तब उसे हवा में तान लिया। उसाँगा हवा में अपने हाथ पैर फेंकने और चीखने चिल्लाने लगा पर इस समय वह निरीह बच्चों की भाँति बेवस था।

बर्था ने इस समय हवाई जहाज को सम्हल लिया था। हवाई जहाज एक दफे एक ओर मुका और तब फौरन ही सम्हल गया। नीचे मैदान में खड़े सब लोग यह सब तमाशा देख रहे थे। सहसा लेफ्टिनेन्ट ओल्डविक ने किसी आदमी का शरीर हवाई जहाज से नीचे की ओर गिरते देखा और उसके मुँह से निराशा की एक चीख निकल गई। हवा में कलाइयाँ खाता हुआ वह शरीर तेजी के साथ नीचे की ओर गिर रहा था। अन्त में वह एक भारी आवाज देकर जमीन पर गिर पड़ा। वही ही हिम्मत बाँध कर ओल्डविक ने उस लाश की ओर देखा और तब यह देख ईश्वर को धन्यवाद दिया कि वह खून से लथपथ शरीर किसी काले हवशी का था।

अपने सर्दार की हालत देख हवशी लोग आपे से बच
 हो गये और बदला लेने की इच्छा उनके मन में प्रबल हो गई।
 टार्जन तथा बर्था ने उन्हें अपने मृत सर्दार के शरीर के चारों
 ओर एकत्रित होते देखा और यह भी देखा कि वे लोग अपनी
 अपनी मुठियाँ उनकी ओर हवा में उठा रहे हैं। कितने
 पिस्तौलों की नलियों भी उन लोगों ने अपनी ओर उठती हुई देखीं।
 इसी समय टार्जन ने चिल्ला कर बर्था को कुछ आदेश दिया।

उनकी बातों का मतलब समझते ही बर्था का चेहरा एक क्षण
 पीला पड़ गया पर उसकी आँखों में हड़ता की एक चकत्त
 दिखाई दी और उसने हवाई जहाज को तेजी के साथ उनके
 की ओर उतारना शुरू किया। हवाई जहाज हवशियों से खड़े
 ही फासले पर जमीन पर उतरा और तब इतनी तेजी के साथ
 उनकी ओर बढ़ा कि वे अपने को बिल्कुल ही सम्हाल न सके
 और वह उन्हें कुचलता हुआ आगे की ओर निकल गया।
 जैसे ही वह जंगल में पेड़ों के पास आ कर रुका टार्जन उस
 से जमीन पर कूद पड़े और उस अंग्रेज की ओर दौड़े। वे
 ही दौड़ते उन्होंने एक बार उस स्थान की ओर भी देखा तो
 अभी कुछ देर पहले हवशियों का मुँह खड़ा था कि बहुत समय
 है उनमें से कोई उनका मुकाबला करने के फिराक में हो
 उन्हें कोई भी मुकाबला करने वाला दिखाई न दिया।
 जमीन पर पड़े हुए मुर्दे पड़े थे।

जब तक कि टार्जन उस युवक के बन्धन खोलें बर्था

उनके बगल में आ कर खड़ी हो गई। उसने टार्जन को धन्यवाद देने के लिये अपना मुँह खोला ही था कि टार्जन ने हाथ के इशारे से उसे चुप करा दिया और बोले, “तुमने स्वयं ही अपने प्राणों की रक्षा की है क्योंकि यदि तुमने हवाई जहाज को सम्हाला न होता तो मैं कदापि तुम्हारी सहायता न कर पाता। अब तुम्हारा रास्ता एक दम साफ है। दिन भी अभी काफी बचा हुआ है। यदि हवाई जहाज में काफी पेट्रोल हो तो तुम लोग कुछ ही घण्टों में अपने अभीष्ट स्थान तक पहुँच जा सकते हो।”

इतना कह कर उन्होंने उस अंग्रेज युवक की ओर देखा। वह बोला, “हाँ हवाई जहाज में पेट्रोल की कमी नहीं है।”

टार्जन मुसकुराते हुए बोले, “तब अब देर करने का काम नहीं क्योंकि तुम लोगों का इस जङ्गल से कोई भी सम्बन्ध नहीं।

वर्था तथा ओल्डविक के चेहरे पर भी एक हलकी मुस्कुराहट दिखाई दी। ओल्डविक बोले, “आप ठीक कहते हैं यह जङ्गल हम लोगों के रहने योग्य स्थान नहीं है, अस्तु क्यों नहीं आप भी हम लोगों के साथ ही साथ सभ्य देश में वापस लौट चलते?”

सिर हिलाते हुए टार्जन ने उत्तर दिया, “नहीं! जङ्गल मुझे सभ्य देश से कहीं अधिक प्यारा है।”

ओल्डविक बोले, “मैं समझता हूँ कि सभ्य देश में दौलत ही सब से भारी चीज है। आप विश्वास रखिये मुझसे...”

उसकी बात काटते हुए टार्जन बोल उठे, “नहीं नहीं! मैं जानता हूँ तुम क्या कहने की कोशिश कर रहे हो पर तुम्हारा

खयाल गलत है। मैं जङ्गल में पैदा हुआ, जङ्गल ही में पला तब जङ्गल ही में मरा भी चाहता हूँ। जङ्गल छोड़ मैं और क्या रहना या मरना पसन्द नहीं करता।”

वे दोनों टार्जन की राय से सहमत न थे किन्तु कुछ नहीं सकते थे। इसी समय टार्जन पुनः बोल उठे, “जाओ वापस देर न करो, जितनी ही जल्दी करोगे उतनी ही जल्दी तुम जङ्गल के भयानक खतरों से दूर हो जाओगे।”

दोनों चुपचाप हवाई जहाज की ओर बढ़े। टार्जन से हाथ मिला कर ओल्डविक मशीन पर जा चढ़ा। बर्था ने भी गुड बाय कह कर टार्जन की ओर हाथ बढ़ाया और उत्सुकता के साथ बोली, “क्या मेरे जाने के पहले आप एक बार इतना भी न बोलें कि अब आप मुझसे नफरत नहीं करते !”

टार्जन का मुखमण्डल गम्भीर हो उठा। बिना एक शब्द मुँह से निकाले उस युवती को उठा कर उन्होंने उस अंग्रेज युवती को पीछे की ओर बैठा दिया। बर्था कर्चर के चेहरे पर दुःख की भाव दिखाई दी। मोटर चालू हुई और दूसरे ही क्षण हवाई जहाज उन्हें तेजी के साथ पूरब की ओर ले जाता दिखाई देने लगा।

मैदान के बीच खड़े टार्जन ध्यान से उन लोगों की ओर देख रहे थे। उनके मुँह से निकला, “बहुत जर्मन है साथ ही उनमें चर भी है, इससे बढ़ कर खराब बात और हो ही क्या सकती है किन्तु उससे नफरत करते मुझे दुःख होता है।”

काला शेर

—०—

न्यूमा शेर भूखा था । पूर्वीय रेगिस्तान से इस समय वह जानवरों से भरे इस जङ्गल में आया था किन्तु शिकार करने का अविरल प्रयत्न करने पर भी घास खाने वाले जानवर उसके भयानक पक्षों के सामने से निकल भागें थे ।

यही कारण था कि इस समय वह भूखा होने के साथ ही साथ खूंखार भी हो गया था । लगातार दो दिनों से उसे कुछ भी भोजन नहीं मिला था । मारे भूख के उसके मुँह से निकलने वाली भयङ्कर गरज तक इस समय नहीं निकल पाती थी और वह बड़ी-ही सावधानी से कदम रखता हुआ धीरे धीरे आगे बढ़ रहा था ताकि उसके पैरों से लग कर पैदा हुई चरमराहट उसके शिकार को सावधान न कर दे ।

उसकी नाक में इस समय बारा दिग्ग की गन्ध आ रही थी

और वह समझता था कि उसे उस रास्ते से गुजरे केवल कुछ ही मिनट बीते हैं यही कारण था कि वह इस समय बड़ी ही सावधानी से कदम रखता हुआ आगे बढ़ रहा था ताकि इस बार कहीं उसका शिकार भड़क कर भाग न जाय ।

सहसा उसकी दृष्टि एक जवान हिरन पर पड़ी जो सामने के मैदान में हरी हरी घास चर रहा था । एक बार सिंह ने अपने और उसके बीच के फासले को देखा । वह समझ गया कि एक ही छलाँग में वह हिरन पर जा पड़ेगा । उसके मुँह से निष्कासित हुई एक भयङ्कर गरज ही हिरन को किङ्कर्तव्य विमूढ़ बना देगी और एक ही कुदान में वह उसके ऊपर जा बैठेगा । इस बार अपने शिकार की ओर से वह एक दम निश्चिन्त था । उसकी दुम एकाएक ऊपर की ओर उठ कर सीधी खड़ी हो गई । यह उसके उछलने का संकेत था परन्तु जैसे ही भयङ्कर रूप से गरज कर उसने आगे की ओर झपटना चाहा उसके बगल की झाड़ियों में से एक कढ़ावर चीता निकल कर उस हिरन पर दूट पड़ा ।

वह भयङ्कर गरज जो हिरन को भयभीत करने के लिये सिंह के गले से निकलने वाली थी और भी तेज और भयानक हो उठी । इस गरज में वेहद क्रोध भरा हुआ था जो चीते द्वारा इस प्रकार अपना शिकार छिनता देख उसके मन में पैदा हुआ था । उस भयङ्कर गरज को सुनते ही चीता दुम दबा कर एक बगल की झाड़ी में वापस लौट गया परन्तु इस झमेले में दोनों ही का शिकार वह हिरन लापता हो गा यथा ।

क्रोध और निराशा से भरा सिंह व्याकुल हो उठा और धीरे धीरे आगे बढ़ा। कुछ ही दूर पर उसकी नाक में मनुष्य गंध आई। अब तक वह नर मांस से बढ़ी ही नफरत करता था उसका स्वाद उसे पसन्द न था परन्तु इस समय जब भूख से उसकी जान निकली जा रही थी इस बात का विचार करने के लिये वह तैयार न था। विशेष सावधानी के साथ आगे बढ़ने की भी उसे अब कोई आवश्यकता नहीं रह गई थी। मनुष्य का शिकार करने के लिये भला उसे सावधान रहने की आवश्यकता ही क्या थी। वह तेजी के साथ आगे बढ़ा परन्तु इसी समय उसके पैर के नीचे की सूखी लकड़ियाँ जार से चरमराईं और वह बमाबू जाति के जंगलियों द्वारा तैयार किये एक गहरे गड्ढे में जा पड़ा।

मैदान के बीच खड़े दार्जन प्रति क्षण छोटे होते जाने वाले उस हवाई जहाज की ओर अपनी दृष्टि जमाये खड़े थे। अपने ऊपर की जवाबदेही इतनी सुगमता से हटते देख वे अब बहुत कुछ निश्चिन्त से हो गये थे परन्तु इस निश्चिन्ती के साथ ही साथ एक लम्बी सांस भी एकाएक उनकी सबल तथा चौड़ी छाती के बाहर निकली। वह कदाचित् बर्था कर्चर के लिये थी जो उसे शत्रुदल का समझते हुये भी इस समय एकाएक उनके गृह से निकल गई थी।

अब वे वहाँ से सीधे पश्चिम की ओर रवाना हुये और उन दोनों का खयाल अपने चित्त से एक दम मुला देने का उद्योग

करने लगे। मैदान के किनारे आ कर वे एकाएक खड़े हो गये। एक बड़ा ही विशाल वृक्ष उनके सामने था। किसी आन्तरिक शक्ति की प्रेरणा के वशीभूत हो कर वे उस पेड़ पर चढ़ने लगे और उसकी सब से ऊँची चोटी पर पहुँच कर उन्होंने एक बार पुनः अपनी दृष्टि उसी पूरब दिशा की ओर उठाई बिना किसी हवाई जहाज उड़ कर गया था। बहुत प्रयत्न करने पर उन्हें बहुत ही आसमान पर एक काला धब्बा सा दिखाई दिया जो क्रमशः बड़ा होता जा रहा था। परन्तु हैं यह क्या ! वह धब्बा एकाएक उनकी ओर गिरता क्यों दिखाई दे रहा है। किसी अद्भुत आसक्ति से उनका हृदय कांप उठा। सहसा वह धब्बा तेजी के साथ नीचे गिरते गिरते पहाड़ी की ओट में छिप गया।

अन्दाज से टार्जन समझ गये कि हवाई जहाज अवश्य उसी वीरान भूमि के आस पास ही कहीं गिरा होगा जिसमें वे हो कर एक बार वे भूखे प्यासे इस ओर आये थे। पुनः उनकी रक्षा करने की आकांक्षा उनके हृदय में जागृत हो उठी परन्तु उतनी दूर का सफर कोई मामूली बात न थी। एक बार यह सोच उनके मन में आया कि संभव है हवाई जहाज इस दंगे की जमीन पर उतरा हो कि उस पर की सवारियों को अधिक नुकसान न पहुँचा हो। परन्तु उनकी अन्तरात्मा बार बार पुकार कर यही कहने लगी कि वे दोनों अवश्य इस बार भी घेरे आपत्ति में पड़े हुये हैं। अब वे अपने को सम्हाल न सके और पेड़ों पर छलांगें मारते हुये तेजी के साथ पूरब की ओर बढ़े।

थोड़ी ही दूर आगे बढ़ने पर उनकी नाक में बारा हिरन की गंध आई और साथ ही एक हिरन पर भी दृष्टि पड़ी जो इस समय बड़ी ही तेजी के साथ उसी पेड़ की ओर चला आ रहा था जिस पर टार्जन चढ़े हुये थे। जंगल ही में अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करने वाले टार्जन की सधी हुई आँखों से भला यह बात कब छिपी रह सकती थी कि इस समय हिरन किसी भयंकर जानवर के हमले से भयभीत हो कर तेजी के साथ भागा आ रहा है। भयभीत जानवर घबराहट में अपने समीप ही छिपे इस दूसरे शत्रु की गंध पहचान न सका। जैसे ही वह उस पेड़ के बगल में पहुँचा लोहे से मजबूत हाथ विजली की सी तेजी के साथ एकाएक बाहर निकल कर उसके गले में लिपट गये। वह हवा में साफ उठा लिया गया और किसी आदमी के दाँत उसकी गर्दन में जा धँसे। दोनों ही लुढ़कते पुड़कते सामने के मैदान में जा गिरे। क्षण भर बाद ही अपने शिकार की छाती पर एक पैर रख टार्जन ने ऊपर आसमान की ओर देखा और तब उनके गले से एप बन्दरों की विजयनाद ने निकल कर दूर दूर तक जंगलों को प्रतिध्वनित कर दिया।

सहसा उनके गले से निकलती हुई इस आवाज के मानों प्रत्युत्तर में निकली किसी सिंह की भयानक गरज एकाएक उनके कानों में पड़ी। इस भयंकर गरज में क्रोध और भय दोनों ही मिले हुये हैं यह समझने में टार्जन को अधिक विलम्ब न लगा। हिरन को अपने कंधे पर डाल कर वे तेजी के साथ एक पेड़ पर

जा चढ़े और उसी ओर बढ़े जिधर से आती हुई यह आवाज सुनाई दी थी।

ज्यों ज्यों वे आगे बढ़ते थे आवाज तेज होती जाती थी जिसे सुन कर ही वे समझ रहे थे कि वे इस समय अकल किसी बड़े ही क्रोध में भरे सिंह के नजदीक होते जा रहे हैं। अन्त में वे पेड़ों ही पेड़ों पर उस गड़हे के समीप जा पहुँचे जिसमें गिरा हुआ सिंह भयानक रूप से गरज कर अपना क्रोध प्रकट कर रहा था। परन्तु इस समय जिस सिंह पर उनकी नज़र पड़ी उसके मुकाबले का कदावर सिंह आज तक उनके देखने में नहीं आया था। क्रोध में भरा हुआ वह सिंह इस समय टार्जन से दृष्टि मिलाये गड़हे के निचले भाग में खड़ा था। सब से बड़ी विशेषता उसमें यह थी कि उसका रंग एक दम काला था।

आश्चर्य के साथ ही साथ टार्जन के हृदय में उसके प्रति एक का भी प्रादुर्भाव हो उठा। वे इस समय यही सोच रहे थे कि वास्तव में यही जीव जंगल का राजा कहे जाने योग्य है। वह अब तक क्रोध भरी दृष्टि से उनकी ओर देख रहा था। सहन उसके नाक में बारा हिरन की गंध जा पड़ी। टार्जन के कंधे पर पड़े खून से भरे हिरन को उसने लालायित नेत्रों से देखा और तब उसके मुँह से एक तेज तथा गहरी आवाज निकली जिससे इस समय क्रोध तथा घृणा के बदले दया तथा प्रार्थना के भाव भरे हुये थे।

टार्जन सिंह के आन्तरिक भाव को संमग्न गये। उनके होंठों

पर एक हलकी मुस्कुराहट दिखाई दी। इस समय वह सिंह मानों मनुष्य के आवाज की तरह स्पष्ट रूप से कह रहा था, “मुझे बेहद भूख लगी हुई है और भूख के आरे मेरी जान निकली जाती है।” उन्होंने कमर से छुरा निकाल कर अपने कंधे पर पड़े मृत हरिण का एक भाग काट कर अपने पास रख लिया इसके बाद उसे ऊपर हवा में उठाया और बड़े ही मोंके के साथ नीचे गड़हे में फेंक दिया।

सिंह भूखे वाज की तरह उस हिरन पर दूट पड़ा। अपने हिस्से का मांस चवाते हुए टार्जन बड़ी ही प्रसन्नता से इस समय उसकी ओर देख रहे थे।

अपने जीवन में टार्जन कितनी ही बार जानवरों के फँसाने के लिये जंगलियों द्वारा निर्मित ऐसे ऐसे गड़हे देख चुके थे। कितने ही गड़हे तो उन्होंने ऐसे देखे थे जिनकी सतह में भयानक तेज धार के लोहे लगे होते थे और जिन पर गिरते ही जंगली जानवर बेतरह घायल हो जाते थे किन्तु यह गड़हा इस ढंग का बना हुआ न था बल्कि इसमें ऊपरी किनारे की ओर कितने ही तेज धार वाले लोहे लगे थे जिनके कारण सिंह गढ़े में सही सलामत गिर कर भी किसी प्रकार बाहर नहीं निकल सकता था।

वे समझ गये कि जंगली लोग सिंह को जीता पकड़ उसे भयानक कष्ट दे कर मारना और उसकी मृत्यु का तमाशा देखा चाहते हैं। जंगलियों के चिर शत्रु टार्जन को इन जंगलियों को छेड़ने में

बड़ा ही आनन्द मिला करता था अस्तु इस समय भी उन्हें शरारत सूझी। उन्होंने सिंह को स्वतंत्र कर देने का निश्चय किया। गढ़हे के ऊपरी भाग में चारों ओर जो नोकदार लगे हुये थे उनमें से यदि दो भी हटा दिये जाते तो सिंह निकल जा सकता था ! परन्तु यदि उन्हें हटाते ही सिंह निकल आया तब तो कदाचित् उन्हें दौड़ कर पेड़ के ऊपर चढ़ने का भी समय मिलना कठिन हो जायगा। टार्जन अन्य मनुष्यों की भाँति सिंह से डरते न थे बल्कि मौका पड़ने पर उससे युद्ध तक करने के लिये तैयार हो जाते थे परन्तु जंगली जीवों में उन्हें सदैव सतर्क रहने का एक प्रकार से अभ्यस्त सा बना दिया और उन्हें भली भाँति मालूम था कि इतने भारी कदावर सिंह से सम्मुख युद्ध कर के उसे परास्त करना सहज काम नहीं है। संयोग से ही यदि वे उस पर विजय पा जायें तो दूसरी बात

इसमें सन्देह नहीं कि सिंह इस समय भोजन करने में व्यस्त था और इस काम में उसका ध्यान बँटा रहने के कारण उनके लोहेके छड़ हटाने के काम की ओर ध्यान नहीं दे सका था फिर भी यह बात उनसे छिपी न थी कि सिंह भोजन के समय भी विशेष रूप से सतर्क रहा करता है अस्तु उनका यह काम खाली न था। जो कुछ भी हो टार्जन किसी बात का निश्चय लेने बाद जल्दी उससे पीछे नहीं हटते थे।

वे जमीन पर कूद पड़े और गढ़हे के किनारे की ओर बढ़े यह देख उनका आश्चर्य और भी बढ़ गया कि खाते खाते

बार उनकी ओर निगाह उठा कर देख लेने बाद भी सिंह ने क्रोध के कोई भाव प्रकट न किये और पुनः खाने में लग गया ।

टार्जन ने उन लोहे के खूंटों को पकड़ कर एक बार भरपूर जोर लगाया । उन्हें मालूम हो गया कि थोड़ी देर तक लगातार हिलाने पर वे उसे बाहर निकाल ले सकते हैं । सहसा उन्हें एक नई युक्ति सूझी । अपने कमर से एक लम्बा छुरा निकाल कर उन्होंने एक खूँटे की जड़ खोदना शुरू किया और उसे यहाँ तक खोद डाला कि लोहे के नोकदार खूँटे का अन्तिम छोर उन्हें दिखाई देने लगा । अब केवल एक हलका झटका भर उस छड़ को नीचे की ओर गिरा सकता था । यह काम पूरा कर के उन्होंने उसके बगल वाले दूसरे खूँटे की जड़ में भी इसी प्रकार से खोदना शुरू किया और उसे भी ठीक वैसा ही बना डाला । अब उन्होंने अपने घास वाले रस्से का एक सिरा उन खूँटों से बाँध दिया और दूसरा सिरा अपने हाथ में पकड़ कर पेड़ के ऊपर जा चढ़े । यहाँ आ कर उन्होंने धीरे धीरे रस्से को ऊपर की ओर खींचना शुरू किया । खूँटे भी ऊपर की ओर बढ़ने लगे तथा उनके साथ ही साथ सिंह का सन्देह भी बढ़ने लगा, वह जोर से गुर्रा उठा ।

उसने उन खूँटों को धीरे धीरे अपने स्थान से ऊपर की ओर उठते देखा और फौरन ही यह बात उसकी समझ में आ गई कि उसे भोजन देने वाले व्यक्ति ने उसके गढ़दे से बाहर निकलने की राह भी साफ कर दी है । हिरन के शरीर को उसने अपने मुँह में

दबोच लिया और एक ही छलांग में गढ़वे के बाहर निकल आया। टार्जन भी पेड़ों पर कूदते हुए जंगल में घुस गये।

अब टार्जन सीधे उसी ओर रवाना हुये जिधर कि वह हवाई जहाज को जमीन पर गिरते उन्होंने देखा था। पहले कितने ही शिकार कर के उसका ताजा भुना हुआ मांस अपने अपने साथ में ले लिया और हड्डियाँ आस पास में ही फेंक दी।

सामने की पहाड़ियों पर पहुँच कर उन्होंने एक बार मरु इरादे से नीचे की घाटियों की ओर निगाह उठाई कि कहीं भी वह हवाई जहाज जमीन पर गिरा हुआ दिखाई देता है या नहीं परन्तु बहुत देखने पर भी उन्हें वह कहीं दिखाई न दिया। वे पहाड़ियों ही पहाड़ियों पर अन्दाज से उसी ओर बढ़ने लगे जिस ओर कि उसके गिरने का उन्हें खयाल था।

दो दिन तक टार्जन बराबर उन्हीं पहाड़ियों पर आगे की ओर बढ़ते चले गये और शाम के वक्त एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ से उन्हें उस मृत व्यक्ति की ठठरी पड़ी साफ दिखाई दे रही थी जो उन्हें उस वीरान प्रदेश से हो कर आते समय मिली थी। उनके ठीक सामने ही इस समय वह स्थान था जहाँ चढ़ कर उस प्रदेश से बाहर निकले थे। निर्निमेष नेत्रों से वे पुनः ठठरी की ओर देखने लगे परन्तु अभी उन्हें वहाँ खड़े अधिक समय नहीं बीता था कि सहसा उनके कानों में किसी बन्दूक के छूटने की आवाज पड़ी। यह आवाज उनके दक्षिण ओर की घाटी से आई थी। वे चौंक कर उसी ओर देखने लगे।

पदचिह्न

—०—

ज्यों ही वह हवाई जहाज ऊपर हवा में उठा वर्या कर्चर को ऐसा मालूम हुआ मानों उसका गला एक प्रकार से रुंध सा गया हो। उसे स्वयं आश्चर्य हो रहा था कि अफ्रीकन जंगल के भयानक खतरों से बाहर निकल कर भी उसके हृदय को क्लेश क्यों हो रहा है परन्तु असल बात यह थी कि यह दुःख उस व्यक्ति से सम्बन्ध रखता था जिसे संयोग ने ही उसके जीवन पथ पर ला कर खड़ा कर दिया था और जिसके प्रति उसके हृदय में थोड़ा बहुत खिंचाव पैदा हो गया था।

उसके ठीक सामने की ओर वह व्यक्ति बैठा हुआ था जिसके सम्बन्ध में उसे निश्चय हो चुका था कि वह उसे हृदय से प्यार करता है परन्तु उसके सामने रहते हुये भी एक जंगली जीवन बिताने वाले के प्रति उसे इतना मोह क्यों हो रहा था इसे बहुत

प्रयत्न करने पर भी वह किसी प्रकार समझ न सकी ।

हाँ लेफ्टिनेन्ट स्मिथ ओल्डविक 'अवश्य इस समय को प्रसन्नता के फूल नहीं समा रहा था । उसका प्रिय हवाई जहाज उसके अधिकार में था और वह इस समय उस युवती के साथ जिसे वह हृदय से प्यार करता था अपने गन्तव्य स्थान की ओर चला जा रहा था । केवल चिन्ता की बात उसके लिये यह भी कि टार्जन ने उस युवती को जर्मन गुप्तचर बताया था और इस समय उसके हृदय में प्रेम तथा कर्तव्य ये दो विपरीत भाव आपस में द्वन्द्व युद्ध मचा रहे थे । एक ओर तो वह उस युवती का त्याग नहीं कर सकता था जिसके बिना अब उसका जीवन एक प्रकाश से शून्य सा दिखाई देता दूसरी ओर एक अंग्रेज अफसर होने की हैसियत से उसका कर्तव्य शत्रु के गुप्तचर को आग्रह देने की आज्ञा नहीं दे रहा था ।

यह चिन्ता मामूली न थी । इसका उसके भविष्य से बहुत ही गहरा सम्बन्ध था परन्तु इसे वह अपने दिल को समझा कर दूर कर देता था कि संभव है टार्जन को इस बात का सूझ ही भ्रम हो गया हो ।

अस्तु इस समय दोनों ही अपने विचारों में लवलीन पृथ्वी की ओर उड़े जा रहे थे । अन्त में वे ठीक उसी पहाड़ी के ऊपर जा पहुँचे जो एक प्रकार से उस ऊर्ध्वरा भूमि तथा इस ओर के हरे भरे जंगलों की एक प्रकार से सीमा कही जा सकती है । स्का गिद्ध ने इन लोगों को अपने ऊपर से गुजरते देखा । उसके

देखा कि उससे भी कहीं अधिक भारी एक चिड़िया उसके एकान्त साम्राज्य से गुजरती हुई आगे की ओर बढ़ी जा रही है। न मालूम युद्ध करने की आकांक्षा अथवा केवल उत्सुकता के ही वशीभूत हो कर वह सीधे अपने ऊपर की ओर से गुजरते हवाई जहाज की ओर उठा। नतीजा यह हुआ कि हवाई जहाज के प्रोपेलर के एक पंखे के साथ वह जोर के साथ टकरा गया और इसी समय कई घटनाएं एक साथ घटीं।

गिद्ध का निर्जीव देह चिथड़े चिथड़े हो कर नीचे की ओर गिरा। प्रोपेलर के पंखे का एक टुकड़ा टूट कर लेफ्टिनेन्ट ओल्डविक के माथे से जा टकराया जिसके फलस्वरूप उनके बेहोश हो कर आगे गिरने के कारण हवाई जहाज एक दम टेढ़ा हो गया और तब वह नीचे की ओर मुंह कर के तेजी के साथ जमीन की ओर गिरा।

ओल्डविक केवल एक क्षण के लिये ही बेहोश हुआ परन्तु इसी एक क्षण की बेहोशी ने भयंकर उपद्रव खड़ा कर दिया। जैसे ही उसे होश आया तथा अपने खतरे का ज्ञान हुआ उसे यह भी मालूम हो गया कि हवाई जहाज की मशीन भी एकाएक चलते चलते रुक गई है और वह इस समय तेजी के साथ नीचे की ओर गिरा जा रहा है। जमीन उसे इस समय अपने बहुत समीप दिखाई दे रही थी और हवाई जहाज को सीधा कर के जमीन पर उतारने तक का समय दिखाई नहीं देता था। संतोष की बात केवल इतनी ही थी उसके ठीक नीचे की ओर

घाटी का जो हिस्सा पड़ता था वह एक दम बालू से भरा हुआ था। इस थोड़े से बचे हुये समय में ओल्डविक केवल इतना ही निश्चय कर सका कि इसी बालू भरी घाटी ही में हवाई जहाज को उतारना युक्तिसंगत होगा और यही उसने किया भी। जहाज जमीन पर सही सलामत उतर गया सही किन्तु उसके कई कल पुरजे बिगड़ गये और उसे तथा बर्था को गहरा धक्का पहुँचा।

खैरियत इतनी ही हुई कि दोनों में से किसी को गहरा घाव नहीं लगा परन्तु इस वीरान घाटी में एक गिर पड़ने के कारण उसकी अवस्था एक प्रकार से बड़ी शोचनीय हो उठी। अब तो यदि हवाई जहाज के कल किसी प्रकार दुरुस्त किये जा सके तब तो ठीक ही है तब तो पैदल चल कर अपने अभीष्ट स्थान तक सही सलामत पहुँच जाना उनके सामर्थ्य के बाहर की बात थी। कारण उनके एक ओर तो कोसों तक की ऊँचा भूमि जिसे पार करना मामूली आदमी के लिये सम्भव न था तथा दूसरी ओर भयानक जीवों से भरा घोर जंगल !

जहाज के जमीन पर रुकते ही यह जानने के लिये कर उसने उस युवती की ओर देखा कि इस दुर्घटना के असर उसके ऊपर कैसा पड़ा है। वह सही सलामत स्थान पर बैठी हुई थी परन्तु उसका चेहरा एक दम पीला हो रहा था। कुछ देर तक दोनों चुपचाप एक दूसरे

और देखते रहे इसके बाद वर्था कर्चर ने पूछा, "क्या अब यहीं हम लोगों का अन्त है !"

ओल्डविक अपना सिर हिलाता हुआ बोला, "कम से कम स्थिति तो ऐसा ही प्रगट कर रही है ।"

कर्चर ने पूछा, "क्या अब इस हवाई जहाज की मरम्मत नहीं हो सकती ?"

ओल्डविक ने उत्तर दिया, "नहीं ! इसे एक दम दुरुस्त करना इस स्थान पर किसी प्रकार भी सम्भव नहीं है । यदि किसी तरह यह काम चलाने योग्य बना भी लिया जाय तो भी हमें अभी बहुत रास्ता तय करना है !"

कर्चर बोली, "ठीक है यह तो मैं भी समझ गई हूँ कि हम लोग अब चाहे कितना भी प्रयत्न करें अधिक दूर नहीं जा सकते फिर ऐसी हालत में जब कि हम लोगों के पास हथियार तक नहीं है ।"

ओल्डविक बोला, "नहीं ऐसा तो नहीं कहा जा सकता । मेरे पास एक फालतू पिस्तौल भी तैयार है ।"

इतना कह कर ओल्डविक ने अपने हवाई जहाज के एक ढक्कने को खोल कर एक पिस्तौल बाहर निकाली परन्तु उसे देख वर्था कर्चर एक दम पागलों की भांति ठहाका मार कर हँस पड़ी और बोली, "भला यह इस स्थान पर हम लोगों को क्या काम दे सकती है । यदि इसे किसी जंगली जानवर पर छोड़ा भी जाय तो सिवाय इसके कि उसका क्रोध और

भी अधिक हो जाय हम लोगों को क्या लाभ हो सकता है ?”

उदास मुँह ओल्डविक ने उत्तर दिया, “फिर भी स्वतः तो तुम्हें मानना ही पड़ेगा कि यह हथियार है और कम से कम मनुष्य से रक्षा करने में सहायता दे सकता है।

लेफ्टिनेन्ट ओल्डविक दो दिन तक हवाई जहाज के मरम्मत में लगे रहे फिर भी इससे कोई विशेष लाभ न हुआ। अन्त में उन्होंने उसके दुरुस्त होने की आशा छोड़ दी।

दोनों ही इस समय एक दम से निराश हो चुके थे। एक पत्थर की चट्टान पर बैठे हुये इस समय वे इसी बात पर विचार कर रहे थे कि आगे चल कर अब क्या करना चाहिये कि सहायक बातें करते करते बर्था कर्चर की निगाह अपने सामने की ओर जा पड़ी और वह चिल्ला कर बोली “वह देखो !”

लेफ्टिनेन्ट ओल्डविक ने फौरन ही उस ओर निगाह उठाया जिधर कर्चर ने डँगली से इशारा किया था। एक बड़ा भारी कढ़ावर सिंह एक ऊँची चट्टान के बगल में खड़ा गौर से दोनों की ओर देख रहा था।

ओल्डविक ने फौरन ही अपनी पिस्तौल निकाल कर हाथ में ले ली परन्तु उसकी ओर जरा भी ध्यान न दे कर कर्चर बोले “इससे तो यही मालूम होता है कि आस पास में कहीं न कहीं पानी जरूर होगा !”

सिंह अच्छी तरह समझ गया था कि किस ढंग के जीव हैं इस समय उसे सामना करना पड़ेगा अस्तु वह अपनी मल्लाही

वाल से धीरे धीरे इन लोगों की ओर बढ़ने लगा !

ओल्डविक ने फुर्ती के साथ कर्चर का हाथ पकड़ लिया और हवाई जहाज पर जा चढ़े । इसके बाद ओल्डविक ने पिस्तौल की नली का मुंह सिंह की ओर घुमा दिया । उसे ऐसा करते देख बर्था चिल्ला उठी, "हैं हैं ऐसा मत करना ! यदि गोली उसे लग गई तो उसका क्रोध बहुत बढ़ जायगा और हम लोगों की जान किसी प्रकार भी न बचेगी ।

ओल्डविक ने उत्तर दिया, "कभी कभी ऐसा भी देखा गया है कि गोली छूटने की आवाज से डर कर ये जानवर भाग जाया करते हैं । सरकस में सिंह अथवा चीतों को पालतू बनाने वाले अक्सर झूठी पिस्तौलें चला कर ही उन्हें डराते हैं ।

सिंह इस समय तक उनके बहुत ही समीप पहुँच गया था । अब वह इन लोगों पर हमला करने की तैयारी कर ही रहा था कि ओल्डविक ने पिस्तौल का थोड़ा दबा दिया । गोली सिंह के सामने थोड़े ही फासले पर जा कर गिरी ।

पिस्तौल की आवाज ने सिंह को और भी क्रोधित कर दिया और वह बड़े ही भयानकरूप से गरज उठा । फौरन ही ओल्डविक जहाज पर से कूद कर दूसरी ओर चला गया और बर्था कर्चर को भी ऐसा ही करने के लिये उसने आवाज दी । परन्तु बर्था कर्चर ने ऐसा करना युक्तिसंगत न समझा और फुर्ती से जहाज के ऊपरी भाग पर चढ़ गई ।

सिंह अब अपने स्थान से उछला ही चाहता था । बर्था कर्चर

ने चिन्ता कर ओल्डविक को भी अपने पास चढ़ आने के लिये कहा और वह शीघ्रता के साथ ऐसा करने का प्रयत्न भी करने लगा।

ठीक इसी दृश्य पर टार्जन की दृष्टि उस समय पड़ी जब वे बन्दूक छूटने की आवाज सुन कर एक भारी पत्थर की चट्टान की बगल से घूमे परन्तु यद्यपि इन दोनों में से किसी की भी निगाह उन पर न पड़ी सिंह ने उन्हें फौरन ही देख लिया। एक हलकी गुर्राहट की आवाज उसके गले से निकली और वह तेजी के साथ उन्हीं की ओर झपटा। अब दोनों की निगाह एक साथ टार्जन पर जा पड़ी और बर्था के मुँह से निकला, “या ईश्वर धन्यवाद !”

सिंह इस समय टार्जन के बहुत समीप पहुँच गया था। उस पर दृष्टि पड़ते ही वे समझ गये कि वह वही सिंह है जिसे उन्होंने जंगलियों द्वारा निर्मित गड़हे से बाहर निकाला था। इसी बात पर गौर करते हुए कि देखें यह जङ्गली जीव भी अपने प्रति किये गये उपकार को : याद रखता है या नहीं वे अपने भाले के मजबूती के साथ हाथ में ले कर उसकी ओर बढ़े।

ओल्डविक तथा बर्था ने आश्चर्य के साथ देखा कि सिंह तथा टार्जन एक दूसरे से लगभग एक गज के फासले पर आ कर एक साथ ही रुक गये। सिंह की खड़ी हुई पूंछ इस समय बराबर हवा में हिल रही थी और एक हलकी घरघराहट उसके मुँह से निकल रही थी। सहसा वह आगे बढ़ा और उनके पैर को सूँघ कर उसे चाटने लगा। टार्जन ने भी झट से उसके कपाल पर हाथ फेरना शुरू किया।

इन दोनों में से कोई भी इस अनहोनी घटना का कारण न समझ सके । मनुष्य और जङ्गल के खुले शेर में इस प्रकार का प्रेम होना यह बात उनके विचार तक में भी कभी नहीं आई थी ।

अब टार्जन धीरे धीरे हवाई जहाज की ओर बढ़ रहे थे । सिंह भी उनके साथ ही साथ उस ओर चला आ रहा था । उन लोगों के पास पहुँचते ही टार्जन बोले, “मुझे तो तुम लोगों के मिलने की जरा भी आशा न थी ।”

ओल्डविक ने पूछा, “परन्तु आपको कैसे मालूम कि हम लोगों को इस समय सहायता की आवश्यकता है ?”

टार्जन बोले, “मैंने एक पेड़ पर से हवाई जहाज को जमीन पर गिरते देख लिया था और अन्दाज से पता लगाता लगाता मैं यहाँ तक आ भी पहुँचा । इस सिंह को मैंने जङ्गलियों के बनाये गढ़ों में से निकाला है । मैं तो यहाँ से वापस लौट रहा था कि सहसा तुम्हारे पिस्तौल की आवाज सुन कर इधर चला आया । क्या तुम्हारे जहाज की मरम्मत नहीं हो सकी !”

ओल्डविक बोला, “नहीं यहाँ पर इसकी मरम्मत होना किसी प्रकार भी सम्भव नहीं है ।”

टार्जन ने पूछा, “आखिर तुम लोगों का इरादा क्या है ?”

ओल्डविक ने उत्तर दिया, “हम लोगों का इरादा पैदल ही आगे बढ़ने का था परन्तु अब ब्रिटिश युद्धस्थल तक पहुँचना एक दम असम्भव मालूम होता है ।”

टार्जन बोले, “सिंह को यहाँ देख कर तो ऐसा मालूम होता

है कि यहाँ आस पास में कहीं न कहीं पानी अवश्य मिलेगा। पहले उसीका पता लगाना चाहिये। इस सिंह को आज से बोझ पहने मैंने छुड़ाया था। न मालूम यह किस राह से यहाँ तक पहुँचा। अच्छा यह तुम लोगों के पास आया किस ओर से था।

बर्था बोली, “दक्षिण की ओर से ! हम लोगों का भी क्या खयाल था कि उस ओर पानी अवश्य होगा !”

टार्जन बोले, “खैर जो कुछ भी हो इस बात का पता लगाना चाहिये और ऐसा तभी हो सकता है जब तुम लोग अपने अपने स्थान से उतर कर मेरे पास चले आओ। मुझे अभी यह समझना है कि सिंह के मन में क्या है ?”

इतना कह कर टार्जन ने ओल्डविक की ओर देखा। सिंह की ओर भयभीत दृष्टि डालता हुआ ओल्डविक टार्जन के पास में आ कर खड़ा हो गया। बर्था कर्चर ने देखा कि उसका चेहरा एक दम पीला हो गया है पर इसके लिये वह उसे दोष नहीं दे सकती थी।

ओल्डविक को टार्जन की ओर आते देख सिंह ने एक बार गुर्रा कर टार्जन के चेहरे की ओर देखा किन्तु उसके अवात बाल पकड़े हुए ही वे एप बन्दरों की भाषा में उससे कुछ बोले जिसे सुन वह एक दम शान्त हो गया। बर्था कर्चर ने उन्हें पूछा, “अभी आप उससे क्या कह रहे थे ?”

टार्जन ने उत्तर दिया, “मैं एप बन्दरों की भाषा में उससे कह रहा था कि मैं जंगल का राजा टार्जन हूँ। बड़ा भारी शिकारी

हूँ । इस जंगल में मेरा मुकाबला करने वाला कोई नहीं है और तुम लोग मेरे दोस्त हो । यह तो मैं आज तक नहीं समझ सका हूँ कि जंगल के और सब जीव एप वन्दरों की भाषा समझ सकते हैं या नहीं किन्तु इतना मैं अवश्य जानता हूँ कि मानू वन्दर की भाषा भी एप वन्दरों से मिलती जुलती होती है और टैन्टर हाथी भी इस भाषा को मजे में समझ लेता है । जंगल के सभी जीव अपनी बड़ाई दिखा कर ही एक दूसरे के हृदय में भय पैदा करने की कोशिश किया करते हैं । उनकी गुर्राहट का यही मतलब है । जो कुछ भी हो कम से कम मेरे चेहरे के उतार चढ़ाव को देख कर यह मेरी बातों के भाव को अवश्य समझ गया है । अच्छा अब तुम भी मेरी बगल में आ जाओ ।”

भयभीत वर्था कर्चर भी धीरे धीरे अपने स्थान से उतर कर टार्जन के बगल में आ खड़ी हुई । सिंह एक बार उसकी ओर देख कर गुर्राया सही पर शीघ्र ही चुप हो गया ।

टार्जन बोले, “जब तक मैं तुम लोगों के पास हूँ तुम्हें इस सिंह का कुछ भी भय नहीं है । सब से अच्छी बात यह है कि तुम लोग उसकी ओर बिलकुल ध्यान ही न दो न उस पर यही प्रकट करो कि तुम्हें उससे किसी प्रकार का भय मालूम होता है । बहुत सम्भव है कि वह थोड़ी देर में यहाँ से स्वयं चला जाय और फिर कभी भी न दिखाई दे !”

टार्जन की सलाह से ओल्डविक ने हवाई जहाज पर रक्खा खाना तथा पानी उतार लिया और तीनों आदमी सीधे दक्खिन

की ओर रवाना हुए। परन्तु सिंह ने अपने स्थान पर खड़ा हुए ही ध्यान से तब तक उनकी ओर देखता रहा जब तक कि लोग मोड़ घूम कर एक भारी चट्टान की आड़ में न हो गये।

टार्जन इस समय सिंह के पैरों का निशान देखते हुए आगे की ओर बढ़े जा रहे थे क्योंकि उन्हें विश्वास था कि वह अवत किसी जलाशय की ओर से ही उस स्थान पर आया होगा। पहले तो कुछ देर तक केवल उसी सिंह के पैरों के निशानव दिखाई देते रहे किन्तु दिन ढल जाने पर उन्हें धीरे धीरे सिंहों के पदचिह्न भी बालू पर स्पष्ट दिखाई पड़े। सहसा वे आश्चर्य के साथ एक स्थान पर खड़े हो गये और जमीन पर एक निशान की ओर उँगली का इशारा करते हुए बोले, 'यह देखो!

पहले तो इन दोनों को जमीन पर आपस में मिले जुले वृत्त से निशान एक साथ दिखाई दिये किन्तु थोड़ी ही देर बाद उनके निगाह जिस निशान पर पड़ी वह किसी आदमी के पैरों का था। बर्था चिल्ला उठी, "यह तो आदमी के पैरों का निशान होता है परन्तु इसमें उँगलियों के निशान नहीं दिखाई देते।"

टार्जन बोले, "जिस आदमी के पैरों का यह निशान है वह अवश्य किसी चीज का बना चप्पल अपने पैरों में पहने हुए होगा पर ये निशान हवशियों के पैर के नहीं हो सकते। चप्पल पहने होने पर भी मैं पैरों का चिह्न स्पष्ट रूप से देख रहा हूँ। हवशियों के पैरों के निशान बीच की ओर बहुत दबे हुए होते हैं परन्तु इनमें वह बात नहीं देखी जाती।"

वर्था बोली, “तो सम्भव है ये निशान किसी गोरी जाति के मनुष्य के हों ।”

टार्जन घुटनों के बल जमीन पर बैठ गये और उस निशान को कुछ देर तक सूँघने के बाद बोले, “नहीं ! न तो ये हवशियों के पैरों के ही निशान हैं न किसी गोरी ही जाति के ! ये किसी तीसरी ही जाति के मालूम होते हैं । कम से कम तीन आदमी इस ओर आये हैं । वे तीनों मनुष्य ही थे पर किस जाति के वे इसे मैं इस समय नहीं कह सकता ।”

अब ये लोग पुनः आगे की ओर बढ़े । अब पहाड़ी ऊपर की ओर ऊँची होती जा रही थी । कितनी ही गुफायें भी इन लोगों को सामने की ओर दिखाई दे रही थीं । सहसा उनकी दृष्टि एक ऐसी गुफा पर पड़ी जो औरों की अपेक्षा अधिक लम्बी चौड़ी थी और जिसकी सतह वालू से भरी हुई थी । टार्जन उन दोनों की ओर देख कर बोले, “आज रात को हम लोग इसी में अपना डेरा जमावेंगे ।

वे लोग वहीं पर रुक गये और जब खाना खा कर निश्चिन्त हुए तो वर्था की ओर देख कर टार्जन बोले, “अच्छा अब तुम भीतर जा कर आराम करो ! हम दोनों बाहर ही पड़ रहेंगे ।”

रात्रि का हमला



जैसे ही बर्था कर्चर उन लोगों से बिदाई ले कर गुफा की ओर मुड़ने को हुई उसे वहाँ से थोड़े ही फासले पर कोई शक्ति अन्धकार में घूमती हुई नजर आई। उसी समय उसे पैरों की हलचल आदृष्ट भी उसी ओर से आती सुनाई दी। धीमी आवाज में बोलती, “हैं यह क्या है ! अन्धेरे में कोई चीज घूमती दिखाई दे रही है।”

टार्जन ने उत्तर दिया, “हाँ ! वह सिंह है। वह कुछ दे पहले ही से वहाँ चक्कर लगा रहा है क्या तुमने अब से पहले उसे नहीं देखा था !”

संतोष की एक सांस खींचती हुई बर्था बोली, “ओह यह तो कदाचित हम लोगों का परिचित वही सिंह मालूम होता है !”

टार्जन बोले, “नहीं, यह वह सिंह नहीं है, कोई दूसरा

सिंह है और शिकार की तलाश में इधर उधर घूम रहा है।

भयभीत शब्दों में बर्था ने पूछा, “तब कहीं यह हमी लोगों के पीछे तो नहीं लगा हुआ है?”

टार्जन के मुंह से “हाँ बात तो ऐसी ही है।” सुनते ही लेफ्टिनेन्ट ओल्डविक ने अपनी पिस्तौल निकाल कर हाथ में ले ली।

टार्जन उसे ऐसा करते देख बोले, “तुम इस ओर से अपना ख्याल बिल्कुल ही हटा लो। वहाँ इस समय कम से कम तीन सिंह चक्कर काट रहे हैं और सभी की निगाह हम लोगों पर है। यदि इस समय हम लोगों के नजदीक आग बलती होती अथवा चांदनी रात होती तो तुम उन लोगों की आंखें साफ साफ देख सकते थे। वे सभी एक साथ हम लोगों पर हमला कर सकते हैं परन्तु सम्भवतः वे ऐसा नहीं करेंगे। यदि तुम चाहते हो कि वे बहुत शीघ्र ही हम लोगों पर हमला कर दें तो अपने पिस्तौल की गोली उनमें से एक पर छोड़ दो और तब तमाशा देखो!”

बर्था कर्चर ने पूछा, “यदि उन लोगों ने हमला कर दिया तब क्या होगा हमारी जान तो किसी प्रकार भी न बच सकेगी।

टार्जन बोले, “क्यों इतना डरने की क्या बात है हम लोग उनका मुकाबला करेंगे।”

बर्था बोली, “परन्तु इससे लाभ क्या होगा?”

टार्जन अपना सिर हिलाते हुये बोले, “सभी को एक दिन मरना है। तुम लोगों को सम्भव है इस प्रकार की मृत्यु बड़ी भयंकर मालूम होती हो परन्तु कम से अपने सम्बन्ध में तो मैं

यही निश्चय कर चुका हूँ कि किसी न किसी दिन इसी ढंग के मेरी मृत्यु होगी। जंगलों में बूढ़े हो कर बहुत कम जीव मरते हैं। फिर मृत्यु चाहे आज आवे चाहे दस वर्ष बाद, बात तो एक ही है।

एक बार कांप कर बर्था कर्चर बोली, “हाँ मृत्यु हो जाने बाद तो सब बराबर ही है।”

इतना कह कर वह गुफा के भीतर चली गई और चुपचाप एक ओर पड़ रही। टार्जन तथा ओल्डविक चुपचाप अपने स्थान ही पर बैठे रहे।

बहुत देर बीत गई परन्तु कोई नवीन घटना नहीं घटी। ओल्डविक की तबीयत घबड़ा उठी। वह बोला, “क्या ये सिंहा मामूली से अधिक शान्त नहीं हैं। एक बार भी अब तक इनकी गरज सुनाई नहीं दी।”

टार्जन ने उत्तर दिया, “नहीं ! शिकार के पीछे लगा हुआ सिंह कभी नहीं गरजता। उनकी गरज शिकार को अपनी ओर आकर्षित करने के लिये नहीं होती।

ओल्डविक बोला, “मेरे खयाल में यदि उन्हें हमला करना है तो वे जहाँ तक शीघ्र ऐसा कर दें अच्छा है। चुपचाप बैठे बैठे तो तबीयत घबड़ा उठी है। हाँ यदि तीनों ने एक साथ हमला किया तो अवश्य भारी विपत्ति से सामना करना पड़ेगा।

टार्जन ने कहा, “तीन ! अब तो इस सामने के मैदान में सात सिंह घूम रहे हैं।

ओल्डविक बोला, “या ईश्वर !”

इसी समय गुफा के भीतर से बर्था कर्चर बोली, "यदि आग बाल दी जाय तो कैसा ?"

टार्जन ने कहा, "मुझे तो आग बालने से कुछ भी लाभ होता नहीं दिखाई देता। मेरी समझ में तो यह बात आ रही है कि वे सिंह जंगल के और सिंहों से अवश्य कुछ सिन्न हैं। इनका स्वभाव भी विचित्र मालूम होता है। मेरा तो खयाल है वे काली जाति के सिंह सम्भवतः अन्य सिंहों की अपेक्षा बहुत जल्द पालतू हो जाते हैं। अपने परिचित सिंह का स्वभाव देख कर ही मेरे हृदय में यह भावना उठी है। उन सामने के सिंहों के पास इस समय एक आदमी भी खड़ा हुआ है।"

ओल्डविक बोला, "ऐसा कभी नहीं हो सकता। वे सब उसे टुकड़े टुकड़े कर डालेंगे।"

बर्था कर्चर ने पूछा, "आपको कैसे मालूम हुआ कि उनके पास कोई आदमी खड़ा है।"

टार्जन बोले, "यह समझना तुम्हारे लिये बड़ा ही कठिन है। बहुत सी ऐसी बातें हैं जिन्हें जंगल में रहने वाले जीव बहुत जल्द समझ जाते हैं किन्तु मामूली आदमी को उसका गुमान तक नहीं होता। उनकी घ्राणशक्ति बहुत ही प्रबल होती है।"

बर्था ने पूछा, "क्या आपके कहने का यह मतलब है कि आप आदमी को उसकी गंध से पहचान सकते हैं ?"

सन्मत्तिसूचक सिर हिलाते हुये टार्जन बोले, "केवल इतना ही नहीं इसी प्रकार मुझे गिनती का ज्ञान भी हो जाता है। हो

सिंहों की सूरत आपस में एक दूसरे से नहीं मिलती न उनके गंध ही एक सी होती है ।”

ओल्डविक बोले, “आपकी बात मेरी समझ में नहीं आती ।”

टार्जन ने उत्तर दिया, “समझ में आ भी नहीं सकती । मेरे खयाल में ये सिंह हम लोगों पर हमला करने के इरादे यहाँ खड़े नहीं दिखाई देते । यदि इनका यही इरादा होता तो हम इस काम से रोकने वाला ही कौन था ।”

बर्था ने पूछा, “तब आपका क्या खयाल है ?”

टार्जन ने कहा, “मेरा तो खयाल है ये लोग यहाँ हम लोगों को किसी विशेष स्थान पर जाने से रोकने के लिये खड़े हुए हैं । जहाँ कि ये हमें जाने देना नहीं चाहते । मतलब यह कि हम लोगों पर पहरा दिया जा रहा है । यदि हम लोग उस ओर जायँ तो ये हमसे कभी भी छेड़ छाड़ न करेंगे ।”

बर्था बोली, “इस बात का पता ही कैसे चल सकता है कि ये लोग हमें कहाँ जाने दिया नहीं चाहते ।”

टार्जन ने कहा, “मेरे खयाल में तो ये हम लोगों के उसी लक्ष्य की ओर बढ़ने में रुकावट डाला चाहते हैं जहाँ हम लोग उनका इरादा कर रहे हैं ।”

बर्था ने पूछा, “क्या जलाशय के समीप ?”

कुछ देर तक टार्जन तथा ओल्डविक चुपचाप अपने लक्ष्य पर बैठे रहे । सहसा टार्जन अपने कमर से छुरा निकाल खड़े हो गये । ओल्डविक पत्थर का ढासना लगाये इस लक्ष्य

ऊँच रहा था और थकावट से चूर बर्था गहरी नींद में हो गई थी। एकाएक पैरों के चाप तथा गुर्राहटें सुने दोनों जाग उठे।

जंगल के राजा टार्जन इस समय गुफा के दर्वाजे के सामने खड़े हुए थे। उन्हें इस बात की जरा भी आशा न थी कि वे सिंह एकाएक इस प्रकार एक साथ ही हमला कर देंगे। इन सिंहों के साथ इस समय कई आदमी भी मालूम हो रहे थे। यदि टार्जन चाहते तो उस स्थान से निकल भाग सकते थे क्योंकि बगल की ऊँची पहाड़ी पर फुर्ती के साथ चढ़ जाना उनके बायें हाथ का खेल था। अपने साथ के आदमी तथा युवती की रक्षा करने के लिये वे बाध्य भी न थे न इतने शत्रुओं से वे उनकी किसी प्रकार रक्षा कर ही सकते थे फिर भी आत्मसम्मान की रक्षा के खयाल से वे बराबर अपने स्थान पर डटे ही रह गये। सहसा सिंहों का वह झुण्ड एकाएक उनके ऊपर महरा पड़ा और उनके धक्के से वे जमीन पर गिर पड़े साथ ही उनका सिर पत्थर की किसी चट्टान से जा टकराया और वे बेहोश हो गये।

जिस समय उनकी बेहोशी दूर हुई घूप अच्छी तरह निकल आई थी। फिर भी वे आँखें बन्द किये हुये अपने स्थान ही पर पड़े रहे। क्रमशः उन्हें बीती हुई सभी बातें याद आने लगीं और इसी समय उनकी नाक में न्यूमा सिंह की भी गंध आई। किसी दूसरे सिंह की गुर्राहट भी उनके बहुत समीप सुनाई दी।

टार्जन ने फौरन ही अपनी आँखें खोल दीं। वे उसी स्थान पर पड़े थे जहाँ वे जमीन पर गिर गये थे और वही जंगलियों के

गड़हे में गिरने वाला सिंह उन के ऊपर खड़ा सामने की किसी वस्तु को देख कर गुंरा रहा था। वह वस्तु क्या थी उसे टार्जन देख न सके। उन्हें अपनी आँखें खोलते देख उस सिंह ने एक बार उनके चेहरे की ओर देखा और उन्हें उठने का प्रयास करते देख एक बगल हट गया। टार्जन उठ बैठे और तब उसे मालूम हुआ कि उनका दोस्त वह सिंह सामने की ओर धर के उधर टहलते हुये दो अन्य सिंहों से उनकी रक्षा कर रहा है।

टार्जन ने घूम कर गुफा की ओर देखा। ओल्डविक अगले बर्षा दोनों में से किसी की भी सुरत उन्हें दिखाई नहीं दी। वे समझ गये कि अब तक की उनकी सभी मेहनत बेकार गई।

टार्जन उठ कर खड़े हो गये और अपने साथी सिंह के गर्त के बाल पकड़े यह कहते हुये आगे बढ़े, “आओ दोस्त! मेरा खयाल है हम दोनों इनका आसानी से मुकाबला कर सकते हैं।”

इन दोनों को अपनी ओर बढ़ते देख वे दोनों सिंह दो कदम हो गये और ये लोग उनके बीच से हो कर आगे बढ़े परन्तु दोनों ही की निगाह अपने अपने बगल वाले सिंहों के ऊपर थी मालूम होता था उन्होंने पहले ही से कुछ समझौता कर लिया था क्योंकि वे दोनों ही दोनों ओर से इनके ऊपर दृढ़ता से

टार्जन आज से पहले भी कई बार चीतों तथा सिंहों से झगड़ कर चुके थे अस्तु उनके स्वभाव से भलीभाँति परिचित थे जैसे ही उनके बगल वाला सिंह उनके ऊपर झपटा, वे उधर से एक ओर हट गये और उसके बगल की ओर हो कर

हाथ का छुरा उन्होंने उसके कंधे के पीछे की ओर घुसेड़ दिया। क्रोध और तकलीफ से दहाड़ मार कर सिंह फौरन ही उनकी ओर घूमा परन्तु वे भी फुर्ती के साथ उसके पीछे घूम गये। उनके बायें हाथ ने सिंह के अयाल को मजबूती के साथ पकड़ लिया और उनका छुरा दुबारा उसके वगल में जा घुसा।

सिंह तकलीफ और क्रोध से पागल हो उठा। उसी क्षण टार्जन क्रूद कर उसकी पीठ पर जा बैठे और अपने पैरों से उन्होंने उसे कस कर बाँध लिया। इस प्रकार सिंहों की पीठ पर बैठ, एक हाथ से उनके अयाल पकड़ तथा दूसरे हाथ से उसके कलेजे में छुरा मार कर आज तक वे न मालूम कितने सिंहों को यमलोक भेज चुके थे परन्तु इस बार सिंह की गजब की फुर्ती ने उन्हें अपने इस काम में कृतकार्य्य होने न दिया।

ऐसे जोर से उसने उन्हें झटका दिया कि वे जमीन पर आ रहे। फौरन ही उन्होंने जमीन से उठना चाहा किन्तु इस बार सिंह ने उनसे भी अधिक फुर्ती दिखाई और उस जोर का थप्पड़ उनके सिर पर लगाया कि वे चक्कर खा कर जमीन पर गिर गये।

जैसे ही वे जमीन पर गिरे उन्होंने किसी काली शक्त को अपने ऊपर से क्रूद कर अपने विपत्ती सिंह की ओर झपटते देखा। वे फौरन ही उठ खड़े हुये। सिंह के पंजों की भयंकर चोट से अभी तक उन्हें चकाचौंध लग रही थी। उनके पीछे की ओर खून से लथपथ एक सिंह चिथड़े चिथड़े हो कर पड़ा था और दूसरे से उनका साथी सिंह युद्ध कर रहा था।

उनका साथी सिंह अपने विपत्ती सिंह से शरीर तथा लकड़ों में कहीं अधिक जवर्दस्त था अस्तु थोड़ी ही देर में उसके कंधे अपने विपत्ती की गर्दन में जा घुसे और तब जिस प्रकार कित्ती चूहे को हिलाती है उसने उसे भी झकझोर कर जमीन पर पड़ा दिया और अपने पंजों से टुकड़े टुकड़े कर डाला ।

अब टार्जन ने अपनी निगाह उन मरे हुये सिंहों की ओर डाली । वे दोनों भी कम कहावर नहीं थे परन्तु उनकी जाति में अपने साथी सिंह की जाति से कुछ भिन्न मालूम हुई क्योंकि उन दोनों के अयाल कुछ अधिक काले होने पर भी उनके बदन का रंग उनके साथी सिंह के रंग से हलका था । उन्हें ऐसा माना हुआ मानों उन दोनों सिंहों की जाति जंगल के मामूली सिंह तथा उनके साथी सिंह के जोड़ा खाने से ही उत्पन्न हुई हो ।

अपने सामने का रास्ता साफ पा कर अब टार्जन के विचारों ओल्डविक तथा बर्था कर्चर का पता लगाने की इच्छा उत्पन्न हुई । उनका साथ छूटने पर उन दोनों की क्या गति हुई बात को वे पता लगाया चाहते थे । सहसा उन्हें पता चला कि उन्हें कंधे की जोर की भूख लगी हुई है । जैसे ही उन्होंने वहाँ की बलुही चट्टानों पर पड़े आदमियों तथा सिंहों के पदचिह्नों पर गौर करना शुरू किया उनके गले से अकस्मात् भूखे जानवरों के मुंह से निकलने वाली गुर्राहट की सी आवाज निकली ।

उनके साथी सिंह ने एक बार उनके चेहरे की ओर देखा और ठीक उसी प्रकार की आवाज अपने गले से भी निकाला ।

:तेजी के साथ एक ओर रवाना हुआ। बीच बीच में वह घूम घूम कर इस बात को भी देखता जाता था कि टार्जन उसके पीछे पीछे आते हैं या नहीं। वे फौरन ही उसका मतलब ताड़ गये और उसके पीछे पीछे जाने लगे। वे समझ गये थे कि वह उन्हें भोजन के समीप लिये जा रहा है।

उसके पीछे पीछे जाते हुये टार्जन ने जमीन में चारों ओर पड़े पैरों के निशानों को देख कर ओल्डविक तथा बर्था कर्चर की गंध का पता लगाने का प्रयत्न भी किया। पहले तो उन्हें उस ओर से गुजरे हुये सिहों तथा उनके साथी उन विचित्र मनुष्यों की गंध मालूम पड़ी पर उसके थोड़ी देर बाद ही उन दोनों युवक युवतियों की गंध भी उनकी नाक में आई। अब जमीन पर पड़े निशानों की ओर निगाह डालते ही उन्हें मालूम हो गया कि सिंह तथा उनके साथी विचित्र मनुष्य उन दोनों को चारों ओर से घेरे हुये उसी रास्ते से आगे की ओर गये हैं।

उनके सामने की घाटी दो पहाड़ों के बीच से गुजरती हुई आगे की ओर चली गई थी और ज्यों ज्यों वे दक्खिन की ओर बढ़ते जाते थे वह और भी अधिक सकरी तथा ढालुई होती जाती थी। इधर उधर जहाँ तहाँ जलप्रपात तथा पानी की धार के प्राचीन निशान भी स्पष्ट दिखाई पड़ रहे थे।

इसी प्रकार वे लगभग एक मील के आगे बढ़ेंगे कि वह घाटी एकाएक उन्हें बायें ओर मुड़ती दिखाई दी जो आगे जा कर एक खूब लम्बे चौड़े विस्तृत मैदान के रूप में परिणत हो गई

थी। इस मैदान के दक्खिन ओर ऊँचे ऊँचे पहाड़ों की चोखियाँ दिखाई पड़ रही थीं किन्तु पूरब तथा पश्चिम दिशा में वह वादी कहाँ तक चली गई थी इसे वे ठीक ठीक समझ न सके। जल्द दक्खिन उसकी लम्बाई तीन चार मील से कम न होगी।

अपने साथी सिंह के पीछे पीछे टार्जन उस मैदान में—जहाँ खूब हरी हरी घास तथा सुन्दर सुन्दर फलों के पेड़ लगे हुये थे—जा पहुँचे। तरह तरह की चिड़ियाएँ भी यहाँ उन्हें विभिन्न विचित्र प्रकार की बोलियों बोलती दिखाई दीं पर उनकी शब्द उसी जाति की अन्य चिड़ियाओं से बहुत भिन्न थी।

इस हरे भरे मैदान की सभी बातों में उन्हें कुछ न कुछ विचित्रता दिखाई दे रही थी। उन्हें ऐसा मालूम होता था माने वे एकाएक किसी दूसरी दुनिया में ही चले आये हों। न जाने क्यों उनके चित्त में उस समय एक अजीब घबड़ाहट सी मास हो रही थी जिसे उन्होंने भावी विपत्ति की सूचना मान्न समझा।

जगह ब जगह पेड़ों में सुन्दर सुन्दर फल लगे हुये थे जिन्हें पेड़ों पर बैठे बन्दर आनन्द से खा रहे थे। वे भी इनमें से एक पेड़ पर जा चढ़े और उन्हीं फलों को तोड़ तोड़ कर खाने लगे जिन्हें इन बन्दरों को खाते उन्होंने देखा था। जब उनका पेट कुछ कुछ भर चला—क्योंकि बिना मांस के उन्हें पूरी रुचि नहीं होती थी—तब जा कर उन्होंने अपने साथी सिंह की खोज में अपनी दृष्टि नीचे की ओर डाली परन्तु इस समय तक वह सिंग किसी ओर लापता हो चुका था।

दीवारों से घिरा हुआ शहर



एक बार पुनः जमीन से कूद कर टार्जन इस बात का पता लगाने लगे कि वह युवती और अंग्रेज युवक किस रास्ते से ले जाये गये हैं। शीघ्र ही उन्हें इस बात का पता चल भी गया। वह एक बहुत पुरानी पगडंडी थी जो वहाँ से सीधे दक्खिन पश्चिम की ओर चली गई थी। इधर उधर से आ कर उस पगडंडी से मिलने वाली और भी छोटी छोटी पगडंडियों दिखाई दे रही थी और सभी पर न्यूमा सिंह तथा चीते की गंध मालूम हो रही थी।

इस घाटी में हिरन, सूअर, भैंसा, हाथी आदि कोई भी जानवर उन्हें दिखाई नहीं दिये हों साँप अवश्य उन्हें मामूली से अधिक दिखाई दे रहे थे। इतने अधिक जितने कि आज तक उन्होंने एक साथ कभी भी नहीं देखे थे। इधर उधर प्रायः सभी पेड़ों पर वे लटकते दिखाई दे रहे थे। एक सोता भी उस पगडंडी

के बगल से आगे की ओर बहता उन्हें दिखाई दिया। इस खोले में उन्होंने अपनी प्यास बुझाई और तब एक गहरे गड्ढे में वे उन्हें घड़ियाल की गंध आती हुई भी मालूम हुई।

मांस खाने की इच्छा इस समय उनके हृदय में बढ़ी थी प्रबल हो रही थी अस्तु उन्होंने अपनी निगाह पेड़ों पर बैठी हुई चिड़ियाओं की ओर उठाई। सिवाय इनके और किसी मांस के मिलने की आशा उन्हें बिल्कुल ही न थी। अपने तरकश में से एक तीर निकाल कर उन्होंने अपनी कमान पर चढ़ाया और उसे उनमें से एक चिड़िया पर छोड़ दिया। फौरन ही वह चिड़िया जमीन पर गिर पड़ी परन्तु उसे इस प्रकार मर कर गिरते देख आस पास के पेड़ों पर बैठे बन्दरों तथा चिड़ियाओं ने इतना कोलाहल मचाया कि समूचा जंगल प्रतिध्वनित हो उठा। यदि उस पेड़ पर की दो एक चिड़ियाएँ उड़ गई होतीं तब पर उन्होंने तीर चलाया था तब तो कोई बात न थी किन्तु उस स्थान पर रहने वाले सभी जीव जन्तुओं का इस जरा सी बात के लिये इतना भारी कोलाहल सुन उन्हें हृदय से ज्यादा आश्चर्य हुआ और कुछ भय भी मालूम हुआ बल्कि एक बार तो उनके मन में एक एक एक बन्दरों के गले से निकली विजयध्वनि निकालने की इच्छा उत्पन्न हो गई। वे चुपचाप आसमान की ओर मुंह करके खड़े हो गये और तब उनके मुंह से उस भयंकर आवाज निकल कर समूचे जंगल को प्रतिध्वनित कर दिया।

एकाएक सब कोलाहल बन्द हो गया और चारों ओर एक

हम सन्नाटा छा गया। इतने भारी कोलाहल के बाद एकाएक ऐसा गम्भीर सन्नाटा उन्हें और भी गढ़ाने लगा। जमीन पर गिरी चिड़िया को उन्होंने उठा लिया और उसके पर वगैरह नोच कर फेंकने बाद उसे खाने लगे। चिड़ियाओं का गोشت उन्हें पसन्द न था किन्तु यहाँ पर और गोشت मिलने की आशा न देख उन्हें लाचार उसी से अपनी तृप्ति करनी पड़ी।

अभी उन्होंने अपना भोजन समाप्त किया ही था कि आस पास की म्हाड़ियों में उन्हें गद्दीदार पैरों के चलने फिरने का शब्द सुनाई देने लगा। साथ ही उनकी नाक में न्यूमा सिंह की भी गंध आई। थोड़ी ही देर बाद उन्हें चारों ओर कितने ही सिंहों के घूमने फिरने का शब्द सुनाई देने लगा। सम्भव है पक्षियों तथा बन्दरों का भयानक कोलाहल सुन कर ही ये सिंह उस ओर चले आये हों किन्तु इस सम्बन्ध में निश्चित रूप से अभी वे कुछ भी नहीं कह सकते थे।

चुपचाप अपने स्थान पर खड़े हुये वे सिंहों के समीप आने की राह देखने लगे। वे इस बात को समझना चाहते थे कि सिंह किस ढंग से उन पर हमला किया चाहते हैं। सहसा एक दृष्ट पुष्ट कहावर सिंह उन्हें सामने पगडंडी की ओर से आता दिखाई दिया। उन पर निगाह पड़ते ही वह एकाएक खड़ा हो गया और ध्यान से उनकी सूरत देखने लगा। टार्जन इसी बात को सोच रहे थे कि देखें वह कब हमला करता है परन्तु उसके हमला करने के कोई भी लक्षण उन्हें दिखाई न दिये और वह

चुपचाप उन्हीं की ओर मुंह कर के जमीन पर बैठ गया। इसके बाद और भी कितने ही सिंह उन्हें चारों ओर से आते दिखा दिये जो सभी घेरा बाँध कर उनके चारों ओर बैठ गये। वहाँ चुपचाप अपने भोजन में लग गये।

इसी प्रकार लगभग एक घण्टा समय व्यतीत हो गया। उनकी तबीयत चुपचाप बैठे बैठे घबड़ाने लगी। यहाँ तक कि अपने स्थान पर बैठे ही बैठे वे उन सिंहों को तरह तरह की आवाजें कह कह कर चिढ़ाने लगे किन्तु जब वे इतने पर भी कुछ न बोले तो उन्होंने जमीन पर से बालू तक उठा कर उनकी ओर फेंकना आरम्भ किया परन्तु सिवाय अपने दाँत निकाल निकाल कर गुर्राते के वे इस बार भी अपने स्थान से जरा भी न हटे।

और भी आधा घंटा इसी प्रकार बीत गया। सहसा उनके कानों में किसी मनुष्य की पदध्वनि सुनाई पड़ी। थोड़ी ही देर बाद एक विचित्र प्रकार का मनुष्य उन्हें अपने सामने दिखा दिया जो उनके सामने वाले सिंह के ठीक पीछे की ओर आ खड़ा हो गया था। उस आदमी के शरीर से ठीक उसी प्रकार की गंध निकल रही थी जैसी कि उन्हें पिछली रात उस समान मालूम पड़ी थी जब सिंहों तथा कितने ही आदमियों ने एक साथ ही उन पर हमला कर दिया था।

उस आदमी का शरीर खूब ही दृष्ट पुष्ट तथा सबल था और शरीर का चमड़ा बहुत ही चिकने पीले रंग के पार्श्वमैद के भाँति चमक रहा था। सिर के बाल उसके तीन तरफ

इंच के तथा एक दम सीधे खड़े हुये थे। आँखें उसकी छोटी छोटी तथा पुतलियों एक दम काले रंग की थीं। चेहरे पर थोड़े बहुत बाल ठुड्ढियों तथा गालों के ऊपर दिखाई दे रहे थे। नाक सुन्दर तथा सीधा था परन्तु माथे पर के बाल इतने नीचे तक उगे हुये थे कि वह देखने ही से खूँखार मालूम होता था। ऊपरी होठ पतला तथा सुन्दर था परन्तु निचला भद्दा तथा मोटा था। सूरत देखने से साफ मालूम होता था कि वह चेहरा एक समय अवश्य सुन्दर रहा होगा किन्तु शारीरिक कष्टों अथवा नीच विचारों से ही उसमें इतना भारी परिवर्तन हो गया है। हाथ : उसके लम्बे तथा पैर छोटे छोटे थे।

वह एक लम्बा बिना आस्तीन का चोगा पहने हुये था। जो उसके घुटनों के नीचे तक लटक रहा था तथा उसके पैरों में मुलायम चप्पल दिखाई दे रहे थे जिनका तस्मा ऊपर घुटनों तक आ कर बँधा हुआ था। हाथ में उसके एक छोटा किन्तु भारी बरछा था और बगल में एक सुन्दर म्यान की तलवार लटक रही थी। उसके कपड़े करघे पर तैयार किये मालूम होते थे।

टार्जन को यह देख बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि न तो उसे सिंहों के समीप आने में ही किसी प्रकार का भय मालूम हो रहा था और न सिंह ही उसकी कुछ परवाह कर रहे थे। कुछ देर तक तो वह चुपचाप खड़ा उनकी ओर देखता रहा और तब उन सिंहों के साथ रगड़ खाता हुआ आगे की ओर बढ़ने लगा।

टार्जन से लगभग बीस फीट की दूरी पर आ कर वह खड़ा

हो गया और इस प्रकार उनकी सूरत देखने लगा कि उसे सन्देह हो गया कि कहीं वह पागल न हो। सहसा अपने स्थान पर खड़ा हो कर वह एक विचित्र प्रकार की बोली में न मात्स्य क्या क्या बोलने लगा। उसके चेहरे के सभी भाव उसके पागल होने का परिचय दे रहे थे परन्तु उसके बोलने का ढंग उसके बुद्धिमान होने की सूचना देता था। असल बात क्या है इसे टार्जन किसी प्रकार भी समझ न सके।

इसी समय उसने अपनी बात समाप्त की और उनके उत्तर की राह देखने लगा। पहले तो टार्जन ने एप बन्दरों की भाषा में उससे बातचीत की परन्तु जब वह कुछ भी न समझ सक्त तो वे कितनी ही जंगली भाषाओं का इस्तेमाल करने लगे पर इनमें से भी कोई भाषा उसकी समझ में न आई।

अब टार्जन बेतरह घबड़ा उठे। ऐसे बेवकूफ के साथ लिखपन कर के बेकार अपना समय बर्बाद करना उन्हें जरा भी पसन्द न आया और वे अपना बर्छा उसके छाती की ओर लट कर थोड़ा आगे की ओर बढ़े। यह भाषा दोनों ही समान रूप से समझते थे क्योंकि फौरन ही उसने अपना बरछा भी सीधा किया और साथ ही उसके मुंह से एक ऐसी धीमी तथा तेज आवाज निकली मानों वह किसी को बुला रहा हो। इस आवाज को सुनते ही उनके चारों ओर बैठे सभी सिंहों में मानों जान फै गई और भयंकर गुराहट की आवाजें चारों ओर से आने लगीं। साथ ही वे सब के सब धीरे धीरे आगे बढ़ने लगे। उन्हें

ऐसा करते देख वह आदमी स्वयं थोड़ा पीछे हट गया और बड़े ही विचित्र ढंग से अपना मुँह बिचकाने तथा दाँत दिखाने लगा ।

अब पहली बार टार्जन की दृष्टि उसके दाँतों पर पड़ी और उन्होंने देखा कि उसके ऊपरी दाँत बेतरह नुकीले और तेज हैं । धीरे धीरे पीछे हटते हुये वे बगल की झाड़ियों में घुस कर बहुत शीघ्र उनकी दृष्टि से ओझल हो गये और वे सब के सब अपने स्थान पर खड़े मुँह ही ताकते रह गये ।

अब टार्जन के लिये आगे का रास्ता एक दम साफ आ अस्तु वे पुनः आगे की ओर बढ़ने लगे और शीघ्र ही पगडंडी पर पहुँच गये । आगे मील तक उन्हें पगडंडी पर बराबर बर्था कर्चर तथा स्मिथ ओल्डविक की गंध मिलती गई । एकाएक उस जंगल का खातमा हो कर उन्हें अपने सामने एक बड़ा भारी विस्तृत मैदान दिखाई दिया और साथ ही उनकी दृष्टि चहारदीवारी से घिरे हुये एक सुन्दर शहर पर भी पड़ी जिसके गुम्बद तथा मीनारों उन्हें साफ साफ दिखाई दे रही थीं ।

अपने ठीक सामने के ओर की दीवार में उन्हें एक दर्वाजा भी दिखाई दिया जिसकी ओर वह पगडंडी सीधी चली गई थी और जिस पर चल कर कि वे इस स्थान तक पहुँचे थे । उस जंगल तथा दीवार के बीच एक छोटा सा सुन्दर बाग भी लगा हुआ उन्हें दिखाई दिया जिसके बीच में कितने ही आदमी काम कर रहे थे और एक सुन्दर साफ पानी का चश्मा भी उस बाग से

हो कर उन्हें एक ओर गया दिखाई दिया ।

बाहर की दीवार लगभग तीस फीट ऊँची थी । दीवार के आगे की ओर कितनी ही मीनारें तथा गुम्बद अपना शानदार सिर आसमान की ओर ऊँचा किये खड़े थे । इनमें से कुछ तो लाल, कुछ नीले तथा कुछ पीले रंग में रंगे हुये थे । दीवार भी बड़ी सफाई से बनी तथा हलके फीरोजी रंग से रंगी हुई थी । उसके नीचे की ओर कितने ही सुन्दर सुन्दर पौधे करीने के साथ लगे हुये थे और एक ओर किसी फूल की घनी लता दीवार पर चढ़ी हुई थी । अभी वे अपने स्थान पर खड़े सामने का एक ध्यान से देख ही रहे थे कि सहसा उनकी नाक में मनुष्य तथा सिंहों की कड़ी गंध आई जिनके पैरों की आवाज भी ठीक अपने पीछे की ओर से आती उन्हें सुनाई दी । उछल कर वे अपने बगल के एक ऊँचे तथा मजबूत पेड़ की सबसे ऊँची चोटी पर जा चढ़े और वहीं बैठ कर नीचे का दृश्य देखने लगे ।

वही आदमी जो थोड़ी देर पहले उन पर हमला किया चाहता था सिंहों के झुंड को साथ लिये पगडंडी की राह आगे बढ़ता दिखाई दिया । वह सीधा दीवार में बने फाटक के पास जा पहुँचा और अपने हाथ के बरछे की मूठ से उसने उसमें लगे दर्वाजे को जोर के साथ खटखटाया । फौरन ही दर्वाजा खुल गया और वह अपने साथी सिंहों के साथ भीतर चला गया । केवल एक क्षण टार्जन उस खुले हुये दर्वाजे की राह भीतर का दृश्य देख सके । उन्होंने देखा कि वहाँ कितने ही छोटे मोटे

मकान बने हुये हैं जिनके इर्द गिर्द कितने ही आदमी भी घूम रहे हैं। इसके बाद ही वह दर्वाजा बन्द हो गया।

टार्जन समझ गये कि वर्या कर्चर तथा स्मिथ ओल्डविक भी अवश्य गिरफ्तार कर के उसी दर्वाजे की राह भीतर ले जाये गये होंगे। उसके भीतर उनकी क्या क्या दुर्दशायेँ हो रही होंगी इसे सोच कर एक बार उनका मजबूत कलेजा भी दहल उठा।

सूर्य भगवान पश्चिमीय आकाश में तेजी के साथ नीचे की ओर बढ़ रहे थे और सन्ध्या होने में अधिक विलम्ब न था। इसी समय उनकी दृष्टि कुछ मजदूरों पर पड़ी जो कदाचित् खेत का काम कर के हाथ में खेती के औजार लिये पूरव दिशा से लौटे चले आ रहे थे। उनकी यह कतार बढ़ती ही गई। टार्जन को गुमान भी न था कि इतने आदमी आस पास के खेतों में काम कर रहे होंगे। दर्वाजा खुलवा कर ये सभी भीतर चले गये।

टार्जन इसी सोच में थे कि आखिर अफ्रीका के भयानक जंगलों के बीच बना हुआ ऐसा सुन्दर शहर अब तक बाहरी लोगों की दृष्टि से छिपा क्यों कर रहा और इसके निवासियों ने इतना काल बीत जाने पर भी यह जानने का उद्योग क्यों न किया कि उनके शहर के अलावा भी कोई दुनियाँ है या नहीं।

टार्जन ने यह भी देखा कि शहर के प्रायः सभी मकानों की छत ऐसी चौरस है कि आदमी उन पर मजे में चल फिर सकता है किन्तु टार्जन इससे अधिक कुछ भी देख न सके क्योंकि सूर्य भगवान क्रमशः अस्त हो गये और अन्धकार ने शीघ्र ही

अपना अधिकार चारों ओर जमाना आरम्भ कर दिया।

रात्रि के अन्धकार के साथ ही साथ जंगल के भयानक दरिन्दे जानवरों की आवाजें भी बढ़ने लगीं। चीतों की गरल तथा सिंहों की दहाड़ क्रमशः तेज होने लगी और उनकी आवाजों के उत्तर में उस विचित्र शहर के बीच में रहने वाले सिंह भी भीषण रूप से दहाड़ने लगे।

इतना तो टार्जन अवश्य समझ गये थे कि विना शहर के भीतर गये वे उन दोनों युवक युवतियों का किसी प्रकार भी उद्धार नहीं कर सकते अस्तु उसमें किस प्रकार घुसना चाहिये इसी बात पर वे इस समय विचार कर रहे थे। अन्त में उन्होंने यही स्त्रि किया कि यदि दीवार पर चढ़ी लतायें मजबूत हों तो उनके सहारे वे आसानी से दीवार के ऊपर पहुँच सकते हैं।

दरिन्दे जानवरों की आवाजें अब क्रमशः पहले से भी तेज होती जा रही थीं। जिस पेड़ पर वे इस समय बैठे हुये थे उससे तथा शहर की दीवार में लगभग चौथाई मील का फासला था। वे यही सोच रहे थे कि यदि इस रास्ते को तय करते समय कोई भी काला सिंह उनका पीछा करेगा तो उनकी जान बचना कठिन हो जायगा परन्तु इसका और उपाय ही क्या था।

कुछ देर तक वे आहट लेते तथा चारों ओर अपनी निगाहें दौड़ाते रहे और जब उन्हें विश्वास हो गया कि उनके आसपास में कोई भी दरिन्दा जानवर नहीं है तो वे पेड़ पर से उतर कर तेजी के साथ उस दीवार की ओर दौड़े।

परन्तु अभी उन्होंने आधा रास्ता भी तय न किया होगा कि शिकार की फिराक में घूमते सिंहों में से एक की निगाह उन पर पड़ गई और वह जोर से दहाड़ मार कर उनकी ओर दौड़ा।

टार्जन ने पीछे घूम कर चन्द्रमा की रोशनी में देखा कि वह सिंह बड़ा ही कड़ावर तथा उसी काली जाति का है। एक बार उनका इरादा खड़े हो कर उससे युद्ध करने का भी हुआ परन्तु जैसे ही उनका ध्यान शहर के बीच आपत्तियों से घिरे उन युवक युवतियों की ओर गया उन्होंने फौरन ही अपना वह इरादा बदल दिया और तेजी के साथ दीवार की ओर दौड़े।

न्यूमा सिंह भी तेजी के साथ उनकी ओर बढ़ा आ रहा था परन्तु सिंह केवल थोड़े ही फासले तक इतनी फुर्ती से दौड़ सकता है अस्तु उनकी हिम्मत बढ़ी हुई थी और उन्हें निश्चय था कि वे उसके पहले ही उन लताओं तक जा पहुँचेंगे परन्तु अब सन्देह था तो इतना ही कि वे लतायें उनका भार सँभाल सकेंगी अथवा नहीं।

सिंह कुछ देर तक तो बड़ी ही तेजी से दौड़ा यहाँ तक कि उसके तथा टार्जन के बीच का फासला बहुत कुछ कम हो गया परन्तु एकाएक उसकी चाल धीमी पड़ गई। तब तक टार्जन उन लताओं के पास जा पहुँचे और फुर्ती के साथ ऊपर चढ़ने लगे। तब तक सिंह भी वहाँ पहुँच गया और ऊपर की ओर उछला। दीवार के ऊपर खड़ा एक संतरी सिंह तथा मनुष्य की इस भयानक दौड़ को अपनी तेज निगाहों से देख रहा था।

पागलों के बीच में



ज्यों ही बर्था कर्चर की निगाह अपने रक्तक टार्जन की ओर एक साथ ही झुकते हुये कई सिंहों पर पड़ी वह भय से कांप उठी और गुफा में घुस कर एक कोने में खड़ी हो गई ।

सिंहों के साथ ही साथ इस समय उसके कानों में मनुष्यों के बातचीत की आवाज भी पड़ रही थी । सहसा उसे अपने पास किसी आदमी के होने का गुमान हुआ । साथ ही दो मजबूत हाथों ने उसे पकड़ कर अपनी ओर खींचा । अन्धकार के कारण वह साफ साफ देख नहीं सकती थी परन्तु ओल्डविक तथा टार्जन दोनों में से कोई भी उसे आस पास में दिखाई नहीं दिए । जो आदमी उसे पकड़े हुये था वह अपने हाथ के छोटे बरखे की मूठ से उसकी ओर उछलते हुये सिंहों को मार मार कर बराबर हटाता जा रहा था और बीच बीच में चिल्ला चिल्ला कर उन्हें मानों कुछ हुक्म भी सुनाता जाता था ।

गुफा के बाहर निकलने पर उसकी निगाह स्मिथ ओल्डविक पर पड़ी जिसे दो आदमी दोनों ओर से पकड़े हुए थे। सिंह बराबर उस पर हमला करने के लिये उछल कूद मचा रहे थे पर वे आदमी बराबर उन्हें पीछे हटाते जाते थे। उन्हें उन से जरा भी भय नहीं मालूम होता था और वे उनके साथ ठीक वैसा ही व्यवहार कर रहे थे जैसा कि कुत्तों के साथ किया जाता है।

थोड़ी ही देर बाद ये लोग उसी पगडंडी पर आ गये जिसके बगल से हो कर पानी का झरना बह रहा था। अब सूर्य भगवान की सुनहली किरणें पश्चिमीय आकाश पर धीरे धीरे अपना रंग जमाने लग गई थीं जिसकी हलकी रोशनी में बर्था कर्चर को सामने की ओर एक सकरी घाटी दिखाई दी जिसके दोनों ओर ऊँचे ऊँचे करारे थे। इसी घाटी में से आगे बढ़ते हुये उसकी निगाह ओल्डविक पर पड़ी जिसका बदन एक सिंह के पंजे द्वारा कई जगह से क्षत विक्षत हो गया था। खून से भरे अपने शरीर को दिखाता हुआ ओल्डविक मुस्कुरा कर बर्था से बोला, "यह तो हम लोग अच्छी बला में आ फँसे।"

बर्था बोली, "ज्यादा घाव तो नहीं लगा?"

ओल्डविक ने उत्तर दिया, "नहीं अधिक तकलीफ तो नहीं मालूम देती परन्तु शरीर से बहुत सा खून निकल जाने के कारण कमजोरी बहुत मालूम हो रही है।"

बर्था ने कहा, "कुछ अनुमान लगा सकते हो कि ये लोग किस जाति के हैं?"

ओल्डविक कुछ देर तक ध्यान से एक आदमी की ओर देखता रहा और तब बोला, "वर्था ! क्या तुम कभी किसी पागलखाने के भीतर गई हो ?"

वर्था ने एक बार तेज निगाह से ओल्डविक की ओर देखा। उसकी बातों का मतलब वह बखूबी समझ गई थी। जरा तेज आवाज में वह बोली, "तुम ठीक कह रहे हो !"

ओल्डविक बोला, "इनके हाव भाव, आँखों की पुतलियाँ, सिर के खड़े तथा माथे की ओर मामूली से अधिक उत्पन्न बाल सभी इनके पागल होने का स्पष्ट रूप से परिचय दे रहे हैं।"

वर्था कर्चर काँप उठी। इसी समय एक हरे रंग का तोतल उसके सामने जाने वाले आदमी के सिर के पास आ पहुँचा और अपने पंख फटफटा कर उड़ गया। फौरन ही वह आदमी घुटनों के बल जमीन पर बैठ गया और अपना सिर नीचे की ओर झुकाने लगा यहाँ तक कि उसका सिर जमीन से छू गया। उसके कितने ही साथी उसे ऐसा करते देख धीरे धीरे हँसने लगे। इतने में वह आदमी उठ खड़ा हुआ और आगे बढ़ा।

ओल्डविक ने वर्था की ओर देख कर कहा, "देखा तुम्हें इनके पागलपन का यह दूसरा नमूना ! सिंहों से जरा भी न डरने वाले ये लोग जरा सी चिड़िया से किस प्रकार डरते हैं।"

वर्था ने पूछा, "अच्छा इन लोगों की भाषा कुछ समझ में आती है ?"

ओल्डविक बोला, "नहीं बिल्कुल नहीं। मैं बड़ी देर से

बात पर गौर कर रहा हूँ पर किसी भी यूरोपीय भाषा से इनकी भाषा मिलती जुलती दिखाई नहीं देती।”

बर्था ने कहा, “परन्तु मुझे तो ऐसा मालूम होता है जैसे इससे मिलती जुलती भाषा मैंने कहीं सुनी हुई हो किन्तु बहुत प्रयत्न करने पर भी याद नहीं आता कि मैंने उसे कहीं सुना है।”

ओल्डविक बोला, “यह बात मेरे मन में नहीं बैठती। ये लोग अफ्रीकन प्रदेश के ऐसे छिपे हुये भाग में इतने प्राचीनकाल से एकान्त जीवन व्यतीत करते चले आये हैं कि मेरे ख्याल में इस समय यह भाषा बाहरी दुनिया में कहीं पर भी बोली नहीं जाती होगी।

अब वे लोग एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ पानी का चश्मा पगडंडी को काटता हुआ दूसरी ओर निकल गया था। यहाँ सभी लोगों तथा सिंहों ने पानी पी कर अपनी अपनी प्यास बुझाई और इन दोनों को भी पानी पीने का इशारा किया अस्तु इन्होंने भी घुटनों के बल जमीन पर बैठ कर मजे में पानी पीया।

इस काम से निश्चिन्त हो कर ये लोग पुनः आगे की ओर बढ़े। सहसा इनके कानों में किसी सिंह के दहाड़ने की भयंकर आवाज सुनाई दी। इस समय ओल्डविक ने एक नई बात देखी। उन्हें गिरफ्तार कर के ले जाने वाले ये विचित्र आदमी जो अपने साथी सिंहों की दहाड़ से जरा भी नहीं डरते थे, इस नये जंगली सिंह की बोली सुनते ही एक दम भयभीत हो गये। सहसा इनके सामने की ओर ठीक पगडंडी पर खड़ा हुआ

एक बड़ा ही लम्बा चौड़ा काले रंग का शेर दिखाई दिया जिसे देखते ही इन लोगों ने समझ लिया कि वह ठीक उसी जाति का है जिसका कि टार्जन ने गड़हे में से उद्धार किया था।

ये लोग अपने सिंहों के साथ बराबर आगे ही बढ़ते चले गये। उनके सामने वाले उस सिंह ने बड़े जोर से फिर एक दहाड़ मारी और तब अपनी दुम आसमान की ओर उठा कर तेजी से इन लोगों की ओर झपटा। इन लोगों ने फौरन ही अपने बरछे सम्हाले लिये। दो एक आदमियों के बरछे उस सिंह के बदन में भी जा घुसे किन्तु इससे उस सिंह का क्रोध और भी उमड़ उठा और वह उनके एक साथी को उनके बीच से उठा कर फुर्ती के साथ बगल की झाड़ियों में जा घुसा।

परन्तु इन लोगों ने इस बात की ओर विशेष ध्यान न दिया और पुनः आगे की ओर बढ़ने लगे। ओल्डविक समझ गया कि यह इन लोगों के इलिये कदाचित् नित्य की घटना है। वर्या की ओर देख कर वह बोला, “मैं तो अब तक यही समझता था कि अफ्रीका के अन्य जंगलों में रहने वाले सिंहों के समान खूँखार सिंह और कहीं भी नहीं पाये जाते परन्तु इन काले सिंहों के मुकाबले में तो वे सब निरे बच्चे ही मालूम होते हैं।”

अब ये लोग एक खुले मैदान में आ पहुँचे थे। वर्या तब ओल्डविक को यह देख बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि उनके सामने सुन्दर चहारदीवारी से घिरा हुआ एक सुन्दर शहर है। वर्या बोली, “वाह! यह तो कोई बड़ा ही सुन्दर शहर मालूम

होता है, यहाँ अवश्य सभ्य आदमियों का निवास होगा हम लोगों की किस्मत बड़ी ही जबरदस्त है जो हम लोग यहाँ लाये गये ।”

ओल्डविक बोला, “अभी मैं कुछ भी नहीं कह सकता ।”

धीरे धीरे ये सब के सब दीवार में बने एक सुन्दर फाटक के पास जा खड़े हुये । उनमें से एक आदमी ने अपने वरछे के पिछले भाग से दर्वाजे में धक्का दिया । दर्वाजा खुल गया और वे सब इन्हें साथ लिये हुये उसके भीतर घुस गये ।

भीतर की ओर सुन्दर पक्की सड़क थी जिसके दोनों ओर केवल दो खंड की सुन्दर इमारतें बनी हुई थीं । इतने सबेरे सड़कों पर बहुत कम आदमी चलते फिरते दिखाई दे रहे थे । पहले तो इनकी निगाह केवल आदमियों ही पर पड़ी परन्तु थोड़ा और आगे बढ़ने पर बहुत से लड़के भी इन्हें इधर उधर घूमते दिखाई देने लगे जिनमें से कुछ तो आश्चर्य के साथ इन नये कैदियों को देख उनसे इनके विषय में तरह तरह के सवाल करने लगे और कुछ ने इन लोगों की ओर ध्यान तक न दिया ।

स्मिथ ओल्डविक ने कहा, “यदि हम लोग किसी तरह इन लोगों की भाषा समझ पाते तो बड़ा ही अच्छा होता ।”

बर्था बोली, “हाँ, तब तो सब से पहले मैं इनसे यही पूछती कि आखिर ये लोग हमें यहाँ किस इरादे से ले आये हैं !”

ओल्डविक बोले, “मुझे तो इनके दाँतों की बनावट देख कोई दूसरा ही खयाल हो रहा है । वे मामूली से अधिक नुकीले, ठीक आदमखोर आदमियों से मिलते जुलते दिखाई देते हैं ।”

चौक कर बर्था ने पूछा, “तो क्या तुम्हारे कहने का यह मतलब है कि ये लोग भी आदमखोर हैं ! क्या गोरे आदमी भी आदमखोर होते हैं ।”

ओल्डविक बोले, “किन्तु ये गोरे तो कहे नहीं जा सकते ।”

बर्था ने उत्तर दिया, “परन्तु ये कम से कम हवशी तो हैं नहीं । इनके शरीर का चमड़ा ठीक चीनियों जैसा पीले रंग का है ।”

ठीक इसी समय इन लोगों की निगाह एक औरत पर जा पड़ी जिसकी सूरत वहाँ के रहने वाले आदमियों से बहुत कुछ मिलती जुलती थी परन्तु उसका कद नाटा और चेहरा मर्दों की अपेक्षा कुछ अधिक भद्दा मालूम होता था । आँखें उसकी एक दम छोटी और होठ मोटे तथा बाहर की ओर निकले हुये थे । दाँत उसके मर्दों की अपेक्षा और भी अधिक बड़े तथा नुकीले थे । बाल उसके लम्बे तथा दोनों कंधों पर छिटके हुये थे और शरीर पर एक हलके रंग का कपड़ा मजबूती के साथ लपेटा हुआ था । छातियाँ एक दम खुली हुई थीं और सोने ऐसी किसी चमकीली धातु के कांटे उसके बालों तथा कपड़े में खुंसे हुये थे ।

वह सीधे इन लोगों के पास चली आई और उनसे कुछ बात करने लगी परन्तु उन लोगों ने : उसकी ओर जरा भी ध्यान न दिया और बराबर आगे ही की ओर बढ़ते चले गये ।

जिस सड़क पर इस समय ये लोग जा रहे थे उन्हें कहीं से आवाज हुई किन्तु और भी सफरी सड़कें इधर उधर चली गई थीं ।

मकानों के ढंग में बहुत थोड़ा फर्क था और उनमें जगह वजगह रंगीन पच्चीकारी का काम भी बना हुआ था। खुली हुई खिड़कियों से उन्होंने यह भी देख लिया कि उन मकानों की दीवारें खूब मोटी तथा खिड़कियाँ बहुत ही छोटी छोटी बनी हुई हैं।

स्मिथ ओल्डविक के घावों में इस समय बेतरह दर्द हो रहा था और कमजोरी भी उत्तरोत्तर बढ़ती ही जा रही थी। बर्था ने उसे अपने हाथों का सहारा देना चाहा परन्तु वह इन्कार करता हुआ बोला, “नहीं तुम भी इस समय मामूली से अधिक थकी हुई हो अस्तु मैं तुम पर अपना बोझ नहीं डालना चाहता !”

स्मिथ ओल्डविक के बगल में इस समय एक लम्बा चौड़ा आदमी चल रहा था। जब कभी भी वह चलता चलता लड़खड़ा जाता था वह फौरन उसे अपने हाथ का सहारा देकर सम्हाल लेता था परन्तु जब ओल्डविक बार बार लड़खड़ाने लगा तो वह आदमी एकाएक भीषण रूप से क्रोधित हो कर ओल्डविक पर दूट पड़ा और उसे मुक्कों तथा घूँसों से मार मार कर उसने जमीन पर गिरा दिया। इसके बाद फौरन ही बगल में लटकती तलवार निकाल उसने उसे म्यान के बाहर खींच लिया और बड़े जोर से चीख कर उसे ओल्डविक के सिर पर मारने के लिये हवा में उठाया।

उसके अन्य साथी लोग खड़े हो गये और इस प्रकार यह तमाशा देखने लगे मानों इसमें उन्हें जरा सी भी दिलचस्पी न हो परन्तु बर्था कर्चर इस प्रकार एक जखमी आदमी पर होते

हुये जुल्म को बरदाश्त न कर सकी। एक ही छलांग में उछल कर वह उस क्रोधित मनुष्य के पीछे जा पहुँची और उसका तलवार वाला हाथ पकड़ कर उसने जोर से पीछे की ओर खींचा। नतीजा यह हुआ कि वह आदमी लुढ़क कर जमीन पर आ रहा और उसके हाथ की तेज धारदार तलवार छूट कर दूर जा गिरी।

बर्था कर्चर ने दौड़ कर वह तलवार अपने हाथ में उठा ली और उसे हाथ में ले कर शत्रुओं का सामना करने के लिये खड़ी हो गई।

जमीन पर गिरा हुआ आदमी धीरे धीरे उठ कर खड़ा हो गया पर इस समय उसका रुख विल्कुल ही बदला हुआ था जिसे देख बर्था को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। उसका क्रोध इस समय एक दम हवा हो गया था और वह बड़े जोर से हँस रहा था। परन्तु उसके साथियों पर इन बातों का कुछ भी असर न पड़ा। वे लोग चुपचाप खड़े इस प्रकार यह घटना देख रहे थे मानों उन्हें उससे कोई मतलब ही न हो।

अब बर्था को निश्चय हो गया कि ये लोग वास्तव में पागल हैं। उसने वह तलवार जोर से उस हँसने वाले आदमी के सामने जमीन पर फेंक दी और ओल्डविक के बगल में जा बैठी।

ओल्डविक बोला, “काम तो तुमने बड़ी ही बहादुरी का किया परन्तु वास्तव में तुम्हें ऐसा न करना चाहिये था। पागल आदमियों को जहाँ तक हो सके प्रसन्न ही रखना चाहिये।

बर्था ने सिर हिलाते हुये उत्तर दिया, “मला यह सब

सम्भव है कि तुम्हारी हत्या में अपनी आँखों से देख सकूँ ।”

ओल्डविक की आँखों में एक विचित्र प्रकार की चमक पैदा हुई। उसने अपना एक हाथ बढ़ा कर वर्था का हाथ पकड़ लिया और बोला, “भला तुम्हें मेरा खयाल तो हुआ ! क्या तुम अपने मुँह से एक बार भी नहीं कह सकती कि तुम मुझे.....”

वर्था कर्चर ने उसके हाथ से अपना हाथ खींचा तो नहीं पर इतना अवश्य बोली, “देखो ऐसी बातें न करो, मैं तुम्हें आवश्यकता से अधिक कभी भी पसन्द नहीं कर सकती ।”

ओल्डविक के आँखों की वह चमक लापता हो गई। वह बोला, “मिस वर्था ! मुझे क्षमा करना, मैं चाहता था कि जब तक हम लोग इन खतरों से एक दम बाहर न हो जायँ तब तक मैं इस सम्बन्ध में कुछ भी न कहूँ किन्तु तुम्हें इस प्रकार बहादुरी के साथ अपनी रक्षा करते देख मैं अपने उद्गारों को सम्हाल न सका। जो कुछ भी हो मेरे मुँह से एकाएक निकले हुये उन शब्दों की कुछ भी कीमत नहीं है ।”

वर्था ने पूछा, “तुम्हारे इस कहने का मतलब क्या है ?”

निराशपूर्ण शब्दों में ओल्डविक ने उत्तर दिया, “मैं कभी भी इस शहर से जिन्दा बाहर नहीं निकल सकता ! तुम भी इस बात को अच्छी तरह समझ रही होगी। यदि मैं सभ्य देश में होता तो इस कमजोरी की हालत में होते हुये भी मुझे थोड़ी बहुत आशा होती पर इन पागलों के बीच में अपने जीवन की बरा भी आशा करना सिवाय बेवकूफी के और कुछ भी नहीं है ।”

बर्था कर्चर समझ गई कि वह सच ही कह रहा है। उसे उसका साथ बहुत पसन्द था परन्तु साथ ही इस बात का दुःख भी था कि वह उसे दिल से प्यार नहीं कर सकती थी। उसने एक लम्बी साँस ली और बोली, “देखो इस प्रकार निराश न हो; तुम मेरे लिये जीते रहने की कोशिश करो और मैं तुम्हारे लिये तुम्हें प्यार करने की कोशिश करूँगी।”

बर्था कर्चर की यह बात सुन ओल्डविक के निश्चिन्त शरीर ने एक विचित्र प्रकार का जीवन पड़ गया। धीरे धीरे वह अपने स्थान से उठ कर खड़ा हो गया। बर्था ने उठते समय उसे अपने हाथ का सहारा दे दिया।

अब इन दोनों की निगाह अपने साथ वाले आदमियों पर पड़ी परन्तु वे लोग इनकी ओर से एकदम लापरवाह थे। ओल्डविक को जमीन से उठते देख उन्होंने अपने साथियों को इशारा किया और तब ये सब के सब आगे की ओर बढ़े।

बर्था कर्चर ने एकाएक जो शब्द अपने मुँह से निकाल लिये दिये थे अब उनके लिये वह पछता रही थी। सन्तोष उसे केवल इतना ही था कि उसने ओल्डविक को केवल इसी बात की जगह दी थी कि वह उसे प्यार करने की कोशिश करेगी।

उसे निश्चय हो गया था कि वे लोग अब जीते जी उस स्थान से बाहर निकल कर अपने अभीष्ट स्थान तक कभी भी नहीं पहुँच सकते। उनका एक मात्र रक्षक अब इस संसार में था ही नहीं क्योंकि उसे उन लोगों ने अपनी आँखों के सामने जमीन पर

गिरते देखा था अस्तु बिना उसकी सहायता के किसी बात की भी आशा करना वे एक दम अपनी बेवकूफी समझते थे ।

सड़कों पर इस समय कितने ही आदमी चलते फिरते नजर आ रहे थे उनमें कितने ही तो उनकी ओर बड़ी ही उत्सुकता से देखते थे परन्तु कितने ही उनकी ओर जरा भी दिलचस्पी नहीं दिखाते थे । सहसा इन लोगों की निगाह एक आदमी पर पड़ी जो बेतरह क्रोध में भरा हुआ एक छोटे से बच्चे को जोर जोर से पीट रहा था और बीच बीच में जोर जोर से चिन्ता भी उठता था । अन्त में उसने उस बच्चे को एक मटके के साथ हवा में उठाया और तब जोर के साथ जमीन पर पटक दिया ।

इस घटना का देखने वालों पर क्या असर पड़ा यह तो वे लोग न समझ सके परन्तु इतना उन दोनों ने अवश्य देखा कि उसी आदमी के पास खड़े दो औरत और एक मर्द—जो चुपचाप खड़े यह तमाशा देख रहे थे—इस घटना की ओर बिल्कुल ही ध्यान न दे कर एक ओर चल दिये ।

ठीक इसी समय इनकी दृष्टि दोमंजिले की एक खिड़की से आधा घड़ बाहर निकाले एक औरत पर पड़ी जो रास्ता चलने वालों को अजीब अजीब तरह का मुँह बना कर दिखाती जाती थी और बीच बीच में बड़े जोर से खिलखिला कर हँस पड़ती थी । ये सब तमाशो देख बर्था कर्चर अपने आपे में न रही और शोलुविक की ओर देख कर बोली, “क्या अभी तक तुम्हारी पिस्तौल तुम्हारे पास है ?

ओल्डविक ने उत्तर दिया, "हाँ मैंने उसे अपने भीतरी कमरे में छिपा कर रख लिया था और अन्धकार होने के कारण वे लोग इस बात को देख भी न सके कि मेरे पास किसी तरह का हथियार है या नहीं ।"

बर्था कर्चर ओल्डविक के बिल्कुल समीप जा पहुँची और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर बड़े ही दीन स्वर में बोली, "कम से कम उसमें की एक कारतूस मेरे लिये बचा रखना !"

ओल्डविक की आँखों में आँसू छलछला आये । उसे अपने हाथ से बर्था की हत्या करनी होगी इस प्रस्ताव मात्र को सुन कर वह अपने आपे में न रहा और बोला, "नहीं बर्था ! यह काम मुझसे नहीं हो सकता ।"

बर्था बोली, "क्या तुम इससे भी भीषण मेरी दुर्दशा देख कर भी यह काम न कर सकोगे ।"

अपना मुँह दूसरी ओर फिरा कर ओल्डविक बोला, "नहीं मुझसे यह काम कभी भी नहीं हो सकता ।"

अब ये लोग एक छोटे से पार्क के पास आ पहुँचे जहाँ सामने एक लम्बी चौड़ी मील थी । इस मील में बहुत सच चमकीला पानी भरा हुआ था । इस स्थान की इमारतों की अपेक्षा अधिक शानदार और सुन्दर बनी हुई थी । सड़कों पर रंग विरंगी पत्थर जड़े थे और मकानों पर बड़े सुन्दर चित्रकारी के काम बने हुये थे जिनके बीच अधिकतर हरी पत्तियों से ही काम लिया गया था परन्तु सभी चित्रकारियों

बीच तोलों के चित्र बहुतायत से बने हुये थे जिनमें कहीं कहीं सिंहों तथा वन्दरों के चित्र भी दिखाई देते थे ।

मील के किनारे थोड़ी दूर तक चलने बाद इन्हें गिरफ्तार करने वाले इनको एक सुन्दर महाराजदार फाटक के भीतर ले चले । भीतर जाते ही इनकी निगाह सामने ही बने एक लम्बे चौड़े कमरे पर पड़ी जिसमें कितने ही सुन्दर बेंच, कुर्सियाँ तथा टेबुल फ्रीने से सजा कर रखे हुए थे ।

इन टेबुलों के पीछे की ओर एक आदमी बैठा हुआ था । इन लोगों को पकड़ कर लाने वाले आदमियों में से एक ने आगे बढ़ कर उससे कुछ बातें कीं जिसके उत्तर में उसने भी कोई आज्ञा दी । शीघ्र ही दो आदमियों ने बर्था को पकड़ लिया और वहाँ ले चले । स्मिथ ओल्डविक ने उसके पीछे पीछे जाने का प्रयत्न किया परन्तु एक पहरेदार ने उसका रास्ता रोक दिया । बर्था ने टेबुल के पीछे बैठे मनुष्य से ओल्डविक को साथ में आने देने के लिये कितनी ही प्रार्थनाएँ कीं परन्तु उसने सिर हिला कर उसकी बात अस्वीकार कर दी और पहरेदारों को उसे वहाँ ले जाने का इशारा किया । दर्वाजे के भीतर जाते समय ओल्डविक की ओर देख कर वह केवल इतना ही कह पाई "ईश्वर तुम्हारा भला करे !"

इन लोगों की गिरफ्तारी में सहायता देने वाले सिंह पहले ही काल के एक दर्वाजे की राह भीतर की ओर भेज दिये गये थे । अब ओल्डविक को भी दो पहरेदार पकड़ कर उसी दर्वाजे के भीतर ले चले । भीतर जाने पर ओल्डविक ने अपने को एक

लम्बे रास्ते में पाया जिसके अगल बगल और भी कई कमरों के जाने के लिये दरवाजे बने हुए थे। इस रास्ते के अन्त में एक खुला हुआ मैदान था, उसी मैदान की ओर वे लोग ओल्डविक को ले चले। मैदान में पैर रखते ही उसने देखा कि वह मैदान चारों ओर मकानों की दीवारों से घिरा तथा एक छोटे से बाग के ढंग का बना हुआ है जिसमें छोटे बड़े सभी प्रकार के पौधे तथा वृक्ष लगे हुये हैं। पेड़ों के नीचे जगह वजगह केने भी रक्खी हुई थीं परन्तु जिस बात ने उसका ध्यान सब से पहले अपनी ओर आकर्षित किया वह यह थी कि जिन सिंहों की सहायता से दोनों गिरफ्तार किये गये थे उनमें से कुछ तो अब बगीचे में टहल रहे थे और कुछ जमीन पर बैठे हुये थे।

जिस फाटक से हो कर उस मैदान में जाना होता था, वही ओल्डविक को लाने वाले वे दोनों संतरी खड़े हो गये और आपस में कुछ बातें करने बाद पुनः पीछे की ओर लौट गये। अपने सामने इस भारी खतरे को देख उसने भी फौरन ही पीछे लौटने का इरादा किया पर पीछे घूमते ही उसने उस फाटक के बन्द देखा जिससे हो कर उस मैदान में उसने पैर रक्खा था। वह जोर जोर से उन संतरियों को पुकारने लगा पर उत्तर केवल ठठा कर हँसने की आवाज भर उसके कानों में पड़ी। अब वह इस समय उन सिंहों के साथ अकेला था।



रानी की कहानी

—०—

इधर बर्था कर्चर जिस इमारत के भीतर ले जाई गई वह उस ओर की सभी इमारतों से भड़कदार सुन्दर तथा लम्बी चौड़ी थी और ऊँचाई भी उसकी कई मंजिलों की थी। सदर दरवाजे के बाहर की ओर कितनी ही सीढ़ियाँ बनी हुई थीं जिन पर चढ़ कर फाटक तक पहुँचना होता था। इन सीढ़ियों के नीचे की ओर पत्थर के कितने ही कहावर सिंह बने हुये थे और ऊपरी भाग में सदर दरवाजे से सटे हुये दो महारावदार खम्भे थे जिनके ऊपर की ओर मनुष्य की खोपड़ियाँ बनी हुई थीं और इन खोपड़ियों पर बैठे हुये दो बड़े बड़े तोतों की मूर्तियाँ थीं। महारावदार फाटक के ऊपरी भाग तथा इमारत के बाहरी हिस्सों में भी तोतों, सिंहों तथा बन्दरों की कितनी ही मूर्तियाँ बनी हुई थीं। फाटक पर लगभग बीस कहावर जवान इधर से उधर टहलते

हुये पहरा दे रहे थे जिनकी पीली वदियों के पीठ तथा धोले वाले भाग पर भी तोतों के चित्र बने थे ।

जैसे ही ये लोग फाटक पर पहुँचे उन संतरियों में से एक ने आगे बढ़ कर उन्हें रोक दिया और वर्या को साथ लाने वाले संतरियों से कुछ बातें करने लगे ।

फाटक बन्द था । उन दोनों संतरियों से बातें कर लेने बाद वह संतरी अपने साथियों की ओर मुड़ा और उनसे कुछ बोलने बाद उसने अपने हाथ के बरछे की मूठ से फाटक के विशाल दर्वाजों को कई बार खटखटाया । थोड़ी ही देर बाद वे भारी दर्वाजे भीतर की ओर खुलने लगे और तब वर्या कर्चर ने देखा कि दर्वाजे के हर एक पल्ले को खोलने के लिये छः छः हवशी भीतर की ओर उन्हें खींच रहे हैं । भीतर जाने पर वर्या को कुछ देख और भी आश्चर्य हुआ कि ये हवशी दर्वाजों के भीतर भाग में लगे हुये मोटे मोटे सिक्कड़ों में मजबूती के साथ बँधे हुये हैं । दर्वाजा खुलने पर वर्या को वहाँ तक लाने वाले संतरी पीछे की ओर वापस कर दिये गये और फाटक पर के दो संतरियों ने उनका स्थान ग्रहण कर लिया ।

फाटक से थोड़े ही फासले पर एक खूब ही लम्बी चौड़ी बारहदरी थी जिसके बीचोबीच में साफ पानी से भरा एक तालाब था । इस बारहदरी तथा तालाब के चारों ओर भी जगह बजंगह तोतों, सिंहों तथा बन्दरों की मूर्तियाँ बनी हुई थी । बारहदरी के तीन ओर भीतर की ओर जाने के लिये महाराजदार इबति

वने थे और इन दरवाजों में दाहिनी ओर वने दरवाजे के भीतर बर्था कर्चर ले जाई गई ।

दरवाजे के भीतर घुसते ही दाहिनी ओर वाले कमरे में पीली वर्दी पहने और भी कितने ही संतरी खड़े तथा बैठे हुये थे और कमरे की दीवार पर वरखे, तलवार, छुरे, गँडासे आदि कितने ही प्रकार के हथियार जगह वजगह लटके हुये थे । ठीक सामने की ओर सीढ़ियाँ चढ़ने पर एक और वन्द दरवाजा मिला जिसके बाहर पीली ही वर्दी पहने दूसरे पहरेदार खड़े हुये थे । बर्था के साथ वाले संतरियों ने इनसे कुछ बातें कीं जिस पर फाटक का एक संतरी दरवाजा खोल कर भीतर की ओर चला गया और ये लोग दरवाजे के बाहर ही रुके खड़े रहे ।

लगभग पंद्रह मिनट बाद वह संतरी वापस लौटा । इस स्थान पर बर्था के साथी संतरियों की पुनः बदली हो गई और बर्था भीतर की ओर ले जाई गई ।

तीन और कमरों तथा तीन ही दरवाजों को पार करने बाद तिन दरवाजों पर हर बार उसके साथी संतरी बदलते गये बर्था कर्चर एक छोटे से कमरे में पहुँचाई गई जिसमें लाल पोशाक पहने एक आदमी इधर से उधर टहल रहा था । इस लाल पोशाक वाले की छाती पर तथा पीठ की ओर भी बड़े बड़े तोतों के चित्र बने थे और सिर पर जो भारी टोप था उस पर भी एक बड़े से तोते की मूर्ति बैठी हुई थी ।

इस कमरे की दीवारों पर पर्दे लटकते दिखाई दे रहे थे

जिन सभी पर तोतों, सिंहों तथा बन्दरों के चित्र थे। कमरे के फर्श पर भी तोतों के सुनहले चित्र थे तथा भीतरी छत पर भी कितने ही पर फैला कर उड़ते हुये तोतों के चित्र बने थे।

लाल पोशाक पहने जिस आदमी पर इस समय बर्था कर्चर की निगाह पड़ी वह बड़ा ही हृष्ट पुष्ट तथा कद्दावर था। शहर के घुसने बाद से लेकर अब तक ऐसा कद्दावर तथा मोटा मनुष्य उसे कोई भी देखने में नहीं आया था। उसके शरीर के पार्चमेंट के समान चमड़े पर जगह वजगह झुर्रियाँ दिखाई दे रही थीं और वृद्धावस्था के सभी चिह्न दृष्टिगोचर हो रहे थे। उसकी सुली हुई कलाईयाँ उसके ताकतवर होने का परिचय दे रही थीं किन्तु चेहरा उसके हृद् दर्ज के बेवकूफ होने के चिह्न प्रगट कर रहा था। असल में ऐसा भद्दा और बेडौल आदमी आज तक बर्था कर्चर की दृष्टि में नहीं आया था।

जिस समय बर्था कर्चर उसके सामने पहुँचाई गई उसके कुछ मिनट बाद तक तो ऐसा मालूम हुआ मानो उसे बर्था के वहाँ आने का कुछ ज्ञान ही नहीं है। वह पूर्ववत् इधर से उल्टा टहलता रहा। कमरे के अन्तिम छोर पर पहुँच अभी उसकी पीठ बर्था ही की ओर थी कि वह एकाएक पीछे घूम कर बर्था की ओर भीषण वेग से झपटा।

बर्था एक दम घबड़ा गई और उससे बचने के लिये दोनों हाथ आगे बढ़ा कर उसने पीछे की ओर हटना चाहा परन्तु उसके पास खड़े संतूरियों ने उसे पकड़ लिया और उसे

लाचार अपने स्थान पर ही खड़े रहना पड़ा ।

परन्तु वह आदमी बर्था से थोड़े फासले पर आकर खड़ा हो गया । कुछ देर तक तो वह अपनी छोटी छोटी आँखों से बर्था को घूर कर देखता रहा इसके बाद बड़े ही जोर से ठठा कर हँस पड़ा । लगभग पांच मिनट तक उसके चेहरे पर बड़ी ही प्रसन्नता के भाव दिखाई देते रहे इसके बाद वह एकाएक गम्भीर हो गया और तब उसके पास पहुँच कर उसकी सभी चीजों की जाँच करने लगा । सब से पहले उसने बर्था के बाल अपने हाथ में ले कर देखे और तब उन कपड़ों की जाँच की जिसे वह पहने हुई थी । इसके बाद उसने उसे अपना मुँह खोलने का इशारा किया । बर्था के मुँह खोलने पर वह बड़ी देर तक आश्चर्य में मरा उसके दाँतों को देखता रहा इसके बाद दोनों संतरियों को बुला कर उसने बर्था के दाँत दिखाये और तब अपना मुँह खोल अपने लम्बे तथा नोकीले दाँतों की ओर इशारा करने लगा ।

इसके बाद उसने पुनः इधर से उधर टहलना शुरू किया और पन्द्रह मिनटों तक बराबर टहलता ही रहा इसके बाद एकाएक संतरियों की ओर देख कर उसने उन्हें कोई हुक्म दिया जो औरन बर्था को उस कमरे से बाहर की ओर ले चले ।

संतरी बर्था कर्चर को कितने ही कमरों तथा रास्तों से घुमाते हुये एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ से सकरी सीढ़ियों का एक सिलसिला ऊपर की ओर चला गया था । अब ये लोग सीढ़ियाँ चढ़ने लगे । सीढ़ियाँ जहाँ समाप्त हुई थी वहाँ ठीक सामने की

और एक कमरे का दर्वाजा था जिस पर हाथ में भाला लिये एक संतरी खड़ा पहरा दे रहा था। बर्था के साथ के संतरियों में से एक ने आगे बढ़ कर कुछ कहा जिसे सुन उसने दर्वाजा खोल दिया और ये लोग भीतर चले गये।

अब बर्था कर्चर ने अपने को एक ऐसे कमरे में पाया जिसकी छत बहुत ही नीची थी। यह कमरा भी अन्य कमरों की भाँति सजा हुआ था परन्तु इसकी सजावट में सादगी विशेष रूप से थी। दूसरी बात ध्यान देने की यह थी कि इस कमरे की प्रायः सभी खिड़कियों में लोहे के छड़ों के जंगले लगे हुये थे और एक कोने में एक कोच पड़ी थी जिस पर एक बूढ़ी औरत बैठी थी।

जैसे ही बर्था कर्चर की निगाह इस औरत पर पड़ी उसे यह देख बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि उसकी सूरत शक्त अंग्रेज महिलाओं से बहुत कुछ मिलती जुलती थी। शहर भर में अपनी जाति की युवतियों से मिलती जुलती बर्था ने यह पहली ही औरत देखी थी अस्तु इसे देख उसका आश्चर्य बहुत ही बढ़ गया। इसकी आँखों से बुद्धिमत्ता के चिह्न प्रगट होते थे और समूचे चेहरे पर सूरियाँ पड़ी हुई थीं।

उस औरत ने भी बर्था को कमरे में आते देख लिया था। संतरियों में से एक ने आगे बढ़ कर उसे धीरे से कुछ कहा और तब बर्था को वहीं छोड़ कमरे के बाहर हो गये।

वह बूढ़ी औरत अपने स्थान से उठी और अपने दोनों हाथों की छड़ियों के सहारे धीरे धीरे बर्था की ओर बढ़ी। उसने

समीप पहुँच कुछ देर तो वह ध्यान से उसकी सूरत देखती रही इसके बाद अंग्रेजी भाषा में बोली, "तुम बाहरी दुनिया से आई हो, ईश्वर करे तुम मेरी भाषा को समझती होवो।"

बर्था ने उत्तर दिया, "हाँ हाँ मैं तुम्हारी भाषा अच्छी तरह समझती हूँ। अंग्रेजी भाषा का मुझे अच्छी तरह ज्ञान है।"

बुढ़िया बोली, "ईश्वर को धन्यवाद ! मुझे अब तक यह भी विश्वास नहीं था कि मैं ऐसी अंगरेजी बोल सकूँगी जिसे कोई दूसरा समझ सके। आज साठ वर्षों से मुझे केवल इन पागलों की उँट पटांग भाषा भर ही सुनाई दी है। इन साठ वर्षों में अंग्रेजी का एक शब्द भी मेरे कानों में नहीं पड़ा है। मासूम बच्ची ! किस बदकिस्मती ने तुम्हें इन दुष्टों के हाथ ला फँसाया ?"

बर्था ने पूछा, "तुम मुझे कोई अंग्रेज महिला मालूम होती हो क्या यह बात सत्य है और क्या तुम वास्तव में साठ वर्षों से इन दुष्टों के बीच रह कर अपना जीवन व्यतीत कर रही हो ?"

सम्मतिसूचक सिर हिलाती हुई बुढ़िया बोली, "हाँ ! इन साठ वर्षों में एक दिन भी मैं इनके इस महल से बाहर नहीं निकली हूँ। आओ मेरे साथ इस कोच पर बैठो।"

इतना कह कर उस बुढ़िया ने अपने मांसविहीन पतले हाथ वर्षों की ओर बढ़ाये। बर्था ने उन आगे बढ़े हुये हाथों को अपने मुलायम हाथों में पकड़ लिया और उसे सहारा दे कर कोच के पास ले गई। इसके बाद दोनों ही कोच के ऊपर जा बैठे और तब बुढ़िया पुनः बोली, "प्यारी बच्ची तुम बेकार

ही इन दुष्टों के हाथ फँस कर यहाँ तक चली आई। ऐसा न कर के यदि तुमने पहले ही अपनी जान दे दी होती तो अच्छा था। मैं जिस समय इनके हाथ फँस कर यहाँ आई तो मेरी भी इच्छा आत्महत्या करने की हुई पर मैंने यही समझ कर ऐसा न किया कि सम्भव है ऐसा कोई आदमी यहाँ आ जाय जो मुझे यहाँ से छुड़ा कर बाहर ले जाय परन्तु आज तक कोई भी न आया। अच्छा पहले यह बताओ कि तुम इनके हाथ कैसे फँसी ?

बर्था ने संक्षेप में ही अपना सब हाल उसे सुना दिया बिने सुन बुढ़िया बोली, “तो इसके यह मानी है कि तुम्हारा साथ कोई युवक भी इस समय इसी शहर में है ?”

बर्था बोली, “हाँ ! परन्तु न तो मैं यही कह सकती हूँ कि वह कहाँ है न यही बता सकती हूँ कि उसके साथ किस प्रकार का व्यवहार करने का इन लोगों ने निश्चय किया है ।”

बुढ़िया ने उत्तर दिया, “इसे कोई भी नहीं बता सकता। ये लोग स्वयं ही नहीं बता सकते कि दो मिनट बाद ही ये स्वयं मर करोंगे पर मेरे खयाल में तुम इतना तो विश्वास रखो कि तुम्हारा उसकी भेंट अब किसी प्रकार भी नहीं हो सकती ।”

बर्था ने कहा, “परन्तु इन लोगों ने तुम्हारी तो जान नहीं ली यद्यपि तुम्हें यहाँ रहते साठ वर्ष के लगभग हो गये !”

बुढ़िया बोली, “नहीं इन्होंने मेरी जान नहीं ली और मेरा खयाल है इसी प्रकार ये तुम्हारी भी जान नहीं लेंगे परन्तु गोरे

दिन इनके बीच रहने पर तुम ईश्वर से मनाने लगोगी कि ये लोग तुम्हें मार डालें ।”

वर्था ने पूछा, “आखिर ये लोग हैं कौन ? इनके ऐसे मनुष्य मैं आज तक तो कहीं भी नहीं देखे ! और यह भी बताओ कि तुम इनके हाथ कैसे फँसी ?”

बुढ़िया ने कहा, “इस बात को एक जमाना गुजर गया । उस समय मेरी अवस्था केवल बीस वर्ष की थी । ओह ! उस समय मैं सुवर्ती थी और सुन्दर थी परन्तु अब ! अब मेरी सूरत की ओर देखो वच्छी ! मैं स्वयं अपनी सूरत देख नहीं सकती क्योंकि सिवाय एक बहुत ही छोटे शीशे के जो मेरे नहाने के कमरे में रक्खा हुआ है मेरे पास मुँह देखने का और कोई भी साधन नहीं है फिर भी हाथ से टटोल कर मैं उन मुर्रियों को देख सकती हूँ जो मेरे चेहरे पर पड़ी हुई हैं ।”

मेरे पिता पादरी थे और अफ्रीका के इन भीषण जङ्गलों में घुस घुस कर वे बराबर धर्म का उपदेश दिया करते थे । एक समय अरब लोगों की एक टोली ने हम लोगों पर हमला किया और जिस गाँव में उस समय हम लोग उपदेश दे रहे थे वहाँ के औरतों, बच्चों तथा धन दौलत सभी को उन लोगों ने लूट लिया । मैं भी उन औरतों में से एक थी अस्तु उसी गाँव के कुछ आदिमियों को रास्ता दिखाने के लिये पकड़ कर वे लोग वहाँ से सीधे दक्खिन की ओर रवाना हुए । सम्भवतः उनका इरादा सभी औरतों को किसी काले सुल्तान के हarem के लिये बेच देना ही था ।

कमी कमी वे लोग इस बात पर भी बहस किया करते थे कि मुझे बेचकर कितनी भारी रकम उन लोगों के हाथ आवेगी और इस इरादे से कि उनकी यह रकम कम न होने पावे उन लोगों ने मेरे आराम की ओर विशेष रूप से ध्यान देना आरम्भ किया। यही कारण था कि मुझे रास्ते में जरा भी तकलीफ होने न पाई।

हमारे गाँव के आदमी जहाँ तक की भूमि से परिचित थे वहाँ तक तो हम लोग बड़े मजे में चले आये परन्तु जैसे ही हम लोगों ने वहाँ से आगे के वीरान प्रदेश में पैर रखता अरब लोगों ने यह समझने में देर न लगी कि हम लोग बेतरह आ फँसे। धीरे-धीरे वे लोग बराबर आगे ही पश्चिम की ओर बढ़े चले गये।

परन्तु इस रेगिस्तान में दो ही दिन आगे बढ़ने पर भोजन का इतना कष्ट होने लगा कि अरब लोगों को भोजन के लिये अपने घोड़े तक मार डालने पड़े और थोड़ा आगे चलने पर जब यह निश्चय हो गया कि साथ के जानवर अब और आगे बढ़े योग्य नहीं तो वे सब के सब मार डाले गये और उनका मांस साथ के हबशियों पर लाद दिया गया। परन्तु ये लोग भी इस वीरान प्रदेश में कहाँ तक अपनी जीवनरक्षा कर सकते थे। एक-एक कर के सभी मरने लगे यहाँ तक कि केवल गिनती के ही आदमी बाकी बच गये।

सर्दार की मेरे ऊपर बड़ी ही कृपा थी सम्भवतः इस लिये कि उनके खयाल से मुझे बेचकर एक भारी रकम पैदा की जा सकती थी अस्तु वे मेरे सुविधा का सबसे अधिक हिसाल रखते थे।

तबीजा यह हुआ कि मुझे और सर्दार को छोड़ कर बाकी सभी लोग मौत के घाट उतर गये ।

किसी प्रकार अपनी जीवनरक्षा करते हुए हम लोग आगे बढ़े और अन्त में एक बड़ी ही सुन्दर घाटी पर हम लोगों की दृष्टि पड़ी जिसे देख हम लोगों को बहुत कुछ आशा वैधी कि वहाँ अच्छे अच्छे शिकार मिलेंगे । हमें क्या मालूम था कि इतनी दूर आ कर अन्त में हम लोगों को उसी प्रकार इन पागलों के हाथ पड़ना होगा जिस प्रकार तुम लोग इनके हाथ पड़े ।

जंगल के बीच से गुजरते समय तुमने देखा होगा कि वहाँ बन्दरों और तोतों की कमी नहीं है और शहर में पैर रखने पर तुम्हें यह भी मालूम हुआ होगा कि सजावट के कामों में इनके तथा सिंहों के चित्र तथा मूर्तियों से कितना काम लिया गया है । वहाँ के तोतों में यह विशेषता है कि ये ठीक यहाँ के आदमियों की भाँति ही बोली बोलते हैं । यहाँ के आदमियों को यह भी विश्वास है कि बन्दर तोतों से बातचीत करते हैं और तोते उनकी बातें आ कर इन लोगों से कह देते हैं । यद्यपि यह बात विश्वास के योग्य नहीं है परन्तु मैंने अच्छी तरह पता लगाया है कि यह बात बिल्कुल सच है क्योंकि मैं साठ वर्षों से इनके बीच रहती आई हूँ और यहाँ का कोई भी भेद मुझसे छिपा नहीं है ।

जब अरब सर्दार का क्या हुआ यह मुझे आज तक मालूम न हो सका । एगो पचीसवाँ उस समय यहाँ का राजा था । तब से कितने ही राजा मेरे सामने हो चुके । वह बड़ा ही खूबखार

था पर खैर खूंखार तो यहाँ के सभी राजा होते हैं।”

बर्था ने पूछा, “उनमें क्या ऐब होते हैं ?”

बुढ़िया बोली, “वे सभी सनकी होते हैं, क्या यह बात अब तक तुम्हारी समझ में नहीं आई। यों तो ये सभी चिड़ियाओं की इज्जत करते हैं परन्तु तोते इनके प्रधान देवता हैं। एक तोता इन लोगों ने यहाँ एक बड़े सुन्दर कमरे में रक्खा हुआ है। वह इनके देवताओं का भी देवता है। इस समय वह बहुत ही क्रोध हो गया है। मेरे यहाँ आने पर एगो ने जो बात कही थी वह यदि सच है तो उसे कम से कम तीन सौ वर्षों का होना चाहिये। इन लोगों के पुरखा कुछ थोड़े से आदमी उत्तर की ओर से आते थे, यहाँ आ कर वे एक दम रास्ता भूल गये अस्तु उन्होंने अपने मेहनत से इस वीरान प्रदेश में भी ऐसे-ऐसे महल खड़े कर दिये। पानी इधर बहुत कम बरसता है किन्तु प्राकृतिक स्रोतों से सहायता ले कर उन्होंने ऐसे हरे भरे बाग तक लगा दिये। वे बातें इन लोगों की बुद्धि का परिचय देती हैं। सब से सारी आश्चर्य की बात यह है कि वे अन्य पालतू जानवरों की तरह सिंहों को भी पालते हैं जिसका नमूना तुमने देखा ही होगा परन्तु इन सिंहों को दृष्ट पुष्ट तैयार कर के ये लोग उन्हें खा जाते हैं। मेरा खयाल है पहले सिंह का मांस धार्मिक दृष्टि से काम में लाया जाता था परन्तु धीरे धीरे वह उन्हें स्वादिष्ट मांस होने लगा यहाँ तक कि ये लोग अब केवल सिंहों का ही मांस खाते हैं। ये मर जाना प्रसन्न करेंगे किन्तु चिड़ियाओं अथवा कहीं

का मांस कमी भी खाने के काम में न लावेंगे, और सब पालतू जानवरों को ये लोग दूध, चमड़े अथवा सिंहों के खाने के काम में लाते हैं। शहर के दक्षिणी भाग में हरे भरे खेत उन्होंने तैयार किये हैं जहाँ सूअर, हरिन बारहसिंहे आदि सिंहों के भोजन के लिये और बकरियाँ दूध के लिये पाली जाती हैं।”

वर्या ने पूछा, “और साठ वर्ष इनके बीच रहने पर भी इन्होंने तुम्हें किसी तरह का नुकसान न पहुँचाया ?”

बुढ़िया बोली, “यह तो मैंने नहीं कहा कि इन लोगों ने मुझे किसी तरह का भी नुकसान नहीं पहुँचाया। हाँ इन्होंने मुझे जाल से नहीं मारा यह निश्चित है।”

वर्या ने पूछा, “अच्छा तुम यहाँ पर किस हैसियत में रक्खी गई हो ? यह सवाल मैं इस लिये करती हूँ कि कदाचित मेरी भी वही स्थिति होगी जैसी तुम्हारी अब तक रही है।”

बुढ़िया ने कहा, “हाँ, एगो पच्चीसवें ने मुझे अपनी रानी बनाया परन्तु उसकी और भी कई रानियाँ थीं, यहाँ के राजाओं की सभी रानियाँ औरतें नहीं होतीं। मेरे आने से दस वर्ष बाद तक एगो की हत्या नहीं हुई जैसी दशा कि यहाँ के प्रायः सभी राजाओं की हुआ करती है। इसके बाद दूसरे राजा ने मुझे अपनी रानी बनाया। इसी तरह अब तक मेरे साथ होता आया। इस समय सब से बड़ी रानी मैं ही हूँ। बहुत कम औरतें यहाँ वृद्धावस्था तक जीवित रहती हैं। बहुधा ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाया करती है कि उन्हें आत्महत्या कर लेनी पड़ती है। यहाँ की औरतें

बड़ी खूंखार होती हैं ईश्वर न करे किसी से तुम्हारा सामना हो जाय। मेरा आज तक किसी औरत से सामना न हुआ है।”

वर्था ने पूछा, “तो क्या यहाँ से निकल भागने का कोई उपाय नहीं है ?”

बूढ़ी बोली, “नहीं ! देखो यहाँ की खिड़कियों में छद्म लगे हुए हैं और दर्वाजों पर हवशियों का पहरा है। जिन जिन कमरों में औरतें रहती हैं सभी का ऐसा ही इन्तजाम है। फिर भी मान लो कि किसी तरह इस कमरे के बाहर भी निकल गये तो सड़क तथा इसके बाद शहर का फाटक पार करना कोई सहज काम नहीं फिर यदि किस्मत से शहरपनाह के बाहर भी निकल गये तो भयङ्कर जङ्गल और उसके बाद वही वीरान प्रदेश है जिससे बाहर कोई भी जिन्दा नहीं निकल सकता अस्तु यहाँ से भाग निकलने की तो आशा ही करना बृथा है।

हजारों वर्षों से कोई भी आदमी इस शहर से बाहर नहीं निकल पाया है और इन साठ वर्षों में केवल तुम्हीं को इस शहर का पता लगा है। हाँ तुमसे पहले एक बड़ा ही कहावर जवान अवश्य इस ओर आया था ऐसी दन्तकथा यहाँ सुनाई देती है।

हुलिये से वह कोई स्पेन-देशीय मनुष्य मालूम होता था जिसके सिर पर किसी धातु का बना टोप था। वह किसी प्रकार जंगल पार कर के इस शहर के फाटक तक आ पहुँचा था। वहाँ के आदमी उसे गिरफ्तार करने के लिये उस पर दूट पड़े परन्तु

उसने अपनी भारी तलवार से कितनों ही को मार गिराया और वहाँ से चलता हुआ परन्तु वह उस वीरान भूमि को पार न कर सका। इस भय से कि कहीं वह अन्य लोगों को साथ ला कर इस शहर पर धावा न बोल दे यहाँ के राजा ने उसकी जान लेने के लिये कितने ही आदमी एक साथ यहाँ से रवाना किये किन्तु रेगिस्तान में केवल उसकी ठठरी भर दिखाई दी। मांस गिद्ध लोग साफ कर चुके थे। ईश्वर जाने यह किस्सा सच है या झूठ।”

बर्था बोली, “अवश्य सच है क्योंकि मैंने स्वयं अपनी आँखों से उस बहादुर की ठठरी कवच तथा टोप वगैरह देखा है।”

ठीक इसी समय दरवाजा खुला। एक हवशी हाथों में दो थालियाँ जिसमें कई छोटी छोटी रकाबियाँ थी ले कर कमरे के भीतर आया और उन्हें उसने कोच के बगल वाले एक टेबुल पर रख दिया। उस आदमी के भीतर आते ही भोजन के सामानों से उबती हुई हृदयग्राही सुगन्ध ने बर्था की नाक में घुस कर उसे इस बात की याद दिला दी कि उसे बहुत तेज भूख लगी हुई है। खाने का सामान जाँचने के लिये बूढ़ी का इशारा पा कर बर्था टेबुल के पास पहुँची और उन सामानों को ध्यान से देखने लगी। बड़ी थाली तो चीन की थी परन्तु उसमें रक्खी सभी छोटी छोटी रकाबियाँ ठोस सोने की थीं। बर्था ने आश्चर्य से देखा कि उन सामानों में एक कांटा तथा चम्मच भी रक्खा हुआ है जिनकी बनावट का ढंग बहुत पुराना होने पर भी वे ठीक सम्य देशों जैसा काम दे सकते हैं। इनकी नोकें तो लोहे या

फौलाद की थी और बाकी का भाग ठोस सोने का था।

छोटी रकावियों में मांस तरकारियाँ, फल, दूध वगैरह कभी से सजा कर रखे हुये थे तथा एक शीशे की सुराही भी थी विल्ली सम्भव है किसी प्रकार की शराब भरी हुई हो। बर्था को इतनी भूख लगी हुई थी कि उसने बूढ़ी के उस टेबुल तक पहुँचने की भी राह न देखी और खाते समय वह कसम खा कर इस बात को कहने के लिये तैयार थी कि वैसा स्वादिष्ट खाना उसने अपने जीवन भर में कभी नहीं खाया था। बूढ़ी भी धीरे धीरे टेबुल की ओर बढ़ी और उसके बगल में जा बैठी। छोटी छोटी रकावियों को थाल में से निकाल कर अपने सामने टेबुल पर सजाई हुई वह बोली, “भूख भी क्या चीज है जो ऊँच नीच कुछ भी नहीं देखती, यदि एक हफ्ता पहले तुम्हें कोई बिल्ली का गोश्त खाने को कहता तो कदाचित्त तुम कभी भी न खाती।”

बर्था ने आश्चर्य से पूछा “क्या कहा, बिल्ली का गोश्त !”

बुढ़िया बोली, “सिंह चीते बिल्ली ही की जाति के तो हैं।”

बर्था बोली, “तो क्या तुम्हारे कहने का यह मतलब है कि मैं इस समय सिंह का मांस खा रही हूँ ?”

बुढ़िया ने कहा, “हाँ ! परन्तु ये लोग इसे एक ऐसे अजीब ढंग से पकाते हैं कि यह बड़ा ही स्वादिष्ट हो जाता है। कुछ दिनों में तुम्हें ऐसी आदत पड़ जायगी कि सिवाय इसके और कोई खाना तुम्हें अच्छा ही नहीं मालूम होगा।”

मुस्कराती हुई बर्था बोली, “वास्तव में यह ऐसा स्वादिष्ट बत

है कि यदि तुमने बताया न होता तो मैं कभी न पहचान सकती।”

बुढ़िया बोली, “मुझे भी यह बड़ा ही स्वादिष्ट मालूम होता है। ये सिंह बड़ी खबरदारी से रखे जाते हैं और ऐसा ऐसा मांस उन्हें खिलाया जाता है जो उन्हें स्वादिष्ट बना देता है।”

ये बातें हो ही रही थीं कि कमरे का दरवाजा खुला और काली वर्दी पहने एक संतरी ने भीतर आ कर बूढ़ी से कुछ बातें कीं। उसके चले जाने पर बुढ़िया बोली, “यहाँ के राजा ने यह आज्ञा दी है कि तुम फौरन तैयार कर के उनके पास भेज दी जाओ। तुम्हें मेरे साथ ही रहने का हुक्म मिला है।”

बर्था ने पूछा, “तैयार करने के क्या मतलब ?

वह बोली, “तुम्हें नहला कर यहाँ का कपड़ा पहनाया जायगा।”

बर्था बोली, “क्या ऐसा कोई भी उपाय नहीं है कि मैं सुविधा से अपनी जान दे सकूँ ?”

भोजन का काँटा दिखाती हुई बुढ़िया बोली, “बस केवल यही इथियार तुम्हें यहाँ मिल सकता है परन्तु मुझे आशा नहीं कि इससे तुम्हारा काम किसी प्रकार भी चल सकेगा।”

बुढ़िया की बात सुन कर बर्था काँप उठी। अपना एक हाथ बर्था के कंधे पर रख बुढ़िया उसे सान्त्वना देती हुई बोली, “सम्भव है राजा तुम्हें केवल एक बार देख कर ही वापस भेज दे। एगो पञ्चीसवें ने जब मुझे पहले पहल बुलाया था तो यह देख कर कि मैं उसकी बात बिल्कुल ही नहीं समझ सकती उसने मुझे फौरन ही यह आज्ञा दे कर वापस कर दिया था कि मुझे

यहाँ की भाषा सिखाई जाय । इसके बाद एक वर्ष तक वह मुझे एक दम भूल गया । कभी भी ऐसा भी होता था कि वर्षों तक मुझे राजाओं की सूरत तक नहीं दिखाई देती थी । एक राजा ऐसा भी था जिसकी सूरत पाँच वर्षों तक मेरे देखने में नहीं आई । आशा का कभी परित्याग न करना चाहिये ।”

बुढ़िया बर्था को ले कर बगल के कमरे में पहुँची जिसके बीचों-बीच एक छोटा सा तालाब बना हुआ था । बर्था ने उसी में स्नान किया और तब बुढ़िया ने उसे उस देश का कपड़ा ला कर पहनाया । अब बर्था की सुन्दरता पहले से भी अधिक हो गई ।

इन कामों से निश्चिन्त हो कर बर्था बुढ़िया के साथ पुनः पहले कमरे में वापस आ गई । जब शाम हो गई और चारों ओर रोशनियाँ बल गईं तो एक दूत ने आ कर जेनीला नामक उस बुढ़िया को वहाँ के राजा हेरोग का हुक्म सुनाया कि वह फौज ही बर्था को साथ ले कर उनके सामने उपस्थित हो । बुढ़िया के साथ रहने की बात सुन बर्था को कुछ सन्तोष हुआ ।

यहाँ से ये लोग नीचे के एक कमरे में पहुँचाये गये । बुढ़िया ने बर्था को समझाया कि वह कमरा द्वार वाले कमरे के बगल में पड़ता है । इस कमरे में पीली वर्दी पहने कितने ही संतों अपना सिर नीचा किये सुस्त बैठे हुये थे । उनमें से कितनों ही ने तो इन दोनों की ओर देखा तक नहीं और जिन्होंने देखा भी उन्होंने इनकी ओर अधिक ध्यान न दिया ।

कुछ देर तक ये लोग इस कमरे में खड़े रहे । सहसा बगल

की ओर से निकल एक युवक ने उस कमरे में पैर रक्खा। उस युवक की भड़कदार पोशाक पर तोतों के चिह्न बने हुये थे और सिर पर एक छोटा सा मुकुट रक्खा था। बुढ़िया ने बर्था के कान में धीरे से कहा, “यह यहाँ का राजकुमार मेटक है और राजा से मुलाकात करने के लिये जा रहा है।”

राजकुमार उस कमरे को पार कर के राजा के कमरे की ओर बढ़ ही रहा था कि उसकी निगाह एकाएक बर्था कर्चर पर पड़ी। वह फौरन ही खड़ा हो गया और एक मिनट तक ध्यान से बर्था की सूरत देखता रहा। बर्था घबड़ा उठी और मुंह नीचा कर के दूसरी ओर घूम गई। एक क्षण तक मेटक का समूचा शरीर काँपता रहा इसके बाद जोर से चिल्ला कर वह बर्था की ओर दौड़ा और उसे अपनी मजबूत कलाईयों से उसने पकड़ लिया।

बड़ी भारी गड़बड़ी मच गई। वे दोनों संतरी जिन्हें इन दोनों को राजा साहब के सामने पेश करने का काम सपुर्द हुआ था चिल्ला चिल्ला कर राजकुमार के चारों ओर घूमने लगे मानों वे उससे उस युवती को छोड़ देने के लिये कह रहे हों परन्तु राजकुमार के शरीर पर हाथ लगाने की हिम्मत किसी को भी न होती थी। इसी समय वहाँ बैठे अन्य संतरी भी जिन्हें कदाचित राजकुमार के पागलपन पर दुःख हो रहा था वहाँ आ पहुँचे और जोर जोर से चिल्ला कर उछल कूद मचाने लगे।

बर्था ने पागल राजकुमार से अपने को छुड़ाने का बहुत कुछ प्रयत्न किया परन्तु उसने अपने चारों हाथ से उसे इस मजबूती

के साथ पकड़ा हुआ था मानों वह किसी छोटे से बच्चे को पकड़े हुये हो और अपने दाहिने हाथ की तलवार का वार उन लोगों पर कर रहा था जो उसके नजदीक थे।

एक संतरी उसकी तलवार की चोट खा तथा जोर से चीख कर बीचोबीच से दो टुकड़े हो गया और जमीन पर गिर पड़ा।

इस बीच में मेटक बर्था को मजबूती से पकड़े धीरे धीरे बगल के दरवाजे की ओर हटता जा रहा था। खून देखते ही संतरी लोग अपने अपने हाथों की तलवारें फेंक आपस में ही गुथ गये और अपने नाखूनों तथा दाँतों से एक दूसरे को घायल करने लगे। कुछ तो राजकुमार से लड़ने तथा कुछ उसकी रक्षा के लिये आगे बढ़े। एक ओर बैठा एक संतरी जोर से ठठा कर हँस रहा था और जैसे ही राजकुमार बर्था को ले कर दरवाजे में घुसा बर्थाने एक संतरी को घुटनों के बल बैठ कर अपने दाँत उस मरे हुए संतरी की लाश में गड़ाते देखा।

इस गड़बड़ी में जेनीला भी बर्था के साथ ही साथ दरवाजे तक जा पहुँची थी परन्तु इसी समय मेटक की निगाह उस पर पड़ गई और उसने अपनी तलवार का वार उस पर भी किया। बुढ़िया की किस्मत अच्छी थी जो तलवार बगल के खम्भे पर बैठी और जेनीला जिसे उस स्थान का साठ वर्षों का अनुभव था तेजी से अपने कमरे की ओर भागी।

दरवाजे से बाहर निकल मेटक ने अपनी तलवार न्यान में रख ली और बर्था को उठा कर एक ओर का रास्ता लिया।

टार्जन का प्रवेश

—०—

सन्ध्या के कुछ ही देर पहले एक बहुत ही थके हुये उड़ाके ने कर्नल केपेल के सामने पहुँच उन्हें सलाम किया और अदब के साथ एक ओर खड़ा हो गया ।

कर्नल ने बड़ी ही उत्सुकता से उससे सवाल किया, “कहो टामसन क्या हाल चाल है । सभी उड़ाके वापस आ गये परन्तु बोल्डविक का किसी को भी पता न लगा न उसके हवाई जहाज की ही कुछ खबर मिली !”

टामसन बोला, “हवाई जहाज का तो पता मैंने लगा लिया ।”
आश्चर्य से उसकी ओर देखते हुये केपेल ने पूछा, “क्या तुम सच कह रहे हो ?”

टामसन ने उत्तर दिया, “हाँ किन्तु वह ऐसी जगह था जहाँ पहुँचना आसान काम नहीं है । एक बड़ी ही पैचीली

तथा नीची घाटी के बीच में वह पड़ा हुआ था और उसके चारों ओर एक सिंह चक्कर काट रहा था। ऊपर की ओर एक सुविधाजनक स्थान पर अपना हवाई जहाज उतार मैंने उस जहाज को जाने का इरादा किया परन्तु जब वह सिंह एक घण्टे तक रुक देखने पर भी उसके पास से न हटा तो लाचार मैं पुनः अपने हवाई जहाज पर उस स्थान का चक्कर काटने लगा। क्या बताऊँ मुझे पागल न समझियेगा, वहाँ से कुछ मील दक्खिन की ओर मेरी निगाह एक बड़े ही सुन्दर शहर पर पड़ी जिसमें बाकायदा सड़कें, बाग, नहरें तालाब मीनारें तथा गुम्बद आदि बने हुये थे।”

कर्नल ने मुस्कुरा कर टामसन की ओर देखा और बोले, “टामसन इधर तुम्हें मेहनत पड़ी है इसी से कदाचित् तुम्हारा दिमाग कुछ खराब हो गया है और तुम ऐसी बेसिर पैर की बातें कर रहे हो। जाओ थोड़ा आराम करो तो सब ठीक हो जायगा।”

युवक अफसर को कर्नल की यह बात कुछ बुरी मालूम हुई। उसने उत्तर दिया, “क्षमा कीजियेगा श्रीमान! मैं जो कुछ भी आप से कह रहा हूँ वह एक दम सच है। उस शहर के ऊपर मैं कितने ही चक्कर काटे। सम्भव है ओल्डविक किसी प्रकार इसी शहर में जा पहुँचे हों अथवा वहाँ के आदमियों ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया हो।”

कर्नल ने पूछा, “क्या उस शहर में आदमी लोग भी चलते फिरते नजर आते थे।”

टामसन ने उत्तर दिया, "हाँ मैंने उन्हें सड़कों पर घूमते फिरते देखा है।"

कर्नल ने पूछा, "क्या तुम्हारे खयाल में अपनी फौज उस स्थान तक पहुँच सकती है?"

टामसन ने उत्तर दिया, "नहीं वहाँ की घाटियाँ बहुत ही नीची तथा ऊबड़खाबड़ हैं दूसरे पानी का भी आस पास में कहीं पता नहीं चलता।"

इसी समय सहसा एक बड़ी ही सुन्दर मोटर बाहर आ खड़ी हुई और उस पर से जेनरल स्मट्स ने उतर कर भीतर पैर रक्खा। कर्नल केपेल फौरन कुर्सी पर से उठ खड़े हुये और अपने अफसर को सलाम कर के चुपचाप एक ओर खड़े हो गये। टामसन ने भी अदब से झुक कर उन्हें फौजी सलाम किया।

जेनरल स्मट्स बोले, "मैं इधर से जा रहा था सोचा कि जरा तुमसे मुलाकात करता चलाँ। कहो ओल्डविक का कुछ पता चला? टामसन को भी मैं यहाँ खड़ा देख रहा हूँ जहाँ तक मुझे खयाल है उनकी खोज का काम इनके भी सुपुर्व हुआ था।"

"जी हाँ ये अभी वापस लौटे हैं।" कह कर कर्नल ने जो जो बातें टामसान के मुँह से सुनी थी सब अपने अफसर को सुना दीं। जेनरल स्मट्स कर्नल के पास जा बैठे और उन्हें भी बैठने की आज्ञा दे कर उनसे कुछ सलाह करने लगे। अन्त में दोनों अफसरों ने यही निश्चय किया कि उस शहर का पूरा पता लगाना चाहिये और फौज के दो एक छोटे टुकड़े उस ओर रवाना

करने चाहियें। उनके साथ लोरियों पर खाना तथा पानी भी भेजा जाना चाहिये। जेनरल स्मट्स बोले, “मेरा ख्याल है तुम अपना डेरा एक ऐसे स्थान पर खड़ा करा सकते हो जहाँ से वह शहर केवल एक ही दिन के फासले पर रह जाय। वहाँ से फौज का एक टुकड़ा तुम शहर की ओर रवाना कर सकोगे और इस प्रकार उसे खाने या पानी की तकलीफ न होगी। दो हवाई जहाज भी साथ में भेजे जा सकते हैं जो बराबर अगले टुकड़े का समाचार पिछले टुकड़े को देते जायेंगे। कब तक तुम्हारी फौज के ये दो टुकड़े जाने के लिये तैयार हो सकेंगे?”

कर्नल ने उत्तर दिया, “आज रात में लोरियों पर असबाब लादा जा सकता है और कल दोपहर : एक बजे तक यहाँ से रवाना हो जाया जा सकता है।”

“ठीक है ऐसा ही करो ! बीच बीच में मुझे भी खबर देते रहना।” कह कर जेनरल स्मट्स वहाँ से रवाना हो गये।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

जैसे ही टार्जन उस लतामंडप के पास पहुँचे जिनके मजबूत होने के बारे में उन्हें अब तक सन्देह बना ही हुआ था, यह देख उन्हें बड़ी ही प्रसन्नता हुई कि उसकी मोटाई आदमी के कलाई की मोटाई से किसी भी हालत में कम नहीं है और दीवार में वह इस प्रकार जकड़ी हुई है कि उनके शरीर का बोझ पा कर भी वह अपने स्थान से हिल नहीं सकती। वे उछल कर उसके साथ चपक गये और ठीक उसी समय सिंह उनकी ओर उछला।

हैरियत इतनी ही थी कि टार्जन अब तक उसकी पहुँच के एक इंच बाहर हो गये थे और लताओं पर उसके पंजों के अट-
ने की सुविधा न होने के कारण वह जमीन पर गिर पड़ा।
अपना शिकार इस प्रकार हाथ से निकलते देख एक भयानक
गरज उसके गले से निकली।

बहुत शीघ्र ही टार्जन दीवार के ऊपरी भाग तक जा पहुँचे
और उच्चक कर मुँड़ेरे के ऊपर जा चढ़े। इस मुँड़ेरे से बगल के
कान की छत लगभग तीन चार फीट नीची थी और छत पर
झूटते समय उनकी पीठ दीवार में बनी एक छोटी खिड़की की
ओर हो गई जिसके बीच में छिप कर बैठी एक काली शक्ल को
देन देख सके। इस खिड़की के बाहर बाग का दृश्य साफ
दिखाई देता था परन्तु अन्धकार तथा लताओं में छिपी रहने के
कारण अब तक टार्जन की निगाह उस पर नहीं पड़ सकी थी।

जैसे ही उनका पैर छत के साथ लगा उस खिड़की में छिप
कर बैठी हुई काली शक्ल ने उछल कर उनकी कमर मजबूती
के साथ पकड़ ली और उन्हें हवा में उठा लिया।

एकाएक अपना पैर जमीन से उठता देख टार्जन एक प्रकार
से बेवस हो गये और वह काली शक्ल उन्हें धीरे धीरे दीवार
की ओर ले चली। यह समझने में टार्जन को जरा भी देर न
लगी कि कदाचित्त वह शक्ल उन्हें दीवार से नीचे की ओर गिरा
ने के उद्योग में लगी हुई है।

उनके हाथ पैर एक दम आजाद थे परन्तु उस काली शक्ल

ने उन्हें ऐसे ढंग से पकड़ रक्खा था कि वे उनसे कोई भी काम नहीं ले सकते थे फिर भी उन्हें एक युक्ति सूझ गई और उन्होंने उसी से काम भी लिया। अपना समूचा शरीर अकड़ा कर उन्होंने उसे इस जोर से पीछे की ओर गिराया कि उस काली शक्ति के पैर लड़खड़ा गये और अपने हाथ का बोझ सम्हाल न सकने के कारण वह पीठ के चल जमीन पर गिर पड़ा।

एक ही छलांग में टार्जन क्रूढ़ कर उसकी छाती पर जा चढ़े। उनका एक हाथ उसके उस हाथ पर था जिसमें उसने गिरते समय अपने कमर से तलवार निकाल कर ले ली थी और दूसरा उसकी गर्दन पर ! एक हलकी चीख उस आदमी के मुँह से निकली परन्तु टार्जन की लोहे जैसी मजबूत उँगलियों ने उसे फौरन ही दबा दिया। धीरे धीरे उसका चेहरा लाल होने लगा। आँखें बाहर की ओर निकल आईं और जीभ लटक पड़ी। ज्यों ही उसके हाथ पैरों की हरकत बन्द हुई उन्होंने अपना :वायां पैर उसकी छाती पर रक्खा और आसमान की ओर देख पप :बन्दरों के विजय के समय की भयानक आवाज वे अपने मुँह से निकाला ही चाहते थे कि कुछ सोच कर रुक गये।

छत के एक किनारे की ओर आ कर उन्होंने नीचे सड़क की ओर झाँका। सड़क पर जगह बजगह तेल के लम्पों की रोशनियाँ हो रही थीं जिनकी आभा बहुत ही धीमी थी। इस समय बहुत कम आदमी सड़कों पर घूमते उन्हें दिखाई दिये।

उस युवती तथा युवक की तलाश के लिये उन्हें आजादी के

सब समूचे शहर में घूमने की आवश्यकता थी परन्तु उनके सड़े शहर में घूमने वाले आदमियों से एक दम भिन्न होने के कारण वे लोगों की निगाहों से किसी प्रकार भी छिपे नहीं रह सकते थे। अन्त में उन्हें एक युक्ति सूझी। उस मृत संतरी की रस्सी उतार कर उन्होंने स्वयं पहन ली, अपने हाथ का रस्सा कमर में लपेट लिया क्योंकि उसे एक क्षण के लिये भी छोड़ना उनके लिये सम्भव नहीं था और बाकी के सब हरवे एक ओर छिपा कर रख दिये। इसके बाद उसके कमरबन्द का तस्मा खोल अपने कमर में बाँधने बाद उसकी तलवार भी कब्जे में कर ली।

अब उन्हें यह चिन्ता हुई कि नीचे सड़क पर किस प्रकार उतरना चाहिये। वे चाहते तो छत पर से कूद कर भी सड़क पर जा सकते थे परन्तु ऐसा करने से लोगों को उन पर सन्देह होता और यह बात उन्हें बिल्कुल ही पसन्द न थी।

मकानों की छतों ऊँची नीची अवश्य थीं फिर भी आदमी एक छत से दूसरी छत पर आसानी से आ जा सकता था। इन्हीं छतों पर हो कर वे धीरे धीरे आगे बढ़ने लगे। सहसा उनकी दृष्टि कुछ आदमियों पर पड़ी जो एक मकान की छत पर मुँडरे का ढासना लगा कर बैठे आपस में कुछ बातें कर रहे थे।

हर एक छतों के बीच में उन्होंने एक एक चौकोर खुला स्थान देखा था, अब उनके दिल में यह खयाल हुआ कि इसी रास्ते मकान के भीतर उतर कर क्यों न सड़क तक पहुँचा जाय। एक वेद के पास पहुँच उन्होंने नीचे की ओर झाँका। गहरा अन्धकार

छाया हुआ था और किसी प्रकार की आवाज भी सुनाई नहीं देती थी । अपने पैर नीचे लटका कर उन्होंने भीतर की ओर कूदना चाहा परन्तु इसी समय उनके पैर किसी लकड़ी की सीढ़ी से झू गये । फौरन ही उस लकड़ी की सीढ़ी के सहारे वे नीचे उतरे । नीचे गहरा अन्धकार था परन्तु खिड़कियों की राह आती हुई सड़क के लम्पों की रोशनी में उन्हें मालूम हो गया कि उस स्थान पर कोई भी आदमी नहीं है । नीचे गई हुई सीढ़ियों की राह अब वे नीचे उतरने लगे और अन्त में खुली सड़क पर जा पहुँचे ।

सड़क से हो कर अब वे धीरे धीरे आगे की ओर बढ़ने लगे । रास्ता चलने वालों में से किसी ने भी उनकी ओर ध्यान न दिया । दूर ही से उन्हें आगे की ओर बनी कुछ शानदार इमारतें दिखाई दीं और उन्हीं की ओर उन्होंने अपना कदम बढ़ाया ।

एक चौमुहानी पर पहुँचते ही उन्हें बगल की ओर से कुछ आदमी उनके ही ऐसी पीली वर्दी पहने आते दिखाई दिये । उन्हें भय था कि कहीं वे उन पर सन्देह न करें । यदि वे चाहते तो उनसे लड़ने में भी उन्हें संकोच न था परन्तु जब उनका ध्यान वर्या तथा ओल्डविक की ओर गया तो इस प्रकार अपना समय बर्बाद करना उन्हें उचित न मालूम हुआ ।

सहसा उन्हें एक युक्ति सूझी । जैसे ही सड़क के एक लम्प के नीचे वे पहुँचे उन आदमियों को उन्होंने अपने से केवल दस बारह गज के फासले पर पाया । वे मुक कर अपने जूते का

जसा ठीक करने लगे और इस बीच में वे सब आदमी उनकी गल से हो कर आगे निकल गये ।

अब वे पुनः आगे बढ़े । सहसा उनकी निगाह एक सिंह पर लगी जो धीरे धीरे उन्हीं की ओर चला आ रहा था । एक औरत को उन्होंने उसके सामने से हो कर धीरे धीरे बगल की ओर जाते देखा । फौरन ही एक छोटा लड़का भी उस औरत के पीछे दौड़ा । सिंह के मुँह से इतने नजदीक हो कर वह लड़का निकला था कि उसे चोट न लगाने देने के खयाल से उस सिंह को अपना मुँह घुमा लेना पड़ा ।

परन्तु जंगली जीवन व्यतीत करने पर कम से कम इस बात का उन्हें पूरा अनुभव था कि वे आदमियों अथवा सिंह की आँखों में मले ही धूल झोंक दें परन्तु सिंह की घ्राणशक्ति को वे किसी प्रकार भी धोखा नहीं दे सकते । उनकी गंध नाक में जाते ही सिंह को मालूम हो जायगा कि वे उस शहर में रहने वाले मनुष्यों की जाति के नहीं हैं और इस समय खुले आम इस मांस-खोरी जीव के सामने आना उन्हें पसन्द न था ।

हवा का रुख उस पटरी से जिस पर इस समय टार्जन जा रहे थे । सीधा दूसरी पटरी की ओर चला गया था उन्होंने सोचा कि यदि वे सामने वाली पटरी पर चले जायें तो हवा का रुख बदल जाने की वजह से सिंह के नाक में उनकी गंध न जा सकेगी । फौरन ही वे सड़क पार कर के दूसरी पटरी पर जा पहुँचे और सिंह चुपचाप आगे की ओर निकल गया ।

सहसा एक स्थान पर दोनों युवक युवतियों की गंध उनकी नाक में गई । वे समझ गये कि वे दोनों अवश्य उसी ओर से ले जाये गये हैं । थोड़ी दूर आगे एक ऐसा स्थान आया जो उस शहर का बाजार कहा जा सकता है । यहाँ कितने ही मनुष्य तथा सिंह इधर से उधर घूम रहे थे । यहाँ पहुँचने पर शहर के लोगों का पागलपन भी मलीमाँति उनकी समझ में आ गया ।

एक समय उन्हें एक ऐसे आदमी से धक्का लगते लगते वचा जो बड़े जोर से चिल्लाता हुआ सीधा उन्हीं की ओर चला आ रहा था । थोड़ा आगे बढ़ने पर उन्होंने एक औरत को बिना किसी मतलब के हाथ तथा पैरों के सहारे जमीन पर चलते देखा । उस स्थान से थोड़ी ही दूर पर उन्हें दो आदमी मकान की छत पर एक दूसरे से लड़ते दिखाई दिये । इनमें से एक ने अपने को दूसरे से अलग कर उसे इस जोर का धक्का दिया कि वह घड़ाम से नीचे पत्थर की सड़क पर आ पड़ा । दो मिनट तक तो वह दूसरा आदमी नीचे गिरे आदमी को ध्यान से देखता रहा । इसके बाद एकाएक बड़े ही जोर से चिल्ला कर सिर की बल नीचे कूद पड़ा । इसी समय एक मकान से निकल कर एक सिंह लट्टू से भरी इन दोनों की लाशों की ओर बढ़ा पर टार्जन को यह देख आश्चर्य हुआ कि सिंह ने केवल जमीन पर गिरे रक्त को एक बार सूँघा और तब उन दोनों लाशों के पास बैठ गया ।

विचित्र प्रेम

—०—

जैसे ही स्मिथ ओल्डविक को इस बात का पता चला कि वह उस छोटे से बाग में सिंहों के बीच अकेला है और वहाँ से निकलने की राह बन्द हो गई है तो वह भय से विह्वल हो उठा। उसकी इतनी तक हिम्मत न हुई कि पीछे घूम कर देखे। उसके पैर काँपने लगे, जी मिचलाने लगा, माथे में चक्कर आने लगे और तब वह बेहोश हो कर जमीन पर गिर पड़ा।

कब तक वह बेहोश पड़ा रहा इसका उसे ज्ञान न था। सहसा अर्धनिद्रित अवस्था में उसे ऐसा मालूम पड़ा मानों वह किसी सुन्दर सजे सजाये कमरे में दुग्ध-फेन-निभ शय्या पर पड़ा हुआ हो। उसके बगल में ही एक खुली हुई खिड़की थी जिसमें से आती हुई ठंडी हवा खिड़की पर पड़े परदे को हिला रही थी। खिड़की के नीचे की ओर एक सुन्दर बाग था जिसमें रंग-बिरंगे फूल तथा आन्धे से आन्धे स्थाविष्ट फल लगे हुये थे।

प्रसन्नता से उसका चेहरा खिल उठा। इसी समय मुलायम तथा ठंडे हाथों ने उसके गालों और माथे पर घूम घूम कर मानो उसकी अन्तर्वेदना को दूर करना आरम्भ कर दिया। दो मिनट तक ओल्डविक अपने स्थान पर पड़ा स्वर्गसुख का उपभोग करता रहा इसके बाद उसे ऐसा मालूम हुआ मानों वह हाथ धीरे धीरे कड़ा और खुरखुरा होता जा रहा है। अब उसमें पहले ऐसी ठंडक भी नहीं है बल्कि अब वह गर्म तथा पसीजा हुआ सा मालूम होता है। उसने एकाएक अपनी आँखें खोल दीं और एक बड़े भारी कढ़ावर सिंह को अपने ऊपर मुके देखा।

लेफ्टिनेन्ट स्मिथ ओल्डविक केवल नाम का ही फौजी अफसर न था बल्कि उसकी गिनती बहादुरों में थी परन्तु जब उसे मालूम हुआ कि जो आनन्ददायक स्वप्न वह अब तक देख रहा था वह केवल उसका भ्रम मात्र ही था किन्तु वास्तव में वह उसी स्थान पर अब तक पड़ा था जहाँ कि वह बेहोश हो कर गिर पड़ा था और जो ठंडे और मुलायम हाथ उसके चेहरे तथा माथे पर फेरा जा रहा था वह वास्तव में सिंह की जीभ थी जिससे वह उसे चाट रहा था तो उसकी आँखों से आँसुओं की बड़ी बड़ी बूँदें निकल कर गालों पर लुढ़कने लगीं। उसे स्वप्न में भी गुमान न था कि दुर्भाग्य उसके साथ ऐसी हँसी करेगा।

कुछ समय तक ओल्डविक मुदों की भौँति अपने स्थान पर पड़ा रहा। सिंह ने अब उसे चाटना छोड़ कर सूँघना आरम्भ कर दिया था। संसार में कुछ घटनाएँ ऐसी हुआ करती हैं जिनकी

अपेक्षा मनुष्य को मृत्यु ही अधिक सुखदाई प्रतीत होती है। वही हालत इस समय ओल्डविक की थी। इस अवस्था में जमीन पर अधिक देर पड़े रहने की अपेक्षा वह मृत्यु ही पसन्द करता था।

सिंह का भय छोड़ वह हाथ के सहारे धीरे धीरे जमीन से उठने लगा। सिंह पहले तो कुछ गुराया परन्तु फिर वहाँ से दूसरी ओर चला गया। अब ओल्डविक ने संतोष की एक साँस ली और घूम कर मैदान को ओर देखा।

पेड़ों के नीचे तथा वेजों के ऊपर पड़े-कितने ही सिंह सुख की नींद ले रहे थे और कितने इधर उधर टहल रहे थे। पहले तो ओल्डविक को भय मालूम हुआ परन्तु जब दो चार सिंह उसकी बगल से निकल गये और उसकी ओर उन्होंने जरा भी ध्यान न दिया तब उसकी हिम्मत धीरे धीरे बढ़ने लगी।

फिर भी उसे अभी अपने स्थान से हिलने की हिम्मत नहीं हो रही थी। वहीं से झड़ा खड़ा वह अपने चारों ओर ध्यान से देखने लगा। सहसा उसकी दृष्टि एक ऊँचे पेड़ पर पड़ी जिसकी डालें सामने वाली दीवार में बनी खिड़की के एक दम करीब तक पहुँची हुई थीं। वह सोचने लगा कि यदि वह किसी प्रकार उस पेड़ के पास पहुँच जा सके तो उस पर चढ़ कर उस खिड़की में चले जाने बाद वह खतरे से बच जा सकेगा किन्तु उस पेड़ पर पहुँचने के लिये उसे समूचा रमना पार करना था। दूसरी श्रिकल यह थी कि उस पेड़ के नीचे दो सिंह लेटे हुये थे।

आगे घण्टे तक ओल्डविक खड़ा हुआ इन्हीं बातों पर विचार

करता रहा अन्त में उसने जिस तरह भी हो इस काम को करने का निश्चय कर लिया और उस पेड़ की ओर बढ़ा ।

दीवार के पास वाले सिंहों में से एक सिंह ओल्डविक को रमने की ओर बढ़ते देख स्वयं भी मस्तानी चाल से उसकी ओर बढ़ा किन्तु ओल्डविक ने जिस बात का निश्चय कर लिया था उससे टलने वाला जीव वह न था । उसने सोच लिया था कि आखिर मरना तो है ही चाहे जिस तरह भी मौत हो ।

उसके ठीक बगल में पहुँच कर सिंह ने एक बार उसका बदन सूँघा और तब अपने दाँत बाहर निकाल कर जोर से दहाड़ उठा । ओल्डविक ने फौरन ही पिस्तौल निकाल कर हाथ में ले ली । उसे इस बात की अब जरा भी चिन्ता नहीं रह गई थी कि उसकी गोली खा कर सिंह और भी क्रोधित हो जायगा । मृत्यु-भय इस समय उसके चित्त से बिल्कुल ही निकल गया था ।

परन्तु ओल्डविक को झटके के साथ पिस्तौल जेब से निकालते देख सिंह का भाव एक दम से बदल गया और यद्यपि वह गुर्जाता ही रहा फिर भी उछल कर एक ओर हट गया । ओल्डविक उस पेड़ के पास जा पहुँचा । अब उसके और स्वतंत्रता के बीच एक ही सिंह था जो पेड़ के नीचे सोया हुआ था ।

सिंह के ठीक ऊपर की ओर पेड़ की एक डाल नीचे मुकी हुई थी परन्तु उस तक पहुँचने के लिये उसे सिंह को लाँच कर दूसरी ओर जाना आवश्यक था । एक लम्बी सांस खींच कर उसने अपना एक पैर सिंह के दूसरी ओर रक्खा किन्तु सिंह को

उसी प्रकार पड़े देख धीरे से दूसरा पैर भी उसके दूसरी ओर रख दिया और तब उछल कर ऊपर वाली डाल पकड़ ली ।

खून अधिक निकल जाने के कारण ओल्डविक बहुत ही कमजोर हो गया था फिर भी थोड़ी ही मेहनत में वह पेड़ के ऊपर चढ़ गया । पेड़ की खड़बड़ाहट सुन सिंहों ने एक बार अपनी निगाहें ऊपर उठाईं, कन्तु उस ओर अधिक ध्यान न दिया ।

अब उसके सामने मकान की खुली हुई खिड़की थी जिस पर उसकी निगाह पड़ चुकी थी । खिड़की के ठीक बराबर होने के कारण अब वह उसके भीतर बखूबी देख सकता था । वह एक सजा हुआ कमरा था जो इस समय एक दम खाली था ।

एक ही छलाँग में ओल्डविक कूद कर खिड़की पर जा चढ़ा और उसके अन्दर चला गया । सूर्य भगवान डूब चुके थे और अन्धकार धीरे धीरे अपना साम्राज्य चारों ओर फैला रहा था अस्तु उस कमरे से बाहर निकल कर उसने इस बात का पता लगाने का निश्चय किया कि उस मकान में कौन लोग रहते हैं ।

उसके ठीक सामने की ओर एक खुला हुआ दर्वाजा था । वह धीरे धीरे उसकी ओर बढ़ा परन्तु दर्वाजे तक पहुँचने के पहले ही दर्वाजे पर का पर्दा एक बार हिला और एक युवती उसकी आड़ से निकल कर ओल्डविक के सामने आ खड़ी हुई ।

युवती सुन्दरी थी और उसके शरीर की गठन बड़ी ही सुडौल थी । छाती के नीचे की ओर उसने जो कपड़ा अपने शरीर पर लपेट रक्खा था उसने शरीर के ऊपरी भाग को खुला छोड़ कर

यह प्रगट कर दिया था कि उसके अंग कितने पुष्ट और सुबौल हैं परन्तु चेहरा उसका पागलों की भाँति था । उसकी सूरत देखते ही ओल्डविक अपने स्थान पर रुक गया क्योंकि उसे सन्देह हुआ कि बहुत सम्भवत है वह सहायता के लिये चिन्ता उठे परन्तु इसके बदले वह मुस्कुराती हुई उसकी ओर बढ़ी और उसकी आस्तीन का कपड़ा अपने हाथ में ले कर इस प्रकार देखने लगी जिस तरह एक छोटा सा बच्चा उत्सुकता की दृष्टि से एक नये खिलौने को देखता है । उसी प्रकार मुस्कुराते हुए उसने एक बार उसे नीचे से ऊपर तक बड़े ही ध्यान से देखा ।

इसके बाद वह बड़ी ही सुरीली आवाज में कुछ बोली । यद्यपि ओल्डविक उसके मुँह से निकले हुए एक शब्द का भी अर्थ न लगा सका फिर भी वह अंग्रेजी में कुछ बोला जिसका असर कदाचित बहुत ही सन्तोषजनक पड़ा क्योंकि 'इसके पहले कि ओल्डविक उसके इरादे को समझ सके अथवा उसे रोक सके उसने अपने दोनों हाथों से उसकी गरदन लपेट ली और बड़े ही जोश से तेजी के साथ उसे चूमने लगी ।

ओल्डविक को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और उसने उसे धीरे से अलग करना चाहा पर वह और भी लिपट गई । ओल्डविक ने सुना था कि पागल को प्रसन्न ही रखना चाहिये अस्तु उसने भी उसको अपनी कलाइयों से लपेट कर चूमना शुरू किया ।

ठीक इसी समय सामने का दर्वाजा एकाएक खुल गया और एक आदमी ने कमरे के अन्दर पैर रक्खा । ताली घूमने की

आवाज सुनते ही ओल्डविक सावधान हो गया था फिर भी वह समझ गया कि आगन्तुक की आँखों से उन दोनों की स्थिति छिपी न रह सकी ।

युवती जिसकी पीठ दर्वाजे की ओर थी एकाएक इस बात को न देख सकी कि किसी ने कमरे में पैर रक्खा है परन्तु जैसे ही गहट पा कर वह पीछे घूमी, क्रोध से लाल उस आगन्तुक के भयंकर चेहरे पर निगाह पड़ते ही चिन्ताती हुई एक ओर भागी परन्तु ओल्डविक ज्यों का त्यों अपने स्थान पर खड़ा रहा उसने आगन्तुक को पहचान लिया था । यह वही अफसर था जिसके सामने उसे तथा बर्था को ला कर संतरियों ने पेश किया था ।

एक क्षण तक वह आदमी क्रोध में भरा अपने स्थान पर खड़ा रहा इसके बाद नंगी तलवार निकाल जोर से चिन्ताता हुआ ओल्डविक की ओर भपटा । ओल्डविक ने फौरन ही पिस्तौल जेब से निकाल ली और उसकी नली का मुँह उसकी छाती की ओर कर के उसने उसका घोड़ा दबा दिया । बिना किसी प्रकार के शब्द के वह आदमी ओल्डविक के पैरों के पास गिर पड़ा । गोली उसके कलेजे को छेद दूसरी ओर निकल गई थी ।

हाथ में उसी प्रकार पिस्तौल लिये अपने स्थान पर खड़ा ओल्डविक सामने दर्वाजे की ओर ध्यान से देख रहा था । उसे आशा थी कि पिस्तौल छूटने की आवाज सुन कर सम्भव है कुछ लोग उस कमरे में आ पहुँचें पर ऐसा न हुआ । किसी ने भी उस कमरे तक आने का कष्ट न उठाया । उस कमरे के बगल में

एक छोटा कमरा और था जिस पर पर्दे पड़े थे । सहसा पर्दे से निकलते हुए किसी के सिर पर ओल्डविक की दृष्टि पड़ी । यह वही युवती थी जो ध्यान से जमीन पर पड़ी लाश को देख रही थी ।

धीरे धीरे परन्तु बड़ी ही सावधानी से वह पर्दे के पीछे से बाहर निकली और लाश के पास पहुँच उसके पास घुटनों के बल बैठ गई । कुछ देर तक वह लाश को टटोलती रही इसके बाद उसने जोर लगाकर उस लाश को उलट दिया । मौत की छाया स्पष्ट रूप से उस लाश के चेहरे पर थी अस्तु उसे यह समझने में जरा भी विलम्ब न लगा कि असल बात क्या है और इस बात को समझते ही वह पागलों की भाँति ठठा कर हँस पड़ी । साथ ही अपने हाथों से मृत व्यक्ति के मुँह तथा छाती पर दुहत्थड़ मारने लगी । ओल्डविक को यह देख बड़ी ही घृणा हुई । ऐसा दृश्य सिवाय पागलखाने अथवा इस शहर के किसी भी दूसरी जगह नहीं दिखाई दे सकता था ।

सहसा युवती उठ कर खड़ी हो गई और दर्वाजे की ओर दौड़ी । वहाँ पहुँच कर उसने दर्वाजा बन्द कर दिया और भीतर की ओर से बेंबड़ा लगा दिया । इसके बाद वह ओल्डविक के पास चली आई और उससे कुछ कहने लगी । जब उसने देखा कि ओल्डविक जरा भी ध्यान नहीं देता तो क्रोध में भर कर उसकी ओर झपटी । ओल्डविक ने पुनः अपना पिस्तौल वाला हाथ ऊँचा किया और उसकी नली का मुँह उसकी छाती की ओर भी कर दिया । उस पिस्तौल की करामात वह देख चुकी थी ।

वह जहाँ की तहाँ रुक गई और पुनः एक हलकी मुसुराहट उसके चेहरे पर दिखाई देने लगी। अब वह इशारों से अपना इरादा उस पर प्रगट करने लगी और उसे अपने पीछे आने का संकेत कर के उसने दीवार का पर्दा हटा दिया। अब ओल्डविक की निगाह बगल वाली कोठरी पर पड़ी। यह कोठरी अच्छी लम्बी चौड़ी थी। जमीन पर सुन्दर कालीन बिछी हुई थी और करीने से सजाये हुये कोचों पर मुलायम गद्दे बिछे तथा तकियाएँ सजाई हुई थीं। कोठरी के दर्वाजे पर पहुँच कर वह खड़ी हो गई। एक बार उसने उस लाश की ओर इशारा किया इसके बाद कमरे के अन्दर जा कर एक कोच के बगल की ओर लटकते कपड़े को हटा कर उसने उसके भीतर का स्थान ओल्डविक को दिखाया। ओल्डविक समझ गया कि उसका इरादा लाश को उस कोच के नीचे रख देने का है।

दोनों आदमी लाश के पास लौट आये और लाश को ला कर उस कोच के नीचे डाल दिया। इसके बाद युवती ने वह लटकने वाला कपड़ा अपने स्थान पर पुनः गिरा दिया।

इतना काम खतम कर लेने बाद युवती ने पुनः ओल्डविक को अपनी कलाईयों में बाँध उसी कोच पर जबर्दस्ती अपनी बगल में बैठा लिया। घृणा से ओल्डविक का शरीर काँप उठा।

ठीक इसी समय दर्वाजे पर किसी ने जोर का धक्का दिया जिसे सुनते ही युवती उछल कर खड़ी हो गई और कोच के दरिहाने की ओर लटकता हुआ परदा हटा कर ओल्डविक को

उसके भीतर जाने का इशारा किया। पर्दे के पीछे ओल्डविक को एक बहुत छोटी कोठरी दिखाई दी जिसमें युवती ने उसे बैठा कर पर्दा पुनः अपने स्थान पर गिरा दिया।

पर्दे के भीतर से ही ओल्डविक ने उस युवती के दर्वाजे की ओर बढ़ने की आहट सुनी। दर्वाजे का बेंवड़ा हटा और कोई आदमी उस युवती से बातें करता सुनाई दिया।

आवाज से ही ओल्डविक को मालूम हो गया कि कोई बगल वाले कमरे में आ पहुँचा है। यह देखने के लिये कि वे दोनों क्या कर रहे हैं उसने सामने का पर्दा थोड़ा खिसका दिया। अब उसने देखा कि वह युवती एक आदमी के साथ कोच पर बैठी है और दोनों ही एक दूसरे के बाहुपाश में बँधे हुये हैं।

कुछ देर तक यही हाल रहा। एकाएक ऐसा मालूम हुआ मानों युवती को कोई बात याद हो आई। उसने धीरे धीरे अपने को उस आदमी के बाहुपाश से अलग किया और उसी पर्दे की ओर जिसके पीछे ओल्डविक को उसने छिपा दिया था, इशारा कर के अपने साथी से कुछ कहने लगी। इसके बाद उसने अपने हाथों को घुमा फिरा कर कोई बात इस प्रकार समझानी शुरू की कि उसे देखते ही ओल्डविक समझ गया कि वह उसकी पिस्तौल के सम्बन्ध में अपने साथी को कुछ समझा रही है। अब ओल्डविक समझ गया कि युवती उसके साथ विश्वासघात कर रही है। वह ध्यान से उस कोठरी की जाँच करने लगा जिसमें कि वह बैठा हुआ था।

पर्दे के बाहर कोच पर बैठी वह युगल जोड़ी उठ कर खड़ी

गई। युवती के साथ वाले आदमी ने तलवार निकाल कर अपने हाथ में ले ली और दोनों बड़ी ही सावधानी से उस पर्दे की ओर बढ़ने लगे। पर्दे के पास पहुँच कर युवती ने जमीन से लुप्त की छाती की 'ऊँचाई' के एक स्थान पर उँगली उठाई और एक ओर खड़ी हो गई। उसके साथी ने तलवार सीधी की और उसे एक झटके के साथ पर्दे के बीच धुसेड़ दिया।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

बर्था ने यह समझ कर कि हाथ पैर मारना बेकार है और यदि इस समय वह अपनी शक्ति सम्भाल रखेगी तो संभव है आगे चल कर काम आवे उसने अपना समूचा शरीर एक दम झुका छोड़ दिया। राजकुमार मेटक उसे गोद में उठाये कितने ही घुमघुमावे रास्तों से आगे की ओर भागा जा रहा था जिसे देख बर्था समझ गई कि राजकुमार होने पर भी वह राजकोप तथा राजदंड से बाहर नहीं है और जो काम भी वह इस समय कर रहा है उसका उसे भारी भय है। रह रह कर वह अपनी भयभीत आँखें अपने अगल बगल तथा पीछे की ओर घुमा लेता था जिससे बर्था को मालूम हुआ कि यदि वह पकड़ लिया तो उसे बड़ी कड़ी सजा दी जायगी।

जिन रास्तों में घुमाता फिरता वह इस समय बर्था को लिये जा रहा था उन्हें देख बर्था समझ गई कि वह कितनी ही बार फिर कर एक ही रास्ते में आ जाया करता था जिससे स्पष्ट था कि वह बेतरह घबड़ाया हुआ था।

सहसा राजकुमार एक बन्द दरवाजे के पास जा पहुँचा और उसे एक मटक के साथ खोल उसके भीतर चला गया। किस कमरे में वह घुसा है इसका कदाचित मेटक को भी ज्ञान न था क्योंकि वह कमरा रोशनियों से एक दम जंगमगा रहा था, कितने ही लोग हथियार से लैस उससे बैठे हुये थे और सामने एक ऊँचे तख्त पर सिर पर ताज रखे वहाँका राजा बैठा हुआ था। बर्था ने आश्चर्य से देखा कि राजा साहब के तख्त के बगल में एक और तख्त रक्खा हुआ है जिस पर एक कहावर सिंहनी बैठी हुई है जिसे देखते ही बर्था को जेनीला की यह बात याद आ गई कि “राजा की सभी रानियाँ औरतें नहीं होतीं।”

राजकुमार तथा बर्था पर निगाह पड़ते ही राजा उठ खड़ा हुआ और क्रोध से उन दोनों की ओर दौड़ा। साथ ही वह चिल्लाकर वहाँ उपस्थित लोगों को कुछ हुक्म भी देता जाता था।

मेटक ने भी यह दृश्य देखा और अपनी भूल को समझ गया। राजा को अपनी ओर क्रोध में भरे दौड़ते देख वह फौरन ही पीछे की ओर मुड़ा और तेजी के साथ वहाँ से भागा परन्तु इस समय लगभग एक सौ आदमी उसके पीछे थे जिनकी हँसी तथा चिल्लाहट से वह स्थान गूँज रहा था।

कई कमरों तथा कोठरियों में घूमता फिरता मेटक एक ऐसे कमरे में पहुँचा जहाँ कमरे के बीचोबीच एक तालाब बना हुआ था। मेटक का पीछा करने वालों ने मेटक को इसी तालाब में बर्था के साथ कूदते देखा परन्तु कूदने के बाद उन लोगों ने उन

नों में से किसी को भी पानी के ऊपर सिर उठाते न देखा वह
को ले कर एक दम लापता हो गया था ।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

जब स्मिथ ओल्डविक ने उस छोटी कोठरी को ध्यान से
टोल कर देखा जिसमें वह बैठा हुआ था तो उसका हाथ ठीक
माल की ओर बने एक दर्वाजे पर पड़ा जिसमें बेंबड़ा बन्द था ।
सीढ़ी ही सावधानी से बेंबड़ा खोल वह भीतर घुस गया और
अपने पीछे का दर्वाजा भीतर से बन्द कर लिया ।

हाथ से टटोलने पर उसे मालूम हुआ कि इस समय वह एक
तन्हे तथा तंग रास्ते में है । थोड़ा ही आगे बढ़ने पर उसे
सीढ़ियों का एक सिलसिला ऊपर की ओर गया मालूम हुआ
जिस पर वह धीरे धीरे टटोलता हुआ चढ़ने लगा सीढ़ियों का
सिलसिला जहाँ खतम हुआ था वहाँ ठीक उसके सिर की ओर
एक बन्द दर्वाजा था जो उसने हाथ ऊँचा कर के खोल लिया
और ऊपर की ओर निकल गया । यह किसी मकान की छत थी
जिस पर उस समय उसने अपने को पाया ।

संतोष की एक सांस ले कर उसने वह दर्वाजा पूर्ववत् बन्द
कर दिया । इस स्थान से उसे शहर का एक भाग स्पष्ट दिखाई दे
रहा था । वह सबक उसे ठीक अपने नीचे की ओर दिखाई दी
जिससे हो कर वे तथा वर्था ले आये गये थे । वर्था के उद्धार की
आशा इस समय उसने एक दम छोड़ दी थी । अब उसका एक
मात्र ध्येय केवल यह था कि वह बड़ी ही सावधानी से किसी

प्रकार नीचे की सड़क पर जा पहुँचे । छत के किनारे से झुक कर उसने एक बार नीचे सड़क की ओर देखा । उसके ठीक नीचे की ओर मकान का बरामदा था जिसमें मोटे तथा खूबसूरत खम्भे लगे हुये थे । ठीक वैसे ही खम्भे निचले खंड के बरामदे में भी लगे थे । अन्धकार में इन खम्भों के सहारे नीचे सड़क पर उतर जाना उसके लिये कोई मुश्किल बात न थी परन्तु जब जब वह नीचे उतरने के इरादे से अपने पैर नीचे की ओर लटकाता था उसे सड़क पर चलने वालों के पैरों की चाप सुनाई दे जाती थी और वह रुक जाता था । अन्त में वह धीरे धीरे नीचे की ओर उतरने लगा और अन्त में सड़क तक जा पहुँचा । सहसा उसे अपने पीछे की ओर किसी की आहट सुनाई दी और फौरन ही घूम कर उसने पीछे देखा । उसके ठीक पीछे पीली वर्दी पहने एक हृष्ट पुष्ट मोटा आदमी खड़ा था ।

—०—

कोठरी के बाहर

—०—

अपनी कोशिश बेकार जाते देख सिंह का क्रोध बेतरह बढ़ गया था। उसके मुंह का शिकार उसके देखते देखते उसकी पहुँच के बाहर दीवार पर जा चढ़ा था। दूसरी बार प्रयत्न करने के इरादे से उसने पुनः ऊपर की ओर देखा परन्तु ठीक इसी समय किसी की परिचित गंध उसके नाक में पड़ी। उसने मुक कर जमीन पर उस स्थान को सूँघा और तब पहचान गया कि दीवार पर चढ़ने वाला व्यक्ति वही है जिसने उसका वसामुओं द्वारा बनाये गढ़े से उद्धार किया था।

उसके जंगली दिमाग में इस समय क्या बातें घूम रही थीं उसे मला कौन कह सकता है परन्तु क्रोध के भाव उसके चेहरे से इस समय एक दम लापता हो गये थे और शान के साथ पैर खटा हुआ दीवार के बगल से वह अब पूरब की ओर बढ़ा जा रहा था।

आस पास के जंगलों में इस काली जाति के जितने भी सिंह थे वे घास चरने वालों जानवरों अथवा मनुष्यों दोनों ही के मांस को समान रुचि से खाने के अभ्यस्त थे। कभी तो वे वमानुषों के गाँव में पहुँच अपनी क्षुधा तृप्त करते थे और कभी चहारदीवारी से घिरी पागल राजा हेरोग की प्रजा को पकड़ अपनी क्षुधा निवारण करते थे परन्तु इस सिंह में यह विशेषता थी कि मनुष्य मांस से उसे एक प्रकार से घृणा हो गई थी। वह जब बहुत छोटा बच्चा था उसी समय पकड़ कर उस शहर के भीतर ले जाया गया था जहाँ आदिमियों के मांस न खाने का उसे अभ्यास कराया गया था। दो वर्ष शहर में रह कर वह किसी प्रकार जंगल में निकल भागा था और अभी तक मनुष्य मांस से उसकी वैसी ही अरुचि थी।

पूरब की ओर वाली दीवार के कोने पर पहुँच अब वह दक्खिन की ओर घूमा और दक्खिन की दीवार के बराबर सट कर आगे की ओर बढ़ने लगा। दक्षिण ओर की इस दीवार में बाहर की ओर जगह बजगह मवेशियों के बाड़े बने हुये थे जो मोटी मोटी लकड़ियों से घिरे तथा दीवार से सट कर ही बनाये गये थे और इन्हीं में मवेशी रात के वक्त बन्द कर दिये जाते थे। इनमें भीतर की ओर दीवार में छोटे छोटे दर्वाजे भी बने हुये थे जिनकी राह इन्हें चराने वाले शहर की दीवार लांघ बाड़े में आते जाते थे। इन्हीं में से एक बाड़े के पास पहुँच उसकी बाहरी लकड़ियों को उस सिंह ने अपने पैरों से टटोला। इसमें से एक

लकड़ी का कुन्दा उसे कमजोर दिखाई दिया जिसे उसने अपने समूचे शरीर का जोर लगा कर पीछे की ओर ढकेला । कुन्दा बरमरा कर टूट गया और सिंह बाड़े के अन्दर जा घुसा । अन्दर के सभी मवेशी सिंह की गन्ध पर एक दम खड़बड़ा उठे ।

ठीक इसी समय उनके खड़बड़ाहट का कारण जाँचने की नीयत से दीवार के पीछे बैठे चरवाहे ने दीवार में बनी छोटी खिड़की खोली और अपना सिर बाहर निकाल बाड़े में झाँकने लगा । सिंह इन खिड़कियों से भली भाँति परिचित था । चरवाहे का सिर बाहर निकलते देख उसने इस जोर का पंजा उसके सिर पर जमाया कि चरवाहे का सिर छटक कर दूर जा गिरा और सिंह उस खिड़की की राह शहरपनाह के भीतर जा घुसा । उसके सामने ही सड़क थी जिस पर वह मस्तानी चाल से बढ़ने लगा । उसका रक्तक शहर के भीतर था और उसकी रक्षा के लिये उसके पास पहुँचना उसने अपना कर्तव्य समझा ।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

सब से पहला खयाल जो अपने पीछे उस पीली वर्दी पहने आदमी को खड़े देख ओल्डविक के दिल में पैदा हुआ वह अपनी जेब में पड़ी पिस्तौल को जेब में से ही उस पर छोड़ने का था और इसी इरादे से उसने अपना हाथ जेब में डाला भी परन्तु उस आदमी ने फौरन ही उसकी कलाई पकड़ ली और धीरे से कहा, “घबड़ाओ मत; मैं हूँ जंगल का राजा टार्जन !”

प्रसन्नता और संतोष से ओल्डविक के शरीर की सारी नसें

यहाँ तक ढीली पड़ गई कि उसे सहारे के लिये टार्जन का हाथ पकड़ लेना पड़ा। इसके बाद वह धीरे से बोला, “हैं आप ! मैंने तो समझा था आप अब इस दुनिया में नहीं हैं।”

टार्जन ने उत्तर दिया, “नहीं मैं मरा नहीं हूँ और तुम्हें भी अभी तक जिन्दा ही देख रहा हूँ परन्तु वह युवती कहाँ है ?”

ओल्डविक ने कहा, “शहर में पहुँचते ही वह मुझसे अलग कर दी गई और तब से मुझे उसकी सूरत दिखाई नहीं दी। मैं संतरियों द्वारा सिंहों से भरे एक मैदान में छोड़ दिया गया था।”

टार्जन ने पूछा, “तब तुम वहाँ से निकले कैसे ?”

ओल्डविक ने संक्षेप में सब हाल टार्जन को सुना दिया। टार्जन ने पूछा, “तो इस समय तुम जा कहाँ रहे थे ?”

ओल्डविक ने कहा, “मेरा इरादा शहर से बाहर निकल कर ब्रिटिश सैन्य तक पहुँचने और उससे मदद लाने का था।”

टार्जन बोले, “ऐसा होना असम्भव था ! यदि तुम किसी प्रकार शहर के बाहर निकल भी जाते तो जंगल के मांसाहारी जीवों से बच कर निकल जाना तुम्हारे लिये सम्भव नहीं था !”

ओल्डविक ने पूछा, “तब क्या करना चाहिये ?”

टार्जन ने कहा, “मैं उस युवती का पता लगाता लगाता यहाँ तक आ पहुँचा हूँ और मुझे आशा है कि यहाँ से पता लगाता लगाता मैं उसके पास तक भी पहुँच जाऊँगा।”

ओल्डविक बोला, “परन्तु इन कपड़ों से तो मैं आपके साथ जा नहीं सकता।”

टार्जन ने उत्तर दिया, "तब मुझे तुम्हारे लिये भी ऐसे-ही झपड़ों का प्रबन्ध करना पड़ेगा।"

ओल्डविक ने आश्चर्य से पूछा, "सो कैसे?"

टार्जन मुस्कुरा कर बोले, "इसका उत्तर यदि तुम्हें लेना हो तो छत पर चढ़ कर छत ही छत दीवार के पास तक चले जाओ। आखिरी छत पर पड़ी संतरी की लाश देख कर तुम्हें अपनी बातों का उत्तर मिल जायगा।"

ओल्डविक बोला, "मैं सब समझ गया। मैं भी एक ऐसे आदमी को जानता हूँ जिसे अब अपने वर्दी की आवश्यकता नहीं है और यदि मैं पुनः एक बार इस मकान की छत पर चढ़ सकूँ तो मुझे विश्वास है मैं उसकी वर्दी उतार कर ले आ सकूँगा।"

टार्जन ने पूछा, "तुम्हें कैसे मालूम कि उस आदमी को अपने झपड़ों की जरूरत नहीं है?"

ओल्डविक बोला, "इसलिये कि मैंने उसे मार डाला है।"

टार्जन बोले, "तब तो बड़ी अच्छी बात है। इन ज़िन्दा संतरियों की अपेक्षा उसकी वर्दी आसानी से मिल जा सकेगी।"

ओल्डविक बोला, "किन्तु वहाँ तक पहुँचा कैसे जाय?"

टार्जन बोले, "उसी तरह जिस तरह तुम नीचे उतरे हो! पहराओ मत मैं तुम्हारे साथ चलाँगा।"

दोनों आदमी बड़ी ही सावधानी से खम्भों के सहारे ऊपर चढ़ने लगे और टार्जन के सहारे ओल्डविक भी किसी प्रकार छत के ऊपर पहुँच गया। इसके बाद टार्जन बोले, "हाँ तो अब

तुम मुझे उस जगह ले चलो जहाँ वह लाश पड़ी हुई है ।”

ओल्डविक को वह दरवाजा खोलने में जरा भी दिक्कत न पड़ी जिसे खोल कर वह छत पर निकला था । टार्जन ने भीतर की आदत ली और तब नाक से कुछ देर तक भीतर की ओर सूँघने बाद बोले, “चले आओ कोई दर्ज नहीं ।”

दोनों ही आदमी एक साथ पुनः उस छोटी सी कोठरी में जा पहुँचे जहाँ पर्दे के पीछे उस युवती ने ओल्डविक को छिपा दिया था । टार्जन को पर्दे के बीच से छन कर आती हुई रोशनी की पतली रेखा भीतर की ओर आती दिखाई दी ।

धीरे से पर्दा थोड़ा हटा कर टार्जन ने बाहर की ओर निगाह की । सामने कमरे में एक टेबुल पर खाने के थाल रखे हुये थे और वही युवक और युवती जिनके सम्बन्ध में ओल्डविक ने उनसे कहा था टेबुल के पास बैठे आनन्द से भोजन कर रहे थे । उनके पास ही एक काला हबशी खड़ा खाना परोस रहा था ! टार्जन ने इस हबशी को बड़े ही ध्यान से देखा । जंगलों तथा वहाँ की सभी जंगली जातियों से टार्जन इतना अधिक परिचित थे कि उन्हें इस बात के समझने में जरा भी देर न लगी कि वह हबशी किस स्थान का रहने वाला और कौन सी भाषा बोलने वाला है । वे प्रायः सभी प्रकार की जंगली भाषाओं से भी परिचित थे । अब वे संतोष के साथ तब तक अपने स्थान पर खड़े रहे जब तक कि वह काला हबशी किसी काम से उस कोठरी के पास न आ पहुँचा जहाँ कि वे दोनों छिपे खड़े थे ।

हवशी उसी स्थान पर रखे एक टेबुल से कोई रक़ाबी उठा रहा था और उसके कान पर्दे की उस दरार से अधिक दूर न थे जिसमें से टार्जन भीतर की ओर झाँक रहे थे। सहसा हवशी के कानों में खास उसकी भाषा में किसी के शब्द सुनाई पड़े, “यदि तुम बमाबुओं के गाँव में वापस जाया चाहते हो तो मुंह से एक शब्द भी न निकालो और जो मैं कहता हूँ करो !”

हवशी ने भयभीत दृष्टि से पर्दे की ओर देखा जिधर से आती हुई आवाज उसके कानों में पड़ी थी। वह इस समय भय से काँप रहा था। यह समझ कर कि कहीं उसको काँपता देख कमरे में बैठे युवक युवतियों को सन्देह न हो जाय टार्जन पुनः धीरे से बोले, “डरो मत हम लोग तुम्हारे दोस्त हैं।”

उनकी यह बात सुन हवशी का भय कुछ कम हुआ और वह भी उसी प्रकार धीमे शब्दों में बोला, “गरीब ओटाबू उस देवता के लिये क्या कर सकता है जो दीवार के भीतर से बोल रहे हैं।”

टार्जन बोले, “हम दो आदमी अभी उस कमरे में आवेंगे। तुम्हें यह सहायता करनी होगी कि टेबुल के पास बैठे युवक युवती न तो भाग ही सकें न सहायता के लिये चिल्ला सकें।”

हवशी ने धीमे स्वर में उत्तर दिया, “मैं अवश्य उन्हें भागने से रोकूँगा परन्तु इस बात का सन्देह न कीजिये कि उनकी चिल्लाहट सुन कर कोई भी आदमी उनकी सहायता के लिये आवेगा। एक तो यहाँ की दीवारें इस ढंग की बनी हुई हैं कि इसके अन्दर की आवाज बाहर जा ही नहीं सकती दूसरे यह

शहर यहाँ के पागल निवासियों की चिल्लाहट से दिन रात ऐसा भरा रहता है कि कोई इस ओर जरा भी ध्यान नहीं देता । आप जरा भी चिन्ता न करें मैं अपने काम पर जाता हूँ ।”

टार्जन ने हबशी को उन दोनों के टेबुल की ओर जाते देखा जहाँ पहुँच कर अपने हाथ वाली रकबी उसने टेबुल पर रख दी । इसके बाद उन दोनों के पीछे खड़े हो उसने अपनी निगाह उस पर्दे की ओर उठाई जिसके पीछे टार्जन छिपे हुये थे । टार्जन ने देखा वह आंखों ही आंखों में कह रहा था, “मैं तैयार हूँ ।”

अब एक क्षण की भी देर न कर टार्जन ने पर्दा हटा दिया और बाहर निकल आये । उनकी सूरत देखते ही टेबुल के पास बैठा युवक चौंक कर अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ परन्तु हबशी ने फौरन ही उसे पीछे से पकड़ लिया । उसके पास बैठी युवती की पीठ टार्जन की ओर थी अस्तु वह उन्हें तो अपनी ओर बढ़ते देख न सकी हाँ अपने साथी को हबशी द्वारा पीछे की ओर से पकड़े जाते उसने अवश्य देख लिया । वह उसकी सहायता करने के लिये चिल्ला कर अपने स्थान से उठी ही थी कि टार्जन ने उसके कंधे पर हाथ रख कर उसे हबशी के काम में विघ्न डालने से रोका । जैसे ही वह टार्जन की ओर घूमी उसके चेहरे पर पहले तो बेतरह क्रोध के चिह्न दिखाई दिये किन्तु फौरन ही उसके होठों पर ठीक उसी तरह की मुस्कराहट दिखाई देने लगी जैसी पहले पहल ओल्डविक पर निगाह पड़ते ही दिखाई दी थी इसके बाद उसकी उँगलियों टार्जन के शरीर के

चारों ओर मुलायमियत से घूमने लगीं ।

इसी समय उसकी निगाह स्मिथ ओल्डविक पर भी पड़ी परन्तु उसके चेहरे पर आश्चर्य अथवा क्रोध दोनों में से किसी के भी लक्षण दिखाई नहीं दिये । टार्जन ने ओल्डविक की ओर घूम कर कहा, “देखो तुम इसका खयाल रखो तब तक जरा मैं उस आदमी का इन्तजाम कर दूँ ।”

इतना कह कर टार्जन उस आदमी के पास जा पहुँचे जिसे कब्जे में करने की हवशी कोशिश कर रहा था और उसके हाथ से उन्होंने तलवार छीन कर दूर फेंक दी । देवता को सदेह अपने सामने देख पहले तो हवशी को बड़ा आश्चर्य हुआ फिर भी उसकी निगाह में उनकी इज्जत कम नहीं हुई । वह बोला “ये लोग पूछते हैं कि आखिर आप लोग चाहते क्या हैं ?”

टार्जन ने उत्तर दिया “सब से पहले हम लोग भोजन चाहते हैं और तब एक और चीज चाहते हैं जो वहाँ कोच के नीचे पड़ी है । अच्छा ओटाबू पहले तुम उस आदमी का वह बरखा कब्जे में करो जो सामने दीवार के सहारे खड़ा हुआ है ।”

इसके बाद ओल्डविक से उस आदमी की तलवार कब्जे में करने के लिये कह कर वे पुनः ओटाबू की ओर घूमे और बोले, “अच्छा ओटाबू ! मैं इस आदमी पर निगाह रखता हूँ तब तक तुम जरा उस कोच के पास जाओ और उसके नीचे जो चीज रखी हुई है उसे यहाँ खींच लाओ !”

ओटाबू ने कोच की उनके हुता की तामीली की परन्तु जैसे

ही वह उसके नीचे छिपी लाश को खींच कर बाहर लाया और उस युवती के प्रेमी की निगाह उस पर पड़ी वह बड़े जोर से चिल्ला उठा और उसने दौड़ कर उस लाश की ओर जाना चाहा। बड़ी मुश्किल से टार्जन ने उसे ऐसा करने से रोका और ओटाबू को उस मरे हुये आदमी का कपड़ा उतारने की आज्ञा दी।

वह आदमी इस समय वड़ी ही तेजी के साथ अपनी प्रेमिका से बातें कर रहा था। टार्जन ने ओटाबू से पूछा कि वह क्या कर रहा है। ओटाबू बोला, “यह लाश उसके पिता की है। वह युवती से यह जानना चाहता है कि उस लाश का कोच के नीचे रहना उसे मालूम है या नहीं।”

उस आदमी के उतारे हुये कपड़े ओल्डविक ने पहन लिये और तब टेबुल के पास बैठ कर आनन्द के साथ अपनी क्षुधा निवारण करने लगा। पूछने पर उन्हें यह भी पता चल गया कि वह मकान उसी मृत मनुष्य का है जो उस राज्य में एक भारी अफसर की हैसियत में था।

अब टार्जन ने उस युवक से सवाल किया कि बर्था कर्चर कहाँ है जिस पर उसने उत्तर दिया कि वह राजा साहब के पास भेज दी गई है क्योंकि वह उनकी रानी बनाई जायगी।”

इस बीच में टार्जन की आज्ञा से वह हबशी बराबर उस युवक से बातें करता रहा और उसकी बातों से टार्जन को पता चला कि उसका राजकुमार मेटक से अच्छा परिचय है और वह उसके यहाँ आता जाता भी है।

अमी टार्जन इन बातों पर विचार कर ही रहे थे कि राजा साहब के महल में जा कर किस प्रकार वर्था का पता लगाना चाहिये कि इसी समय कमरे के दर्वाजे को किसी ने जोर से थप-पपाया और एक तेज आवाज दी ।

वह युवक कदाचित्त पुकारने वाले की आवाज पहचान गया और उत्तर में कुछ कह ही रहा था कि हवशी ने उसके मुंह पर हाथ रख दिया । टार्जन ने हवशी से पूछा कि वह क्या कह रहा था । हवशी ने उत्तर दिया कि वह कह रहा था अजनबियों ने उसके कमरे में घुस कर उसे कैद कर लिया है । अब यदि ये लोग अन्दर घुस आये तो हम में से किसी की भी जान न बचेगी ।”

दोनों कैदियों पर निगाह रखने की हवशी को ताकीद कर के टार्जन उस दर्वाजे की जांच करने के लिये उसके पास जा पहुँचे । पास जाने पर उन्हें पता चला कि वह दर्वाजा अधिक देर तक बाहर वालों का धक्का वर्दाश्त नहीं कर सकता । अब तक ओल्डविक भी उनके पास पहुँच गया था । टार्जन उससे बोले, “अब यहाँ अधिक ठहरना ठीक नहीं, जिस राह से हम लोग आये हैं उसी से वापस लौट चलना होगा ।”

यह कह कर टार्जन पीछे की ओर घूमे परन्तु पीछे घूमते ही उन्होंने एक बड़ा ही विचित्र तमाशा देखा । वह हवशी जमीन पर मरा हुआ पड़ा था और उन दोनों युवक युवतियों में से किसी का भी पता न था ।

झुजा से भागना



ज्योंही बर्था कर्चर ने मेटक को उस तालाब की ओर दौड़ते देखा वह समझ गई कि वह पागल आदमी उसे साथ ले कर उस तालाब में डूबा चाहता है । किन्तु जान ऐसी प्यारी चीज है कि जैसे ही वह उसे ले कर तालाब में कूदा, पानी की सतह के नीचे जाने के पहले बर्था ने खूब जोर से सांस खींच ली । डुबकी लगाने बाद उसने मेटक को तैर कर आगे बढ़ते देखा । उसने अपने को छुड़ाने की बहुत कोशिशों की पर कृतकार्य न हुई । करीब दस बारह गज आगे जाने बाद मेटक पानी के ऊपर उठा । इस समय बर्था ने अपने को एक दूसरे कमरे में पाया जिसमें दूर दूर तक पानी ही पानी भरा हुआ था । इस कमरे से कई रास्ते कई ओर चले गये थे । लगभग दस मिनट तक मेटक तैर कर आगे ही की ओर बढ़ता गया इसके बाद बर्था के नाक पर

गली रख रख कर वह इशारे से कुछ कहने लगा । थोड़ी ही देर में बर्था समझ गई कि वह उसे एक गहरी सांस लेने को कह रहा है । बर्था ने उसके कहे मुताबिक गहरी सांस खींची और जब उसे ले कर पुनः उसने पानी में डुबकी मारी ।

पानी में थोड़ी दूर जाने बाद जब उसने अपना सिर ऊपर उठाया तो बर्था को मात्स्य हुआ कि वे एक लम्बे चौड़े तालाब में हैं । किनारे आ कर उसने बर्था को सीढ़ियों पर खड़ा कर दिया और तब दोनों धीरे धीरे तालाब के ऊपर चले आये ।

यहाँ से बर्था को साथ ले कर मेटक बगल वाली एक भारी इमारत के फाटक में घुसा और तब बर्था की समझ में आया कि वे लोग उसी स्थान पर आ पहुँचे हैं जहाँ बैठे एक अफसर के सामने वह ओल्डविक के साथ ला कर खड़ी की गई थी । इस कमरे में वह अफसर तो इस समय न था फिर भी दस बारह घंटे इधर उधर घूम रहे थे । मेटक को देखते ही वे सब अदब से उठ कर खड़े हो गये । मेटक ने न मात्स्य उनसे क्या बातें की पर बर्था ने देखा कि वे सब के सब बगल के एक दरवाजे में जा घुसे और मेटक भी बर्था का हाथ पकड़े उसी दरवाजे में घुसा ।

अब ये लोग सीढ़ियाँ चढ़ते हुये एक कमरे के दरवाजे पर आ कर खड़े हो गये और मेटक ने जोर से किसी को आवाज दी । उत्तर में एक पतली आवाज बर्था के कानों में पड़ी जिसे सुनते ही वहाँ उपस्थित आदमियों में भारी हलचल पैदा हो गई और सब के सब दरवाजा पीट कर उसे तोड़ने का प्रयत्न करने लगे ।

थोड़ी ही देर में दर्वाजा टूट गया और ये लोग कमरे के अन्दर जा चुसे। कमरा भीतर से एक दम खाली था। सिर्फ जमीन पर मकान मालिक तथा ओटाबू हबशी की लाश पड़ी हुई थी। जिसे देख मेटक को बड़ा ही ताज्जुब हुआ। वह दौड़ कर खिड़की के पास गया और झाँक कर नीचे की ओर देखने लगा। खिड़की के नीचे ही सिंहों का वाड़ा था अस्तु उस ओर से भागने की जरा भी गुंजाइश न थी। कमरे में भी किसी की सूरत दिखाई नहीं दे रही थी अन्त में वह थक कर एक कुर्सी पर जा बैठा और सब आदमियों को उसने वहाँ से बिदा कर दिया। पर्दे के पीछे की छिपी कोठरी का उसे अब तक पता न था जिसमें इनसे पहले ही टार्जन तथा ओल्डविक घुस कर लापता हो चुके थे।

थोड़ी देर तक मेटक कुर्सी पर बैठा कुछ सोचता रहा। उससे थोड़े ही फासले पर खड़ी बर्था भयभीत दृष्टि से उसकी ओर देख रही थी। सहसा वह खड़ा हो गया और अजीब तरह का मुँह बना कर बर्था को पकड़ने के लिये उसकी ओर बढ़ा।

इसी समय जमीन पर गिरे बर्छे पर बर्था की दृष्टि जा पड़ी। फौरन ही मुक कर उसने उसे जमीन पर से उठा लिया और उसकी नोक मेटक की छाती की ओर कर के खड़ी हो गई। मेटक उसे ऐसा करते देख जहाँ का तहाँ रुक गया और बड़े जोर से ठठा कर हँस पड़ा। इसके बाद थोड़ी देर तक तलवार हाथ में लिये वह बर्था के सामने उछलता कूदता रहा परन्तु बीच बीच में वह

वर्था के करीब बढ़ने की कोशिश भी करता जाता था। वर्था बराबर उसे रोकती भी जाती थी और पीछे भी हटती जाती थी। हटते हटते वह कोच के करीब तक जा पहुँची और उसके पाटी का बक्का खा कर कोच के ऊपर जा गिरी। मेटक फौरन ही कूद कर उसकी छाती पर सवार हो गया।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

टार्जन तथा ओल्डविक ने इस ओर जरा भी ध्यान न दिया कि वे दोनों युवक युवती किस ओर से बाहर निकले। एक ही छलाँग में वे लोग उस छोटी कोठरी में जा पहुँचे और सीढ़ियाँ चढ़ कर उस दर्वाजे के पास तक पहुँच गये जो मकान की छत पर खुलता था। ओल्डविक आगे था अस्तु उसे यह देख आश्चर्य हुआ कि जिस दर्वाजे को वह खुला छोड़ गया था वह इस समय ऊपर की ओर से मजबूती के साथ बन्द किया हुआ है। यह बात उसने टार्जन से कही और बोला, “आप एक बार कोशिश कर के देखिये सम्भव है कुछ काम निकले।”

ओल्डविक को पीछे कर के टार्जन उस दर्वाजे के पास जा पहुँचे और अपने शरीर का समूचा जोर लगा कर उन्होंने उसे ऊपर की ओर उठाने की कोशिश की। दर्वाजे के पल्ले चरमरा चठे परन्तु इसी समय उन्हें ऊपर छत पर कुछ आदमियों के बातें करने की आवाज़ आई। ओल्डविक की ओर देख कर वे बोले, “ऊपर तो आदमी मालूम होते हैं अस्तु हमें अब किसी दूसरी ही राह से बाहर निकलने का प्रयत्न करना होगा।”

अमी ओल्डविक ने उनकी बात का कोई भी उत्तर नहीं दिया था कि सहसा किसी औरत के चीखने की आवाज इन लोगों के कान में पड़ी। टार्जन धड़ाधड़ सीढ़ियाँ उतरने लगे और ओल्डविक के साथ फुर्ती के साथ उसी छोटी कोठरी की ओर बढ़े। कोठरी का दरवाजा खोलते ही उसी औरत की दर्द भरी आवाज पुनः उनके कानों में पड़ी “या ईश्वर ! दया करो !”

अब टार्जन एक क्षण भी वहाँ न ठहरे और एक ही छलाँग में पर्दा हटाते हुए बगल के कमरे में जा खड़े हुए। उनकी आहट पा कर पागल मेटक ने घूम कर उनकी ओर देखा। अपने पिता की वर्दी पहने एक आदमी को सामने खड़ा देख पहले तो वह हुकूमत भरी आवाज में कुछ बोला परन्तु जैसे ही उसकी निगाह टार्जन के चेहरे पर पड़ीः वह बर्था को कोच ही पर पड़ी छोड़ छछल कर कोच के नीचे खड़ा हो गया। बर्था से हाथापाही करते समय उसके हाथ की तलवार जमीन पर गिर पड़ी थी पर उस ओर जरा भी ध्यान न दे वह टार्जन पर दूट पड़ा।

दोनों ही जबर्दस्त थे, ताकतवर थे और एक दूसरे के जोड़ तोड़ के थे परन्तु अभाग्यवश टार्जन जमीन पर पड़े मुर्दे की ठोकर खा घड़ाम से जमीन पर गिर पड़े। इसी समय मेटक छछल कर उनकी छाती पर सवार हो गया और अपने नोकीले दाँत टार्जन के गले में घँसाने के इरादे से नीचे की ओर मुका।

परन्तु टार्जन ने अपने हाथ का घक्का दे कर उसका मुँह अपनी गर्दन के पास से हटा दिया। मेटक इस समय अपनी

मजबूत उँगलियों से टार्जन का गला पकड़ने की कोशिश कर रहा था, इसी समय टार्जन चिन्ना कर ओल्डविक से बोले, "यहाँ अब एक क्षण भी ठहरने का काम नहीं, फौरन उस युवती के साथ ले कर यहाँ से निकल भागो ।"

युवती बर्था उस समय पलंग से उतर कर जमीन पर खड़ी इन दोनों के युद्ध को देख रही थी । टार्जन की आवाज सुन ओल्डविक ने बर्था की ओर देखा परन्तु बर्था फौरन ही चिल्ला कर बोली, "तुम्हारी इच्छा हो तो तुम जा सकते हो क्योंकि तुम्हारे रहने से यहाँ कोई काम नहीं निकल सकता परन्तु मैं यहाँ से जरा भी नहीं टल सकती । यदि इनकी जान जायगी तो इनके साथ ही मैं अपनी भी जान दे दूँगी ।"

टार्जन इस समय जमीन से उठ कर खड़े हो गये थे परन्तु पागल मेटक अब भी उनके साथ मजबूती से चिपका हुआ था । बर्था फौरन ओल्डविक की ओर घूमी और चिन्ना कर बोली, "मुँह क्या देखते हो पिस्तौल क्यों नहीं काम में लाते !"

ओल्डविक ने फौरन पिस्तौल निकाल कर हाथ में ले ली परन्तु दोनों एक दूसरे से ऐसे गुये हुए थे कि उसे पिस्तौल चलाने का मौका नहीं मिलता था । बर्था ने भी पलंग के पास पड़ी तलवार अपने हाथ में उठा ली थी परन्तु उसे भी काम में लाने का मौका उसे नहीं मिलता था । सहसा उसने देखा कि टार्जन की मजबूत उँगलियों मेटक के गले पर चपक कर बैठ गई । क्रमशः मेटक की आँखें बाहर निकलने लगीं । उसकी जबान बाहर

लटक आई और मुँह एक दम लाल हो गया। इसी समय क्रोध में भरे टार्जन ने मेटक को जमीन पर से ऊँचे उठा लिया और मेटके के साथ खिड़की के बाहर सिंहीं के वाड़े में फेंक दिया।

अब टार्जन ने घूम कर बर्या की ओर देखा जो हाथ में तलवार लिये उनके सामने खड़ी थी। वे बोले, “अब जहाँ तक जल्द हो सके इस जगह से बाहर निकल चलना चाहिये। जिस राह से हम लोग आये थे वह रास्ता तो बन्द है। जिघर से तुम आई हो क्या उधर से हम लोग निकल जा सकते हैं।”

बर्या बोली, “नीचे कमरे में दस बारह आदमी हर्बे हथियार से लैस बैठे हैं अस्तु मुझे आशा नहीं कि हम लोग सही सलामत उनके बीच में से निकल जा सकेंगे।

ये लोग बातें कर ही रहे थे कि वह काला हबशी उठ बैठा और अपनी आँखें मलने लगा। टार्जन बोले, “अरे तुम अभी जीते हो, हम लोगों ने तो तुम्हें मुर्दा समझ लिया था।”

हबशी बोला, “नहीं ! मेरे बदन में तो कोई चोट नहीं लगी है परन्तु सिर अवश्य एक जगह से फूला हुआ है !”

टार्जन बोले, “ठीक है, अच्छा तो क्या तुम बमाबुओं के गाँव में जाया चाहते हो ?”

हबशी बोला, “अवश्य !”

टार्जन ने कहा, “अच्छा तो हम लोगों को बहुत जल्द किसी सुविधा की राह से इस शहर के बाहर निकाल ले चलो।”

हबशी ने उत्तर दिया, “यहाँ से बाहर निकलने के लिये

युविधाजनक राह तो कोई भी नहीं है और यदि हम लोग शहर के फाटक तक सही सलामत पहुँच भी गये तो भी वहाँ पर हमें अवश्य युद्ध करना पड़ेगा । इस स्थान से मैं आप लोगों को शहर की एक निराली गली तक ले चल सकता हूँ आशा है राह में किसी से भी भेंट न होगी । वहाँ से हम लोगों को सावधानी के साथ आगे बढ़ना होगा । आप दोनों यहाँ के संतरियों की मौँति ही वर्दी पहने हुए हैं अस्तु सम्भव है राह में आप लोगों पर कोई सन्देह न करे परन्तु शहर के फाटक की बात दूसरी है क्योंकि रात के समय किसी को भी बाहर निकलने की आज्ञा नहीं है ।”

टार्जन बोले, “अच्छी बात है देखा जायगा ! चलो पहले यहाँ से तो बाहर निकलें ।”

ओटावू इन लोगों को कई कमरों तथा रास्तों से घुमाता फिराता नीचे की मंजिल में ले गया जहाँ एक दर्वाजा बाहर की एक सूनसान गली में खुलता था । दर्वाजा खुलने पर ये सब के सब बाहर खुली सड़क पर निकल आये ।

यहाँ से ये लोग बड़ी ही सावधानी के साथ आगे बढ़ने लगे परन्तु अभी इन लोगों ने ज्यादा रास्ता नहीं तय किया था कि शहर के बीचोबीच से आती हुई भयानक शोरोगुल की आवाज इन लोगों के कानों में पड़ी । ओटावू की ओर देख कर टार्जन ने पूछा, “यह शोरोगुल किस बात का है ?”

ओटावू बोला, “इन लोगों के सर्दार वेजा को महल की सब घटनाएँ मालूम हो गई हैं । वेजा के लड़के तथा युवती ने बाहर

निकल कर सिपाहियों को खबर कर दी है ।”

मुस्करा कर टार्जन बोले, “मुझे सन्देह है कि इन लोगों के हाथ अभी उस आदमी की लाश लगी था नहीं जिसे मैंने उठा कर खिड़की के बाहर फेंक दिया था ।”

इसी समय बर्था टार्जन की ओर देख कर बोली, “आपको कदाचित्त यह बात मालूम न होगी कि जिस आदमी को आपने उठा कर सिंहों के बाड़े में फेंक दिया है वह इस शहर का राजकुमार है ।”

हँस कर टार्जन बोले, “नहीं यह बात अभी तक मुझे मालूम न थी परन्तु यदि ऐसा है तो हम लोगों को शीघ्र ही भारी आपत्ति से सामना करना पड़ेगा । उसकी लाश इन लोगों की निगाहों से अधिक समय तक छिपी नहीं रह सकती ।”

एकाएक बिगुल की तेज आवाज हवा में गूँज उठी । ओटावू तेजी के साथ अपने पैर आगे की ओर बढ़ाता हुआ बोला, “जैसा मेरा ख्याल था उससे भी कहीं भारी विपत्ति सामने नजर आ रही है ।”

टार्जन ने पूछा, “बात क्या है ?”

हबशी बोला, “राजा के खास सिपाही तथा सिंह बुलाये जा रहे हैं । इन लोगों से बचना सहज काम नहीं है ।”

इसी समय बिगुल दूसरी बार और भी जोर से बज उठा । टार्जन ने पूछा, “क्या और सिंह बुलाये जा रहे हैं ?”

हबशी बोला, “नहीं यह बिगुल तोतों को बुलाने के लिये है ।”

ये लोग चुपचाप आगे बढ़ने लगे। इसी समय एक भारी तोता इनके सिर पर चक्कर काटता हुआ एक ओर उड़ गया। काँपता हुआ हवशी बोला, “अब तो स्वामी हम लोगों की ज्ञान किसी तरह भी नहीं बच सकती। इस तोते ने हम लोगों को देख लिया है और अब यह यहाँ से जा कर फाटक के संतरियों को सावधान कर देगा।”

हँस कर टार्जन बोले, “तुम कुछ पागल तो नहीं हो गये हो जो ऐसी बेसिर पैर की बातें कर रहे हो।”

हवशी गम्भीर हो कर बोला, “नहीं स्वामी मैं जो कुछ भी कह रहा हूँ उसका अक्षर अक्षर सत्य है यहाँ के तोते प्रेत हैं और ठीक इस शहर के आदमियों की तरह ही बातें करते हैं। यदि इनका एक मुण्ड हम लोगों पर टूट पड़े तो हम में से एक आदमी भी जिन्दा न बचेगा।”

टार्जन ने पूछा, “अच्छा शहर का फाटक यहाँ से कितनी दूर है?”

हवशी बोला, “हम लोग उसके एक दम समीप पहुँच गये हैं। सामने वाली मोड़ घूमते ही वह फाटक हम लोगों को एक दम सामने दिखाई देगा परन्तु वह तोता हम लोगों के पहले ही फाटक पर पहुँच गया है अस्तु संतरी हम लोगों का सामना करने के लिये तैयार खड़े होंगे।”

हवशी के बातों की सत्यता शीघ्र ही प्रगट हो गई क्योंकि इसी समय उन्हें आगे की ओर कितनी ही आवाजें सुनाई दीं

साथ ही पीछे की ओर भी आदमियों का केलाहल तथा सिंहां की गरज सुनाई देने लगी ।

सहसा एक बड़ा भारी सिंह बगल के दीवार की आड़ से निकल कर इनके पास आ खड़ा हुआ किन्तु टार्जन ने उसकी ओर जरा भी ध्यान न दिया और बराबर आगे ही की ओर बढ़े चले गये परन्तु यह देख उन्हें आश्चर्य हुआ कि वह सिंह गुरनि के बढ़ते धुरधुराता हुआ उनके समीप चला आया और उनके पीछे पीछे चलने लगा । टार्जन ओल्डविक से बोले, “यह वही गड्ढे वाला सिंह है ।” और तब हवशी की ओर घूम कर बोले, “घबराना मत यह सिंह हम लोगों को जरा भी नुकसान नहीं पहुँचावेगा ।”

पीछे की ओर से सिंहां की आवाजे अब बहुत समीप आ गई थीं । मोड़ घूमते ही इन लोगों की निगाह फाटक पर पड़ी जहाँ लगभग बीस पच्चीस आदमी उन्हें गिरफ्तार करने के लिये खड़े दिखाई दिये ।

टार्जन ने जल्दी में ओल्डविक से पूछा, “तुम्हारी पिस्तौल में कितनी कारतूसें मौजूद हैं ।”

ओल्डविक बोला, “पिस्तौल में तो केवल सात ही कारतूसें बची हैं परन्तु मेरी जेब में लगभग एक दर्जन कारतूसें और भी मौजूद हैं ।”

टार्जन बोले, “तुम केवल एक ही गोली इन लोगों पर छोड़ना जिससे ये लोग घबरा उठेंगे बाकी का काम हमारा यह सिंह पूरा करेगा ।”

अब ये लोग पीली वर्दी पहने संतरियों के एक दम समीप पहुँच गये थे । ओल्डविक ने पिस्तौल की एक गोली उन लोगों पर चलाई जो एक संतरी की छाती में जा घुसी और वह चिल्ला कर जमीन पर गिर पड़ा । संतरियों में खलबली मच गई परन्तु उनके सर्दार ने उन्हें सावधान किया । इसी समय टार्जन तथा ओल्डविक एक साथ उन लोगों पर दूट पड़े । सिंह भी उन लोगों का इरादा समझ कर उनकी ओर झपटा ।

यकायक एक जङ्गली सिंह को अपनी ओर झपटता देख संतरी लोग भय से चिल्ला उठे और जिधर जिसने रास्ता पाया उधर ही वह भाग निकला । संतरियों के सर्दार को टार्जन ने अब तक खतम कर दिया था । केवल छः संतरी ऐसे बचे रह गये थे जो अब तक फाटक पर डट कर खड़े थे । इनमें से दो तो ओल्डविक की गोली के शिकार बने और दो टार्जन के हाथों मारे गये । बाकी बचे दो में से एक ओल्डविक की ओर झपटा और एक टार्जन से जा मिड़ा । जैसे ही ओल्डविक ने अपने शत्रु की ओर पिस्तौल का मुँह कर के घोड़ा दबाया यह देख उसका कलेजा बैठ गया कि पिस्तौल की गोली समाप्त हो चुकी थी । वह संतरी नंगी तलवार लिये अब तक ओल्डविक के सिर पर आ पहुँचा था । अब ओल्डविक को अपने जीवन की कुछ भी आशा नहीं रह गई थी परन्तु इसी समय वह सिंह उसके बगल से निकल कर उसके शत्रु पर दूट पड़ा ।

वह हवशी वर्या को साथ लिये अब तक फाटक पर पहुँच,

उसके बँवड़े तथा लोहे की सिकड़ियाँ हटा कर उसे खोल चुका था। चुपचाप ये चारों आदमी फाटक के बाहर अन्धकार में जा मिले। ठीक इसी समय मोड़ घूम कर छः सिंहां ने इन लोगों पर हमला किया परन्तु टार्जन के साथी सिंह ने इन लोगों का मुकाबला किया। वे लोग उसकी एक ही दहाड़ सुन पीछे की ओर मुड़ गये और तेजी के साथ एक ओर भागे।

अब टार्जन ने ओटाबू से पूछा, “क्या ये लोग अब भी हमारा पीछा करेंगे ?”

हवशी ने उत्तर दिया, “नहीं रात के समय ये लोग शहर के बाहर नहीं निकलते। मैं पाँच वर्षों तक इनका गुलाम रह कर काम कर चुका हूँ और इनकी आदतों से भली भाँति परिचित हूँ।”

अब ओल्डविक ने अपनी पिस्तौल में फिर से कारतूसों का भर लिया और सब के सब जङ्गल में आगे की ओर बढ़ने लगे। बर्था इस समय टार्जन तथा ओल्डविक के बीच में चल रही थी। इसी समय टार्जन एकाएक खड़े हो गये और उनके मुँह से ठीक उसी तरह की आवाज निकली जैसे कोई सिंह किसी दूसरे सिंह को बुला रहा हो। हवशी तथा ओल्डविक आश्चर्य के साथ इस समय टार्जन का मुँह देख रहे थे।

थोड़ी ही देर बाद शहर के फाटक की ओर से न्यूमा सिंह की गरज सुनाई दी और गड्ढे वाला सिंह टार्जन के बगल में आ पहुँचा। अब इन लोगों की मंडली जङ्गल के घने अन्धकार में आगे की ओर बढ़ने लगी।

रहस्य-मेव

—०—

सुबह की सुपेदी का आसमान पर फैलना आरम्भ हो गया था जब कि ये लोग रास्ते के जङ्गलों को पार कर के घाटियों के बीच पहुँचे । रात में कई बार जङ्गली सिंहों ने इन लोगों पर हमला भी किया परन्तु हर बार ही टार्जन के साथी सिंह ने उन्हें भगा दिया । अब दिन निकल आने पर सिंहों का भय तो अवश्य कम हो गया था किन्तु इस बात का भय बना ही हुआ था कि कहीं उस शहर के पागल लोग अपने सिंहों के साथ उनका पीछा करने के लिये न चले आते हों ।

कितनी ही घाटियों को पार करते हुये लगभग आधा रास्ता ये लोग तय कर चुके थे जब टार्जन को मालूम हुआ कि ओल्ड-विक तथा बर्था कर्वर दोनों में से किसी में भी आगे जलने की सामर्थ्य नहीं है । अन्त में सब की यही राय हुई कि कुछ देर तक वहाँ ठहर कर आराम करना चाहिये ।

ओल्डविक तथा वर्था ने तो समझ लिया था कि अब वे जीते जी उस घाटी से बाहर नहीं निकल सकते परन्तु टार्जन का तो दर्शनशास्त्र ही निराला था। उनके मत से “जब तक जीवन तब तक आशा” वाली कहावत चरितार्थ होती थी।

लगभग एक घण्टे तक वे लोग वहाँ पड़े आराम करते रहे। टार्जन का साथी सिंह दो एक बार टार्जन का चक्कर काटने वाद धीरे धीरे वहाँ से एक ओर चल दिया था। एकाएक टार्जन ध्यान लगा कर कुछ सुनने लगे, बहुत दूर से आने वाले कुछ शब्द उनके कानों में स्पष्ट रूप से पड़ रहे थे। वे बोले, “वे लोग आ रहे हैं और साथ में उनके सिंहों की भी एक मंडली है परन्तु अभी वे लोग दूर हैं। सम्भव है उन्हें यहाँ तक पहुँचते पहुँचते तीन चार घंटों का समय लग जाय।”

वर्था ने निराशाजनक शब्दों में टार्जन से कहा, “आपने हम लोगों की रक्षा करने के लिये अब तक जो कष्ट उठाये हैं उनसे हम लोग आजीवन उन्नत नहीं हो सकते परन्तु इस समय जब कि हमें निश्चित रूप से मालूम है कि हम लोगों का जीवन किसी प्रकार भी नहीं बच सकता आप वृथा हम लोगों की चिन्ता कर के अपना जीवन भी क्यों संशय में डालते हैं। मेरी तो यही राय है कि हम लोगों को यहीं छोड़ आप अब आगे की ओर बढ़ जायें। आपके शरीर में शक्ति है अस्तु ये लोग कभी भी आप को न पा सकेंगे।”

टार्जन ने सुकरा कर वर्था काँट की ओर देखा और बोले,

“हम चारों ही अभी तक जीवित हैं और जब तक जीवित हैं जीवन रक्षा का उपाय सोचना हम लोगों का कर्तव्य है !”

इसी समय ओल्डविक बोला, “खैर तो अब यहाँ वृथा समय बर्बाद करना बेकार मालूम होता है। हम लोग काफी सुस्ता चुके हैं और आगे बढ़ने की थोड़ी बहुत शक्ति भी हममें हो गई है।” बर्था ने भी उसकी बात का समर्थन किया। टार्जन जानते थे कि ये लोग झूठ कह रहे हैं इतनी जल्दी शरीर की थकावट दूर नहीं हो सकती परन्तु और उपाय ही क्या था, लाचार इन लोगों को आगे बढ़ना ही पड़ा। टार्जन ने ओटाबू को तो ओल्डविक को सहारा दे कर आगे ले चलने की ताकीद की और बर्था को स्वयं अपने हाथों में उठा लिया। बर्था ने उन्हें अपनी शक्ति बचा रखने के लिये बहुत सभन्नाया परन्तु उन्होंने उस ओर जरा भी ध्यान न दिया।

अन्त में ये लोग एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ आगे की ओर एक भारी चट्टान तथा पीछे पहाड़ियों का ऊँचा सिलसिला था। यही स्थान टार्जन ने ठहर कर उन लोगों से युद्ध करने के उपयुक्त समझा क्योंकि यहाँ पर वे लोग कम से कम चारों ओर से इन पर हमला नहीं कर सकते थे।

इसी समय एक छोटा सा बढसूरत बन्दर ऊँचे की ओर से इन लोगों को देखता नजर आया जो फौरन ही उस ओर वापस लौट गया जिधर से कि शत्रुओं के आने की आहट मिल रही थी। उसे देख ओटाबू बोला, “लीजिये यह कम्बख्त यहाँ भी आ पहुँचा। यह तोतों से जा कर कहेगा और तोते सब प्राणियों से

हमारे इस स्थान पर होने का समाचार दे देंगे ।”

टार्जन बोले, “एक ही बात है ! यदि यह बन्दर हमें यहाँ न भी देख पाता तो उनके साथी सिंह गंध से हम लोगों के यहाँ होने की सूचना उन्हें दे देते । जो कुछ भी हो अब यहीं ठहर कर उन लोगों की राह देखनी चाहिये ।

लगभग दो घंटे तक ये लोग वहीं पड़े रहे । अब सिंहों की गरज तथा पागलों की चिल्लाहट इन्हें स्पष्ट सुनाई देने लगी । सहसा एक सिंह चट्टान की आड़ से निकल कर टार्जन की ओर झपटा ।

टार्जन ने अपने हाथ की तलवार का एक भरपूर हाथ उसकी खोपड़ी पर जमाया जो करकरा कर बीच से चिर गई । इसी समय उनकी निगाह एक पागल पर पड़ी जो ओल्डविक के पिस्तौल की गोली खा कर जमीन पर गिर रहा था किन्तु इस बार एक सिंह ने ओल्डविक पर तथा एक पागल ने टार्जन पर आक्रमण किया । टार्जन ने तो शीघ्र ही अपने शत्रु को मार गिराया परन्तु उस सिंह को परास्त करने में ओल्डविक वर्या तथा ओटाबू तीनों ही को अपनी समूची शक्ति खर्च कर देनी पड़ी । अभी ये लोग इस काम से निपटे ही थे कि बाकी के पागलों तथा सिंहों ने एक साथ इन लोगों पर हमला कर दिया । उनमें से दो तो ओल्डविक की गोलियों के शिकार हुये परन्तु एक शत्रु का भाला इस जोर से टार्जन के कंधे पर बैठा कि वे लड़खड़ा कर जमीन पर गिर गये और शत्रु उनकी छाती पर चढ़ गया ।

उसके हाथ की तलवार टार्जन की गर्दन पर गिरा ही चाहती थी कि उसके चेहरे की ओर पिस्तौल की नली का मुंह कर के ओल्डविक ने घोड़ा दबा दिया ।

सहसा इन लोगों को बगल के पहाड़ी सिलसिले के ऊपर की ओर से आती हुई बन्दूकों के एक बाढ़ की आवाज सुनाई दी साथ ही किसी ब्रिटिश अफसर का चिल्ला कर अपने मातहतों को हुक्म देना भी सुनाई पड़ा । इन आवाजों ने इन निराश लोगों के हृदय में नवीन स्फूर्ति पैदा कर दी क्योंकि इस समय तक टार्जन भी बहुत कुछ निराश हो चुके थे । ओल्डविक तथा वर्था का हृदय तो प्रसन्नता से खिल उठा ।

अपने ऊपर पड़ी मुर्दा देह को एक ओर गिरा टार्जन उठ खड़े हुये । वर्था अभी तक उनके कंधे में घुसा हुआ था जिसे उन्होंने जोर लगा कर मांस के बाहर खींच लिया । अब ये चारों ही आदमी अपने आड़ की जगह से बाहर निकल आये । उनके शत्रु सिंह तथा पागलों की मंडली में से एक भी जीता नहीं बचा था । जैसे ही टार्जन तथा अन्य लोग अंग्रेजी फौज के सामने आये, एक फौजी ने अपनी बन्दूक टार्जन की ओर घुमाई । वर्था समझ गई कि जिस पीली बर्दी को वे पहने हुये हैं उसी का यह सब फसाद है । क्रोध कर वह उनके सामने की ओर आ खड़ी हुई और उसे समझा कर बोली कि वे केवल शत्रुओं की बर्दी भर पहने हैं वास्तव में वे भी अंग्रेज और उन लोगों के मित्र हैं ।

अब ये चारों उस फौजी टुकड़े के साथ पड़ाव पर आ पहुँचे ।

यहाँ टार्जन तथा ओल्डविक के जखमों पर मरहमपट्टी की गई और रात भर सब लोगों ने वहीं आराम किया। रात में ही यह निश्चय हो गया था कि सुबह होते ही ओल्डविक तथा वर्था हवाई जहाज द्वारा ब्रिटिश पड़ाव पर भेज दिये जायेंगे। टार्जन तथा ओटाबू से भी साथ चलने के लिये कहा गया परन्तु इन लोगों ने साफ इनकार कर दिया।

जिस समय वर्था कर्चर हवाई जहाज पर चढ़ने के लिये तैयार हुई अपनी विनीत आखें टार्जन की ओर उठा कर उसने पूछा, “क्या सचमुच आप हम लोगों के साथ न चलेंगे और उन भयानक जङ्गलों ही में वापस लौट जायेंगे। क्या हम लोगों से अब आपकी कभी भी मुलाकात न होगी?”

टार्जन क्षण भर तक उसके चेहरे की ओर देखते रहे इसके बाद ‘कभी नहीं।’ कह कर उन्होंने अपना मुँह दूसरी ओर घुमा लिया। हवाई जहाज के चले जाने तक उन्होंने फिर वर्था की ओर नहीं देखा।

ब्रिटिश फौज भी वहाँ से रवाना होने की सब तैयारी कर चुकी थी। कर्नल केपेल ने टार्जन को अपने पास बुलाया और बोले, “लार्ड ग्रेस्टोक ! मेरी पुनः आपसे प्रार्थना है कि आप हम लोगों के साथ सभ्य देश में वापस लौट चले। स्मिथ ओल्डविक तथा उस युवती ने भी जाते समय मुझे आपसे यही प्रार्थना करने का आग्रह किया है।”

टार्जन बोले, “नहीं ! मैं अपने रास्ते जाऊँगा।” मिस कर्चर

तथा लेफ्टिनेन्ट ओल्डविक ने केवल प्रत्युपकार स्वरूप मुझसे
ऐसी प्रार्थना की है।”

कर्नल केपेल ने आश्चर्य से कहा, “मिस कर्चर ! क्या आप
उसे इसी नाम से जानते हैं ?”

टार्जन बोले, “हाँ मैं जानता हूँ कि वह जर्मन गुप्तचर वर्था
कर्चर ही है।”

कर्नल केपेल ने पूछा, “क्या उसके सम्बन्ध में आप केवल
इतना ही जानते हैं।”

टार्जन ने उत्तर दिया, “हाँ !”

केपेल मुँहुरा कर बोले. “वह ब्रिटिश इन्टेलिजेन्स डिपार्ट-
मेन्ट के दक्षिण अफ्रीकन विभाग की सब से चतुर सदस्या आन-
रेबुल पेटीशिया केनवी है। उसके पिता तथा मैं एक साथ भारत
में काम कर चुके हैं। मैं उसे बचपन से जानता हूँ। यह देखिये
वह किसी जर्मन अफसर से जरूरी कागजों का एक पुलिन्दा भी
लाई थी जिसके साथ किसी हाफ्टमन फ्रीज शीन्डर की डायरी
भी है।”

टार्जन ने आश्चर्य से पूछा, “हाफ्टमन फ्रीज शीन्डर की
डायरी ! क्या आप उसे कुछ मिनटों के लिये मुझे देंगे।”

कर्नल केपेल ने डायरी उनकी ओर बढ़ा दी और टार्जन उसे
ले कर तथा जल्दी जल्दी उसका पन्ना उलट किसी विशेष तारीख
को उसमें खोजने लगे। जब उन्हें अपने मतलब की चीज मिल
गई तो आश्चर्य की एक चीख उनके मुँह से निकली। कर्नल केपेल

की ओर देख कर वे बोले, “ओह क्या यह कभी सम्भव है ? सुनिये ?”

डायरी में लिखा था, “उस सूअर के बच्चे अंग्रेज के साथ आज अच्छी दिल्दगी की गई । उसके स्त्री की जगह एक हवशिन का शरीर फुलसा कर लेटा दिया गया और लेडी ग्रेस्टोक की अंगूठी उसे पहना दी गई । लेडी ग्रेस्टोक जिन्दा हमारे पड़ाव में अधिक कीमत की चीज होंगी !”

टार्जन बोले, “वह अभी तक जिन्दा है । या ईश्वर !”

केपेल ने उत्तर दिया, “ईश्वर को धन्यवाद है । अच्छा अब आपका क्या इरादा है ?”

टार्जन बोले, “अब मैं अवश्य आप के साथ वापस चलूँगा । ओह ! मैंने मिस कैनबी का तिरस्कार कर के कितना दुःख उन्हें पहुँचाया है । अपनी इस गलती का मुझे प्रायश्चित्त करना होगा । स्मिथि ओल्डविक से भी मैंने यही कह दिया था कि वे जर्मन गुप्तचर हैं ।”

कर्नल केपेल बोले, “इस बात की चिन्ता करने की आपको कोई भी आवश्यकता नहीं । मिस कैनबी ने अब तक स्वयं उन्हें विश्वास दिला दिया होगा कि वह जर्मन गुप्तचर नहीं है क्योंकि आज रवाना होते समय ओल्डविक ने मुझसे कहा था कि मिस केपेल ने उन्हें शादी करने का वचन दिया है ।”

SRI JAGADGURU VEDANTHATHI
JNANA SIMHASANA JNANAMANDIR

LIBRARY
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri
Jangamwadi Math, VARANASI,
Acc. No. 30321 272



